

श्री

कटपसूत्र सुवोधिका टीकानुं गुजरातीमां

जापांतर करावी

वपावी प्रसिद्ध करनार,

श्रावक जीमसिंह माणेक

जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार मांकवी, शाकगद्वी, मुंबइ.

वीर संवत् २४४१

विक्रम संवत् १९७१

श्रावए पूर्णिमा.

सने १९१५.

॥ प्रस्तावना ॥

संसाररूप नाट्यालयनी अंदर प्रमाद, विकथा, प्रधान तथा ईर्ष्या आदि कारणोने लड़ने जीवो अनादि कालथी नमा नवा वेष धारण करे वे अने तदनुरूप चेष्ठाउं पण करे वे. यद्यपि कोड़क वार शुज कमोंदयना प्रजावथी देव, ग्रुरु, धर्मनी पूजा जिक्त तेमज आराधना करता देखाय वे, परंतु आंतरिक दोषो शांत नहीं थवाथी विचारा पुनः तेवा ने तेवा यह संसारचक्रमां गोथां मारे वे. जे जीवो एक वखत देव, ग्रुरु, धर्मनी आराधना अने स्तुति करता तेज जीवो देव, ग्रुरु, धर्मनी निंदा करवा लागी जाय वे, नहीं करवानां कृत्यो करे वे, नहीं बोलवानुं बोले वे अने वेवटे प्रायः नास्तिक वनी जाय वे. आ प्रताप पोतपोतानां कर्मनो वे, एर से तेमां आश्वर्य पामवा जेवुं नथी, अथवा तो अन्यनां कृत्यो पर ध्यान दइ आपणे अमूह्य समय नष्ट करवो जोइतो नथी. कर्मना नचाव्या दरेक जीवने नाचवुं पडे वे, माटे शुज निमित्तोनो आश्वय लइ कर्म राजाने हराववा अने धर्म महाराजानो विजय करवा माटे हमेशां प्रयत्नशील रहेवुं जोइए.

दरेक धर्मनी छांदर प्रायः केटलाक पर्वदिवसो मुकरर थयेला हे ते एटलाज माटे के ते दिव-सोमां जव्य जीवो विशेषे करीने धर्मध्यान करी कर्म राजाने परास्त करे. कोइ पण धर्म एवो नहीं होय के जेमां श्रमुक दिवस पापना प्रायश्चित्त माटे मुकरर थयेल न होय. श्रावी रीते सर्वोत्तम, पवित्र जैन धर्मनी श्रंदर पण तेवा केटलाएक दिवस निर्धात हे, जे पैकी पर्युषणा पर्वना दिवस घणाज मनोहर श्रने शुज कार्य संपादक श्रात्मशुद्धिनुं श्रसाधारण कारण हे. श्रा पर्वनी श्रंदर लोकप्रधान देवो पण तमाम प्रकारनां दिव्य सुलो होनी दइने नंदीश्वर श्रादि द्वीपमां जइ जगवाननी पूजा जिक्त श्राह दिवस सुधी करे हे. कल्पण सुबोण

११ र ११

जैननां पीस्तालीश छागम कहेवाय हे. तेमां ह हेदस्त्र हे. तेमां चोषा हेदस्त्र नं नाम दशा-श्रुतस्कंध हे. छा सूत्र श्री जडबाहु खामीए रचेक्षं हे. तेमणे दशाश्रुतस्कंधना छाहमा छध्ययन-पणाश्री प्रत्याख्यान प्रवाद नामना नवमा पूर्वमांथी पर्युपणा कद्दपनी साथे स्थविरावली छने सामा चारी जोमीने तेनुं 'कट्दपस्त्र' एवं ज्ं नाम छाप्यं हे. छा कट्दपस्त्रमां मूल श्लोकसंख्या बारसो सोल होवाथी ते साधारण रीते 'बारसा' ना नामथी छोलखाय हे.

आ सूत्र प्रथम पर्युषणानी रात्रे साधुषषदामां गुरुमुखषी सर्वे साधुर्ड कायोत्सर्गध्यानमां रहीने श्रवण करता हता,परंतु श्यानंदपुर (वमनगर)मां ध्रवसेन राजाना पुत्रनो शोक निवृत करवाना हेतुषी ए कहपसूत्र सजाने विषे वंचायुं. ते दिवसथी कहपसूत्रने सजामां वांचवानी शरुआत थह अने हजु पण ते प्रवृत्ति चाखुज है.

श्रा मूलसूत्र मागधी (प्राकृत) नाषामां होवाशी घणा श्राचार्योए तेनी संस्कृतमां टीकार्ड रचेली है. तेमां पण महान् उपाध्याय श्रीविनयविजयजी महाराजे 'सुबोधिका' टीका बनावी हे ते घणी सरल श्रने रिसक नाषामां करी हे. ते टीका संवत् १६०६ ना ज्येष्ट सुदि १ ने गुरुवारे पुष्य नक्ते पूरी यह हे. हालमां संस्कृत नाषा नाणानारा घणा थोमा होवाशी श्रमोए सुबोधिका टीकानुं नाषां-तर करावी हपावेल हे तेमन ग्रंथ वधारे सुशोनित करवा सारु तेमां एए चित्रो नाखवामां श्रावेल हे.

कल्पसूत्र सुबोधिकाना नव क्षण एटखे व्याख्यान करवामां श्रावेख हे. तेमां कइ कइ जातना दिवयो श्रावेखा हे ते श्रानुक्रमणिका जोवाथी मालूम पमरो. प्रथमनां सात व्याख्यानमां श्रानुक्रमें श्रीमहावीर खामी, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ श्राने श्रादीश्वर जगवाननां चरित्र श्रावेख हे. श्राहमा व्याख्यानमां स्थिवरावली श्राने नवमा व्याख्यानमां सामाचारी दाखल करवामां श्रावेल हे. हेवडे ग्रंथ समाप्त करीने सुंदर प्रशस्ति पण मूकी हे.

प्रस्तावना

11 2 11

करूपसूत्र सुवोधिकाना जाषांतरनी आ चोथी आइत्ति अमारा तरफथी बहार पामवामां आवेल हे. आ (चोथी) आइत्तिनां थोमां फारमो आगलनी आइत्ति मुजब हपाया पढ़ी अमने मालूम पड्युं के आगलनी आइत्तिमां जाषांतर करनारे केटलोएक जाग पमतो मूकी दीधो हे तेमज तेना हस्तक केटलीक जग्योए अशुद्धि रही गयेल हे, तेथी पमतो मूकेलो जाग दाखल कराबी, अशुद्धिनुं वनी शक्या मुजब संशोधन कराबी तथा हेवटना जागनुं फरीथी जाषांतर कराबी आ आइत्ति बहार पामवामां आवी हे. तेनी अंदर दृष्टिदोषथी तेमज मितमंदताने लीधे कांइ पण जूलो रही गृह होय तो मुनि महाराजान तेमज सुझ आवकवंधुन सुधारीने वांचशे तथा ते जूलो खली जणावी अमने उपकृत करशे तो हवे पढ़ीनी आइत्तिमां शरुआतनो जाग जे संशोधन करावीने सुधारवानो हे तेनी साथे आ जूलो पण सुधारी शकाशो. इत्यलं विस्तरेण.

घर नं. २२५ थी २३१ शाकगह्नी, मांगवी, मुंबइ, वीर संवत् २४४१ विक्रम संवत् १ए७१ श्रावण पूर्णिमा

खी. श्रावक जीमसिंह माणेकना कार्यप्रवर्तक शा. जाणजी माया.



श्रानुक्रमणिका.

कह्प० सुबो०

์ กุรถ	🖔 छांक.	विषय.		বৃদ্ধ-	7
4441		प्रथमं व्याख्य	 नं		! !
]	र संग	ालाचरण तथा टीकाकारे ^र		ब्रघुता १	
. (7	कह्प " शब्दनो विस्तार स	रहित अर्थ	· .	;
1;	प्रकृतिक विक्रिके विकास मा प्रकृतिक विकास मा प्र	चिखक्य कह्पनुं वर्णन	****	3	:
[:]	🔏 ৪ হয়	हिशिक (आधाकर्मिक)	कट्पनुं वर्णनः	٠ ۲	!
	र् <u>द्र</u>	ध्यातर कटपनुं वर्षन	••••	3	İ
	🕴 ६ रा	जापिंम् कट्पनुं वर्णन	+a++ **	१	
	हैं। उक्	तिकर्म (बंदना) कटपनुं	वर्णन	হ	:
	र्द्री टवृत्त	त कब्पनुं वर्णन्	••••	হ	!
1 (्र ए उचे	ष्ठ कट्वनुं वर्णन ु	****	হ	
ļ, ¹	ঠুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুু	तेक्रमण कटपनुं वर्णन	****	इ	1
	रे रा	स कटपनुं वर्णन्	•••	इ	
	र्दुं १२ पर्	षिणा कटपुनुं वर्णन		হ	
) ;	१३ कर्	नु जम मुनिजनां दृष्टांत	****	३	
1 (रें। रेंध वन	जिम मुनिर्जनां दृष्टांत	****	В	
. (ूष्ट्री १५ कर्	तु प्राक्ष मुनिजनां दृष्टांत		ध	:
		या कारणथी मुनिचेने चतु	_		
	9)4	रांत पण रहेबुं कक्ष्ये ? तेर्नु	विणन ल	B	
. (र्भ १ ७ छ।	विधर्नुं दृष्टांत	••••	ષ	!
Jain Education Int	ernational			For Private	& P

ऋांक	. विषय.		पृष्ठ-
	कट्पसूत्रनुं माहात्म्य	••••	પ
१ ए	कब्पसूत्रनी रचना कोणे स्त्रने		
	केवी रीते करी ? तेनुं वर्णन		ξ
र्∘	चौद पूर्वोनुं मान तथा तेनां नामो		દ્
२१	कहपसूत्र वांचवाना कोए अधिकारी छै है?	तथा ते	
	सजा सन्मुख क्यारथी वंचावुं शरु अयुं?	तेनुंवए	ग्न ६
হহ	नागकेतुनी कथा · · ·	••••	६
	न्नग शब्दना ऋर्थो ू	****	ַ
হয়	कह्याणको संबंधी चर्चा	****	U
इ ए	श्रीवीर प्रजुनुं देवानंदानी कुक्तिमां श्रुवतः	रूबुं	₹ □
38	चौट स्वप्नो जोवाथी देवानंदाना हर्षेनुं वा	ग्रेन	₹ =
3 3	देवानंदानुं क्षत्रदत्त ब्राह्मण पासे आववुं	••••	₹▫
হচ	क्रपन्नदत्त ब्राह्मणे तेणीने कहेलो स्वप्नविक	वार	११
១៣	बत्रीश लक्ष्णोनुं वर्णन		3.3
₹▫	ळांगोपांगनां लक्त्राोनुं वर्षेन	****	११
₹१	सामुद्भिक वर्णन	****	११
३घ	मानोन्माननुं वर्णन	****	?? ?? ?? ??
३३	कार्तिक शेवनी कथा	••••	- 53
	इंद्रनुं वर्णन	****	१३
	, –		

श्रनुक्रम⁻ |एका•

Q II

वृष्ठ.			विषय.	आंक.	पृष्ठ.		षय.	विषय		म्रांक.
– হয়		 न	- पर्जसंहरण संबंधी क्रान	101	१५	****			शकस्तवनो अर्थ	
য়৸	••••	वर्धन	राणीना शयनग्रहनुं व	ં પથ િ	१६	••••			मेघकुमारनी कश	३६
२ ५		***	स्वमनुं वर्णन				याख्यानं.	द्वेतीयं व्या	द्धि	
इए	****		स्वमनुं वर्णन		१६			ालु ऋर्घ	शकस्तवनो चालु	₹9
રૂપ	••••	****	स्वमनुं वर्णन	५७ वि	₹ 9	वर्णन			तीर्थंकरो कया इ	
इए	••••		देवीना स्वप्ननुं वर्णन	ં પણ સ	१9	****	न	बेरानुं वर्णन	''जपसर्ग" अडेर	३ए
•	••••			i	१ 0	••••	. ,	गंत	गोशालानुं वृत्तांत	Яo
		यानं.	तृतीयं व्याख्य	!	१ 0	****	र्षन	प्रहेरानुं वर्णन	"गर्जहरण" ऋदे	ধ্র
23		****	ताना स्वप्ननुं वर् षन	६० पु	१ 0				"स्त्री तीर्थंकर"	
₹ ঢ	****	***	स्वप्तनुं वर्णन		१ ए	•••	रानुं वर्णन	र्षदा" ऋडेराः	"अजावित पर्षद	임족
श्	****	****	स्वप्तनुं वर्णन		र्णन १ए	रानुं वर्ण	नवुं" ए ऋहे	रकंकामां जर्बु	"कृष्णनुं स्त्रमरवं	ยย
३०	****	****	ा स्वमनुं वर्णन						''चंंघ सूर्यनुं मूखि	
₹	••••	••••	ा स्वप्तनुं वर्णन						"हरिवंश कुलनी	
₹१	****		तेवरना स्वमनुं वर्णन	3		-	_		"चमरें जोत्पात"	
₹ ?		••••	मुजना स्वप्ननुं वर्णन	1			-	_	"एकसो ने आठ	
३३			ानना स्त्रप्तनुं वर्णन			-		_	अहेरानुं वर्णन	
₹ 8	••••		ाना स्वप्ननं वर्णन	1	_ ,				" ऋसंयतिनी पू र	
₹ ध			खाना स्वप्ननुं वर्णन		-				वीर प्रजुना सत्ता	
रध ३५	****	^	खाना स्वमुनु वर्षन राखीनी वाखीनुं वर्षन				=		गर बदलाववाः गर्ज बदलाववाः	
र५ ३६	****	^	राखाना वालान व्यक्त राजाए कहेलो स्वप्नोन	! .			•		_	
	****	_	` <u>-</u>	1 -	-	****	• ••••	<u></u>	खो हुकम) 13 PS -
₹5	****	हात्सव	राजाए करावेखो महो •९-			****			हरि णैगमेषीनुं वा	
₹छ	****	****	नुं वर्णन	ं ध३ सु	१३	****	गा	रवाना जागा	गर्ज संहरण करव	ए३ ३

कस्प० सुबो०

u 8 u

्र <u>यां</u> क	. विषय.	पृष्ठ.	त्रांक. विषय.
ВВ	सिद्धार्थ राजाना मर्दन, स्नान, अखंकार आर-		ए प्रजुना जन्मोत्सव माटे इंजादिक देवोनुं आववुं
	दिकनुं वर्णन	३ए	ए१ प्रजुए जमणा पगना ऋंगुठाश्री कंपावेसो मेरु
ી વ્રષ	सिद्धार्थ राजानुं स्नानगृहमांथी नीकलवुं	셤ㅁ	ए३ सिड्यार्थ राजाए करेखो प्रजुनो जन्मोत्सव
38	कनातनुं वर्णन	ধ্র	एध मातिपताए प्रभुने करावेखुं सूर्थ चंद्रनुं दर्शन
	स्वमपानकोनुं वर्षन	ধঽ	एए प्रजुनां त्रण नामनुं वर्णन
l .	पांचसें सुजरोनुं दृष्टांत	ยย	ए६ प्रजुनी आमलकी कीडानुंवर्णन
	स्वप्तपानकोए राजाने दीधेला आशीर्वाद	ยย	एउ मिथ्यादृष्टि देवनुं वृत्तांत
	चतुर्थं व्याख्यानं.		ए ं प्रजुनुं पा ठशाखामां त्र्यायमन
	स्वप्रपाठकोए स्वप्नोनुं करेखुं वर्णन	धर	एए ब्राह्मणना रूपे इंड नुं त्यां आवर्चुं
B .	जुंजक देवोए सिद्धार्थ राजाना घरमां जरेखां		१०० प्रजुनो खग्नमहोत्सव
•	धतनुं वर्णन	88	१०१ प्रजुनो दीका खेवानो अजिपाय
1	चार प्रकारनां धननुं वर्णन	님	१०२ नंदिवर्धनना आग्रहश्री प्रजुतुं वे वर्ष सुधी
	गर्जमां रहेखा वीर प्रजुनो दयायुक्त विचार	₽Œ	
	प्रजु गर्जमां स्थिर रहेवाथी त्रिशला राणीने	-	१०३ लोकांतिक देवोनुं आगमन
	थयेलो शोक	प्रत	
	सिद्धार्थ राजाना शोकातुर जुवननुं वर्षन	ए १	
	गर्जना कंपनथी त्रिशाखा राणीने थयेखो हर्ष	५१	१ = ६ नगरनी स्त्रीचं नुं वर्णन
	गर्जपोषणना जपायो	ν ξ	
1	चोवीशे तीर्थंकरोना गर्जकालनुं प्रमाण	પેરૂ	12.0 422 41.441 // //
•	वीर प्रजुनो जन्म	-	१०० प्रजुए सहन करेखा जपसर्गो
	पंचमं ट्याख्यानं	`-	१०ए गोवालीये करेलो प्रजुने जपसर्ग
	_ ` ^	11:1	११० प्रजुनुं मोराक सन्निवेशमां आवतुं
ं एि≎	उपन्न दिवकुमारिकार्जनुं वर्णन	५४	ि ११० अधि बारास वास्त्रसम्म ज्यान्त्र

णिका-

वृष्ठ.

५५

६ ३

६ध ६ध ६५

६६ ६७

> ६७ ६७

ainelibrary.org

ऋांक.	विषय.		पृष्ठ.	त्रांक.	विषय.		वृष्ठ
१११ प्रजु	र खीधेखा पांच ऋजियहो	***	६ए		सप्तमं व्याख्या	नं.	
	ष्य वस्त्र खेनार बाह्मण्तुं व िर्मार्थ	रृत्तांत	···· a	1	(पार्श्व प्रजुनुं चि	रेत्र)	
_	(िकवेत्तानुं वर्णन <i></i> पाणि यक्तनुं वृत्तांत तथा	 ਤੇਜ਼ੇ ਕ	9°	1 .	् गुनोजन्म	••••	एः
	पाणि यद्नु वृत्तात तथा ने जपसर्गों		रक्षा 9१	१३१ कमञ्जा	पसनुं वृत्तांत	****	ણ
. •	ल निमित्तिश्चानुं वृत्तांत		93	_	ए लीघेली दीका ेे	····	ए।
११६ छाह	दक निमित्तित्रानुं वृत्तांत	••••	वश		ए करेखो प्रजुने जप स जा परिवारनुं वर् <mark>ष</mark> न		ըր
	कौशिकनुं वृत्तांत	•••	वश		नेमिनाथ प्रजुनुं ^द	_	****
_	ट्र देवे करेखो प्रञ्जने चपसर्ग		··· 33	_	पानगाय अग्रुगु प्रजुनो जन्म	•	DPS
		••••		1 20	त्रञ्जन। जन्म त्रञ्जुए वगामेलो शंख		एष्ट
	ग़लानुं वृत्तांत न देवे करेला प्रजुने छपसगो	 F	93	i	ख वगामवाश्री श्री		•
	, ५५ क्या मञ्जूष ५ क्या त्रवालानुं वृत्तांत	••••	30	विचारो			ლვ
११३ प्रजु	ो थयेखुं केयलकान	••••	o?	१३० सत्यनामा कोशेष	ा ऋादिके प्रजुना विव 	•	
	यस्वाद	••••	চহ	१३ए नेमिनाथ	प्रजुना विवाहनुं वर्णन		ᲓᲔ ᲓᲔ
	र्गुं मोक्त्गमन 		00	१४० नेमिनाथ	प्रजुए विवाह नहीं		,
_	ता मोक्ष्यी गौतम स्वामीनो स्थित सरोप्यक्तं व्यक्त		or	् पाठा पाट		****	१००
-	खीना महोत्सवनुं चालु अहं गाञी प्रहोनां नाम			i	नो वैराग्य प्रजुनुं दीक्षाप्रहल	••••	१०० १०१
	ाशा श्रहाना नाम ग परिवारनुं वर्णन	••••			वृत्तांत	****	१०६ १०६
					•		•

कख्प० सुबो० ॥ य ॥

ऋांक .	विषय.		पृष्ठ.	आंक.		<u>િ</u>	षय.			पृष्ठ,
१४४ नेमि	नाश्र प्रञ्जना परिवारनुं वर्णन	***	१०२			श्रष्टम्	ट्या ख्या	नं.		
	ताथ प्रञुतुं मोक्तगमन 🗼 ⋯		१०३	1	(;	स्थविराव	बिल चि	रेत्र)	ı	İ
१४६ तीयं	करोना क्रांतरा		१७३	1	् गण थवानुं			•	••••	ररध
	(क्षप्रदेव प्रजुतुं चरिः				सुधर्मास्वार्म					११५
9	। प्रजुनो जन्म	••••	१०५		जुनगरनाः जंब्र्स्वामीनुं					११ए
	वेयाचेनुं वृत्तांत		१०५	\$63	जङ्गानुस्याः जङ्गानुस्याः					
ľ	ता नगरीनी स्थापना 🚬		१०६	989	स्यूखन्नइजी	ा अपा तंबन्नांत		د <i>ا</i> ن کا کا		१ १9
•	दिव प्रजुए चलावेलो लोकव्यव	•	१०६	280	ऋार्यसुहस्ति	उट [ः] तथा ऋ	 र्यमहाशि	रिजीनं	वसांत	
	ा पुत्रोनां नामो		វុធប	33 €	वैशेषिक मत	त्या अ स्तिस्थाप	स्तर्यस्य सा			१इ़□
	द्व प्रजुए लीधेली दीका		\$ ¤ए	\$80	प्रिययंथ मह					रघर
	विनमिनुं वृत्तांत		\$ □ कि	1	वज्रस्वामीज	•	-			
	सकुमारनुं वृत्तांत		\$ \$ ¤		नवमं				_	
-	थये छुं केवल ज्ञान		111	1	_		•	पा। आ	-	
	वा मातानुं वृत्तांत				पर्युषणानो			****		रश्
	देव प्रजुनो परिवार		११६	1	साधुर्जना ३	_		•••		१२०
	देव प्रजुनुं मोक्ष्णमन			1	टीकाकारनी		••••	****		१ ४१
१५ए देवोर	र करेखो प्रञ्जनो निर्वाण महोत	सव	११३	\$ 98	शुद्धिपत्रक	••••	****	****	4440	१ध३

इति श्रवुक्रमणिका समाप्त.



श्रनुक्रम-णिका₊

॥ य ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ कल्पसूत्र सुबोधिकानुं गुजराती भाषांतर ॥

टीकाकार श्रीविनयविजयजी महाराज मंग खाचरण करें हे.

परम कछाणने करनारा श्रीजगदीश्वर श्रईत प्रजुने प्रणाम करी हुं बाल श्रण्यासीठेने उपकार करनारी सुबोधिका नामे कहवसूत्रनी टीका करं हुं. १ श्रा कहवसूत्र उपर निपुण बुद्धिवाला पुरुषोने गम्य एवी जो के घणी टीकार्ड हे, तथापि श्रहपबुद्धिवाला पुरुषोने बोध थाय तेवा हेतुथी श्रा टीका करवा विषे मारो प्रयत्न सफल हे. १ जोके सूर्यनी घणी कांतिर्ड सर्व लोकोने वस्तुनो बोध करनारी होय हे, तथापि त्रूमिएह (जोंयरा)मां रहेला माणसोने तो तत्काल दीपिकाज उपकार करे है. ३ श्रा टीकामां विशेष श्रर्थ कर्या नथी, श्रुक्तिर्ड बताबी नथी, श्रने पद्यपांमित्र दर्शाव्यं नथी पण मात्र बाल बुद्धि श्रज्यासीठेने बोध थवाने श्रर्थनी व्याख्याज श्रापेली हे. ४ जो के हुं श्रहपबुद्धिवालो थइ श्रा टीका रचुं हुं पण सत्पुरुषोने उपहास्य नहीं थाउं, कारण के ते सत्पुरुषो एवो उपविश्व करे हे के, "सर्व माणसोए कछाणमां यथाशक्ति यत्न करवो जोइए." ए

अहीं आ पूर्व काले नवकल्प विहार करवाना क्रम वहें प्राप्त ययेला योग्य केत्रमां अने सांप्रत काले परंपराथी गुरुए आदेश करेला केत्रमां चतुर्मास रहेला साधुर्व कल्याण निमित्ते आनंदपुरमां सजा समक्ष वांच्या पढ़ी संघनी समक्ष पांच दिवस अने नव क्षणे श्रीकल्पसूत्रने वांचे हे ते कल्पसूत्रमां कल्प शब्द वहें साधुर्वनो आचार कहेवाय हे. ते कल्प-आचारना दश जेद हे ते आ प्रमाणे:-१ आचेलक्य, १ औदिशक, ३ शब्यातर, ४ राजपिंम, ५ इतिकर्म, ६ वत, १ ज्येष्ठ, ए प्रतिक्रमण, ए मास कल्प, १० पर्युषणा. ते दश कल्पनी ज्याख्या आ प्रमाणे हे

कहपण

11 2 11

१ श्राचेलक्यः (श्राचेलकः)

जेने चेल एटले वस्र न होय ते अचेलक कहेवाय, ते अचेलकनो जाव ते आचेलक्य अर्थात् वस्न-रिहतपणुं. ते तीर्थंकरोने आश्रीने रहेलुं हे. तेमां पहेला अने हेला तीर्थंकरोने शक्रेंड लावी आपेला देवडूच्य वस्त्रनो अपगम थवाथी तेर्टने सर्वदा अचेलकत्व एटले वस्त्ररहितपणुं हे अने बीजा तीर्थंक-रोने तो सर्वदा सचेलकत्व एटले वस्त्रसहितपणुं हे. आ विषे किरणावली टीकाकारे जे चोवीश तीर्थं-करोने पण शक्तेंड आपेला देवडूच्य वस्त्रना अपगम थवाथी अचेलकपणुं कहां हे, ते शक जरेलुं हे.

साधुर्वने आश्रीने एटसे श्रिजतनाथ विगेरे बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थना साधु के जेर्ड सरल श्रने प्राक्त कहेवाय हे, तेर्डने घणा मूख्यवालां विविध रंगी बस्लोना छपजोगनी श्राक्ता होवाथी सचेलकपणुं हे श्रने वली केटलाएक श्वेतरंगी परिमाणवालां वस्रने धारण करनार होवाथी तेमने श्रचेलकपणुंज हे. श्रा प्रमाणे तेर्डने श्रा कल्प श्रनियतपणे रहेलो हे. जे श्रीक्रपण श्रने वीर प्रश्चनां तीर्थना यित्रं हे, तेर्ड सर्वे श्वेत श्रने परिमाणवालां जीर्ण वस्रने धरनारा होवाथी तेमने श्रचेलकपणुंज हे. श्रहीं शंका थाय हे के वस्रनो छपजोग हतां तेमने श्रचेलकपणुं केम कहेवाय ? तेनो प्रत्युत्तर श्रापे हे. जे जीर्ण वस्र होय ते तुष्ठ होवाथी तेर्डु वस्र हतां पण वस्ररहितपणुं कहेवाय हे, ते सर्व लोकोमां प्रसिद्ध हे. जेमके पोतीयां पहेरी नदीने छतरता लोको कहे हे के 'श्रमो नग्न थइने नदी छतरी गया' तेमज वस्र हतां पण लोको मेराइ श्रने धोवी विगेरेने कहे हे के 'श्रमोने सत्वर वस्र श्रापो, श्रमे नागा रहीए हीए.' श्रावी रीते साधुर्वने वस्रो हतां पण श्रचेलकपणुं जाणी लेडुं. इति प्रथम कह्य.

२ श्रौदेशिक कहप.

जहे सिख एटले औहे शिक कहप सर्थात् आधाकर्मिक साधु निमित्ते अशन, पान, खादिम, खादिम, वस्त्र, पात्र अने जपाश्रय विगेरे जे करेलुं होय, ते पहेला अने जेल्ला तीर्थंकरनां तीर्थमां एक साधुने, एक साधुना समुदायने, अथवा एक जपाश्रयने आश्रीने करेलुं होय ते सर्वे साधु विगेरेने कहपतुं नथी

सुबोण

11 3 1

स्रने बाबीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां तो जे साधु विगेरेने स्राश्रीने करेखुं होय ते तेनेज कल्पतुं नश्री स्रने बीजाने कल्पे हे एवी रीते बीजो स्रोहेशिक कल्प हे. २

३ शय्यातर कल्प.

त्रीजो कहप शय्यातर एटसे जे उपाश्रयनो स्वामी होय ते, तेनो पिंम जे १ अशन, १ पान, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ९ कांवल, ७ रजोहरण, ए सोय, १० अस्तरो, ११ नख तथा दांत सुधारवानुं अस्त्र अने ११ कर्णने सुधारवानुं साधन, ए बार प्रकारनो हे, ते वधा तीर्थं-करोनां तीर्थोमां सर्व साधुर्जने कल्पे नहीं, कारण के तथी अनेषणीय वस्तुनो प्रसंग, अने उपाश्रय मलवो दुर्लज थाय इत्यादि घणा दोष लागवानो संजव हे जो साधुर्ज वधी रात्रि जागे अने प्रातःकाले प्रतिक्रमण बीजे जइ करे तो ते मूल उपाश्रयनो स्वामी शय्यातर थतो नथी, अने जो साधुर्ज त्यां निद्धा करे अने प्रतिक्रमण बीजे हेकाणे करे तो ते बंनेना स्वामी शय्यातर थाय हे.

तेमज चारित्रनी इन्नावाला उपिंघ सिहत शिष्यने शय्यातरना घरनी तृण, मगल, जस (राख), मल्लक, पाटलो, बाजोठ, शय्या, संस्तारो श्रने लेप विगेरे वस्तुर्ठ ग्रहण करवी कल्पती नथी. ए त्रीजो शय्यातर कल्प जाणवो. ३

ध राजपिंम कटप.

राजिपंड एटखे सेनापित,पुरोहित,नगरशेठ,मंत्री खने सार्थवाह ए पांचेनी साथे राज्यनुं पाखन करनार मूर्धाजिषिक्त जे राजा तेनो पिंम जे ख्रशन, पान, खादिम, खादिम, वस्न, पात्र, कांवल ख्रने रजोहरण ए ख्राठ प्रकारनो कहेवाय हे. ते पहेला ख्रने हेल्ला तीर्थंकरोना साधु हैने राजा पासे जतां ख्रावतां सामंत विगेरेखी खाध्यायनो नाश खवानो संजव हे, वसी साधु हैना ख्रपशुकन गणाय तेथी शरीरने व्याधात खवानो संजव हे तेमज खाद्यनो लोज, लघुता ख्रने निंदा विगेरे दोष खवानो पण संजव हे, तेथी ते राजिपंकनो निषेध करेलो हे. बाबीश तीर्थंकरोना साधु हमेशां सरल खने प्राक्त हे तेथी तेमने छन

u र u

पर कहेला दोषनो खनाव हे मादे तेमने राजिपंत कहवे हे. खा चोथो राजिपंत कहव जाणवो. ध **५ कृतिकर्म क**द्ध्य.

कृतिकर्म एटे बंदना, ते वे प्रकारनी हे. अन्युत्थान अने द्वादशावर्त्त तं वंदना सर्व तीर्थंकरोनां तीर्थमां साधुर्जेए परस्पर दीकापर्यायथी करवी. साध्वी कदि चिरकालनी दीक्तित होय तोपण तेनाथी नवो दी कित साधु वंद्य हे, कारण के धर्म पुरुषप्रधान हे. ए पांचमो कृतिकर्म कल्प जाणवो. ए ६ व्रत कल्प.

व्रत एटले महावतो ते बावीश तीर्थंकरोना साधुर्वने चार होय हे, कारण के तेर्र एम जाणे हे के अपरियहीत एवी स्त्री साथे जोग यवानो असंजव हे तेथी स्त्री पण परियह हे एटखे परि-यहनुं पचस्काण करवाथी स्त्रीनुं पचस्काण यह चुक्युंज. पहेला अने वेल्ला तीर्थंकरोना साधुर्वने तो तेवा ज्ञाननो अजाव हे तेथी तेर्डने पांच महावतो हे. ए हहो वत कल्प. ६ उ ज्येष्ठ कल्प.

ज्येष्ठ एटले मोटानो कहप, अर्थात् वृद्ध अने लघुनो व्यवहार. तेमां पहेला अने वेल्ला तीर्थंकरोना साधुर्जने स्थापनाथी आरंजी दीकापर्याय गणाय हे अने बाकीना तीर्थंकरोना साधुर्जने अतिचार वगरनुं चारित्र होवाथी दीक्षाना दिवसधीज पिता अने पुत्र, माता अने डुहिता, राजा अने मंत्री, शेठ अने विणकपुत्र विगेरे जो साथे दी हा से तो ते छैए वृद्ध सप्पणे केम वर्त्तवुं? ते कहे हे. जो पिता विगेरे इक्को अने पुत्र विगेरे लघुउं षट्र जीवनिकाय, अध्ययन अने योगोद्धहन—योग वेहेवा विगेरे कि-याश्री जो साथे योग्यताने प्राप्त अया होय तो तेउने अनुक्रमधीज स्थापित करवा जो कि तेमां थोछुं अंतर होय तो जरा विलंबधी पण पिता विगेरेने प्रथम स्थापित करवा जो तेम न करे तो पिता विगेरेने इक्कपणाने लीधे पुत्रादिकनी उपर अप्रीति थाय. जो कि पुत्रादिक बुक्किवाला होय अने पि-अंतर होय तो जरा विलंबधी पण पिता विगेरेने प्रथम स्थापित करवा जो तेम न करे तो पिता 🖔 ॥ २॥ तादिक बुद्धिवगरना होय अने तेथी तेर्डमां मोद्धं श्रंतर (तफावत) होय तो ते वृद्ध पितादिकने आ

प्रमाणे प्रतिबोधवा— "हे महाजाग, तमारो पुत्र बुद्धिवान् छतां पण बीजा घणा साधुर्रधी खघु थइ है जहो खने तमारो पुत्र ज्येष्ठ वृद्ध गणाय तेमां तमारुं पण गौरव छे". था प्रमाणे विकृति करवाथी जो है ते पितादि खनुका खापे तो पुत्रादिने प्रथम स्थापवा, खने जो खनुका न खापे तो स्थापवा नहीं. ए है सातमो ज्येष्ठ कट्टप जाणवो. ९

७ प्रतिक्रमण कल्पः

श्रितचार लागे वा न लागे पण श्रीक्षपत श्रने वीर प्रजुना साधुर्गने बंने काल प्रतिक्रमण श्रवक्य करवुं जोइए, श्रने बाकीना तीर्थंकरोना मुनिर्जने दोष—श्रितचार लागे त्यारेज प्रतिक्रमण करवुं जोइ-ए, ते सिवाय नहीं तेमां पण मध्यम तीर्थंकरोना यतिर्जने कारण होय तोज दैवसिक (देवसी) श्रने रात्रिक (राइ) प्रतिक्रमण प्राये करीने करवां ते सिवाय बीजां पाक्तिक, चातुर्मासिक श्रने सांव-त्सरिक प्रतिक्रमण करवानी जरूर नथी एवी रीते श्राठमो प्रतिक्रमण कष्टप जाणवो. ए

ए मास कहर.

पहेला अने ढेल्ला तीर्यंकरोना मुनिउने मास कल्पनी मर्यादा नियमथी हे ते इकाल, अशक्ति अने रोग विगरे कारणो होय तो शहरना परामां, बीजा पामामां अने ते वसति बीजा खुणामां परा-वर्त्त-फेरवणी करीने पण सत्य करवी जोइए; परंतु शेष काले एक मासथी अधिक रहे हुं नहीं, कारण के तेथी प्रतिबंध, लघुता विगरे घणा दोष लागवानो संजव हे, पण मध्यम तीर्यंकरोना मुनिउ सरल अने प्राक्त होवाथी तेमनामां उपर कहेला दोषोनो अजाव हे तेथी तेउने मास कल्प नियमथी नथी. ते यतिउ तो पूर्व कोटि सुधी एक स्थले रहे हे अने कोइ कारणने लइने मासनी अंदर पण विहार करे है. एवी रीते आ नवमो मास कल्प जाणवो. ए

१० पर्युषणा कद्ध्यः

पर्युषणा एटले परि नामे समस्तपणे जषणा एटले रहेवुं, ते पर्युषणा कहेवाय. तेमां पर्युषणा शब्द

क्हपण

🦫 वडे करीने समस्तपणे रहेवुं ते श्रने वार्षिक पर्व बंने पण कहेवाय हे. तेमां ते वार्षिक पर्व जाड़पद मासनी शुक्क पंचमीए श्रने कासकस्रि थया पठी जाडपद शुक्क चतुर्थीएज थाय हे. समस्तपणाथी रहेवा-कर जे पर्युषणा कहर है ते वे प्रकारनो है. साखंबन अने निराखंबन तेमां जे निराखंबन एटखे कारण-ना ख्रजाववालो पर्युषणा कहप ते जधन्य उत्कृष्ट एवा वे जेदवालो हे. तेमां जधन्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमः णथी मांकीने कार्तिक चतुर्मासना प्रतिक्रमण सुधी सीतेर दिवसना परिमाणनो हे, छने जत्कृष्ट प-र्युषणा काल चार मासनो है. आ वे प्रकारनो निरालंबन पर्युषणा काल स्थविरक हिप्छनो है आने जि-नक द्विपर्जने तो एक निरालंबन चातुर्मासिकज कदृप हे. अर्थात् को इकारणने लइने सालंबन थाय. हवे जे केत्रमां मास कहर कयों होय, तेज केत्रमां चतुर्मास करवाथी श्रथवा चतुर्मास कर्या पठी मास कह्प करवाथी ह मासनो कह्प थाय ते पण स्थविरक हिपर्छनेज डिचत हे खने पांच पांच दिवसोनो वधा-रो करी यहस्थोने जणाववा न जणाववानो श्रधिकार विस्तारयी श्रहीं लख्यो नथी, कारण के संघनी श्रा-काथी ते विधि हाल उहेद यह गयो हे, तेमज यंथविस्तारना जयथी अन्ने कहेलो नथी. जो ते विषे विशेष जाणवुं होय तो कल्पकिरणावली विगेरे टीकार्डमां जोइ सेवुं. एवी रीते सर्व ठेकाणे जाणी सेवुं. एवी रीते जेनुं खरूप वर्णव्युं वे एवो पर्युषणा कल्प प्रथम अने चरम तीर्थंकरोनां तीर्थमां नियत वे अने बाकीना बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां अनियत हे, कारण के तेर्डना साधुर्ड तो दोषनो अजाव होय तो एक केत्रमां देश उणी पूर्व कोटि सुधी रहे हे, अने जो दोष जोवामां आवे तो एक मास कहप सुधी पण रहेता नश्री एवी रीते महाविदेह केत्रमां पण बावीश तीर्थंकरोनी जेम सर्व तीर्थंकरोना कटपनी व्य-वस्था जाणी खेवी. एवी रीते दशमो कल्प जाणवो ॥१०॥ उपर कहेला ए दश कल्पो श्रीक्षत्र प्रज तथा श्रीवर्क्षमान स्वामीनां तीथंमां नियत हे श्रने बीजा बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां श्रचेलक, श्रोहे-शिक, प्रतिक्रमण, राजपिंड, मास अने पर्शुषणा ए उ कह्पो अनियत हे. बाकीना शय्यातर, चतुर्वत, पुरुषज्येष्ठ, कृतिकर्म ए चार कह्यो नियतज हे. एवी रीते ते दश कह्योनो नियत अने अनियत वि-

जाग जाणवो. अहीं कोइ शंका करे के सर्वने साधवा योग्य मोक्तमार्ग एकज हे, तो तेमां पहेला, हे ले के ते जेद थवानुं कारण जीविवशेष हे, ते कहे हे-श्रीक्षण प्रजना तीर्थना जीवो सरल स्वजाबी अने जम हे, तेथी तेष्ठने धर्मनो बोध थवो छुर्लज हे, कारण के तेमनामां जडपणुं हे, अने श्रीवीर प्रजना तीर्थना जीवो (साधुष्ठ) वक्त अने जम हे, तेथी तेमने धर्मनुं पालन छुष्कर है, अने अजितनाथ विगेरे बावीश तीर्थंकरोना साधुष्ठने धर्मनो बोध अने तेनुं पालवुं आ बंने पण सुकर (सहेलां) हे, कारण के तेष्ठ सरल अने प्राक्त स्वजावी हे, तेथी तेमना आचारना बे जेद थया हे. अहीं तेना दृष्टांतो बतावे हे—

पहेला तीर्थंकरना केटलाएक मुनिन्नं बहारनी जूमिथी ग्रह पासे आव्या, लारे ग्रहए पून्तुं के, हे मुनिन्नं, तमो आटली बधी वेला क्यां रोकाया? मुनिन्नं कल्यं, हे लामी, अमो एक नृत्य करता नटने जोवामां रोकाया हता, लारे ग्रहए कह्यं के, नटना नृत्यने जोवं, ते साधुनंने कल्पे नहीं, त्यारे तेर्नेए (बहु साहं) एम कही ते वात अंगीकार करी. वली एक वलते तेज साधुनं चिरकाले जपाश्रयमां आव्या, त्यारे ग्रहए पण पूर्वनी जेम पून्तुं, एटले तेर्नं वोल्या के, हे प्रज्ञ, अमो एक नृत्य करती नटीने जोवाने जजा हता, लारे ग्रहमहाराज बोल्या, हे महाजाग, ते वलते में तमने नट जोवानो निषेध कर्यों हतो. ज्यारे नटनो निषेध ययो तो पन्नी नटी जोवानो निषेध यह चुक्योज. पन्नी तेर्नेए ग्रहने विकृति करी के, लामी, ए वात अमोए जाणी नहीं, हवेथी पुनः तेम नहीं करीए. अहीं ते प्रथम तीर्थंकरना साधुनं जक्त होवाथी नटनो निषेध करवाथी नटीनो निषेध यह चुक्यो एम तेर्नं जाणी शक्या नहीं अने क्र जु स्वजावी होवाथी तेमणे ग्रहने सरल जत्तर आपी दीधो. एवी रीते आ प्रथम दष्टांत जाणवो.

अहीं बीजो पण दृष्टांत है, कोइ कुंकण देशना विणके वृद्धावस्थामां दीक्ता लीधी हती. एक वखते ते विणक इर्यापिथकी कायोत्सर्ग करी चिरकाल रोकाइ रह्यो. ज्यारे कायोत्सर्ग पारी आव्यो एटले कस्प

11 8 11

गुरुए पूट्युं के, ब्राटलो बधो दीर्घ कालनो कायोत्सर्ग करी तें द्युं चिंतव्युं ? ते बोख्यो, खामी! जीवदया चिंतवी. गुरुए पूट्युं, शी रीते ? त्यारे तेणे कह्युं के, पूर्वे गृहस्थावस्थामां केत्रमां वृक्त उमेसी वावेसां घणां धान्य थयां हतां. हमणां मारा पुत्रो जो निश्चित थइने प्रथम वृक्तोने उमेसरो नहीं तो पठी धान्य नहीं थवाथी ते बीचारानुं छुं यहो ! आ प्रमाणे सरलपणाथी पोतानो अनिप्राय यथार्थपणे निवेदन कयों एटखे गुरुए कहां, "महाजाग, तें ए इष्ट ध्यान कर्यं, मुनिर्नने एम चिंतवबं अयुक्त हे." गुरुए आ प्रमाणे कहेवाथी ते शिष्ये मिथ्या जुष्कृत आप्युं. ए बीजो दृष्टांत. तेवी रीते श्रीवीर प्रजुना मुनिनं विषे बे दृष्टांतो हे. जेमके, केटलाएक वीर प्रजुना मुनिनं कोइ एक नटने नृत्य करतो जोइ गुरु पासे आदया त्यारे गुरुए पूट्युं अने पढ़ी नट जोवानो निषेध कयों. पुनः एक वार तेर्च कोइ नटीनुं नृत्य जोइने आव्या त्यारे गुरुए पूर्व्यु एटले तेर्च वक्रपणे जुदा जुदा उत्तर आपवा लाग्या. ज्यारे गुरुए चोकसपणे पूळ्यं त्यारे तेर्डएसोचे साचुं जणाव्युं पढी गुरुए ठपको आप्यो एटले तेर्च गुरुने सामो उपालंज करवा लाग्या के, ज्यारे तमोए अमने नट जोवानो निषेध कर्यों ते समये नटी जोवानो निषेध केम न कर्यों ? आ दोष तमारोज हे, अमो शुं जाणीए ?ए प्रथम दृष्टांत.

कोइ ट्यापारीनो पुत्र हतो. तेनो पिता तेने घणीवार एवी शिक्ता आपतो के, 'पिता विगेरे विडलोनी सामे बोल वुं नहीं.' पितानी आ शिक्ता तेणे वकताथी मनमां धारण करी राखी. एक वखते घरना सर्वे खजन बहार गया हता, ते लाग जोइ ते पुत्रे विचार्युं के, वारंवार शिक्ता आपनार पिताने आज हुं शिक्ता आपुं. आवुं चिंतवी ते कमाम बंध करी छांदर रह्यों. ज्यारे पिता विगेरे पाठा आव्या त्यारे कमाम ज्यामवाने घणा पोकार कर्या तोपण ते पुत्रे जवाव आप्यों नहीं तेमज कमाम ज्याख्यां नहीं. पठी पिता जिंत ठेलंगी एहमां पेठो एटले ते पुत्रने हसतो जोयों. ज्यारे जपालंग आप्यों एटले तेणे कर्युं के, तमेज शिखव्युं ठे के वृद्ध विन्तोंनी सामे उत्तर न आपवों आ बीजो हष्टांत श्र हवे अजित विगेरे बावीश तीर्थंकरोना सुनि इज्ज अने प्राङ्ग होय ठे तेनो हष्टांत आपे ठे जेम केटलाएक

सुबोव

n 8 n

अजितनाथ प्रजुना मुनिर्छ कोइ नटने जोइ चिरकाले आव्या. गुरुए पूर्ख एटले तेर्डए यथार्थ 🖫 कह्युं. पढ़ी गुरुए तेम करवाने निषेध कयों. कोइवार पाठा तेज मुनिर्च बहार गया, त्यां ते नटीने नृत्य करती जोइ प्राक्त होवाथी विचार करवा लाग्या के, आपणने ग्रुक्ष राग थवामां हेतुरूप जाणी नट जोवानुं निषेध्युं हे तो आ नटी तो स्त्री होवाने लीधे राग थवानुं अत्यंत कारण्रूप हे, तो तेथी तेनो सर्वथा निषेधज होवो जोइए. एवं विचारीने तेउंए नटीना नृत्यनुं व्यवलोकन कर्यं 🕏 नहीं. छहीं शंका करे के, त्यारे तो क्रजु छने प्राङ्ग एवा बावीश तीर्थंकरोना यतिर्वनेज धर्म हो. क्रुं अने जम एवा प्रथम तीर्थंकरना मुनिउने क्यांथी धर्म होय? कारण के तेउने बोध नथी, तेमां वहीं वक्र खने जम एवा श्रीवीर प्रजुना मुनिछने तो सर्वथा धर्मनोज खजाव हे, एवी शंका करवी नहीं, कारण के प्रथम तीर्थंकरना यति उने जो के जरुपणाने लीधे स्वलना पामवानो संजव हे तथापि 🧗 तिर्जेनो जाव शुक्र होवाथी धर्म प्राप्त थाय हे. तेमज वीर प्रजुना मुनिर्ज वक्र अने जड होवाथी ते. 🕏 मनो जाव ऋजु प्राइनी श्रपेक्ताए शुद्ध न होय तथापि सर्वथा धर्मज नथी एम कहेवाय नहीं, का-ि रण तेम कहेवामां महान् दोष लागे हे. ते विषे कह्युं हे के, धर्म नथी, सामायिक नथी खने वत नथी तेवा 🤻 पुरुषने श्रमणसंघे संघनी बहार करवो. १ जे पर्युषणा कटप नियतपणे रहेवानो सीतेर दिवसना प्र-माणनो कह्यो है, ते पण कारणने अनावेज जाणवो जो कोइ कारण होय तो चतुर्मासमां पण विहार करवो कर्ष्य है. ते विषे कह्युं हे के, " छशिव थाय तेम होय, छाहार मलतो न होय छने 🐉 राजाश्री के रोगश्री पराजव श्रतो होय, तो चतुर्मासमां पण वीजे विहार करवो कहेंपे हे. " स्थं निल स्थान सारुं न होय, उपाश्रयमां जीवांत बहु होय, कुंचवा चया होय, अग्नि लाग्यो होय अने सर्प रहेतो होय तो त्यांची बीजे विहार करवो कल्पे हे. १ वल्ली जो आवां कारणो होय तो चतुर्मास बीत्या पढ़ी पण रहेवुं कल्पे हे. ते छा प्रमाणे-''वर्षाद रहेतो न होय छने मार्ग कादवधी जरेलो होय तेथी कार्तिकी पूर्णिमानो स्रतिक्रम थाय तोपण उत्तम मुनिर्च रहे हे. " ३ वली उपर कहेला कहपः

141

अशिव विगेरे दोष न होय तोपण संयमनो निर्वाह करवाने केत्रना ग्रणोनी अन्वेषणा करवी. केत्र जर्बन्य, उत्कृष्ट अने मध्यम एवा त्रण प्रकारनुं हे. तेमां जे चार ग्रणोथी युक्त होय ते जघन्य क-है हेवाय. ते चार गुणो आ प्रमाणे वे-ज्यां विहारज्ञ्मि एटखे १ जिनप्रासाद होय, १ ज्यां स्थंनिल (वहीं जवानुं) गुऊ, निर्जीव स्रने कोइ जोवे नहीं तेवुं होय, ३ ज्यां खाध्याय- सक्षाय करवानी सूमि सु-लज एटले अस्वाध्यायश्री रहित होय, अने ४ ज्यां साधुर्तने आहार मलवो सुलज होय. जे तेर गु-णोथी युक्त होय ते जरकृष्ट कहेवाय. ते गुणो आ प्रमाणे हे- १ ज्यां घणो कादव न होय, १ ज्यां घणा संमूर्डिम जीवो उद्जव थता न होय, ३ ज्यां ठह्नानुं स्थान निर्दोष होय, ४ ज्यां रहेवानो उपाश्रय स्त्रीना संसर्ग विगेरेथी रहित होय, ए ज्यां गोरस घणो मखे तेम होय, ६ ज्यां खोकसमूह महान् अने जिंदिक होग, ७ ज्यांवैद्यो जिंदिक होग, ए ज्यां खीषधो सुलज होग, ए ज्यां यहस्थोनां घर कुटुं-बवालां अने धन धान्यादिकथी पूर्ण होय, १० ज्यां राजा जिस्क होय, ११ ज्यां ब्राह्मणादिकथी मुनि-र्वनुं अपमान न थतुं होय, १२ ज्यां जिक्ता स्हेलाइथी मलती होय, अने १३ ज्यां खाध्याय ग्रुऊ रीते यतो होय. ते तेर गुणोथी युक्त उत्कृष्ट केत्र हे. पूर्वे कहेला चार गुणोथी अधिक, पांचथी वधा गुणोए युक्त अने तेरमा गुण्थी ऊणुं एटसे बारमा गुण पर्यंत एवं मध्यम केत्र हे. तेथी प्रथम उत्कृष्टा केत्रमां, त्यां जो तेवुं न होय तो मध्यम केत्रमां,त्यां पण तेवुं न होय तो जघन्य केत्रमां श्रने हाखमां तो गुरुए श्रा-का करेला केत्रमां साधुरीए पर्श्वषणा कट्टप करवो. उपर दर्शावेलो आ दश प्रकारनो कट्टप जो दोषना अ-जावे कर्यों होय तो त्रीजा वैद्यना औषधनी जेम हितकारक थाय हे. ते विषे आ प्रमाणे कथा है-कोइ राजाए पोताना पुत्रने जविष्यमां रोग न थाय तेवी चिकित्सा करवाने त्रण वैद्योने बोलाव्या तेमां प्रथम वैद्य बोख्यो-मारुं श्रीषध जो रोग होय तो तेने हणे हे श्रने जो रोग न होय तो दोष प्र-कट करे हे. राजाए कह्युं, सुतेला सर्पने जहाडवा जेवा खावा खोषधर्थी सर्युं, वीजो वैद्य बोख्यो-मारुं श्रीषध जो रोग होय तो तेने हणे हे अने रोग न होय तो गुण के दोष करतुं नथी. राजाए

सुबो•

ા પા

कह्युं, अग्निमां होम्या जेवुं आवुं औषध शाकामनुं ? त्रीजो वैद्य वोट्यो-मारुं औषध जो शरीरे रोग होय तो तेने हुणे हे, अने जो रोग न होय तो शरीरमां सौंदर्य, वीर्य अने तुष्टि पुष्टि करे हे. राजाए कह्युं के आ औषध सारुं हे. तेवी रीते आ कह्य पण जो दोष होय तो दोषनो नाश करे हे अने दोषनो अजाव होय तो धर्मनुं पोषण करे हे तेथी ए प्राप्त थयेला पर्थेषणा पर्वमां मंगल निमित्त पांच दिवस सुधी कल्पसूत्र वांचवुं. जेम देवतार्जमां इंड, तारार्जमां चंड, न्यायने विषे प्रवीण पुरुषोमां राम, खरूपवंतमां काम, रूपवती स्त्रीर्जमां रंजा, वाजित्रोमां जंजा, इस्तिर्जमां ऐरावण. साहसिकमां रावण, बुद्धिमान्मां खत्रय कुमार, तीर्थीमां शत्रुंजय, गुणोमां विनय, धनुर्धारीमां अर्जुन, मंत्रोमां नवकार, छने वृक्तोमां छाम्रवृक्त है तेम ते कब्पसूत्र सर्व शास्त्रोमां शिरोमणिपणाने धारण करे है. ते विषे कह्युं है के, जेम मंत्रोमां परमेष्ठी मंत्र, तीर्थोमां शत्रुंजय, दानमां जीवदया, गुणोमां विनय, व्रतोमां ब्रह्मचर्य, नियममां संतोष, तपमां शमता अने तत्वमां सम्ग्यदर्शन हे तेम श्री सर्वे इ प्रजुए कहेलां सर्व पर्वोमां श्रीवार्षिक पर्व (पर्युषणा) उत्कृष्ट हे. १ वसी कत्तुं हे के, अईंतथी बीजो कोइ देव नथी, मुक्तिथी बीजुं कोइ पद नथी, श्रीशत्रुंजयथी बीजुं तीर्थ नथी श्रने श्रीकटपसूत्रथी बीजुं कोइ शास्त्र नथी.२ आ कल्पसूत्र साकात् कल्पवृक्तज हे. ते आनुपूर्वीना क्रम वगर कहें हुं हे, तेथी तेमां कहे हुं श्रीवीर प्रजुतुं चरित्र तेतुं बीज हे, श्रीपार्श्वनायतुं चरित्र श्रंकुर हे, श्रीनेमिचरित्र स्कंध (थमीछा) हे, श्री क्षतचरित्र शाखाउंनो समूह हे, स्थविरावलीरूप पुष्पो हे, सामाचारीनं क्ञान ते सुगंध हे अने मोक्तप्राप्ति ए कल्पसूत्ररूपी कल्पवृक्तनुं फल हे. वली कह्युं हे के, "वांच-वाची, तेमां सहाय करवाची अने सर्वे अक्रों अवण करवाची विधिपूर्वक आराघें छा कल्पसूत्र आठ जवनी अंदर मोक्तदायक थाय हे." १ जेर्च श्रीजिनशासन प्रजावनी श्रने पूजामां परायण येह एकाय चित्तथी आ कब्पसूत्रने एकवीश वार सांजवे वे ते हे गौतम, आ संसारसागरने तरी जाय है. २ छा प्रमाणे श्री कटपसूत्रनो महिमा सांजली कष्टोथी **छने धननो व्यय** करवाथी साध्य एवां

क हप 0

। ६।

तपस्या, पूजा ख्रने प्रजावना विगेरे धर्मनां कार्योमां आक्षस्य करवुंन जोइए, कारण के उपर कहेली तपस्यादि सर्व सामग्रीए युक्त एवुंज कल्पसूत्रनुं अवण वांठित फलने आपनारुं हे. जेम बीज पण जो तेनी साथे वृष्टि, वायु विगेरेनी सामग्री होय तोज फलनी सिक्ति करवामां समर्थ थाय हे, ते सिवाय यतुंनथी. एवी रीते आ श्रीकल्पसूत्र पण देव गुरुनी पूजा, प्रजावना ख्रने साधर्मिकनी जिक्त प्रमुख सामग्री साथे अवण करवाथीज यथार्थ फलना हेतुरूप थाय हे. नहीं तो " सर्व जिनवरोमां श्रेष्ट एवा श्रीवर्क्तमान खामीने करेलो एक पण नमस्कार पुरुष श्रथवा स्त्रीने आ संसारसागरमांथी तारे हे." आवुं वचन सांजली प्रयासथी साध्य एवा कल्पसूत्रना श्रवणमां पण आलस्य थइ जाय.

हवे पंचकर्ता पुरुषना विश्वास उपरथी तेनां वचननो विश्वास आवे एवो नियम हे तेथी आ कहप-सूत्रकर्त्ताने अहीं जणाववा जोइए. ते चौद पूर्वने जाणनारा युगप्रधान श्रीजङ्गबाहु स्वामी हे, तिर्जेए दशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययनपणायी प्रसिद्ध प्रलाख्यानप्रवाद नामना नवमा पूर्वमांधी जिऊार करी श्रा कल्पसूत्र रचेबुं ठे. ते चौद पूर्वोतुं प्रमाण श्रा प्रमाणे ठे−प्रथम पूर्व एक हस्तिना प्रमा∙ णवाला मषीना पुंजश्री लखाय तेवुं हे. बीजुं पूर्व वे इस्तिना प्रमाणना मषीना ढगलाथी लखाय तेवुं वे. त्री जुं चार हस्तिप्रमाण मषीना पुंजथी लखाय तेवुं वे. चोथुं श्राव हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं हे. पांचमुं सोल हस्तिप्रमाण मषीपुंजधी लखाय तेवुं हे. हिं बत्रीश हस्तिप्रमाण मषीपुं-जथी खखाय तेवुं हे. सातमुं चौसह हस्तिप्रनाण मधीपुंजथी खखाय तेवुं हे. आहमुं बसो ने श्रद्धावीश हि स्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं हे. नवमुं बसो ने हप्पन ह स्तिप्रमाणनुं हे.दशमुं पांचसो बार हस्ति-र्जना प्रमाणनुं हे. अग्यारमुं एक हजार ने चोवीश हस्तिर्जना प्रमाणनुं हे. बारमुं वे हजार ने अमतासीश हस्तिर्रना प्रमाणनुं हे. तेरमुं चार हजार ने हम्नुं हस्तिर्रना प्रमाणनुं हे. चौदमुं आह हजार एक सो ने बाणुं हस्तिनेना प्रमाणनुं हे. एकंदर सर्वे मही चौद पूर्वो सोख इजार त्रणसो ने ज्याशी हस्तिनेना

सुबो०

11 & 11

प्रमाणवाला मधीपुंजोश्री लखी शकाय तेटलां हे. तेनी स्थापनानुं यंत्र छा प्रमाणे हे, तेथी ए महापु-रुषोए रचित होवाथी मानवा योग्य हे छने तेमां गंजीर छार्थ रहेलो हे.

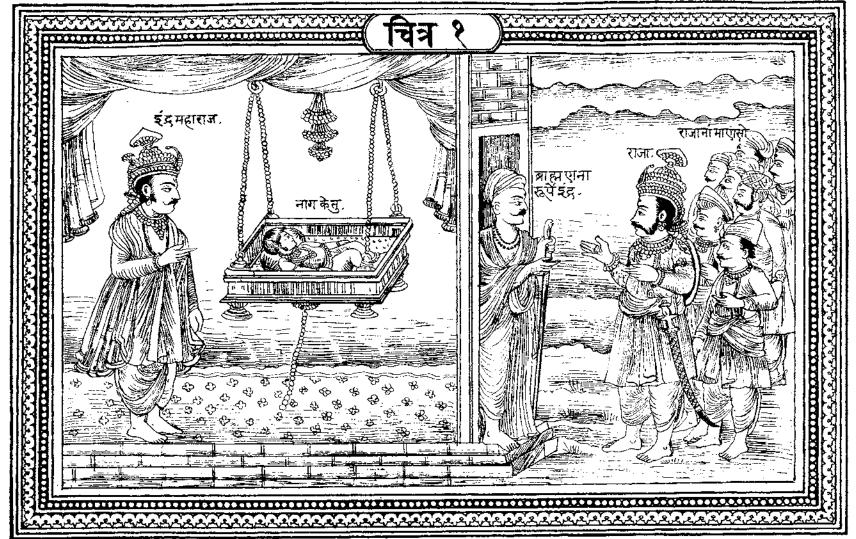
कह्युं हे के " जो सर्व नदीर्जनी रेती एकठी करीए अने सर्व समुझोनुं जल एकत्र करीए तेर्जधी अनंतगणो एक सूत्रनो अर्थ थाय हे. " १ मुखमां सहस्र जिह्ना होय अने जो हृदयमां केवलङ्गान होय तोपण मनुष्योधी छा कहपसूत्रनुं माहात्म्य कही शकाय तेम नथी १ ते कहपसूत्रने वांचवामां छने सांजलवामां मुख्य रीते साधु अने साध्वीं अधिकारी है. तेमां पण कालथी रात्रिने विषे कालगणनादि विधिने करनारा साधुर्रने वाचन स्थने श्रवण बंने योग्य हे स्थने साध्वीर्टने तो निशीय चूर्णी विगेरेमां कहेला विधि वडे दिवसे पण्योग्य हे.श्रीवीर प्रजुना निर्वाण पही नवसो ने एंशी वर्ष श्रतिकम श्रतां बीजा मत प्रमाणे नवसो ने त्राणुं वर्ष ऋतिक्रम थतां आनंदपुरमां पुत्रना मृत्युथी डुःखी थयेला धुवसेन राजाना मनने समाधान करवाने छा कल्पसूत्र मोटा महोत्सव साथे सजानी समक् वांचवा छारं रुंधुं हतुं,त्यार-थी मांकीने चतुर्विध संघ तेना श्रवणनो अधिकारी थयो हे पण वांचवाने अधिकारी तो मात्रयोग वेहेनार साधु हे. आ वार्षिक पर्वमां कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम आ पांच कार्य पण अवस्य करवा योग्य हे. ते आ प्रमाणे-पहेलुं कार्य चैलपरिपाटी एटले प्रत्येक चैत्ये वंदना अर्थे फरवुं,बीजुं कार्य सर्व साधुर्जने वंद-ना करवी, त्रीजुं कार्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करवुं,चोथुं कार्य परस्पर साधर्मी जाइडेने खमाववुं अने पांचमुं कार्य अष्टम तप करवुं, ए पांच कार्यो पण कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम इन्नित पदार्थने आप-नारां हे, तेमज अवस्य कर्त्तह्य हे, वसी श्रीजिन जगवंते ते करवानी आज्ञा करी हे एम जाएवुं. ते-मां जे अठम तप हे ते त्रण छपवासथी बने हे, ते तप महा फलनुं कारण, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप त्रण रत्नने छापनार, त्रण शख्यने जन्मूखन करनार, त्रण जन्मने पवित्र करनार, मन, वचन छने कायाना दोषने शोषण करनार अने त्रण जगत्मां श्रेष्ठ पदने पमामनार हे तेथी मोक्तपदना अजिलाषी एवा जविप्राणीउंए ते छष्टम तप छवस्य करवा योग्य हे.ते उपर नागकेतुनो दृष्टांत हेः—चंडकांता नामे नगरी कहपण

11 9 11

हती, तेमां विजयसेन नामे राजा हतो. ते नगरीमां श्रीकांत नामे एक व्यापारी रहेतो हतो, तेने श्रीसखी नामे स्त्री हती. ते स्त्रीनी बहु प्रार्थनाथी एक पुत्रनो प्रसव थयो हतो. ते पुत्र बासक हतो तेवामां पर्युषणा पर्व नजीक श्राव्युं ते वखते तेना कुटुंबमां अष्टम तपनी वार्ता यती हती, ते सांजली जातिसरण ययुं अने स्तनपान करनारा पण ते बालके अष्टम तप कर्युं. ज्यारे अष्टम तप कर्युं एटखे स्तनपानने नहीं करता ते बालकने वासी थयेला मालतीना पुष्पनी जेम ग्लानि पामेलो जोइ मा-तापिता अनेक उपाय करवा लाग्यां अनुक्रमे ते बालक मूर्जी पाम्यो एटखे तेने मृत्यु पामेलो जाणी ते-नां खजन, सगां, कुटुंबीर्टए तेने जूमि उपर नाख्यो, तेवामां राजा विजयसेने ते पुत्रने स्थने तेनाज इःखर्थी तेना पिताने मृत्यु पामेला जाणी तेनुं इब्य यहण करवा सुजटोने मोकखाः स्त्रा तरफ धरणें-डनुं आसन ते बालकना अष्टम तपना प्रजावधी कंपित थयुं. तस्काल तेनुं वृत्तांत जाणी लइ जूमि उपर पडेला ते बालकने श्रमृतना ढांटाची श्राश्वासन करी ब्राह्मणनुं रूप लइ इव्यने यहण करता ते रा-जाना सुप्रटोने घटकाव्याः ते सांप्रही राजा पण सत्वर त्यां घ्राव्यो अने कहां, हे ब्राह्मण, जे घ्रपुत्र मृत्यु पामे तेना इब्यनुं यहण त्रमे करीए डीए एपरंपरात्री हे, तो ते तुं केम ब्राटकावे हे ? ब्राह्मण-रूपी धरऐंड बोख्यो, राजन्,श्रानो पुत्र जीवे हे. ते सांजलतांज राजा प्रमुख बोखी उठ्या के, ते केवी रीते जीवे हे छने क्यां हे ? पही तेणे जूमिमांथी साकात् निधिनी जेम ते बालकने जीवतो बताव्यो सर्वे विस्मय पामी पूठवा लाग्या के,तमे कोण हो ? श्रने श्रा शुं? त्यारे धरणेंद्र बोख्यो-हुं धरणेंद्र नामे नागराज हुं, आ बालके अष्टम तप कर्युं हतुं,तेथी ए महात्मानी सहाय करवाने हुं आवेलो हुं. राजा प्रमुखे कह्युं, खामी, मात्र जन्म पामतावेंतज तेणे अष्टम तप शी रीते कर्युं ? धरणेंद्र बोख्यों, राजन्, आ बालक पूर्वज्ञवे कोइ विएकपुत्र हतो, बाख्यवयमांज तेनी माता मृत्यु पामी हती, तेने एक अपर माता हती, ते तेने अति पीमा आपती हती. तेथी कंटाबी तेणे पोताना मित्रने ते अपर मातानुं डुःख जणाव्युं. मित्रे तेने एवो उपदेश कर्यों के, तें पूर्वजवे तप कर्युं नथी, तेथीज आवोपराजव पामे हे ते पही ते

सुबो∘

11 8 11



पा.७

यथाशक्ति तप करवाने तैयार थयो एक वखते 'हुं श्रावता पर्युषणा पर्वमां श्रष्टम तप करीश' एवो मनमां निश्चय करी ते तृणनी छुंपकीमां सुइ गयो इतो. ते श्रवसर मेखवी तेनी अपर माताए नजीक रहेला अग्निनो एक तएको तेमां नारूयो. एटले ते छुपनी बली जतां साथे ते पण बक्षीने मृत्यु पाम्योः छष्टम तपना ध्यानथी ते छा श्रीकांत श्रेष्ठीनो पुत्र ययो हे. तेथी करीने एणे पूर्वजवे चिंतवेद्धं श्रष्टम तप हमणां वाद्यवयमां कर्युं हे. श्रा महापुरुष बचुकर्मी होइ श्रा जवमांज मुक्तिगामी थहो. तेथी ते यत्नथी पालन करवा योग्य हे. एथी तमने मोटो छपकार थहो. आ प्रमाणे कही धरणेंद्र तेना कंठमां पोतानो हार नाखी खस्थाने चाख्यो गयो. पढ़ी खजनोए श्रावी श्रीकांत शेठनुं मृतकार्य-उत्तरकार्यु कर्युं श्रने तेना पुत्रनुं नागकेतु एवुं नाम पाड्यं. श्चनुक्रमे ते बाढ्यवयथी जितें डिय श्चने परम श्रावक थयो. एक वखते विजयसेन राजाए कोइ चोर न हतो ते वतां तेने चोरनुं कखंक खगाफी मारी नाख्यो, आधी ते व्यंतर थयो. ते व्यंतरे बधा नगरनो विघात करवाने एक मोटी शिला रची वली राजाने पगना प्रहारथी रुधिरनुं वमन करावी सिंहासन उपरथी पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो. श्रा जोइ नागकेतुए विचार्युं के, हुं जीवतां श्रा संघ तथा प्रासादनो विनाश थाय ते केम जोयुं जाय ? आवुं विचारी प्रासादना शिखर उपर चनी तेणे ते शिखाने हाथमां धरी राखी. ते पठी ते व्यंतर पण तेना तपनी शक्ति सहन करी शक्यो नहीं एटेंखे ते शिखाने संद्वारी नागकेतुने नमी पड्यो.तेना वचनथी राजाने पण उपद्रव रहित कर्यों एक वखते ते नागकेतु जिनेंद्रपूजा करतो इतो तेवामां पुष्पनी अंदर रहेखो सर्प तेने मध्यो, तथापिते अव्ययपणे जावना-रूढ थयो तेथी केवलकानने प्राप्त थयो पठी शासनदेवताए तेने मुनिनो वेष अर्पण कर्यो अने ते चिरकाल विहार करवा लाग्यो. आ प्रमाणे नागकेतुनी कथा सांजली बीजार्डए पण अष्टम तप

करवामां यत्न करवो जोइए. इति नागकेतु कथा. इवे श्राकटपसूत्रमां त्रणवाबत मुख्यपणे वांचवानी हे.ते विषे पुरिमचरिमा० ए गाथा हे तेनी ज्यास्या कल्पण

អូច (

श्री श्रा प्रमाणे ने-पुरिमचरिमाणित एटखे श्रीक्षज अने कीर प्रजुनो श्रा कहण एटखेश्राचार ने के, वृष्टि थार्न के न थार्न पण श्रवस्य करीने पर्युषणा पर्व करतुं. नपलक्षणथी जाणी खेतुं के ते पर्युषणा पर्वमां कहणसूत्र पण वांचतुं. एक तो ए श्राचार ने श्रने बीजुं ते वर्क्षमानतीर्थमां मंगलना कारणरूप ने कित कित शंका थाय के, श्रीवर्क्षमानतीर्थमां शामाटे कह्युं? तो कहे ने के, जे कारण माटे श्राहीं श्री जिन जगवंतनां चरित्रों कहेलां ने, तेमज गणधरादि स्थविरावलीनां चरित्रों कहेलां ने, वली ते सामा- चारी कहेवाय ने तेमां प्रथम अधिकारमां सर्व जिनचरित्रोमां नजीक जपकारीपणाने लीधे प्रथम श्रीवीर प्रजुनुं चरित्र वर्णन करतां श्रीजड्बाहु स्थामी जघन्य तथा मध्यम वाचनारूप प्रथम सूत्र रचे ने

तेणं कार्बेणं ए वाक्यथी ते परिनिद्धएजयर्वे त्यांसुधी संबंध हे. तेणं कार्बेणं केतां ते कार्बे एटेंसे व्यवस-र्षिणी कालना चोथा खारा पर्यंत. मूलमां सर्व ठेकाणे जे 'णं' ख्रक्तर ठे ते वाक्यालंकारने ऋषें ठे. तेणं स-मएएं केतां विशिष्ट एवो जे कालनो विजाग ते समय कहेवाय हे, ते समयमां के जे समय श्रीवर्द्धमान स्वामी चववुं इत्यादि อ वस्तुर्जना कारण थया हता, ते समयमां 'समणे जगवं महावीरे' श्रमण एटसे तपस्या करवामां तत्पर एवा, जगवान् केतां सूर्य अने योनि सिवाय जगना बार अर्थवाला, जेने माटे कहे हे के, ''सूर्य, ज्ञान, माहात्म्य, यश, बैराग्य, मुक्ति, रूप, वीर्य, प्रयत्न, इन्ना, खझ्मी, धर्म, ऐश्वर्य अने योनि-ए चौद अर्थमां जग शब्द प्रवर्ते हे. आमां प्रथम सूर्य अने हेवटनो योनि ए बे अर्थ वर्जवा. अहीं शंका थाय के, जे जग शब्दनो अर्थ योनि थाय ते कदि वर्जवायोग्य होय पण सूर्यवा-चक जग शब्द शी रीते वर्जवो ? ते सत्य हे. अहीं उपमापणाथी सूर्य थाय पणवत् प्रत्ययांत होवाथी जगवान् एटले सूर्यवान् एवो अर्थ लागतो नथी, तेथी ते वर्जित कर्यों हे, महावीर एटले कर्मरूपी वैरीने परात्रव करवाने समर्थ अर्थात् श्रीवर्द्धमान खामी, ते वर्द्धमान खामी पंचहबुत्तरे होहति एटखे इस्तमक्तत्र उत्तर एवं नक्तत्र उत्तराफाल्युनी नक्तत्र हे, कारण के गणत्रीमां तेनाथी इस्त जत्तरमां हे, ते जत्तराफाल्युनी हे पांच स्थानोमां जेने ते पंचहस्तोत्तर एवा जगवंत बीर प्रञ्ज हे.

सुबोव

11 0 11

हो छत्ति एट से होता हवा । श्रद्धीं पर कल्याणकवादी कहे ने के, "पंचह नुत्तरे साइणा परिनिद्धए" ए वचन उपरथी श्रीमहावीर प्रजुने व कल्याणक संपन्न थाय, श्रा कहेवुं योग्य नथी, कारण जो एम कहेशो तो "उसनेएं अरहाकोस लिए" इत्यादि जंबूद्रीपप्रकृतिनुं वचन हे, तेथी श्रीकृषन प्रजुने पण ह कह्याणक कही शकाशे. तमारे पण ते कह्याणकोंने माटे तेम कहे वुं नहीं. तेथी जेम "पंच उत्तरा-षाढे" ए वाक्यमां नक्तत्रना साम्यथी राज्याजिषेक तेमां गणेखो हे, पण कर्ष्याणक तो "अजीइ हुहे" एवी रीते एनी साथे पांचज हे. तेम ऋहीं पण पंचहहुत्तरे ए नक्तत्रनी तुख्यताथी ते मध्ये गर्ननो छ-पहार गणेलो हे, अने कछाणक तो साइणा परिनिद्धए एनी साथे पांचज लीधां हे. वली श्री आचारां-गटीका विगेरेमां पंचहब्रुत्तरे ए वाक्यमां पांच वस्तुर्जेज व्याख्यान करी हे, कछाणकनी व्याख्या करी नथी. श्रीहरिजडसूरिकृत यात्रा पंचाशक उपर श्री अजयदेवसूरिए करेखी वृत्तिमां श्रीवीर प्रजुनां पंच कल्याणक छा प्रमाणे कदेखां हे. छाषाढ मासनी शुक्क हुहे गर्नसंक्रम १, चैत्र मासनी शुक्क तेरसे जन्म १,मागशर मासनी शुक्क दशमीए दी हा३, वैशाख शुक्क दशमीए केवलकान ४श्रने कार्तिक मासनी श्रमासे मोक्त थ. एवी रीते श्रीवीर प्रजुनां पंच कल्याणक कह्यां हे. हवे जो ठठूं कल्याणक गणातुं होत तो तेमां तेनो दिवस पण कह्यो होत. वसी बीजुं एम पण छे के, छहुं कख्याणक जो गर्जापहार गणाय तो ते नीचा गोत्रना विपाकरूप, अतिनिंदवा योग्य अने आश्चर्यरूप हे तेने कहवाएक कहे वुं ते अतु-चित है, कदि अहीं शंका करशों के, पंचह बुत्तरे ए हेकाणे गर्जापहार केम कहा। ? तो ते सत्य है, पण तेना समाधानमां कहेवानुं के, ज्यारे जगवंत वीर प्रज श्रीदेवानंदानी कुक्तिमां श्रवतर्या श्रने माता त्रिशलाने प्रसव थयो ए असंगत हे तेने निवारवाने माटेज पंचहत्रुत्तरे ए वचनथी गर्जनो अपहार सूचव्यो है. ते विषे हवे विशेष कहेवानी जरूर नथी.

एथी एम सिद्ध थयुं के, कह्याणक पांचज हे.ते श्रा प्रमाणे जगवंतने पंचहस्तोत्तरपणुं मध्यम वा-

कहप0

१ ७ ॥

मांथी श्रीजगवंत चवेला हे. चइता गव्जं वक्रंते एटले त्यांथी चवीने गर्जमां उत्पन्न थयेंला हे. हलुत्त-राहिं एटले उत्तराफाल्युनी नक्तत्रमां गर्जमांथी गर्जमां संहार थयेला अर्थात् देवानंदाना गर्नथी त्रि-अलाना गर्जमां मुक्त थयेला.

उत्तराफाहरानी नक्तत्रमां थयेला; हत्नुत्तराहिं मुंडे० एटले उत्तराफाहरानी नक्तत्रमां मुंम थयेला. ते प्रव्य श्रमे जावधी मुंम थयेला. प्रवावधी. श्रमे जावधी मुंम राग द्वेषना श्रमावधी. श्रमे जावधी मुंम राग देषना श्रमावधी. श्रमार एटले घरमांधी नीकलीने श्रमगारिपणाने—साधुपणाने पवइ० कहेतां प्राप्त थयेला हे. तेम उत्तराफाहरानी नक्तत्रमां श्रनंत कहेतां श्रमंतवस्तुना विषयहूप, श्रणुत्तर कहेतां श्रमुपम एवं, निवाघा० कहेतां व्याघातरहित, एटले जींत, हादडी विगेरेनी स्ललना रहित एवं, निरावरण० कहेतां समस्त श्रावरणाधी रहित एवं,किसण० कहेतां सर्व पर्यायधी युक्त एवं श्रधीत् सर्व वस्तु उने जणावनारुं, पिडपुष्त कहेतां परिपूर्ण—सर्व श्रवयवोधी संपूर्ण—एवा प्रकारनुं वरं कहेतां प्रधान एवं केवलकान श्रमे केवलदर्शन जेने समुपन्न० कहेतां उत्पन्न थयेल हे. वली उत्तराफाहरानी नक्तत्रमां तेने प्राप्त थया हे श्रमे साइणा परिनिवृ० कहेतां खाति नक्तत्रमां जगवान् श्रीवीर प्रश्च मोक्ते गया हे. हवे विस्तारवाली वाचनाधी श्रीवीर प्रशुनुं चरित्र कहे हे—तेणं समएणं इत्यादिनो श्रर्थ पूर्वनी जेम जाणी क्षेत्रो.

जे से गिम्हा कहेतां जे बीष्मक्तुना समयनो, चज्रहे मासे कहेतां चोथो मास, अठमे परके कहेतां आठमो पक्त अर्थात् आपाढ मासनो शुक्कपक्त. तस्सणं आषाढ कहेतां ते आषाढ मासना शुक्क पक्तनी विठी परकेणं कहेतां विठी रात्रिए. रात्रि अर्थ लेवानुं कारण ए वे के दिवस अने रात्रि वडे अहोरात्रिना वंने पक्त गणाय वे. पुवरत्तावरत्त कहेतां पूर्वरात्र अने अपररात्रनो समय, ते आगल कहेवामां आव- शे. अहीं पक्त शब्द वडे रात्रि अर्थ लेवो. महाविजय कहेतां —जेमां महान्—मोटो विजय वे ते महाविजय कहेतां पुष्पोत्तर नामे वे. ते पवर पुंमरीया कहेतां बीजां श्रेष्ठ विमानोमां पुंमरीक कहेतां श्रेत कमलना जेवुं अर्थात् अति श्रेष्ठ वे.ते महाविमाणा कहेतां महाविमान

सुबोध

ા હા

केवुं वे ? वीसंसागरोवमण कहेतां वीश सागरोपम स्थितिवाद्धं वे. तेमां देवतार्गनी उत्कृष्ट स्थिति वीश सागरोपमनी रहे वे. जगवंत श्रीवीर प्रजुनी स्थिति पण एटलीज हती. हवे ते विमानश्री श्राठखण कितां श्रायुख्यना क्रय वहे, जवखयेणं कहेतां देवगित नामकर्मना क्रय वहे, विश्खयेणं कहेतां स्थिति एटले वैकिय शारीरमां रहेवुं तेना क्रय वहे,कहेतां पूर्ण करवा वमे,श्रणंतरं कहेतां श्रंतर रहित एवं चयं चश्ता कहेतां च्यवन करीने इहेव जंबूण कहेतां श्राज जंबूद्धीप नामना द्धीपने विषे,जारहे वासेण कहेतां जरत केत्रना दक्तिणार्थ जरतने विषे अवसर्षिणी काल एटले जेमां समये समये रूप रस विगेरेनी हानि श्रती जाय ते श्रवसर्षिणी काल कहेवाय, ते कालने विषे सुपमसुपमा नामनो चार कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो ना प्रमाणवालो पहेलो श्रारो उल्लंघन थया पठी सुपम अमानानो त्रण कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो चीजो श्रारो श्रावे, ते उल्लंघन थया पठी सुपम सुपमा नामनो वे कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो जीजो श्रारो श्रावे, ते उल्लंघन थया पठी सुपम सुपमा नामे चोथो श्रारो श्रावे,ते घणो उल्लंघन थयेलो हे, कांइक ऊणो हे. ते कहे हे—

बेंतालीश हजार वर्षोंथी जणी एक सागर कोटाकोटि चोथा आरानुं प्रमाण है. तेमां चोथा आ-रानां पंचोतेर वर्ष अने सामाआत मास शेष रहेतां श्रीशीर प्रजुनो अवतार थयो है. श्रीशीर प्रजुनुं आ-युष्य बोंतेर वर्षनुं है. श्रीवीर प्रजुना निर्वाणधी त्रण वर्ष अने साडाआत मास जतां चोथा आरानी समाप्ति थाय है तेथी प्रथम जे वेंतालीश हजार वर्ष कह्यां ते एकवीश एकवीश हजारना प्रमाणवाला पां-चमा अने हिंहा आरा संबंधी जाणवां.

एकवीश तीर्थंकरो इहवाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने काश्यपगोत्री हे अने बावीशमा मुनिसुत्रत अने त्रेवीशमां नेमि जगवंत ते हरिवंश कुलमां उत्पन्न थयेला अने गौतमगोत्री हे. एवी रीते ते त्रेवीश विश्वेकरों अतीत थया पही अमण जगवंत श्रीमहावीर थया हे जे प्रज चरम-हेला तीर्थंकर हे अने जे पूर्वना तीर्थंकरोए निर्देश करेला है एटले श्रीवीर प्रज उत्पन्न थशे एम कहेलुं हे. वली जे जगवंत

कस्पण

भ रण भ

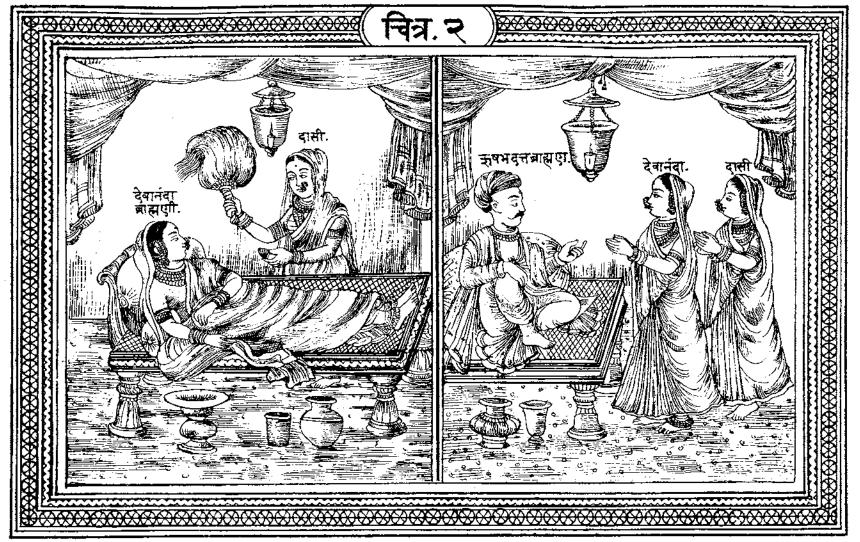
हैं बाह्मणकुंम्याम नामना नगरमां कोमालगोत्री एवा क्षपत्रदत्त ब्राह्मणनी स्त्री देवानंदा ब्राह्मणी के जे जा-लंधरसगोत्री हो तेनी कुक्तिमां गर्जपणाथी उत्पन्न थया हता. ते क्यारे उत्पन्न थया हता के, पूर्वरात्र श्रमें श्रम्पर रात्रना समयमां श्रर्थात् मध्यरात्रे उत्तराफाल्युनी नक्तत्र चंद्रना योगने प्राप्त थतां. दिव्य श्राहार, दिव्य जव श्रमें दिव्य शरीरनो त्याग करवाथी ज्यारे जगवंत गर्जमां उत्पन्न थया त्यारे ते त्रण क्ञानथी यु-क हता. 'हुं च्यवीश' एवं जाणता श्रर्थात् पोताना च्यववानो जविष्यकाल जाणता हता.

पोते चवे हे ते वखते जाणता नथी, कारण के ते एक समये याय हे अने 'हुं चहयो' एम जाणे हे. जे रात्रे अमण जगवंत श्रीमहावीर प्रज जालंधरसगोत्री देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्तिमां गर्जपणे उत्पन्न था ते रात्रिए ते देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी शब्यामां अति निद्रा लेती नहती तेम अतिशे जाप्रत पण नहती एटले ते अहप निद्रा करती हती. ते वलते तेणीण आवा प्रकारनां एटले जेमनुं खरूप हवे कहेवामां आवशे एवां, वली ते खप्तां केवां हे, जदार-श्रेष्ठ हे, कख्याणना हेतु हे, उपद्रवने हरनारां हे, धनना हेतु हे, मंगलिक हे, अने शोजाए युक्त हे एवां चौद महासमोने जोइ ते देवानंदा ब्राह्मणी जागी गयां ते कयां कयां स्क्रो हे ते विषे गय वसह इत्यादि गाया हे. आ गाया सेहेली हे, तेमां विशेष कहेवानुं आ प्रमाणे हे. अजिषेक एटले लक्की संवंधी अजिषेक जाणवो पद्म-कमलथी उपलक्तित एवं सरोवर विमान एटले देव संवंधी जवन एटले घर—अहीं जे प्रजनो जीव सर्गथी अवतरे तेनी माता विमान जुवे हे खेन संवंधी जवन एटले घरने अही हो परने जुवे हे. ते वंनेमांथी एकनुं दर्शन होय तेथी चौदज सम थाय हे. शिली एटले धूमाडा वगरनो अग्नि लेवो. एवी रीते ते देवानंदा ब्राह्मणी यथोक्त चौद समोने जोइ जाग्नत थयां.

ते पढ़ी ते देवानंदा ब्राह्मणी हर्ष तथा विस्मय पाम्यां श्रमे परम संतोषने प्राप्त थयां वढ़ी चित्तमां श्रानंद पाम्यां, तेमना हृदयमां प्रीति थइ, मनमां परम तुष्टि थइ, हर्षना वश्रधी तेमनुं हृदय विस्तार पामी गयुं. मेघना जखनी धाराथी सिंचन थयेखुं कदंबनुं "पुष्प जेम प्रफुख्चित थाय तेम तेना रोमकृप सुबो०

11 05 11

^{*} कदंबनुं कृक् मेघनी धाराश्री प्रफुद्धित आय हे.



पा. १0

प्रफुल्लित थया. श्रावी रीते थयेलां महानंदा ब्राह्मणी ते स्वप्तोनुं स्मरण करवा लाग्यां. ते स्मरण करीने शय्यामांथी बेठा थयां. पठी ते श्रव्यरित एटले मानसिक उत्कंठाथी रिहत एवी,श्रचपल एटले काया-नी चपलताथी वर्जित एवी,श्रसंत्रांत एटले स्वलना वगरनी, श्रविलंबित एटले विलंब रिहत एवी श्रमे राजहंसना जेवी गित वहे ज्यां क्षपत्रदत्त ब्राह्मण हता, त्यां ते श्राव्यां. त्यां श्रावीने क्षपत्रदत्त ब्राह्मणने जय श्रमे विजयश्री वधावे हे एटले श्राशिष श्रापे हे. तेमां स्वदेशमां जय श्रमे परदेशमां विजय समज्ञवो. ते वधावीने जड़ासन उपर वेठां,ते पठी श्रमने टाली श्राश्वासनने श्रमे को जना श्रपावश्री विश्वासने प्राप्त कर्यों तेथीज सुखे करी उत्तम श्रासनने प्राप्त थयां.

पठी जे अंजि वे हाथ वहें करेढ़ी हती, जेमां दश नख उदय पाम्या हता अने जेनुं प्रदिक्ष जिम्मण मस्तक उपर करें हुं हतुं एवी अंजि ते देवानंदाए पोताना मस्तक उपर करी आ प्रमाणे कहां, हे देवानु प्रिय, आज रात्रे हुं अहप निद्धा करती हती ते वखते हुं आ आगल कहुं हुं एवां चौद उत्तम खनोने (गज, वृषज विगरे) जोइने जागी गइ, ते चौद खनोनुं कल्याणकारी शुं फल तथा वृत्तिविशेष थरो ते हुं विचाहं हुं. अहीं फल एटले पुत्रादि अने वृत्ति एटले जीवननो उपाय प्रमुख, तेमांथी शुं थरो? ते पठी ते क्षजदत्त बाह्मणे देवानंदा पासेथी ए अर्थ सांजली, मनमां अवधारी, हर्षादि प्राप्त करी, मेघनी धारा वहें सिंचन थयेला कदंव वृक्तनां पुष्पनी पेठे शरीरना विद्धहप कुवाने विषे उंचां थयां वे रोमांच जेने एवो थयो वे तेणे खनांनी धारणा करी, धारणा करीने अर्थविचारणा करी, अर्थविचारणा करीने पोनतानुं खाजाविक मतिपूर्वक एवं जे बुद्धिविज्ञान ते वने करीने अहीं जे अनागत कालनो विषय थाय ते मित अने वर्त्तमान कालनो विषय थाय ते बुद्धि कहेवाय वे.

"विषयने प्राप्त न करे ते मित कहेवाय छने सांप्रतकालने दर्शावनारी ते बुद्धि कहेवाय. जे जूता-र्थने बतावे ते स्मृति जाणवी छने त्रणे कालने दर्शावे ते प्रज्ञा कहेवाय." १ छतीत-जूत छने छना-गत- जविष्यकालनी वस्तुर्छना विषयमां छावे ते विज्ञान कहेवाय. ते पठी ते खप्तांना छर्थनो निश्चय कह्पण

करे हे, ते निश्चय करीने तेर्च देवानंदा ब्राह्मणी प्रत्ये बोख्या—ते शुं बोख्या ते कहे हे—हे देवानुप्रिये, क्षेत्र तमे जदार, कल्याणकारी, धनदायक, मांगल्यरूप अने शोजायुक्त खन्ना जोयां हे. ते खन्नां आरोग्य, संतोष, दीर्घ आयुष्य, कल्याण एटले जपद्भवनो अजाव, मंगल एटले वांहित फलनी प्राप्ति ए सर्व व-॥ ११ ॥ 🔏 संतोष, दीर्घ आयुष्य, कल्याण एटले जपडवनो अजाव, मंगल एटले वांठित फलनी प्राप्ति ए सर्व व-स्तुर्जने करनारां खन्नो तमे जोयां हे. ते श्रा प्रमाणे-हे देवानु प्रिये, तेथी तमने श्रर्थखान, नोगखान, पुत्रलाज अने सुललाज यहो. तमने नव मास पूरा अने सामासात दिवस गया पढ़ी तमे एक पुत्रने जन्म आपशो. ते पुत्र केवो यही ते कहे हे.

जेना हाथ अने पग कोमल हे अने जेना शरीरमां लक्षणवाली अने सहपथी परिपूर्ण एवी पांच इंडियो हे तेमज बक्तण श्रने व्यंजनना गुणे करीने युक्त एवो पुत्र थरो श्रहीं बक्तण एटखे हत्र चामरादि जाणवां. ते चक्रवर्ती अने तीर्धंकरोने एक हजार ने आठ होय हे. बखदेव अने वासुदेवने एकसो आठ होय हे श्रने बीजा जाग्यवानने बत्रीश बक्तणो होय हे- ते बत्रीश बक्तणो श्रा प्रमाणे हे-

''बत्र, कमल, धनुष्य, रथ, बज्र, काचबो, श्रंकुश, वापिका, खस्तिक (साथीर्ड), तोरण, सरोवर, के-शरीसिंह, वृक्त, चक्र, शंख, हस्ती, समुद्र, कलश, मेहेल, मत्स्य, जव, यज्ञस्तंत्र, स्तूप (चोतरो), क-मंग्ल, पर्वत, चामर, दर्पण, बलद, पताका, लक्कीनो छत्रिषेक, उत्तम माला अने मेयूर ए बत्रीश ल-क्रणो पुर्खवंत जीवोने होय हे." ए खक्रणवाला पुरुषनां सात लक्षण रातां, ह उंचां, पांच सूक्ष अने लांबां, त्रण विशाल, त्रण लघु स्रने त्रण गंजीर-एवी रीते बत्रीश लक्त्णो पुरुष कहेवाय हे. तेमां ते नख,पग, हाथ, जीज, होठ, तालवुं श्रने नेत्रना खूणा, ए सात रातां श्रेष्ठ हे. कांख, हृदय, मोक, ना-सिका, नखं अने मुख, ए व उन्नतं – उंचां श्रेष्ठ हे. दांत, चाम मी, केश, आंगलीना पर्व अने नख, ए पांच सूक्त श्रेष्ठ हे. नेत्र, हृदय, नासिका, हमपची खने जुजा, ए पांच लांबां श्रेष्ठ हे. ललाट,हाती, अने मुख, ए त्रण विस्तारवालां उत्तम हे. मोक, जंघा अने लिंग-इंडिय,ए त्रण लघु सारां हे. सस्व, स्वर अने नाजि, ए त्रण गंजीर सारां हे-ए बत्रीश लक्षणो थयां. शरीरनो अर्थ जाग मुख हे अथ-

सुबो∘

🎇 वा सर्व शरीर मुख कहेवाय हे,तेनाथी नासिका श्रेष्ट हे श्रने नासिकाथी खोचन श्रेष्ट हे. १ जेवां खो-चन होय तेवुं शील समजवुं. जेवी नासिका तेवी सरलता समजवी. जेवुं रूप तेवुं प्रव्य जाणवुं श्रने के जेवुं शील तेवा गुण जाणी क्षेत्रा. १ जे पुरुष श्रात ठींगणो होय, श्रात लांबो होय, श्रात जांको होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय, श्रात खलां होय अने श्रात होय, ते व जातना पुरुषोमां सत्त्व रहे खं होय हे. ३ सद्धमीं, खरूपवान्, नीरोगी, सारा खलांवालों, सारी नीतिवालों श्रजे कि थयेलों पुरुष श्री पोते स्वर्गमांथी छाट्यो हे छने पोताने पाहुं स्वर्गमां जवानुं सूचवे हे. ४ दंनवगरनो, दयाहु, दानी, इंडियोने दमन करनार, माह्यो अने हमेशां सरल एवो पुरुष मनुष्य योनिमांथी आवी पाठो मनुष्य मूर्खनो संग करनार होय तेपोते नरकमांथी श्रावेद्धो सूचवे हे. १ पुरुषोने दक्षिण जागमां जो श्रावर्त्त होय तो ते शुरुष तो ते शुरुष तो ते शुरुष तो ते श्रुप्त श्रापे हो वाम जागमां होय तो ते श्राविद्धा श्रावेद्धो सूचवे हे. १ पुरुषोने दक्षिण जागमां जो श्रावर्त्त होय तो ते श्रुप्त पता ते श्रावेद्धा सूचवे हे. १ पुरुषोने दक्षिण जागमां जो श्रावर्त्त होय तो ते श्रावेद्धा तो ते श्रावेद्धा सूचवे हो सूचवेद्धा चली आंगलीनी पासेनी) आंगलीनी अंत्यरेखाथी कनिष्ठा आंगली जो अधिक होय तो ते पुरुषने धननी वृद्धि थाय अने मोशाल पक् घणा होय. १० मणिबंधथी जे रेखा चाले हे ते पितानी रेखा हे अने क-रज (टचली आंगलीनी नीचेना जाग) थी जे बेरेखा चाले हे ते वैजव अने आयुष्यनी रेखाई हे, ते त्रण रेखार्ज तर्जनी (ग्रंगोठा पासेनी आंगसी) अने अंगोठानी वचे जर मसे हे. ११ जेर्जने ते त्रण रेखार्च संपूर्ण अने दोष वगरनी होय तेर्चने गोत्र-कुल, धन अने आयुष्यतुं संपूर्ण सुख मसे है है, जो तेवुं न होय तो न्यून सुख मसे हैं. ११ आयुष्यनी रेखा जेटसी आंगसीर्टने उद्घंघन करी हैं। आगस जाय तेटसां पचवीश वर्षनी आयुष्य विद्वानोए जाणी सेवी.१३ जो जमणा हाथना अंगो-

Jain Education International

कहप्व

11 32 11

ठाना मध्यमां जब रेखा होय तो विद्या, प्रख्याति श्राने वैजव प्राप्त थाय हे श्राने ते पुरुषनो जन्म शुक्क पक्तमां समजवो. १४ जे पुरुषनी आंखो राती होय तेने स्त्री त्यजी शकती नथी, जेनी आंखो हु शुक्क पक्तमा समजवार ५० ज उपनार जाला तता है। सुवर्णना जेवी पीली होय तेने एश्वर्य होगतुं नथी अने सुवर्णना जेवी पीली होय तेने प्रव्या खजतुं नथी, जेना हाथ लांबा होय तेने ऐश्वर्य होगतुं नथी अने जिना शरीरमां मांसनी पृष्टि होय तेने सुख ठोमतुं नथी. १५ जो नेत्रमां स्नेह (चीकाश) होय तो सौ-जाग्य होय, जो दांतमां स्नेह होय तो सारां जोजनो मखे अने जो शरीरमां स्नेह होय तो सुख मखे अने जो पगमां सेह होय तो वाहन प्राप्त थाय जेनी जर (ठाती) विशाख होय ते धन धान्यनो जोगी थाय, जेनुं मस्तक विशाल होय ते उत्तम राजा थाय,जेनी कटीनो जाग विशाल होय तेने स्त्री अने पुत्रो घणा थाय अने जेना पग विशाल होय ते हमेशां सुखी थाय. १९ आ प्रमाणे लक्तणो जाणवां.

हवे व्यंजन कहे हे, व्यंजन एटखे शरीर उपर जे मसा अने तिखक विगेरे होय हे ते, खक्षण तथा व्यंजनना गुणोश्री युक्त एवो ते कुमार हतो. वसी ते मान तथा जन्मानना प्रमाणने प्राप्त थयो हतो. तेमां जलना जरेला कुंडनी ट्यंदर एक पुरुषने प्रवेश करावे, पढ़ी जे जल बहार नीकली जाय तेटलुं जल द्रोणमान थाय त्यारे ते पुरुष मानप्राप्त कहेवाय छने जो ताजवा उपर छर्धाजारना मानवालो थाय तो ते जन्मानप्राप्त कहेवाय. हवे जे जार कह्यो तेनुं मान आ प्रमाणे हे, "ह सर्पवना दाणानो एक जव थाय, त्रण जवनी एक चणोठी थाय, त्रण चणोठीनो एक वाल थाय श्रने सोल वालनो एक गदीश्राणो थाय. १ दश गदी आणानो एक पत्न थाय अने दोहसो गदी आणानो एक मण थाय, दश मणनी एक घटिका थाय एम विद्वानो कहे हे, दश घटिकानो एक जार थाय. प्रथम जे कह्युं के ते दोहसोनो एक मण याय त्यां गदीत्र्याणा खेवा पत खेवा नहीं, जो दोढसो पत्ननो मण याय एम खइए तो जारना अठ्योतेर मण थइ जाय अने तेना अर्धनागे नगणचासीश मण थाय, एथी एटखुं शरीरनुं मान संनवे नहीं जो दोहसो गदी श्राणानो मण लइए तो जारना चालीश शेरना मान वसे कांइक अधिक एवा पोणा क्षिणा क्षात मण श्रात मण श्रात विश्व कांद्र अधिक एवा पोणा श्रात मण श्रात मण श्रात विश्व श्री विश्व श्री स्वाप संज्ञे हे,

अने तेथी दोहसो गदी आणानो मण पण संजवे को इदेशमां कांइक जणा त्रण शेरने पण मण कहेवानो व्यवहार हे. हवे प्रमाण विषे कहे हे. पोताना अंगुल वहे एकसो आह अंगुलनी उंचाइवालो उत्तम पुरुष कहेवाय हे, मध्यम अने हीन पुरुष हक्षे तथा चोराशी आंगलनी उंचाइवाला होय हे. अहीं जे उत्तम पुरुष कह्यों ते तीर्थं कर थी अन्य लेवो, कारण के जे तीर्थं कर होय ते बार आंगलनी मस्तकनी पाधकी सुधां गणीए तो एकसो ने वीश आंगल उंचा होय हे. हवे तेवी रीतनां मान, उन्मान अने प्रमाणथी परिपूर्ण एवां मस्तक प्रमुख सर्व अंगो जेमां उत्पन्न थयां हे, एवा प्रकारनुं सुंदर जेनुं शरीर हे एवो, वली ते केवो बालक के जेनी आकृति चंझना जेवी रमणीय हे, जे मनोहर हे, जेनुं दर्शन प्रिय हे अने जेनुं खरूप सुंदर हे एवा बालकने हे देवानुप्रिये, तमे जन्म आपशो ए

हवे ते बालक आवो थरो. केवो थरो ते कहे है- ज्यारे ते बालजावने होगी देरो अर्थात् आह वर्षनो थहो, त्यारे ते एवो थहो के जेनामां सर्व विज्ञान परिणाम पामहो. श्रमुक्रमे ज्यारे यौवन वयने प्राप्त थहो त्यारे ते क्रम्वेद विगेरेनो सारक थरो.श्रहीं मूलमां धातु श्रात्मनेपदी हे ते हतां जे श्रा प्रयोग कर्यों हे ते विचारवा जेवो हे. ऋग्वेद ए पदमां हिं। विजक्तिना बहुवचननो लोप थयेलो हे. ते ऋग्वेद, यजुर्वे-द सामवेद अने अथर्ववेद केवा हे के जेमां इतिहास एटले पुराण पांचमो हे अने निघंटु कहेतां नाम-संग्रह कोश जेमां वहा वे. ते वेद केवा के जे श्रंग तथा उपांगीए सहित वे. तेमां शिका, कर्ष, व्याक-रण, वंद, ज्योतिष अने निरुक्ति – ए व अंग कहेवाय वे, उपांग एटखे अंगना अर्थने विस्तार करनारा वसी ते वेद केवा है, तात्पर्यथी युक्त है, एवा पूर्वे कहेला चार वेदना जे सारक एटले बीजार्डने विसारण थयेल तेमने सारण करावनार हे, वली तेवालक वारक हे एटसे बीजाई श्रद्धाऊ पाठ जणे तेमने निषेध करनार हे, तेमज ते बालक ते वेदोनो धारक हे, एटसे धारण करवाने समर्थ है. हे देवानुप्रिये, ते बालक एवो थरो. वसी ते वालक केवो थरो के पूर्वे कहेलां ठ श्रंगनो विचार करनार थरो, श्रहीं विद् धातुनो अर्थ जाणवुं लइए तो पुनरुक्ति दोष आवे हे. वली ते षष्टितंत्र एटक्षे कपिल संबंधी (सांख्यना) शास्त्रमां पं-

For Private & Personal Use Only

कृद्धपृष

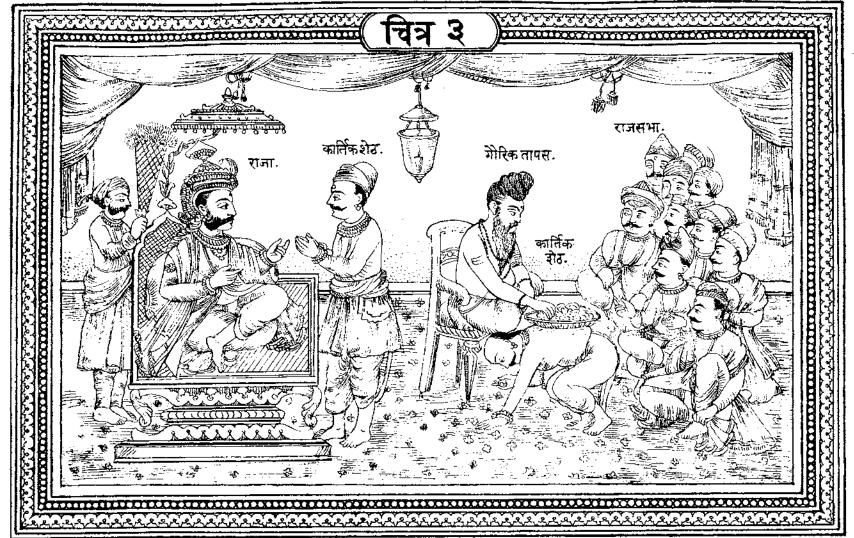
श रह ॥

िनत थरो, तेमज गणितशास्त्रमां निपुण थरो. गणितशास्त्र एटसे गणितविद्या जेमके, '' एक स्तंज एवो हे के जे श्रर्थों पाणीमां हे, तेनो बारमो जाग कादवमां हे, ह्हो जाग रेतीमां दबायो हे अने ते दोह हाथ बहार देखाय हे. ते स्तंत्रनुं मान केटबुं होबुं जोइए ते विचारीने कहो ? तेना जवाबमां गणित उपरथी सिद्ध थाय के, ते स्तंत्र छ हाथनो है. ऋहीं मूलमां कोइ हेकाणे 'सिकाण' एवो पण पाह वे. सिस्काण शब्द वडे श्राचार यंथ जाणवो.शिक्षा एटखे श्रक्तरोनी मर्यादानो यंथ कढ्प एटखे य-क़ादिविधितुं शास्त्र तेमां ते निपुण यशे. व्याकरण एटले शब्दशास्त्र ते वीश व्याकरणो हे ते ह्या प्रमा-णे- ऐंड व्याकरण, जैनेंड व्याकरण, सिद्धहेमचंड व्याकरण, चांड व्याकरण, पाणिनीय व्याकरण, सारस्वत व्याकरण, शाकायन व्याकरण, वामन व्याकरण, विश्रांत व्याकरण, बुद्धिसागर व्याकरण, सरखती कंठाजरण व्याकरण, विद्याधर व्याकरण, कलापक व्याकरण, जीमसेन व्याकरण, शैव व्याकरण, गौम व्याकरण, नंदि व्याकरण, जयोत्पत्त व्याकरण, मुष्टि व्याकरण श्रने जयदेव व्याकरण-ए वीश व्याकरणो हे. ते व्याकरणोमां, हंदशास्त्रमां, निरुक्त एटक्षे पदनी व्युत्प-त्तिवासी टीका विगेरेमां, ज्योतिषशास्त्रमां श्रजे बीजां ब्राह्मणोने हितकारी एवां घणां शास्त्रोमां तेमज परिव्राजक-संन्यास संबंधी नयएटखे छाचारशास्त्रोमां ते घणो निपुण थशे.हे देवानुत्रिये, तमे तेवां खदार स्वप्नां दीवां हे.

एम करीने ते खप्तांनी वारंवार श्रनुमोदना करे हे ते पही ते देवानंदा ब्राह्मणी मस्तक उपर अंजिल करीने क्रषजदत्त ब्राह्मणने श्रा प्रमाणे कहेवा लाग्यां—हे देवानुप्रिय, तमे कह्युं ते एमज हे, हे देवा- नुप्रिय, ते यथार्थ हे श्रने ते संदेहवगरनुं हे. ते इन्ने हुं हे, ते प्रतीष्ट एट हे तमारा मुखमांथी पमतां- ज में प्रहण कर्युं हे. ते उजय धर्म एट हे इन्नित श्रने प्रतीष्ट हे. श्रा तमे कहेलो श्रर्थ सत्य हे. त- में जे कहा हो ते तेमज हे—एम कहीने ते देवानंदा ते खप्तांने सारी रीते श्रंगीकार करे हे. पही

सुबोव

॥ १३ ॥



पा. १३

🎤 | ऋषजदत्त ब्राह्मणनी साथे उदार एवा मनुष्य संबंधी जोगववा योग्य जोगने जोगवता थकां विहार करे हे. १३ ते समये ते शक नामे इंड विहार करवाने तत्पर थयो ए संबंध जाणवो. ते इंड केवो हे ते कहे हे, ते शक नामना सिंहासननो अधिष्ठाता है। ते देवतार्जनो खामी है। ते देवतार्जने विषे राजा एटखे कांति प्रमुख गुणोथी विराजमान हे. ते वज्रपाणि एटसे हाथमां वज्रने धारण करनार हे. ते प्रंदर एटसे दैसो-नां नगरोने विदारण करनार हे. वसी ते शतऋतु हे एटक्षे श्रावकनी पांचमी प्रतिमा बहेवारूपी सो ऋ-त्-यक्क जेणे करेखा हे. कार्तिक श्रेष्टीना जवनी श्रपेकाए श्रा कहेख हे. ते कथा श्रा प्रमाणे हे- ए-थिवीजूषण नगरमां प्रजापाल नामे राजा है अने कार्तिक नामे श्रेष्टी है. तेणे श्रावकनी सो पिनमा वही इती तेथी ते शतऋतु एवा नामथी विख्यात थयो हतो. एक वखते गैरिक नामे एक संन्यासी एक मासनो उपवासी त्यां आवी चड्यो. एक कार्तिक श्रेष्ठी विना सर्वे लोको तेना जक्त थया ते जाणी पेलो गैरिक संन्यासी कार्तिक श्रेष्टीनी उपर रोष पाम्यो एक वखते राजाए ते संन्यासीने जोजन माटे नि-मंत्रण कर्युं त्यारे तेणे कड्युं के, जो कार्तिक श्रेष्ठी पीरसे तो हुं तारे घेर पारणुं करुं. राजाए ते प्रमाणे अंगीकार करी कार्तिक श्रेष्टीने कह्युं के, तुं मारे घेर आवी ते गैरिक संन्यासीने जोजन कराव का-र्तिक श्रेष्टीए कह्युं, हे राजा, तमारी आङ्गाश्री हुं जोजन करावीश पत्नी ते कार्तिक रोते गैरिकने जो-जन कराववा मांड्युं. जोजन करतां गैरिके(तुं निर्धज ढुं)एम जणाववा नासिकानो आंगसीथी स्पर्श करी चेष्टा करी, ते वखते कार्तिक श्रेष्टीए विचार्युं के, 'जो में प्रथमधी दीका लीधी होत तो आ सं-न्यासी मारो पराजव न करत. 'श्रा प्रमाणे चिंतवी ते श्रेष्टीए एक हजार ने श्राठ विणकपुत्रोनी साथे श्रीमुनिसुव्रत खामीनी पासे चारित्र लीघुं. पठी द्वादशांगी नणीने बार वर्षने पर्याये ते सौधर्म इंड थयो. जे गैरिक संन्यासी हतो ते पण पोताना धर्ममां तत्पर रही ते इंडनुं वाहन ऐरावण नामे थयो. ते ऐ-रावण आ कार्तिक श्रेष्ठी हे एवं जाणी नासवा खाग्यो एटखे शकेंड तेने पकडी तेना मस्तक छपर आ-रूढ थइ गयो. ऐरावणे तेने जय पमामवाने वे रूप कर्यां. इंडे पण वे रूप कर्यां. पढी तेणे चार रूप

कृह्पण

॥ ४४ ॥

कर्यां एटले इंडे पण चार रूप कर्यां. पढ़ी अवधिज्ञानथी तेनुं खरूप जाणी लइ तेणे तेनो तिरस्कार कर्यों. ज्यारे तिरस्कार कर्यों, एटले तेणे पोतानुं खाजाविक रूप करी दीधुं. एवी रीते कार्तिक श्रेष्टीनी कथा हे.

सहस्राह्म एटखे तेने पांचसो मंत्रीरूपे देवतार्ड ने तेर्डनां नेत्रो इंड्रनुं कार्य करे ने तेथी ते पण इंड्र संबंधीज समजवां, तेथी इंड्र सहस्राह्म (हजार नेत्रवाखो) कहेवाय ने वखी ते मघवान् ने एटखे मघ कहेतां मोटा मेघ जेने वश ने तेवो ने.

वली ते पाक नामना दैत्यने शिक्ता करनारों हो. ते मेरुथी दिक्तणमां आवेला लोकार्धनों अधिपति हो, उत्तर लोकार्धनों खामी इशान हे तेथी. ते ऐरावणना वाहनवालों हो ते सुर— देवतार्डने आनंद आपनार हो. ते बत्रीश लाख विमाननों अधिपति हो रज वगरनां अने खहुपणाथी आकाश जेवां बारी-क वस्त्रने धारण करनारों हो. तेणे घटता स्थान उपर माला अने मुकुट धारण कर्या हो, नवीन सुवर्णना मनोहर, आश्चर्य करनारां अने आम तेम कंपतां एवां वे कुंमलों तेना गाल उपर अथडाय हो वही ते केवों हे के जेने हत्रादि राजचिह्नकप मोटी समृद्धि हो, वली जेनी शरीरादिकनी कांति मोटी हो, जे महाबलवान हो, जे मोटो यशवालों हो, जेनों महिमा मोटो हो, जे महासुखी हो, जेनुं शरीर देदी-प्यमान हो, जे पग सुधी लटकती पंचवर्णी पुष्पनी मालाने धारण करे हो.

ते हाल क्यां रहे वे ते कहे वे. ते सौधर्म कल्पने विषे वे, ते सौधर्म देवलोकना श्राजूषणरूप विमानमां वे, त्यां सुधर्मा नामनी सजामां शक नामना सिंहासनने विषे रहे वे. त्यां रही ते इंड ह्यं करी वि-हार करे वे ते कहे वे. ते इंड त्यां बजीश लाल विमाननो श्रिधिपति वे, तेमज चोराशी हजार सामा-निक देवतानो अधिपति वे. ते सामानिक देवतानी समृद्धि इंडना जेवी वे.

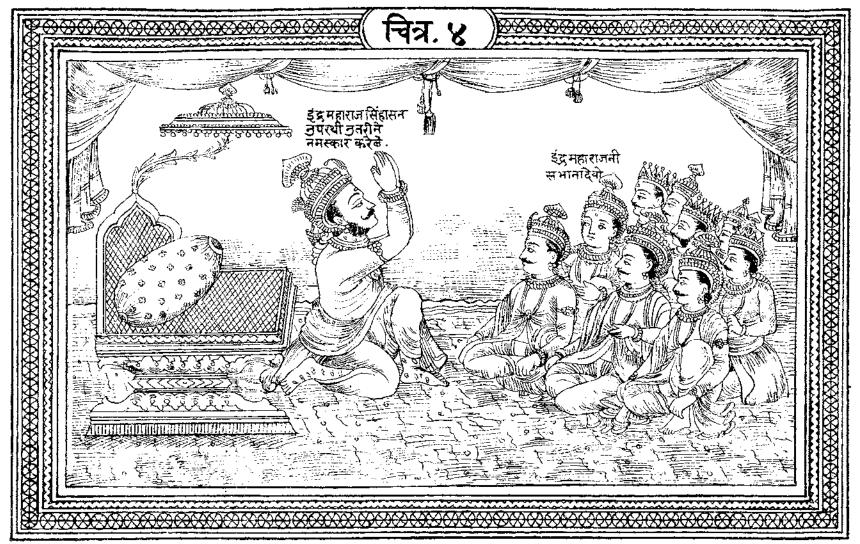
तेत्रीश त्रायिक्षंशक देवता जे पूज्य श्रयवा मंत्री तुख्य देव वे तेमनो जे श्रधिपति वे. चार लोकपाल के जेमनां नाम सोम, यम, वरुण श्रने कुबेर वे तेमनो जे श्रधिपति वे. पद्मा, शिवा, शची, श्रंजू,श्रमला, श्रप्सरा, नविमका श्रने रोहिणी एवां नामे श्राव श्रयमहिषी (पटराणी) के जे सुबोव

(1 **38** (1

प्रत्येक सोल हजार देवी उना परिवारवाली हे तेमनो जे खामी हे. बाह्य,मध्यम श्रने श्राप्यंतर एवी त्रण पर्षदानों जे छोधिपति हे. गंधर्व, नाटक, अश्व, हाथी, रथ, सुजट अने वृषज एवां नामनां सात सै-न्यनो जे खामी हे. जवनपति विगेरे वृषजने स्थाने महिष क्षेवा. तेमज सात सेनापतिर्जनो अने चारे दिशार्तमां प्रत्येक चोराशी हजार आत्मरक्तक देवता एकंदर संख्याए त्रण लाख अने वत्रीश हजार थाय तेमनो जे अधिपति हे. ते सिवाय बीजा घणा सौधर्म कल्पना निवासी वैमानिक देव अने देवी हेतुं आधिपत्य एटले अधिपतिनुं कर्म अर्थात् रकाने, अप्रेसरपणाने,नायकपणाने,पोषकपणाने, अत्यंत मो-टापणाने, आङ्गाए करीने ईश्वर जे सेनापति तेनी पोताना सैन्य प्रत्ये अदुजुत आङ्गाना प्रधानपणाने नी-मेखा पुरुषोनी पासे जे करावे हे,वली पोते तेमनुं पालन करे हे वली ते शुंकरे हे के श्रविहिन्न एवां नाटक, गीत छने वाजित्रो,तेमां वीणा,कमताल,बीजां वाद्यने तोमे तेवा मेघध्वनिवाला मादल छने मोटा ढोल, तेमना मोटा शब्द वमे देवताने योग्य एवा जोगववा खायक जोगने जोगवतो विहार करे हे. १४ वसी ते था संपूर्ण जंबूद्वीपने विशाख एवा श्रवधिक्ञान वडे श्रवलोकन करतो विहार करे हे. ते इंद्र प्रगवंत महा-वीर प्रजुनो जन्म जाणी हर्ष पामेलो हे,संतोष पामेलो हे तेमज चित्तश्री छानंद पामेलो हे,मनमां प्रसन्न थयेलो हे, घणा चित्तसंतोषने पामेलो हे,इर्षना वशयी प्रसरेला हृदयवालो हे,मेघनी धारायी सिंचाये-ला कदंबवृक्तनां सुगंधी पुष्पनी जेम रोमांचित थयेल हे तेथी जेना रोमकूप उंचा थया हे, वसी जेतुं मुख अने नेत्रो विकास पामेलां उत्तम कमलना जेवां हे, कारण के ते हर्षथी परिपूर्ण हे तेम श्रीजगवंतना दर्शनथी अधिक संज्ञम थवाने सीधे तेनां उत्तम कंकण कंपी चालतां इतां.बहेरला अने बाजुबंध तुटी जता हता. मुकुट श्रने कुंमल जे लोकमां प्रसिद्ध हे, ए सर्व श्राजूषणो जेनां प्रचलित श्रयेलां हे एवो हे, वहीं जेनुं हृदय हार वने विराजमान हे. जे खंबायमान फुमणां ने हींचका खातां आजूषणोने धारण करे हे. एवो इंड अकस्मात् संज्ञम-आदरथी, उत्सुकपणाथी अने कायानी चपलताथ। एक-दम सिंहासन उपरथी बेठो थयो बेठो थइने पादपीठ एटले पग मूकवाना बाजोठ उपरथी नीचे

११ रूप ॥

जतयों श्रने नीचे जतरीने मरकत मणि तथा रिष्ट श्रने श्रंजन नामनां रत्नो वडे निपुण एवा कारीगरे रचेखी अने देदीप्यमान एवा चंडकांत विगेरे मणि उं अने कर्केतन विगेरे रत्नोथी मं कत एवी 🖟 ते पाड़काने उतारी नाखी श्रने उतारीने ते इंड एक पट उत्तरासंग करे हे. ते कर्या पही श्रंजिस करवाने 🥉 वंने हाथ योजे हे, तेवो थह ते इंड प्रज्नी सन्मुख सात आठ प्राखां सामो जाय हे, पृही डाबा ढींचणने जपाडे वे एटक्षे पृथ्वीने लग्न (अमकेलो) न थाय तेम स्थापे अने दक्षिण जानुने पृथ्वी जपर मूके, पढी है जिपाड़े वे एटसे पृथ्वीने सम (अमकेसी) न थाय तेम स्थापे अने दक्षिण जानुने पृथ्वी जपर मूके, पढ़ी क्रि त्रण वार पृथ्वी जपर मस्तक नुमावे, नुमावीने जरा जत्तरार्ध अंगथी जजो थाय, तेम क्री कंकण अने बेर-खायी स्तंत्रन करेली जुजाउंने वाले, ते वालीने हाथना संपुरमां रचेली दश नख सिहत दिहाणावर्तपाय के मस्तक पर जमावाती एवी अंजलि मस्तक पर करीने आ प्रमाणे बोल्यों ते शुं बोल्यों ते कहे हे,मूलमां 'णं'ए अक्तर सर्व हेकाणे वाक्यालंकारने माटे हे. त्रण जुवनने पूजवा योग्य एवा अहैत प्रजुने नमस्कार हो.कर्मरूप वैरीने हणवाथी अरिहंताणं एवो पण पाठ हे अथवा अरुहंताणं एवो पाठ लड़ए तो रागद्रे- परूपकर्मबीजनो अजाव करनार एवो अर्थ थाय एटले जवक्तेत्रमां ते बीज उगवानोज अजाव थाय हे. विली ते प्रजु जगवंत एटले झानादिवाला हे तेमज ते आदिकर एटले पोतपोताना तीर्थनी अपेक्ताए अर्थना करनारा हे. ते नीर्थ एटले संघ अथवा प्रथम गणधर तेने स्थापन करनारा हे. जे स्वयं-धर्मना श्रादिकर्ता हे. वसी जे तीर्थ एटले संघ श्रधवा प्रथम गणधर तेने स्थापन करनारा हे. जे खयं-बुद्ध हे एटले परोपदेशथी बोधपामेला नथी, पोतानी मेले बोध पामेला हे. जे अनंत गुणोना निधानरूप होवाथीपुरुषोमां उत्तम हे. जे कर्मरूपी वैरी इमां निर्दय शूरवीर होवाथी पुरुषसिंह हे. वसी जे पुरुषोमां प्रधान एवा पुंकरीक-श्वेत कमलनी जेवा हे. जेम पुंडरीक-कमल कादवमां थाय हे श्रने जल वडे वधे हे, पही ते जल तथा कादवने होडी उपर रहे हे. एवी रीते जगवंत पण कर्मरूपी काद-वमां उत्पन्न थया वे अने जोगरूपी जलधी वृद्धि पाम्या वे तेर्ड कर्म अने जोगनो त्याग करी पढ़ी जुदा रहे हे. वसी ते उत्तम पुरुषोमां गंधहस्ती एटखे मदगंधी हस्ती जेवा हे. जेम गंधहस्तीना 🖔 गंधथी बीजा हाथी । प्रवायन करी जाय हे तेम जगवंतना प्रजावथी बीजा छकाल विगेरे छपड्रवो



पा. १५

पण नाश पामी जाय है. तेमज जे लोक एटले जब्य प्राणीर्तना समृहमां चोत्रीश श्रितिशयोए क्षेत्र होवाशी उत्तम है. वही जब्य प्राणीर्तना नाथ है श्रश्मीत् योग केम करनारा है. तेमां योग एटले श्रप्राप्त एवा क्षानादिनी प्राप्ति श्रमे केम एटले प्राप्त थयेल क्षानादिक तुं रक्षण, तेने करनारा लोक एटले सर्व जीवोना हितकारी, कारण के दया स्वरूपी है. वली ते मिण्यात्वरूप श्रंधकारने नाश करनार होवाशी लोकमां प्रदीपरूप है. वली सूर्यनी जेम सर्व वस्तुर्तना प्रकाशक होवाशी लोकमां उद्योत करनारा है. तेम वली श्रप्तय एटले जयनो श्रप्ताव तेने श्रापनारा है.

ते जय सात प्रकारना है ते आ प्रमाणे-जे मनुष्य यकी जय ते पहें को इह लोकजय कहे वाय हे. मनुष्यने देवादिकनो जय ते बीजो परलोकजय धन विगेरे लइ खेवानो जय ते त्रीजो आदा-नजय. बहारना कोइ निमित्तनी अपेका वगर उत्पन्न थयेख जय ते चोथो अकस्मात्जय कहेवाय हे. पांचमो खाजीविकानो जय,ठठो मरणजय अने सातमो खपकीर्त्तिनोजय.एम सात प्रकारना जय हे,तेवा जयमांथी निर्जय करनारा हे.वली तेने नेत्र समान श्रुत ज्ञानने छापनारा हे.तेमज मार्ग एटखे सम्यग्-दर्शन विगेरे मोक्तमार्गने आपनारा हे अर्थात् बतावनारा हे-जेम कोइ लोको मुसाफरीए जता हता, तेमनुं इव्य चोरोए खुंटी खीधुं अने पढ़ी तेमने आंखे पाटा बांधीने अवसे मार्गे चमावी दीधा. तेवा-मां कोइ छावी तेमनों नेत्र उपरथी पाटा होडी खइ, धन छापी, मार्ग बतावी उपकारी याय तेम जग-वंत पण कामक्रोधादि कषायोए जेमनुं धर्मरूप धन खुंटी लीधुं हे अने मिथ्यात्वरूप पाटाथी जेर्ननां विवेकरूपी नेत्र बंध कर्या वे एवा प्राणी उने श्रुतझान, सर्द्धमें तथा मुक्तिमार्गने बतावी उपकारी थाय हे. वसी ते प्रजु केवा हे के जे आ संसारथी जय पाम्या हे तेमने शरण आपनारा हे.वसी जीव एट-से मृत्युनो अनाव-जीवन तेने आपनारा हे. कोइ हेकाणें बोहि दयाणं एवो पात हे एटसे वोधि एट-बे समकित तेने आपनारा वही ते चारित्ररूप धर्मने आपनारा हे. धर्मनो उपदेश आपनारा हे. अहीं ध-र्मनुं उपदेशकपणुं तेर्नने धर्मना खामीपणाने लीधे कह्युं हे, नटनी जेम फोगट नथी ते दर्शाववाने कहे हे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.c

कल्पण

॥ १६॥

कें के ते धर्मना नायक हे. वली धर्मना सारथी हे. जेम सारथी जन्मार्गे जता एवा रथने पाहो मार्गमां हैं वावे हे तेम जगवंत पण मार्गव्रष्ट थयेवा माणसने पाहो मार्गे वावे हे, ते उपर मेघकुमारनुं दृष्टांत हे— एक वखते श्रीवीर प्रजु राजगृह नगरीमां समोसर्था हता. तेमनी देशना सांजली श्रेणिक राजा श्राने एक वखते श्रीवीर प्रजु राजग्रह नगरीमां समोसर्या इता. तेमनी देशना सांजली श्रेणिक राजा श्रने धारिणी राणीनो पुत्र मेघकुमार प्रतिबोध पाम्यो तेणे मातापितानी मांच मांम रजा खइ पोतानी आठ वियानो त्याग करी दीक्षा प्रहण करी. प्रजुए शिक्षा आपवाने तेने स्थविर साधुर्वने सोंप्यो एक वखते उपाश्रयमां अनुक्रमे साधुर्जना संस्तारा करतां मेघकुमारनो संस्तारो द्वारजागनी पासे ढेल्लो आव्यो. त्यां मात्रु करवाने जता आवता साधुर्जना चरणनी रजथी जराइ गयेखा मेघकुमारने आखी रात क्रणवार पण निद्रा न छावी. त्यारे तेणे चिंतव्युं के, मारे घेर सुखशय्या क्यां ! छने छावी रीते जूमि उपर छा-लोटवुं क्यां! अरे ! आवुं डुःख मारे क्यां सुधी सहन करवुं ? माटे प्रातःकाले प्रजुनी रजा खइ पाठो घेर जइश. आवुं चिंतवी प्रजातकाक्षे प्रजुनी पासे आव्यो. प्रजुए मधुर वचनथी बोखाव्यो. हे वत्स ! तिं रात्रे एवं छुर्ध्यान कर्युं पण ते विचार्या वगर करेबुं वे नरका दिकनां छुःखनी श्रागल ए छुःख कोण मा-त्र हे. छनेक सागरोपम तेवां डुःख प्राणीउंए घणी वार सहन कर्यां हे. वसी कह्युं हे के, "अग्निमां प्रवेश करवो सारो स्रने ग्रुद्ध कर्मथी मृत्यु पामवुं ते सारुं, पण ग्रहण करेला व्रतनो जंग स्रने शीलनी स्वलना करवी ते सारुं नहीं."र तेम आ चारित्रादि कष्टतुं आचरण मोटा फलने आपे हे,तें पोतेज पूर्व जवे धर्मने अर्थे कष्ट अनुत्रव्युं हतुं, तेनुं आ फल प्राप्त थयेलुं हे तारा पूर्व जनने सांजल-आयी त्रीजे जने वैताट्य पर्वतनी जूमि जपर तुं सुमेरूप्रज नामे हाथी थयो हतो. ते व दांतवालो, घोलो अने एक हजार हाथि-णीर्जनो स्वामी थयो. एक वखते दावानस्वयी जयपामी नासी जतां तृषा सागवाथी एक घणा कादव-वाला सरोवरमां श्रावी पड्यो. मार्गनो अजाण होइ ते कादवमां खुंची जइ जल श्रने तीर बंनेमांथी अष्ट थयो. पठी तारा पूर्वना वैरवाला हाथी छेए आवी तने दंतोशलनो मार मार्थो. तेनी वेदना सात दिवस 🕏 🐉 सुधी जोगवी छंते एकसो वीश वर्षनी आयुष्य पूरी करी (मृत्यु पामी) विंध्याचल उपर पाडो 🖔

हाथी यह अवतर्यों. ते वखते तुं राता वर्णनो, चार दांतवाखो श्रने सातसो हाथिणीनो खामी थयो श्र- 🛙 🤘 नुक्रमे एक वार दावानलने जोइ तने जातिसारण थयुं, एटले पूर्व जवनुं स्मरण थयुं. पठी तें दावान- 🖔 लना पराजवमांथी बचवाने एक योजनना प्रमाणवालुं मंगल कर्युं तेमां वर्षने आरंजे, मध्ये अने अंते जे कांइ तृण वेल विगेरे थाय ते सर्व जखेंकी नाखे. एक वलते दावानलथी जय पामेला वनना प्राणी-उं ते हाथीना मंडलमां व्यापी रह्या, ते वलते तुं पण सत्वर श्रावीने ते मंगलमां श्रावी रह्यो. कोइवार देहने खुजली करवानी इहाथी तें एक पग उपाड्यो,ते पग उपामतांज को इससलो संकनामणथी पीमा-इने तेनी नीचे जरायो. शरीरने खंजवासी ते पग नीचे मूकतां ते ससस्रो तारा जोवामां आव्यो. तेनी उपर दया लावी बे दिवस सुधी तुं उंचो पग राखी उन्नो रह्यो. ज्यारे दावानस शांत थयो अने सर्व जीवो पोतपोतानां स्थानमां चाख्या गया त्यारे ते इस्ती पोतानो पग गद्यी पडवाथी पृथ्वी उपर पडी गयो. पढी त्रण दिवस सुधी क्रुधा अने तृषाधी पी िरत यह ते क्रुपासु हाथी सो वर्षनी आयुष्य पूरी करी छहीं तुं आ श्रेणिक राजा अने धारिणी राणीनो पुत्र थयो हो है मेघकुमार, ते वखते तिर्यंचना जवमां पण तें धर्मने अर्थे तेवुं कष्ट सहन कर्युं हतुं तो आ जगतने चंदन करवा योग्य साधुर्जना चर-णथी अथमाता तुं केम दुःख धरे हे? आवो उपदेश आपी नगवंते तेने धर्ममां स्थिर कयों. पही जेने जातिस्मरण ज्ञान थयेखुं वे एवा मेघकुमारे 'एक नेत्रो सिवाय बीजुं बधुं शरीर हुं वोसरावुं ढुं' एवो अजिग्रह कर्यो. अनुक्रमे अतिचार रहित चारित्रने आराधी अंते महिनानी संसेखना करी ते श्री वि-जय विमानमां देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह केत्रमां सिक्किने पामरो. इति मेघकुमार कथा ॥ महामहोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजय गणिना शिष्यं जपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेला करूप-॥ अथ द्वितीयं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

सूत्रनी सुबोधिका टीकानो आ प्रथम ऋण समाप्त थयो. १

त्रण समुद्र अने चोथो हिमालय ए चार अंत (वेडा) मां प्रजुपणे थयेला धर्मना श्रेष्ट चक्रवर्ती

क्द्पण

11 49 11

एवा अर्थात् धर्मना नायक एवा, समुद्रमां डुबता एवा प्राणी उने घीप जेवा एटखे संसारसागरमां आधाररूप एवा, वसी ताण एटले अनर्थनो नाश करवाना हेतुरूप एवा, वसी कर्मना उपप्रवधी जय पामेला प्राणीर्जने शरणरूप एवा, गतिरूप एवा, सस्यताने माटे जेने छःखी माणसो आश्रित थाय ते गति कहेवाय वली आ संसाररूपी कूवामां परता एवा प्राणी र्रने अवलंबनरूप एवा, मूलमां दीवो ताणं इत्यादि पद प्रथमांत हे ते हतां पण ते चतुर्थीना खर्थमां हिं। विजक्ति हेडे होय तेम व्याख्या करवी. वली जे अप्रतिहत एटसे ढादमी के जींत विगेरेथी अस्वलित एवा उत्तम प्रधान ज्ञान दर्शनने धारण करनारा,वसी उद्म एटसे घातिकर्म जेनाथी निवृत्त थयां हे एवा, वसी राग द्वेषने जीतनारा हे वसी ते उपदेश दान विगेरे आपी जब्य प्राणीउने जीवाडनारा है. आ संसारसमुद्रने तरेखा है अने सेवको-ने तारनारा है. वसी तेर्ज तत्त्वना बोधवाला हे छजे बीजार्जने तत्त्वना बोधक है. पोते कर्मना पांजरामां-थी मुक्त हे श्रने सेवकोने मूकावनारा है. वली पोते सर्वे इतथा सर्व वस्तुने जोनारा है. तेमज छप-द्भव रहित, अचल, रोगरहित, अनंत वस्तुविषयनुं झानखरूप, आदि अंत रहितपणाथी क्रयरहित एवं, तेमां अंत एटखे सर्वथी नाश अने क्य देशथी नाश तेणे रहित एवं, वसी बाधारहित, तथा पुनरावृत्ति, पुनरागमन तेणे रहित एवं सिद्धिगति नामनुं स्थान हे, ते स्थानने प्राप्त थयेखा, जयने जीतनारा श्रीजिन नगवंतने नमस्कार हे. आवी रीते सर्व जिनोने नमस्कार करी शक्र इंड श्रीवीर प्रजुने नमस्कार करे हे.

ते श्रमण जगवंत श्रीमहावीर प्रज्ञ के जे पूर्वना ती श्रीकरोए कहेला श्रने सिक्षिगित नामना स्थान प्रत्ये जवानी इन्नावाला हे, तेमने नमस्कार हो. श्रीवीर प्रज्ञ हवे मुक्तिए जवाना हे तेथी श्रा विशेषण श्रीवीर प्रज्ञ हवे मुक्तिए जवाना हे तेथी श्रा विशेषण श्रीवीर प्रज्ञ हवे मुक्तिए जवाना हे तेथी श्रा विशेषण श्रीवीर श्रीवीर श्रीवीर प्रज्ञ ते हें विश्वानं हो हो श्रीवीर श्रीवी

सुबो∘

11 23 11

ते करीने इंद्र पूर्वाजिमुखे सिंहासन उपर बेठो. ते पठी देवोना इंद्र अने देवोना राजा एवा ते इंद्रने आवो आत्मविषय संकल्प उत्पन्न थयो, जे चिंतात्मक, अजिलाषरूप अने मनोगत एटले वचनश्री प्रकाशित नहीं करेलो संकल्प हतो. ते केवो संकल्प थयो ते कहे हे. आ बनाव कोइ दिवस जूतकालमां थयो नथी, वर्तमानकालमां थतो नथी अने जविष्यकालमां थरो

नहीं,के जे छहँत, चक्रवर्ती,बलदेव,छथवा वासुदेव छंल एटले शुद्धकुलमां, छथम कुलमां, तुन्न-छह्प कुलमां, निर्धन कुलमां, कृपण एटले लोजी कुलमां, जिक्ककोना कुलमां, अथवा ब्राह्मणना कलमां श्राद्या होय, श्रथवा श्रावता होय, श्रथवा हवे पढी श्रावनारा होय एम थयुं नथी त्यारे ते केवा कुलमां जलक्र थाय हे ते कहे हे. ते आ प्रकारे निश्चये करीने उम्र एटखे श्रीत्रादिनाथ प्रजुए रक्षकपणे स्थापन करेला लोको तेर्जना कुलमां, जोग एटले गुरुपणे स्थापन करेला तेर्जना कुलमां, राजन्य ए-टले श्रीक्रषत्रदेव प्रजुए मित्र तरीके स्थापन करेला तेर्डना कुलमां, इक्वाक एटले श्रीक्रषत्रदेवना वंशमां उत्पन्न थयेला तेर्चना कुलमां,कित्रिय एटसे श्रीत्रादिनाये प्रजाना दर्शन तरीके स्थापन करेला तेर्चना कु-लमां, हरि एटले पूर्व जवना वैरी देवताए आणेल हरिवर्ष केत्रनुं युगल तेना वंशजना कुलमां, ते सिवाय बीजा शुद्ध जाति अने कुलवाला वंशमां, (अहीं जाति एटले मातानो पक् अने कुल एटले पितानो पक समजवो.) एवा कुलमां आवेला हे, आवे हे अने आवशे-ते सिवाय पूर्वे कहेला नीचादि कुलमां ते अई-तादि अवतरता नथी. त्यारे ते प्रजु अहीं केम उत्पन्न थया ते कहे है- जवितव्यता नामे एक लोकमां आ-श्चर्यकारी जाव-बनाव रहेलो हे अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल उद्घंघन यतां जे एवो कोइ प-दार्थ जलन याय हे. तेमां आ चालता अवसर्पिणी कासमां आवां दश आश्चर्य ययेलां हे. ते आ प्रमाणे-उपसर्ग १, गर्जनुं हरण १, स्त्री तीर्थंकर ३, अजावित पर्षदा ४, कृष्णनुं अपरकंकामां जवुं ५, चंड सूर्यनुं उतरवुं ६, इरिवंश कुलनी उत्पत्ति ७, चमरेंडनो उत्पात ७, एकसो आठनुं सिक थवुं ए, तथा असंयतिनी पूजा रण, ए दश आश्चर्य थयेलां हे. तेनी व्याख्या आ प्रमाणे हे-

कहप०

भ रह भ

उपसर्ग एटले उपद्भव ते श्रीवीर प्रजुने उद्मस्थावस्थामां घणा ययेला हे ते आगल कहेवामां आवहो. वसी ए जगवंतनी केवसीश्रवस्था के जेमां प्रजावधीज सर्व उपडव शमी जाय तेमां पण पोताना शिष्या-जास एटसे अधम शिष्य गोशासे उपडव कर्यों हतो.ते आ प्रमाणे वृत्तांत हे. एक वस्तते श्रीवीर प्रजु वि-हार करता श्रावस्ती नगरीमां समोसर्याः तेवामां गोशाखो 'हुं जिन जगवंत हुं' एम खोकोमां ख्याति क-रतो त्यां आव्यो तेथी 'श्रावस्ती नगरीमां बे जिन जगवंत आव्या हे' एवी लोकोमां प्रसिद्धि यइ ते सां-जली गौतमे जगवान् वीर प्रजुने पूट्यं—स्वामी, 'हुं जिन जगवंत हुं' एम पोताने विख्यात करनार छा बीजो कोण हे? जगवंते कह्युं,ते जिन नथी,पण शरवण गामनो रहेवासी मंखसी अने सुजडा थकी घणी गायोवाली ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थवाथी गोशाल एवा नामने धारण करनार एक मारो शिष्य है. ते मारी पासेथीज जरा बहुश्रुत यह पोतानुं जिन नाम व्यर्थपणे विख्यात करे हे. ते पही आ वात सर्व ठेकाणे प्रसिद्ध ययेखी सांजलीने ते गोशालो ऋति रोष पाम्यो. तेवामां गोचरीए गयेला आनंद नामना जगवंतना शिष्यने कह्यं, दे आनंद! एक दष्टांत सांजल, केटलाएक विश्वक लोको धन मेल-ववाने जात जातनां करी आणां गामामां जरी परदेश जवा नीकढ्या तेर्न कोइ अरखमां पेठा लां जल न मलवाथी तृषातुर थइ जलनी गवेषणा करवा लाग्या. तेवामां चार राफमाना शिलर जोवामां श्राव्यां. तेमणे एक शिखर फोड्युं त्यां तेमांथी घणुं जल नीकट्युं. ते जलबी तृषा रहित यइ वाकीना जलश्री पात्र तरी लीधां. पठी एक वृद्ध विषके कह्युं के आपणुं धारेक्षुं कार्य सिद्ध थयुं. हवे बीजुं शि-खर फोडशो नहीं तेम वार्या तोपण तेर्रण बीजुं शिखर तोडी पाड्यूं. तेमांथी सुवर्ण प्राप्त थयुं. पठी वृद्धे तेवी रीते वार्या तोपण तेर्रण त्रीजुं शिखर फोड्युं. तेमांथी रख प्राप्त थयां. पठी तोपण ते लोजांध व्यापारी उंए चोथा शिखरने फोड्युं. तेमांथी दष्टिविष सर्प प्रगट थयो. तेणे पोतानी दृष्टिनो पात करी सर्वने पंचत्व पमामी दीघा. जे पेखो वृद्ध हितोपदेशक हतो ते न्यायी होवाथी नजीक रहेल देवताए तेने खस्थानमां मूकी दीधो. हे आनंद, आ प्रमाणे तारो

सुवोव

॥ रुछ ॥

धर्माचार्य छाटली संपत्ति प्राप्त चइ तोपण तेथी संतोष न पामी जेवां तेवां जापण करी मने कोपावे हे, तेथी हुं मारा तपना तेजथी तेने जसा करी नाखीश; माटे तुं सत्वर जइ आ खबर तेने निवेदन कर. पेला वृद्ध विश्वकनी जेम तने हितोपदेशक जाणी तारी रहा करीश. आ सांजली आनंद सा-घुए जय पामी ते सर्व वृत्तांत जगवंतनी आगल कहाो. जगवंते कह्युं, हे आनंद, तुं सत्वर जइ गौतमादि मुनिर्जने जणाव के आ गोशालो अहीं आवे हे, तो तेनी साथे कोइए कांइ जावण करवं नहीं. सर्वने आहा अवला चाल्या जवुं. पढ़ी तेमणे तेम कर्युं एटलामां गोशाक्षे आवी जगवंतने कह्यं, हे काश्यप गोत्री, आम केम बोले हे? के आ मंखलीनो पुत्र गोशालो हे. तेतारो शिष्य मंखलीपत्र तो मृत्यु पामी गयो हे. हुं तो जुदोज हुं. परीषहोने सहन करवामां समर्थ एवं तेनुं शरीर जाणी तेमां अ-धिष्ठान करी रह्यो हुं. आ प्रमाणे गोशाक्षे करेला जगवंतना तिरस्कारने नहीं सहन करता सुनक्तत्र अने सर्वानुजूति नामे वे मुनिवचमां उत्तर श्रापवा लाग्या एटक्षे गोशाक्षे तेजोक्षेरपायी तेमने वाली नाख्या, तेर्च दम्धे थइने खर्गे गया. पठी जगवंते कह्युं, हे गोशाला, तुं तेज गोशालो ठो, बीजो नथी. शामाटे वृथा आत्माने गोपवे हे ? आ प्रमाणे आत्मा गोपवी शकातो नथी. जेम कोइ चोर रक्तकोना जोवामां श्राच्यो, पढ़ी ते तृणयी के श्रांगसीयी पोताना देहने श्राहादन करे तेथी ग्रुं ते श्राहादित याय हे? आवी रीते प्रजुए यथार्थ कह्युं एटसे ते छुरात्माए जगवंतनी उपर तेजोसेस्या मुकी ते सेस्या जगवंतने त्रण प्रदक्तिणा करी ते गोशालानाज शरीरमां पेठी तेनाथी शरीर दग्ध यह गर्युं अने विविध वेदना अनुजवी ते सातमी रात्रे मृत्यु पामी गयो. जगवंते पण तेना तापथी उ मास सुधी राती चोख कांति धरो वाधाने छनुजवी. छा प्रमाणे जेना नामना स्मरण्यी सर्वे छःख शमी जाय तेवा वीर जगवंतने पण जे आ उपसर्ग थयो ते प्रथम आश्चर्य हे. १ गर्जनुं हरण एटले बीजा उदरमां मूकी देवुं ते पण कोइ जि-नने पूर्वे थयुं नथी, श्रीवीर प्रजुने थयुं हे ए बीजुं आश्चर्य हे. २ तीर्थंकरो हमेशां उत्तम पुरुषोज थाय हे, स्त्री थता नथी. स्त्रा स्रवसर्विणीमां मिथिला नगरीना पति कुंचराजनां पुत्री मिल्ल नामे उंगणी-

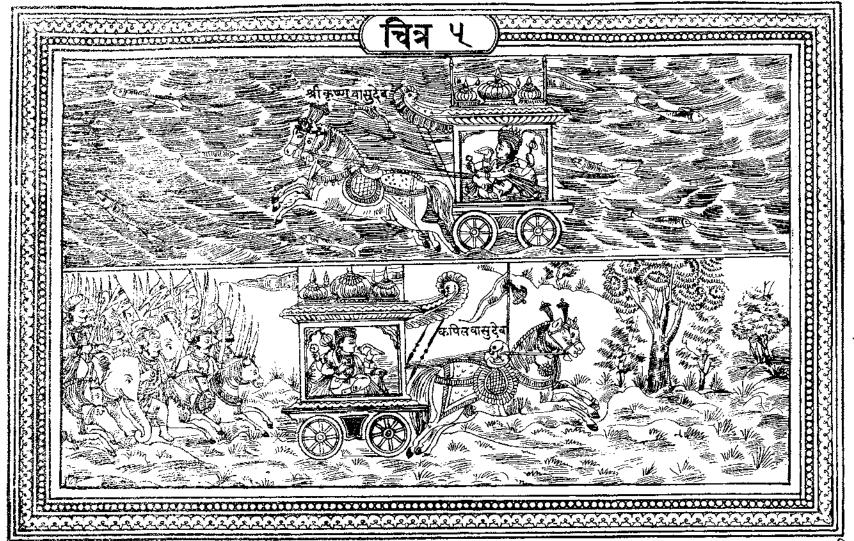
कृङ्प□

॥ ४ए ॥

शमा तीर्थंकर यह तीर्थने प्रवर्ताव्युं हतुं, ए त्रीजुं श्राश्चर्य हे. ३ व्यनाविता पर्पदा एटले नगवंतनी दे-शना कदि पण निष्फल यती नथी, पण ज्यारे श्रीवर्द्धमान खामीने केवलक्कान थयुं त्यारे तेमणे प्रथ-मना समोवसरणमां देशना आपी हती, पण तेथी कोइने विरतिनां परिणाम थयां नहीं. ए चोथं आ-श्चर्य. धनवमा वासुदेव कृष्णने द्रौपदी निमित्ते श्रपरकंकामां जवुं पड्युं ते पण श्राश्चर्य हे. ते श्रा प्रमाणे कथा है-पूर्वे पांमवनी स्त्री औपदीए नारदने आवता जोइ ते संयमी न होवाधी तेने सामा छना यह मान छाप्युं नहीं तेथी तेणे रोष धरी झौपदीने कष्टमां पामवाने धातकी खंडना जरतकेत्रमां श्रावेखी अपरकंका नामे राजधानीनो खामी पद्मोत्तर के जे स्त्रीर्डमां ख़ुब्ध हतो तेनी आगल आवी औपदीना रूपनुं वर्णन कर्युं. तेणे पोताना मित्ररूप कोइ देवतानी पासे डौपदीने पोताने घेर आणी. अहीं पांड-वोनी माता कुंतीए ते खबर जाणी कृष्णने विक्षित करी एटखे कृष्ण द्रौपदीनी गवेषणा करवामां ब्यय थया. तेमने नारदना मुखर्थी ते समाचार प्राप्त थया एटखे तेमणे सुस्थित देवनी श्राराधना करी. देवताए ते कृष्णने मार्ग बताव्यो एटक्षेते बे लाख योजन विस्तारवाला लवण समुद्रने उल्लंघन करी पद्मोत्तरनी श्रपरकंका राजधानीमां गया. त्यां पांमवोनो तिरस्कार करनारा ते पद्मोत्तरने नरसिंहरूप करी जीती लइ पढ़ी झौपदीना वचनश्री तेने जीवतो मूकी पोते झौपदी साथे पाढा वख्या चालता चालता शंखनो नाद कर्यो. ते सांजली त्यां विहार करता मुनिसुत्रत प्रजुना वचनथी कृष्णने आवेला जाणी मलवाने उत्सुक एवा कपिल वासुदेवे पण समुद्ध कांठे खावी रांखनो नाद कथों. पढी ते बंनेना रां-खना नाद परस्पर मही गया. श्रा प्रमाणे श्रा श्रवसर्पिणीमां कृष्णनुं श्रपरकंका राजधानीमां गमन थयुं इतुं ए पांचमुं आश्चर्य हे. ५ कै। शांबी नगरीमां जगवंत श्री वर्द्धमान सामीने वांदवाने सूर्य श्वने चंद्र पोतानां मूल विमानधी जतर्या हता, ए ठहुं छाश्चर्य. ६ हरिवंश कुलनी जत्पत्ति पण एक आश्चर्य हे. ते आ प्रमाणे-कौशांबी नगरीमां सुमुख नामे राजा हतो. तेणे शाखापति वीरक राजानी वनमाला नामनी स्त्री घणी खरूपवान जाणीने पोताना श्रंतःपुरमां नाखी. ते शालापति 🧗

सुबो०

॥ ४ए॥



ता ६५

तेना वियोगथी विकल थइ गयो. जे कोइ जोवामां खावे तेने वनमाला वनमाला कही बोलावतो हतो. एवी रीते कौतुकथी व्यनेक लोकोथी वींटाएलो शालापित नगरमां जमवा लाग्योः वनमाला साथे की का करता राजाए तेने जोयो. तेनी एवी स्थिति जोइ 'आपणे आ अनुचित काम कर्युं' एम ते दंपती चिंता करवा लाग्यां. तेवामां तेमनी छपर विजली पमवाश्री ते मृत्यु पामी गयां. त्यांशी तेर्च इरिवर्ष केत्रमां जुगलीयापणे श्रवतर्यां. शालापति तेर्चने मृत्यु पामेखां सांजली श्ररे ! ते वंने पापीने पाप लाग्युं-एम कही सावधान घइ गयो. ते पठी ए वैराग्यधी तपस्या करी सौधर्म क-हपमां किहिबिषक व्यंतर थयो. विजंग ज्ञानथी ते बंनेने जोइ चिंतववा लाग्यो, श्रहो! श्रा मारा वैरी जुगलीयानुं सुख अनुजवी देवता थरो, तेथी ते बंनेने हुं डुर्गतिमां पांडुं. आवुं चिंतवी पोतानी 🧗 शक्तिथी देह संक्षेप करी तेउने श्रहीं लाव्यो. लाबीने राज्य श्रापी तेमने सात व्यसनो शिखडाव्यां. ते पठी तेर्ड तेवा टयसनी थइ मृत्यु पामी नरके गयां. तेनो जे वंश ते इरिवंश कहेवाय. अहीं जुग-लीयाने श्रहीं लाववा, शरीर तथा आयुष्यनो संदोप करवो श्रने नरकमां जवुं-ए आश्रर्य हे-श्रा सातमुं आश्चर्य. ३ चमर नामना श्रमुरकुमारनो उत्पात ए पण श्राश्चर्य हे-ए श्रा प्रमाणे-पूरण ना-मना एक मुनि तपस्या करी चमरेंडपणे उत्पन्न थया ज्यारे ते नवा उत्पन्न थया त्यारे सौधर्में-इने पोताना शिर उपर रहेला जोइ कोप पाम्या पठी परिघ लई श्रीवीरनुं शरण करी सौधर्मना श्चंगरक्तकोने त्रास पमाकी सौधर्म विमाननी वेदिकामां पग मूकी शकेंद्र उपर श्वाकोश कर्यो. तेथी क्रोध पामी शके जाज्वख्यमान वज्र तेनी उपर मृक्युं, तेथी ए जय पामीने जगवंतना चरणमां संताइ गयो. ते वृत्तांत जाणी इंद्र तरत त्यां व्याव्यो, प्रजुषी चार व्यांगल दूर रहेलुं वज्र लीधुं अने कह्युं के, जगवंतना प्रसादथी तने बोडी मूक्यो है. एम कही चमरने बोकी मूक्यों. आ चमरनुं जे जध्वेगमन ते आठमुं आश्चर्य हे. ए एक समयमां उत्कृष्ट अवगाहनवाला एकसो आठ जीव सिक्किए न जाय ते वतां आ अवसर्पिणीमां तेटला सिद्धिए गया वे. जेमके श्रीक्षजनाथ, तेमना जरत सिवाय नवाणुं

For Private & Personal Use Only

कल्पण

भ २० ॥

पुत्रो अने शांठ तरतना पुत्र एक समये सिद्धिने पाम्या—ए नवमुं आश्चर्य हे. ए असंयत एट से संयम वगरना जे आरंज परिग्रहमां आसक हे तेवानी पूजाः जे संयत—संयमवाला हे ते तो सर्वदा पूजाय, पण आ अवसर्पिणीमां एट से नवमा अने दशमा जिननी अंतरे असंयत एवा पण ब्राह्मणादिकनी पूजा प्रवर्ती ए दशमुं आश्चर्य. १० आ दश आश्चर्यों अनंतकाल गया पही आ अवसर्पिणीमां अयेलां हे. एवी रीते कालनी समानताथी बाकीना चार जरतमां अने पांच ऐरवतमां एम प्रकारांतरे दश दश आश्चर्यों जाणवां. हवे ते दश आश्चर्यों कोना कोना तीर्थमां ययां ते स्पष्ट करे हे—एकसो ने आह सि-द्वित्त प्रवार्त अश्वर्य श्रीक्षमां अयुं हतुं. हिए गया ए आश्चर्य श्रीक्षमां प्रयुं हतुं. हिए गया ए आश्चर्य श्रीक्षमां नवानं काश्वर्य श्रीनिमायना तीर्थमां ययुं हतुं. खी तीर्थमां ययुं हतुं. अपरकंका राजधानीमां जवानं आश्चर्य श्रीनिमायना तीर्थमां ययुं हतुं. खी तीर्थमां ययुं हतुं. अश्वर्य श्रीमिल्लाचना तीर्थमां ययुं हतुं. बाकीनां उपसर्ग, गर्जनं हरण, अजावित पर्षदा, चमरनं कर्ष्व गमन अने सूर्य चंद्रनुं अवतरण—ए पांच आश्चर्य श्रीवीरतीर्थमां ययां हे.

ए दश आश्चर्य समाप्त थयां. हवे एक आश्चर्य बीजुं थयुं. आ आश्चर्य के जे नामगोत्र एटले नाम वडे गोत्र अर्थात् जे गोत्र नामनुं कर्म हे ते विश्वीत केवुं हे के जे आक्षीण एटले स्थितिना आक्षयथी रहेलुं हे, विश्वीत रसना परिजोगधी आज्ञात हे, विश्वी अनिर्जीर्ण अटले जीवना प्रदेशथी नहीं सडेलुं एवुं हे, एवा गोत्र आर्थात् नीच गोत्रना उदयथी जगवान् महावीर ब्राह्मणीनी कुक्तिमां उत्पन्न थया.

ते नीच गोत्र जगवंते सत्यावीश स्थूल जवनी अपेकाए त्रीजा जवमां बांध्युं हतुं, ते आ प्रमाणे वृत्तांत हे. पहेला जवमां पश्चिम महाविदेह केत्रमां नयसार नामे एक यामपित हतो. एक वलते ते काष्ट क्षेवाने वनमां गयो. मध्याह्मकाल यतां ते वनमां जोजनसमये सार्थथी जुदा ययेला साधु है तेना जोवामां आव्या. तेमने जोइ ते हर्ष पामी चिंतवन करवा लाग्यो, आहो! मारां मोटां जाग्य! आ समये अतिथिनो समागम थयो. पही घणा हर्षथी ते साधु हैने आशन पानादिकथी प्रतिलाज्या. पही

सुबोध

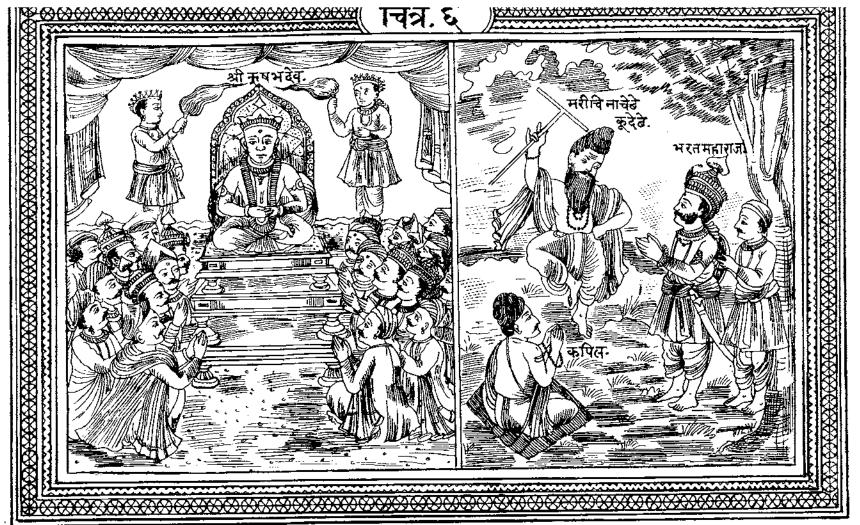
11 20 11

जोजन कर्या बाद ते साधुर्रने नमीने बोख्यो, महाजाग, चालो, श्रापने मार्ग बतावुं. पठी मार्गमां चालता साधुर्राए 'छा योग्य हे' एम धारी धर्मनो उपदेश छापी तेने समकितनी प्राप्ति करावी. स्रंतकाले नवकार स्मरण करतां मृत्यु पामी ते बीजे जवे सौधर्म देवलोकमां पद्योपम स्रायुष्यवालो देवता थयो. त्यांश्री चवीने त्रीजे जवे मरीचि नामे जरत चक्रवर्तीनो पुत्र थयो. वैराग्य प्राप्त करी श्री क्रषत्रदेव प्रजुनी पासे तेणे दीका सीधी श्रने स्थविर पासे एकादशांगीनुं श्रध्ययन कर्युं। एक वखते ते बीष्मक्तुमां तापादिकनी पीका पामी चिंतवन करवा खाग्यो के, "श्रा संयमनो जार छति वहन करवो मुश्केल हे, ते माराची निर्वाह करी शकाशे नहीं छने इवे छा वेष होनी घेर चाढ्या जवुं ते सर्वया अनुचित हे" आवुं विचारी तेणे एक अनिनव वेष धारण कयों. ते आ प्रमाणे-आ साधुर्र मन, वचन अने कायाना त्रण दंम्यी विरत हे अने हुं तेवो नथी तो मारे त्रण दंमनुं चिह्न हो. या साधुर्छ इव्य अने जावयी मुंमित हे, हुं तेवो नयी तेथी मारा मस्तक उपर शिखा अने कुर मुंकन हो। सर्व श्रमणोने प्राणातिपातथी विरित हे परंतु मारे तो स्थृक्ष हिंसार्थ। विरति हो. साधुर्व शीक्षवतथी सुगंधी हे श्वने हुं तेवो नथी तेथी मारे तो चंद-नादिकतुं विक्षेपन हो. मुनिर्व मोह वगरना हे श्वने हुं तो मोहथी आहादित हुं, तेथी मारे हत्रीतुं ब्राह्यादन हो. मुनिर्जना चरण उपान वगरना हे पण मारा वे चरणमां उपान हो. श्रमण-मुनिर्ज कषाय रहित हे अने हुं कषाय सहित हुं, तेथी मारे कषाय वस्त्र हो. मुनिर्ड स्नानथी विरत हे परंतु मारे तो परि-मित (मापवाला) जलघी स्नान तेमज पान हो. एवी रीते खबुद्धियी परिवाजकनो वेष कल्पी खीधो. पठी विरूप वेषवाला तेने जोइ सर्व लोको तेने धर्म पूठवा लाग्या, त्यारे तेर्जनी आगल साधुधर्मनी प्र-रूपणा करवा लाग्यो देशनाशक्तिथी अनेक राजपुत्रोने प्रतिबोध पमाडी जगवंतने शिष्यपणे वर्त्तवा लाग्यो, छने जगवंतनी साथेज विहार करवा लाग्यो. एक वखते जगवंत छयोध्यामां समोसर्या, त्यां वंदना करवाने आवेला जरते प्रजुने पूक्युं के, खामी, आ पर्षदामां आ चोविशीनी अंदर जरतकेत्रने कहपः

॥ ११ ॥

विषे कोइ जिन थाय तेवो पुरुष हे ? जगवंते कह्युं, हे जरत, छा तारो पुत्र मरीचि छा चालती छव-सर्पिणीमां वीर नामे चोवीशमा तीर्थंकर, विदेह केत्रनी मूका राजधानीमां प्रियमित्र नामे चऋवर्त्ती श्राने 🥳 आ जरतकेत्रमां प्रथम वासुदेव थहो आ सांजली हर्ष पामेला जरते मरीचि पासे जह त्रण प्रदक्ति-णा अने वंदना करी कहां, हे मरीचि, जेटला लाज हे तेटला तेंज मेलव्या हे, कारण के तुं तीर्थं कर, वासुदेव अने चक्रवर्ती थहहा हुं तारा आ परिवाजकपणाने वांदतो नथी, पण तुं तीर्थं कर थहहा एम धारी तने वंदना करं हुं. एम वारंवार स्तुति करी जरत पोताना स्थानमां गयो मरीचिए पण ते सां-जली हर्षना अधिकयथी त्रिपदी बनावी नृत्य करतां आ प्रमाणे कहां "हुं पहेलो वासुदेव थहहा, मूका-पुरीमां चक्रवर्ती यइश अने हेह्नो तीर्थंकर यइश. अहो ! मारुं कुल घणुं उत्तम हे. बधा वासुदेवोमां हुं पहेलो वासुदेव थइश, मारा पिता जरत बधा चऋवर्तीं उंमां पहेला चऋवर्तीं हे श्रने मारा पिता-मह रूपजदेव सर्व तीर्थंकरोमां पहेला तीर्थंकर हे. छहो ! मारुं कुल केंद्रुं उत्तम हे ! " छा प्रमाणे मद करवाथी मरीचिए नीच गोत्र बांध्युं. कह्युं हे के, ''जे माण्स जाति, लाज, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप अने विद्या ए सर्वेनुं अजिमान करे तो तेने पुनः ते बधां हीन मसे हे." ते पही ज्यारे जगवंत निर्वाण 🔯 पाम्या, एटले ते पूर्वनी जेम लोकोने प्रतिबोध करी साधुर्जना शिष्य करी तेर्जनी साथे विहार करवा लाग्यो. एकदा मरीचिना शरीरे व्याधि थयो पण कोइ तेनी वैयावच करतुं नहीं त्यारे तेणे चिंतव्युं के,स्र-हो, आ निर्मंथो घणा परिचित हे तथापि ते पारका हे, तेथी जो हुं नीरोगी थाउं तो एक वैयावच करनारो शिष्य करुं-आम विचार्युं. अनुक्रमें ते नीरोगी थयो. एक वखते कपिल नामनो कोइ राजपुत्र मरीचिनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो एटले मरीचिए कहां, हे किपल, तुं साधुर्जनी पासे जइ चारित्र ग्रहण कर. त्यारे किपले कहां, खामी, हुं तो तमारा दर्शनतुं व्रत लड्श त्यारे मरीचि बोल्यो, हे किपले, ते साधुर्ज त्रण प्रकारना दंडणी विरत हे श्रने हुं तो त्रण दंक्वालो हुं इत्यादि सर्व पोतानुं खरूप कही हैं बताव्युं, तथापि ते जारेकर्मी किपले चारित्रथी विमुख थइ बोल्यो, शुं तमारा दर्शनमां सर्वथा धर्म

॥ ११ ॥



पा. २१

नथी ? ते सांज्ञक्षी मरीचिए विचार्युं के, श्रा मारो योग्य शिष्य यशे. एवं विचारीने कह्यं के,कपिल, 🦃 जैन मार्गमां पण धर्म हे अने मारा मार्गमां पण हे. ते सांजली किष्के तेनी पासे दीका लीधी. मरी-चिए छावां उत्सूत्र वचनथी कोटाकोटी सागरोपम संसार उपार्जन कयों. जे छहीं किरणावलीकार कहे वे के, कविला इत्यंपि इहयंपि ए वचन उत्सूत्र मिश्रित हे. तेवा उत्सूत्र नाषीने नियतपणे अनंत संसार हे एम कही पोताना मतनुं स्थापन करवानी रसिकता हे एम जाणवुं. तेर्ननो मत श्रा प्रमाणे हे के ज-त्सूत्र कहेनाराने नियतपर्णेज अनंत संसार थाय हे. जो आ मरीचिनुं वचन उत्सूत्र कहीए तो ए-ने पण श्रमंत संसार प्राप्त थवानो प्रसंग श्रावे, पण तेने श्रमंत संसार थयो नथी, तेथी ते उत्सूत्रमि-पणुं चाढ्युं जतुं नथी. विषमिश्रित श्रन्न विषजे गणाय हे. हवे ए विषे वधारे कहेवुं योग्य नथी,ए-टखुंज बस हे. ते कर्मनी छालोचना कर्या वगर चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी मृत्यु पामी चोथे जर्वे ब्रह्मलोकमां दश सागरोपमनी स्थितिवालो देवता थयो त्यांथी चवीने पांचमे जर्वे कोल्लाक ना-मना प्राममां एंज्ञी लाख पूर्वना ऋायुष्यवालो ब्राह्मण थयो ते ऋतिविषयासक्त श्रने ज्ञुकवगरनो थयो वेवटे त्रिदंभी यइ बहुकाल सुधी संसारमां जम्यो. या तेना जब स्यूल जवनी खंदर गणाता नथी. त्यांथी **ब**हे जबे स्थूणा नगरीमां बाँतेर लाख पूर्वना श्रायुष्यवालो पुष्प नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंभी थइ मृत्यु पाम्यो. सातमे जवे सौधर्म कल्पमां मध्यस्थिति देवता थयो त्यांथी चवीने आठमे जवे चैत्य | याममां साठ लाख पूर्वना **ऋायुष्यवालो ऋग्नियोत नामे ब्राह्मण** ययो. ते त्रिदंडी यइ मृत्यु पाम्यो. नवमा जवमां ईशान देवलोके मध्यस्थितिवालो देवता थयो, त्यांधी चवी दशमे जवे मंदर शामे ठपन्न लाख पूर्वना आयुष्यवालो अग्निजूति नामे ब्राह्मण थयो. छंते त्रिदंमी थइ मृत्यु पाम्यो अगीयारमा कृङ्पष

॥ ११ ॥

जवमां त्रीजा कष्टपनी ऋंदर मध्यस्थितिवालो देवता थयो. लांधी चवी बारमे जवे श्वेतांबी नगरीमां चुम्मासीश लाख पूर्वना आयुष्यवालो जारहाज नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी यइ मृत्यु पामी तेरमे जवे अ चुम्मार्क्षीश खाख पूर्वना श्रायुष्यवाली जारहाज नामे ब्राह्मण श्रयोगते त्रिदंडी श्रद्द मृत्यु पामी तरमे जवे कि मार्हेड कल्पमां मध्यस्थिति देवता श्रयोगत्यांशी चवीने केटलोक काल संसारमां जमी चौदमे जवे राजरह नगरमां चोत्रीश खाख पूर्वना ऋायुष्यवालो स्थावर नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी श्रइ मृत्यु पा-मी पंदरमा जनमां ब्रह्मलोकमां मध्यमस्थितिनालो देन थयोः सोलमा जनमां कोटिनर्षना आयुष्यनालो विश्वजूति नामे युवराज पुत्र थयोः ते संजूति मुनि पासे चारित्र खद्द एक हजार वर्ष हुस्तप तपस्या करवा खाग्योः एक समये मासोपवासना पारणा माटे मथुरापुरीमां गोचरी सारु गयोः खां कोइ एक गाये तप-स्याघी कृश यवाने खीधे तेने पृथ्वी उपर पामी नाख्यो. तेने पडेलो जोइ त्यां परणवाने आवेला विशाल-नंदी नामना तेना काकाना पुत्रे तेनुं उपहास्य कर्युं, तेथी कोप पामी तेणे ते गायने वे शीगडे पकडी छा-काशमां जमावी श्रने एवं नियाएं कर्युं के, में करेखा जग्र तपथी हुं जवांतरे घणो पराक्रमी थाउं. त्यां-थी मृत्यु पामी सत्तरमे जवे महाशुक्र विमाने जत्कृष्ट स्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने छडारमे जवे पोतनपुरनो राजा प्रजापित के जे पोतानी पुत्री उपर कामी थयो हतो, तेनी पत्नीरूप मृगावती पुत्रीनी कुक्तिमां चोराशी लाख वर्षना आयुष्यवालो त्रिष्टष्ट नामे वासुदेव थयो. त्यां बाल्यवयमां पण प्रतिवासुदेवना शाक्षिकेत्रमां विव्न करनारा सिंहने शस्त्र ढोमी विदारण कर्योः श्रनुक्रमे वासुदेवपणाने प्राप्त थयो. एक वखते ते वासुदेवे पोताना शय्यापालकने आङ्का करी के, ज्यारे अमे सुइ जइए त्यारे तुं आ गायकोने गायन करता अटकावजे. तेवी आज्ञा कर्या वतां गीतरसमां आसक्त अयेखा है ते शय्यापालके वासुदेव सुता हता छाने तेर्राने वार्या नहीं. ते पढ़ी क्रणवारे जायत थह वासुदेवे कह्यं, "श्ररे पापी,मारी श्राङ्गा पालवाथी पण तने गीतश्रवण प्रिय लाग्युं, तो ले, तेनुं फल जोगव- " एम कही तेना बंने कानमां तपेलुं सीसुं रेड्युं. श्रा कृत्यथी तेणे पोताना कानमां खीला नखाव-वानुं कमे उपार्जन कर्युं. एवी रीते श्रनेक पुष्कमें करी लांथी मृत्यु पामी उंगणीशमे जवे सातमी ना-



पा. २२

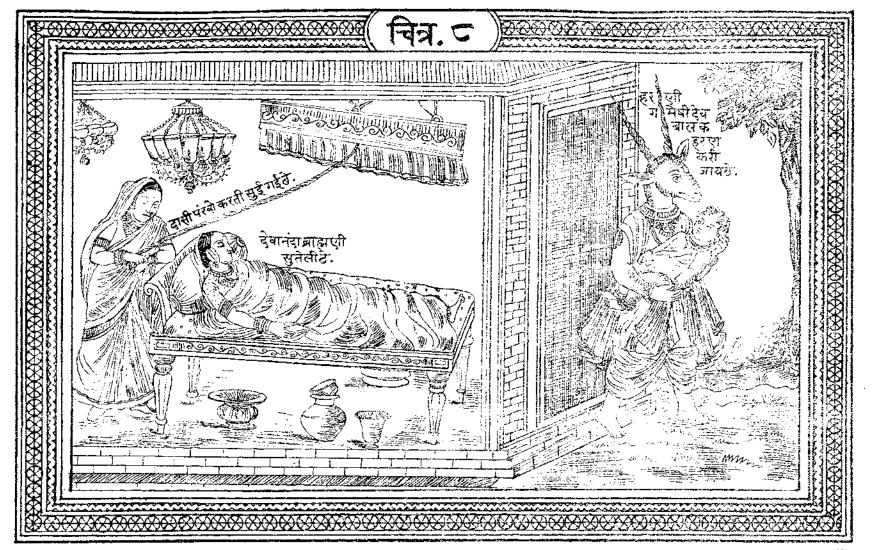
रिके नारकीपते उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकली वीशमा जनमां सिंह थयो. त्यांथी मृत्यु पामी एकवीश-मा जवमां चोथी नारकीमां उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकली घणा जव जमी बावीशमे जवे मनुष्यपणुं प्राप्त करी शुज कर्म उपार्जन करी त्रेवीशमें जवे मूका राजधानीमां धनंजय राजानी धारिणी देवीनी कुक्तिमां चोराशी लाख पूर्वना छायुष्यवालो प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती थयो. ते पोटिलाचार्यनी पासे दीका लड़ एक कोटि वर्ष सुधी दीका पाली चोवीशमें जबे महाशुक्र देवलोकमां देवता थयो. त्यांघी चवीने पचीशमे जवे आ जरतकेतनी उन्निका नगरीमां जितशत्रु राजानी जङा नामे देवीनी कुक्तिमां पचीश खाख वर्षना आयुष्यवाखो नंदन नामे पुत्र थयो. ते पोहिंखाचार्यनी पासे चारित्र खइ जाव जीव सुधी मासक्तपण करी वीश स्थानकनी स्थाराधना वडे तीर्थंकर नामकर्म निकाचित करी एक खाख वर्ष सुधी चारित्रपर्याय पाली मासिक संक्षेखनाथी मृत्यु पामी बवीशमे जवे प्राणत कब्पमां पुष्पोत्तरावतं-सक विमानमां वीश सागरोपमनी स्थितिवासो देवता थयो. त्यांथी चवीने पूर्वे मरीचि जवमां बांधेसा अने जोगववाने वाकी रहेला नीच गोत्रना कर्मथी सत्यावीशमे जवे ब्राह्मणकुंग्याम नगरमां क्रपजदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा ब्राह्मणीनी कुकिमां ते जलक थयो. तेथी शक्र-इंड थ्रा प्रमाणे चिंतवे हे के एवी रीते नीच गोत्र कर्मना उदयथी छाईंत, चक्री,बलदेव छाथवा वासुदेव विगेरे छांत प्रमुख नीचकुलोमां आव्या है, आवे हे अने आवरो, अने कुक्तिमां गर्नपणे जत्पन्न थया है, थाय है अने थरो, पण जन्म क्षेवाने माटे तेर्ज योनिमांथी नीकस्या नथी, नीकलता नथी श्राने नीकलरो नहीं. जावार्थ एवो ने के कदाचित् कर्मना उदयथी ते ऋईत विगेरेनो अवतार तुत्र प्रमुख नीच गोत्रमां थाय, पण योनिथी जनम तो थयो नथी, थतो नथी अने थशे नहीं; अने आ अमण जगवंत महावीर प्रजु जंबूद्वीपने विषे जरतकेत्रमां ब्राह्मण्कुंडघाम नगरमां ऋषजदत्त ब्राह्मणनी स्त्री देवानंदानी कुक्तिमां गर्जपणे उत्पन्न थया हे, ते माटे खावो खाचार हे. ते कोनो खाचार हे ते कहे हे. देवतार्डना राजा शकादि इंडोनो खाचार हे. के खिला खातीत, वर्त्तमान खने खनागत एवा इंडोनो खाचार हे.ते कयो खाचार हे ते कहे हे.तेवा प्रकारना पूर्वे कस्पव

। १३ ॥

कहेखा खरूपवाला श्रंत्यादि कुलथी श्रईत प्रजुर्जने लइने तेवा प्रकारना उप विगेरे बीजी विशुद्ध जाति अने कुलवाला वंशमां राज्यसंपत्ति करते ठते अने पालते ठते मुकवानो इंडोनो आचार हे, माटे ते श्रेय-कब्याण हे, मने पण घंटे हे के, ज्ञात एटखे श्रीक्षजस्वामीना वंशना क्रिजिमां प्रख्यात एवा कास्यपगोत्री सिद्धार्थ राजानी वाशिष्टगोत्री नार्या त्रिशला कत्रियाणीनी कुक्तिमां गर्नपणे प्रजुने मू-कवा जोइए छाने जे त्रिशला क्षत्रियाणीनो पुत्रीरूप गर्ज हे, ते त्यांची लइ जालंधरसगोत्री देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्तिमां मूकी देवा मारे युक्त हे. एम करीने ते विचारे हे, विचारीने पदाति-सेनाना नायक एवा हरिणेगमेषी देवने बोलावे हे. बोलावीने आ प्रमाणे कहे हे-हे देवानुप्रिय, स्यांथी मांभीने सा-हरावित्तए त्यां सुधीनां चार सूत्रो वके इंड पोतानुं चिंतवेक्षं हरिणैगमेषी देवने कहे हे. वसी कहे हे के, हे देवानुत्रिय, इंडोनो खाचार हे ते कारण माटे तुं जा खने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्तिमांथी जगवंतने त्रिशला क्तियाणीनी कुकिमां मुकी दे, श्रने त्रिशलानो जे गर्ज हे तेने देवानंदानी कुकि-मां मूकी दे. ए प्रमाणे करीने आ मारी आज्ञाने सत्वर अर्पण कर. कार्य करीने आवी, आ कार्य में कर्युं, एम शीव निवेदन कर. ते पढ़ी ते हरिणैगमेषी देव के जे पेदल सेनानो अधिपति छे तेने देवेंड अने देवराज एवा इंडे आ प्रमाणे कहां एटसे हृदयमां हर्ष पामी रोमांचित थइ गयो. एवो इरिंगैगमेषी देव मस्तके श्रंजिब करी बोद्यो, जेवी श्राप देवनी श्राङ्का, एम कही श्राङ्कानुं वचन विनयथी सांजले छने अंगीकार करे, छंगीकार करीने इशान कोणमां जाय त्यां जइने वैकिय समुद्धात एटले वैकिय शरीर करवा माटे प्रयत्न करे. ते करीने संख्येय योजन प्रमाण दंगनी श्राकृति-वासा उपर श्रने नीचे विशास जीवप्रदेशना कर्मपुद्गलना समूहने बहार काढे. ते करवा वस्तते श्रावा प्रकारना पुर्गलोने प्रहण करे. ते श्रा प्रमाणे-कर्केतनादि रलोना, जो के रल पुर्गलो श्रोदारिक हे तेथी ते वैकिय शरीर करवामां असमर्थ है. तेमां तो वैकिय वर्गणाना पुद्गलोज छपयोगमां आवे, तोपण 💃 रलोनी जेम ते सार पुद्गलो हे एम जाणवुं ते रलो जेवां के हीरा, वैडूर्य, लोहिताक, मसारगह्म, हं-

सुबो 🛚

॥ १३॥



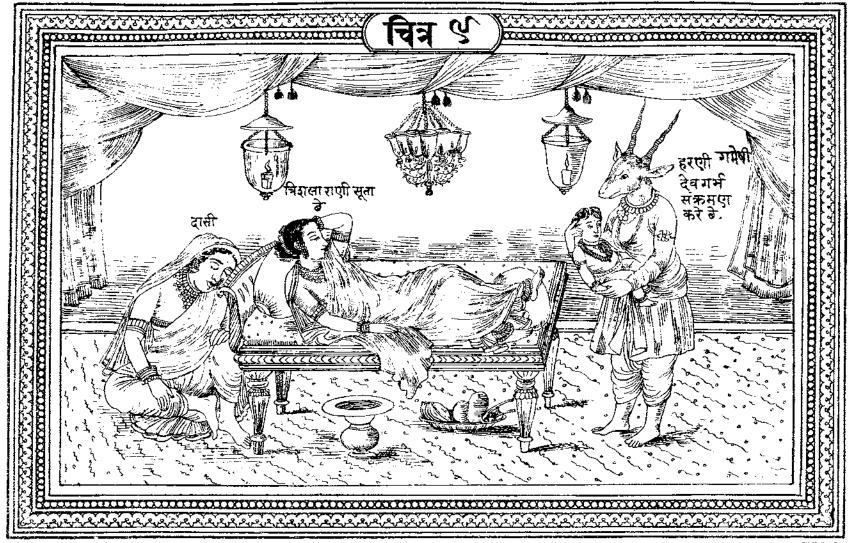
पा. २३

सगर्न, पुष्तक, सौगंधिक, ज्योतिरस, श्रंजन, श्रंजनपुष्तक,जातरूप,सुजग,श्रंक, स्फटिक,श्रने रिष्ट एवां नामनी सोख रत्नजाति हो. तेर्नना जे बादर-स्यूख अर्थात् अत्यंत असार पुद्गलो हे तेमने होडीने, जे क्रिस्स एटले अत्यंत साररूप पुद्गलो होय तेने प्रहण करे. प्रहण करीने फरीबार वैकियसमुद्धात वडे क्रिस्सिन प्रवेती जेम प्रयत्न करे, ते करीने जवने धारण करवानी अपेकाए उत्तर वैकिय एवं बीजं रूप करे, क्रिस्सिन प्रवेती जेम प्रयत्न करे, ते करीने जवने धारण करवानी अपेकाए उत्तर वैकिय एवं बीजं रूप करे, ते करीने श्रन्य गतिर्जधी उत्कृष्ट–मनोहर, चित्तना उत्सुकपणावासी, कायानी चपस्रतावासी, तीव, बाकीनी गतिउने जीतनारी, प्रचंम, शीघ, कोइ ठेकाणे हेयाए एवो पाठ हे एटले विव्ननो परिहार करवामां दक्त एवी श्रने देवता योग्य एवी देवगति वडे श्रतिक्रमण करतो ते तिर्वा श्रसंख्य द्वीपसमुद्री-ना मध्यत्रागे थइ ज्यां जंबूद्धीप हे,तेमां जरतकेत्रने विषे ब्राह्मणकुंमग्राम नामे नगरहे,तेमां क्षजदत्त ब्रा-ह्मणने घेर ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी हे त्यां ते आवे,आवीने महावीरनुं दर्शन थतां तेमने प्रणाम करे,प्रणाम करी परिवार सिहत देवानंदा ब्राह्मणीने अवखापिनी निद्या आपे, ते निद्या आपी अग्रुचि पुरुगलोने हरी से अने ग्रुप पुर्गलो नाखे, ते नाखीने पठी 'जगवंत मने आज्ञा आपो' एम कहे,तेम कहीने बाधा रहित एवा जगवंतने छव्याबाध सुख वडे दिव्य प्रजावयी करतलना संपुटमां प्रहण करे. तेने यहण करती वखते गर्जने कांइ पीका थती नथी. ते विषे पत्रूणं जंते ए जगवतीनी गाथामां कह्युं हे. **बिक्वेद एट** ले खचानो बेद कर्या वगर गर्ज प्रवेश करवो श्रशक्य हे. ते गर्जने हाथमां खइ ज्यां क्रिय-कुंम्याम नगर हे, जे नगरमां सिद्धार्थ क्वत्रियनुं घर हे श्वने जे घरमां त्रिशला क्वत्रियाणी हे त्यां श्वाबे हे, अने आवीने परिवार सहित एवी त्रिशला क्रित्रियाणीने अवलापिनी निदा आपे हे,अने आपीने अ-शुज पुद्गलो इर करे हे, अने तेम करीने शुज पुद्गलोंने मुके हे अने शुज पुद्गलोंने मुकीने ते श्रमण न्नगवंत श्रीमहावीरने बाधा रहितपणे त्रिशला क्तियाणीनी कुक्तिमां गर्नपणे मुके हैं श्रहीं गर्नने संहरण करवामां चार जांगा हे. गर्जाशयथी गर्जाशयमां र गर्जाशयथी योनिमां र योनिथी गर्जाशयमां 🥻 ३ अने योनिथी योनिमां ४. तेमां अहीं योनिमार्गे लइ गर्जाशयमां मुके ए त्रीजो जांगो अनुकात हे, 🖔

करूपण

॥ ४४ ॥

बाकीना जांगानो निषेध कयों हे. ते विषे जगवती सूत्रमां लख्युं हे. वसी जे त्रिशला क्रत्रियाणीनो पुत्रीरूप गर्ज इतो तेने पण देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्तिमां मूके हे, तेम करीने पही जे दिशामांथी पोते 🐉 श्राव्यो ते दिशा प्रत्ये जाय.पढी श्रसंख्य हीपसमुद्रोनी मध्यमां थइ खक्त योजन प्रमाण दिव्य गतिजंथी जमतो ते ज्यां सौधर्म कहपमां सौधर्मावतंसक नामना विमानने विषे शक्र नामना सिंहासन जपर देवेंड, देवराज शकेंड रहेलो हे त्यां आवे.त्यां आवीने इंडनी आज्ञाने तुरत प्रत्यर्पित करे हे. ते कांबे ते समये वर्षाकाल संबंधी त्रीजो मास, पांचमुं पखवामीयुं ते आश्विन मासनो कृष्णपक्त, तेनी त्रयोदशीनो पक्त श्चर्यात् पावली श्वर्ध रात्रि, ते रात्रिनेविषे ब्याशी श्रहोरात्र श्वतिकांत थया पढी त्र्याशीमा श्रहोरात्रनो अंतरकाल एटले रात्रिनो काल प्रवर्तता ते हरिंगैगमेषी देवताए त्रिशला मातानी कुक्तिमां ते श्रमण जगवंत महावीरनो गर्ज संहर्यों ते हरिणैगमेषी देव केवो हतो केजे पोतानो अने इंडनो हितकारी हे, वही अनुकंपक एटले जगवंतनो जक्त है. अनुकंपा शब्द जित्तवाचक है ते विषे 'आयरिय' ए वचननुं प्र-माण है. अहीं किव उत्प्रेक्ता करे है—"श्रीजगवंत सिद्धार्थ राजाना आसकुलना घरमां प्रवेश करवाने क्-णवार मुहूर्त आववानी राह जोता होय तेम जे बाह्मणना घरमां ब्याशी अहोरात्र सुधी रह्या हता, ते श्रीचरम तीर्थंकर प्रञ्ज पवित्र करो ते संहरण काले श्रमणत्रगवंत श्रीमहावीर त्रण काने युक्त हता, तेथी पोतानुं संहरण थवानुं हे ते जाणे हे, पण संहरण थती वखते जाणता नथी अने मारुं गर्जमांथी संहरण थयुं ए जाणे हे. श्रहीं शंका थाय हे के संहरण थती वखते ते जाणता नथी ते वात केम संजवे ? कारण के ते संहरण श्रसंख्य समयनुं हे, वली जगवंत श्रने संहरण करनार हरिणैगमेषी देवना ज्ञाननो ते विषय है, तेम तेनी अपेकाए जगवंतने विशिष्ट ज्ञान है. तेना उत्तरमां कहे है के आ वाक्य संहरण करनारा देवनी कुशलताने जणावे हे. ते देवताए जगवंतनुं एवी रीते संहरण कर्युं के जेथी जगवंते जाएयुं तोपण जाणे जाएयुंज न होय तेम खाग्युं, कारण के कांइ पण पीडानो श्रजाव हतो. जेम कोइ कहे हे के तमे मारा पगमांथी एवी रीते कांटो काढ्यो के जे मारा जाणवामांज श्राव्युं



पा.२३

नहीं, ज्यां श्वतिरो सुख लागे त्यां श्वावो व्यपदेश याय हे. सिद्धांतमां पण जोवामां श्वावे हे के जे ठयंतर देवता हे तेर्ड उत्तम स्त्रीर्डनां गीत स्रने वाद्यना शब्दसी नित्ये सुखी स्रने प्रमुदित सह पोताना गतकाक्षने पण जाणता नथी. वली श्राचारांग सूत्रमां कह्युं हे के ते हरण करातां जाणे. प विरोध पण न स्रावे एम मानवुं जे रात्रे श्रमण जगवंत महावीर देवानंदानी कुक्तिमांथी त्रिशलानी क्रिक्तमां सं-हरणथी आव्या, ते रात्रे ते देवानंदाए पूर्वे कहेलां चौद खप्तो त्रिशलाए हरी लीघेलां जोयां. ते जोइ जागी गइ. जे रात्रे जगवंतने गर्जपणे त्रिशला कत्रियाणीनी कुकिमां मुक्या ते रात्रे त्रिशला कत्रिया-णी जे वर्णवी शकाय नहीं तेवा वासग्रहमां हती. जे वासग्रह-शयनग्रह केंबुं हतुं तो के महा जाग्यवंतने योग्य हतुं जे चित्रकर्म वडे रमणीय हतुं जेनो वहारनो जाग चुना विगेरेथी धविक्षित कर्यों हतो जे कोम-ल पाषणादिकथी घसेक्षं,तेथी सुकोमल इतुं.जेनो उपरनो जाग विविध चित्रोथी युक्त इतो. जेनो अधो जाग-तलीयुं देदीप्यमान हतुं. मणिरलोथी जे श्रंधकारने नाश करतुं हतुं. जे पंचवर्णनां मणिउंथी नि-बद्ध होवाथी अत्यंत सम हतुं अने जेनी जूमिनो जाग विविध खस्तिक विगेरेनी रचनाथी मनोहर हतो। पंचवर्णा, सरस, सुगंधी श्रने श्रामतेम वेरेला पुष्पपुंजना उपचार-पूजाथी जे व्यास हतुं. कृष्णागुरु, चीमजातना, सिब्ह्क नामना छने दशांग विगेरे छनेक सुगंधी डब्यना संयोगथी उत्पन्न थयेल धुप जेमां थता हता.ए सर्व वस्तु संबंधी मघमधीने प्रगट थयेल सुगंध वडे जे श्राह्णादक हतुं.वसी जेमां उत्तम सुगंधीनो गंध प्रसरतो हतो.जे वासजवन गंध झब्यना जेवुं खर्थात् खतिसुगंधी हतुं. एवा वासजवनमां न वर्णवीशकाय तेवी शय्या-पतंग उपर ते रही हती. ते केवी शय्या हे ? तो के जेमां शरीरना प्रमाण जेटली तलाइ हे, उजय तरफ एटले मस्तकांत छने पादांतमां बे उंशीषां हे, ते सिवाय बंने पडले उंशीषां हे तेथी ते शय्या बंने जागमां उंची लागे हे. वली तेने लीधे मध्यमां नमेली अने गंजीर हे. जेम गंगा-तटनी रेतीमां पग विगेरे मूकवाथी ते पग नीचे उतरी जाय तेम ते शय्यामां पण अतिकोमलपणाने ली-धे तेम इतुं. श्रतिकोमल रेशमी वस्त्रना पटथी ते श्राहादित हे. वली जेमां रज परे नहीं तेवुं श्राहादन

क.हप ०

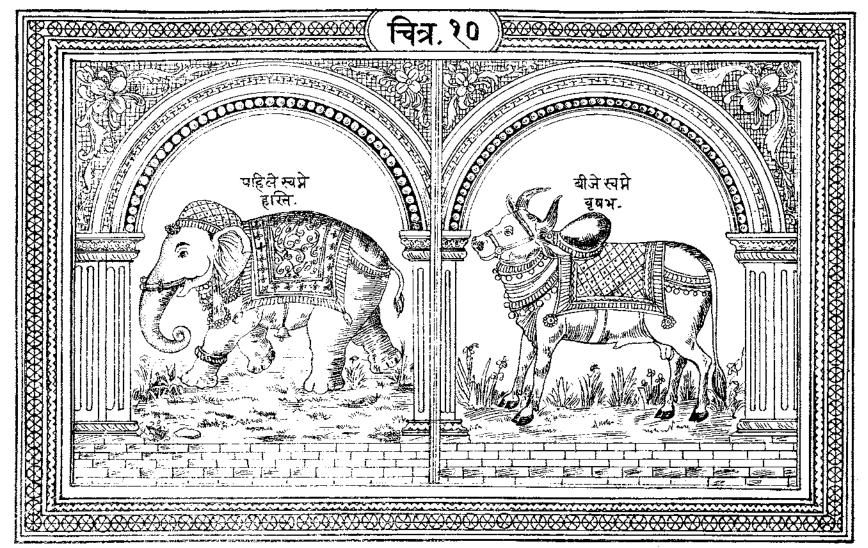
॥ १५ ॥

है. राता वस्ननी महरदानीथी ते ढांकेली हे. श्रति रमणीय है. सुकोमल मृगचर्म, कपासनी रूवांटी, बूर जातनी वनस्पति, मांखण अने आकमाना रूना जेवो जेनो स्पर्श हे. सुगंधी, सुगन्धे करीने प्रधान प्वां पुष्पथी श्रने वासचूर्णथी जेमां उपचार करवामां श्राव्यो हे. श्रावी शय्यामां मध्य रात्रिना श्रवसरे सुती जागती श्रव्य निद्रा करती त्रिशला कत्रियाणी गज, वृषज विगेरे चौद महास्वमोने जोइने जागी प्राप्त ते त्रिशला कत्रियाणी प्रथम स्वमामां हाथी जोवे-श्रहीं 'प्रथम हस्ती जुवे' एम जे कह्युं ते घणी जिनमातार्र तेम जोवे हे, तेथी पाठानुक्रमनी श्रपेकाए कहाँ हे. श्रन्यथा श्रीक्षप देवनी माता प्रथम क्रषत्र श्रमे वीरमाता प्रथम सिंहने जोवे. हवे ते केवो हाथी जोयो के जेने चार दांत हे. कोइ हेकाणे त-उंख चउइंतं एवो पाठ हे तो एवो खर्ष थाय के, तेजथी घणा बखवान् एवा चार दांतवालो. ते हाथी केवो हे ? ऋति उंचो हे. वली वर्ष्या पही छुग्धवर्ण थयेलो विशाल मेघ, मोतीनो हार, क्रीरसमुद्र, चं-द्रनां किरणो,जलनां विंद्धर्नं श्रने रूपानो महान् पर्वत वैताढ्य तेना जेवो उज्ज्वल है। गंधना लोजधी ज्यां जमरार्च आवे वे एवा विशिष्ट गंधवाला मदजलथी जेना गंमस्थल सुगंधी थयेला वे. इंडना हस्ती ऐरावत जेवुं जेना देहनुं शास्त्रोक्त प्रमाण हे-एवा हाथीने त्रिशला माता जुवे हे. वली ते केवो हाथी हे तो के जलपूर्ण मेघनी गर्जना जेवो गंजीर छाने मनोहर जेनो ध्वनि हे. वली ते शुज एटसे प्रशंसवा योग्य है. जैनामां सर्व खद्मणोनो समूह हे, अने जैने प्रधान अने विशाख हर हे एवा उत्तम इस्तीने त्रिशला माताए प्रथम स्वप्नमां जोयो.

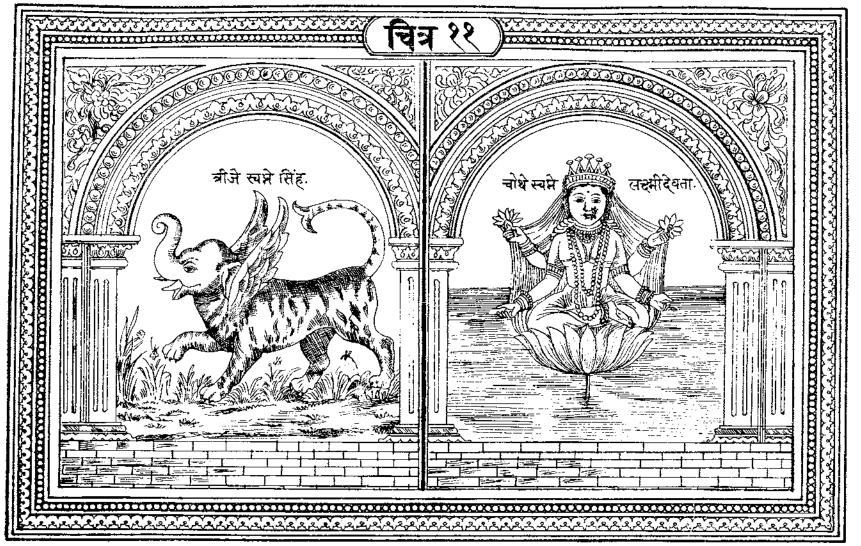
ते हस्तीना दर्शन थया पढ़ी ते वृषज्ञने जुवे छे.ते वृषज्ञ केवो छे तो के उज्ज्वल एवा कमलपत्रना समु-हथी जेनी अधिक रूपकांति छे. जे पोतानी कांतिजेना समूहने विस्तारी सर्व तरफ दशे दिशाने निश्चयप-णे शोजावे छे. वसी जेनो स्कंध जाग शोजाना समूहे करेली प्रेरणाथी होय तेम उल्लास पामती कांति वड़े प्रकाशित, सुशोजित अने मनोहर छे. जो के स्कंधनो जाग उन्नत होवाथी खयमेव उल्लास पामे तथापि शोजाना समूहनी प्रेरणाथी जाणे उल्लास पामता होय तेवी उत्प्रेका करे छे.सूक्क,शुक्क अने सुकुमाल रोम

सुवो०

॥ १५ ॥



पा.२५



पा.२५

वहें क्षिग्ध एवी जेनी कांति है. जेनुं अंग दृढ बांधादार, मांसवाहुं, एथीज पुष्ट, प्रधान अने यथास्थाने रहेला योग्य अवयववाहुं होवाथी घणुं सुंदर लागे हे. जेनां बे शींगमां, घाटा वर्जुलाकार,अति उत्कृष्ट, की काशवाहा पदार्थथी अयजागे युक्त अने तीहण हे. वली ते वृषज दान्त एटले कूर नथी, उप इवने हरनारों हे. तेना दांत सरखा प्रमाणवाला, सुशोजित अने श्वेत-निदांष हे. जेनेना परिमित गुण हे एवा मंगलोनुं जे मुख एटले आववानुं कारण हे एवा वृषजने त्रिशलाए जोयो.

तेवा घृषज्ञना दर्शन कर्या पढ़ी श्राकाशमांथी उतरतो श्रने पोताना मुखमां प्रवेश करतो एक सिंह जिशला माताए खप्तमां जोयो ते सिंह केवो वे तो के हारना समूह, क्षीरसागर, चंडिकरण, जलनां विंडु अने रूपाना महान् पर्वत वैताख्यना जेवो उड़वल वे वसी ते मनोहर होवाथी दर्शनीय वे. तेना वे पोहोंचा—पंजा दृढ श्रने प्रधान वे. वर्जुलाकार, पुष्ट, परस्पर जमाएली प्रधान श्रने तीहण दाढोथी तेनुं मुख श्रलंकृत थयेलुं वे. सारी रीते सिंचन करेला क्षातिवंत कमल जेवा कोमल श्रने प्रमाण्थी सुशोजित तथा प्रधान एवा तेना वंने होव वे. राता कमलना पत्र जेवुं कोमल तालवुं वे श्रने लप् लप् श्रती प्रधान जिह्ना वे—ए तालवुं श्रने जिह्ना ते बंनेथी ते शोजतो हतो.

सोनी जेमां सोनुं नाखीने गांखे हे तेवी कुरमीमां रहे छुं, तपी गये छुं खने प्रदक्षिणा फरतुं ए छुं जे उत्तम सुवर्ण तेना जेवां गोल छने निर्मल विजली जेवां चलकतां जेनां वे नेत्रो हे. विशाल, पृष्ट छने प्रधान जेना बंने साथल हे. परिपूर्ण छने निर्मल जेनी कांध हे. कोमल, उड़क्वल, सूझ्म, श्रेष्ठ लक्षणवाली छने दीई एवी जे केशवाली हे तेना उद्धतपणाथी जे सुशोजित हे. उत्तत, कुंमलाकारे शोजायमान करी जे पोताना पूंहमाने छफलावे हे. जे मनथी कूर नथी, जेनी छाकृति सुंदर हे छने जे विलास सहित गति करे हे. जे छाकाशमांथी नीचे उतरे हे. जेना गाढ छने तीहण छप्रवाला नल हे छने मुखनी शोजाने माटे पह्नव जेवी प्रसारेली जेनी मनोहर जिह्ना हे एवा केशरीने त्रिशलाए जोयो.

ते पढ़ी एटखें सिंहना दर्शन थया पढ़ी पूर्णचंद्र जेवा मुखवाखी त्रिशला देवीए पद्मद्रहना कम-

कहपण

॥ १६ ॥

लमां वसनारी जगवती लक्की देवीने हिमालयना शिखर उपर दिग्गजेंडे पोतानी पुष्ट सुंढथी ऋजिषेक 🦠 करातां जोइ ते लक्की देवी केवी हे? उंचा हिमालय पर्वत उपर थयेला प्रधान कमलस्थान उपर बेहेली हे-ते श्रा प्रमाणे. ए हिमालय पर्वत एकसो योजन उंचो हे. बार कलाए श्रधिक एक हजार ने बावन योजन विशाल श्रने सुवर्णनो हे. तेनी उपर दश योजन उंनो, पांचसो योजन विशाल श्रने एक हजार योजन लांबो वज्रमय तलीयावालो पद्मद्भद नामे धरो हे. तेना मध्य जागे एक कमल हे. ते जलयी वे कोश उंचुं हे, एक योजन विशास हे, एक योजन लांबुं हे. तेनुं नीस रत्नमय नाखवुं दश योजननुं हे. तेनुं मूल वज्रमय हे. तेनो कंद रिष्ट रत्नमय हे. तेनी वाह्य पांखडोड रक्त कनकमय हे. तेनी वचली पांखकी इं सुवर्णमय हे. ते कमलनी कनकमय कर्णिका हे जे बे कोश विशाल, वे कोश दीर्घ श्रने एक कोश उंची हे. तेना केसरा रक्त सुवर्णमय हे. तेनी मध्यमां श्रध कोश विशाल, एक कोश दोर्घ, कांइ ऊलुं एक कोश उंचुं श्रीदेवीनुं जबन हे. तेने पांचसो धनुष्य उंचां, अहीसो धनुष्य विशाल, पूर्व,दिक्षण अने उत्तर दिशामां रहेलां त्रण द्वार हे. तेना मध्य जागे अहीसो धनुष्यना मापवाली रत्नमय वेदिका हे. तेनी उपर श्रीदेवीने योग्य एवी शच्या हे. हवे ते मुख्य कमलनी चारे तरफ श्रीदेवीनां छाजरणे जरेलां, वलयाकारे रहेलां प्रथम कहेला मापथी छर्धा मापे उंचां, लांबां अने विशाल एवां एकसो आठ कमलो है. एवी रीते सर्व पण वलयोमां अनुक्रमे अर्धु अर्धु मान जाणवुं. एवी रीते प्रथम वलय थयुं. वीजे वलये वायव्य, ईशान श्रने उत्तरदिशामां चार इजार सामानिक देवतानां चार हजार कमलो छे. पूर्वदिशामां चार महत्तरां कमलो छे. श्रक्षि दिशामां गुरुस्थाने रहेला श्रन्यंतर पर्षदाना देवतानां श्राठ हजार कमलो हे. दक्तिण दिशामां मित्रस्थाने रहेला मध्यम पर्षदाना देवतानां दञ्च हजार कमेखो हे. नैर्क्तदिशामां किंकरस्थाने 🖔 रहेला बाह्य पर्पदाना देवताउनां बार हजार कमलो है. पश्चिमदिशामां हाथी, अश्व, रथ, पेदल, पाना, गंधर्व अने नाट्यरूप सात कटकना नायकोनां सात कमल. एवी रीते बीजुं वलय थयुं. १ त्रीजे

सुबोष

त २६ 🏗

वलये तेटला अंगरक्तक देवतार्जनां सोल हजार कमलो हे. ए त्री जुं वलयः ३ चोथे वलये अन्यंतर आजियोगिक देवतार्रनां बत्रीश लाख कमलो हे. ए चोशुं वलय ४ पांचमे वलये मध्यम आजि-योगिक देवतानां चालीश लाख कमलो हे. ए पांचमुं वलयः ए हुछ वलये बाह्य छाजियोगिक देवसानां अकतालीश लाख कमलो हे. ए हतुं वलय. ६ मूल कमल साथे सर्व संख्याएं एक कोटी, वीश लाख, पचास हजार, एकसो ने वीश कमलो थाय है. एवी जातना कमललक्षणस्थान उपर जे श्रीदेवी रहेली हे. वहीं ते केवी हती तो के मनोहर रूपवाली हती, तेमना बंने चरण सारी रीते स्थापित करेला कन-कमय काचवा जेवा हता, अति उन्नत अने पुष्ट एवा अंगोठा उपर रहेला श्रीदेवीना नख खाताविक तेवा राता हता, के जाणे खाख विगेरेथी रंग्या होय, तेवा पुष्ट, मध्ये उंचा, सूझा, ताम्रवर्णी अने क्लिम्ब नखो हता. तेमना हाथ तथा पग कमलनां पांदमांनी जेम सुकुमाल हता. तेमनी आंगली को-मल होवाथी श्रेष्ठ हती. कुरुविंद जातना आवर्त्तथी श्रयवा तेवा श्राजूषणयी शोजित, श्रने वृत्तानुपूर्व एटसे हाथीनी सुंढनी जेम पूर्वथी उत्तरोत्तर स्थूल एवी जेनी बे जंघा हती, जेना जानु ग्रप्त हता, जेना बंने उरु गजेंड्रनी सुंढ जेवा पुष्ट इता. सुवर्णनी मेखलाए युक्त होवाथी मनोहर अने विस्तारवालुं जेवुं कटितट हतुं, उंची जातना काजल, ज्रमरा श्रने मेघना समूहना जेवा वर्णवासी, सरल, सरली, घाटी, सूद्य, सुंदर, विलासथी मनोहर, शिरीष पुष्पादि वस्तुर्रायी कोमल श्राने रमणीय, एवी तेनी रोमराजी हती. तेनुं जधनस्थल नाजिमंग्लथी सुंदर,विशाल अने श्रेष्ठ लक्तणोवालुं हतुं. तेना शरीरनो मध्य जाग मुष्टिमां श्रावे तेवो श्रने श्रेष्ठ त्रिवितनी रेखावालो हतो. विविध जातनां चंडकांत विगेरे मणि, वैडूर्य वि-गेरे रत्नो, कनक एटले पीतवर्ण सुवर्ण अने निर्मेख मोटी जातनुं रक्तवर्ण सुवर्ण तेना रचेलां आजरण एटले अंग उपर पहेरवानां गलचवा, कंकण विगेरे श्वने जूषण एटले उपांग उपर पहेरवाना मुद्भिका विगेरे तेर्जथी जेनां मस्तकादि श्रंग श्रने श्रंगुली विगेरे उपांग शोजतां इतां श्रर्थात् ते मुद्भिका विगर तञ्चा जना नत्त्रकार जन नत्त नजन नजन । श्रीदेवीनां श्रंग श्राजरणोश्री श्रने उपांग श्राजूषणोश्री विराजित हतां. वली मोतीना हारश्री भ ८७ ॥

शोजायमान, डोलर विगेरेनां पुष्पोथी व्यास अने देदीप्यमान एवा स्तनयुगलरूप वे सुवर्ष कलश तेणीष धारण कर्या इता.

वसी ते लक्की देवी केवी है, तो के यथायोग्य स्थानके स्थापन करेलां जे मरकतपत्र कहेतां पानां, तेर्च वडे करीने शोजायुक्त थएबी, तथा श्रांखोने अत्यंत श्रानंद श्रापनारा एवा जे मोतीर्चना गुन्ना, ते-उंए करीने मनोहर थएलो जे मोतीउनो हार, तेणे करीने शोनायुक्त थएली. (श्रहीं 'शोनायुक्त यएसी" एटसुं पद मूल सूत्रमां नथी छाप्युं, ते अध्याहार तिरके सेखवुं, श्रने एवी रीतेज आगलनां पण बन्ने विशेषणोमां क्षेत्र खेवुं.) वली ते लक्की केवी हे,तो के जदरस्थ कहेतां हृदयमां रहेली जे दी-नारमाला कहेतां सोनाना सिकार्जनी जे माला तेणे करीने शोजायुक्त थएखी एवी वली ते लक्षी देवी केवी हे,तो के मनोहर छने कंहमां रहेलों जे मिएसूत्र कहेतां मिए हेनों जे रलमय दोरो, तेणे करीने शोजायुक्त यएसी एवी. वली ते लक्की देवी केवी है, तो के आवी रीतना शोजागुणना समुदययी, एटखे कांतिग्रणना ऋतिशयपणाथी शोजित थएखी. हवे ते शोजाग्रणसमुदये केवो हे, तेनां विशेषणो कहे हे. श्रंस कहेतां जे खजा तेर्डना पर लागीने रहेलुं जे कुंम्खनुं युग्म, तेनी उल्लसायमान थता, शो-जती अने समीचीन हे कांति जेमां एवो. वली ते शोजागुणसमुदय केवो हे, तो के लक्की देवीना मु-खनो जाणे कुटुंबीज होय नहीं, एवो. अर्थात् जेम राजा कुटुंबी जं अने सेवकोथी शोने हे, तेम खद्यी देवीनुं मुख, ते शोजागुणसमुदये करीने शोजे हे. ''ऋहीं खजा सुधी खटकता" ए विशेषण कुंडलोनुं हे. त्यारे ऋहीं कोइ शंका करे के, शोजागुणसमुद्यनां बन्ने विशेषणोनी वचे, कुंडलयुगलनुं विशेषण शा-माटे मूक्युं ? तथा ते विशेषणनो परनिपात केम कर्यों ? तेने माटे कहे हे के आ मूल सूत्र प्राकृत जापा-मां हे, अने तेथी ते जाषामां अन्य विशेषणोनी वचे पण बीजां विशेषणो आवे हे, तथा विशेषणोनो परनिपात पण थाय हे, अने एवी रीते सर्व जगोए विशेषणना परनिपात माटेनो खुलासो जाणी खेवो. हवे वसी ते बक्की देवी केवी है, तो के कमलनी पेहे निर्मल अने विस्तारवालां है लोचनो जेणीनां

सुबो०

॥ १९॥

एवी. वली ते बद्धी देवी केवी हे, तो के देवी त्यमान एवा जे हाथो, तेणे करीने यहण करेखां जे बे कमलो, तेलेमांथी जरतुं जे मकरंवरूप पाणी, तेणे करी युक्त एवी, अर्थात् बद्धी देवीए पोताना वन्ने हाथमां वे कमलो यहण करेखां हे, अने तेलेमांथी मकरंवनां एटले पुष्पोमां थता रसनां विंडलं नीचे पमतां जाय हे. वली ते बद्धी देवी केवी हे, तो के केवल कीमाए करीने (पण पसीनो इर करवा माटे नहीं, कारण के देव संबंधी शरीरने पसीनो थतोज नथी) पवन लेवा माटे हलावेलों जे तालवंद कहेतां पंलो, तेणे करीने शोजायुक्त थएली. (अर्ही पण "शोजायुक्त थएली" ए पद अध्याहार जाणवं.) वली ते बद्धी देवी केवी हे, तो के सारी रीते बुटो करेलो, (पण जटाजूटनी पेहे परस्पर चोंटी गएला वालवालों नहीं,) तथा वली स्थामवर्ण एटले काली कांतिवालों तथा घाटो, (पण वच्चे आंतरावालों नहीं,) अने सूक्ष कहेतां कोमल, (पण कुकरना वालनी पेहे जाडा केशवालों नहीं,) तथा अत्यंत लंबायमान थएलो, एवो हे विणिदंड कहेतां चोटलों जेणीनो, एवी रीतनी बद्धी देवीने त्रिशला क्रियाणीए चोथा स्वममां जोइ.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणि, शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली कटपसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती जाषांतरमां वीजो क्रण समाप्त थयो श्रीरस्तु ॥

॥ श्री जिनाय नमः॥

तृतीयं व्याख्यानं प्रारच्यते

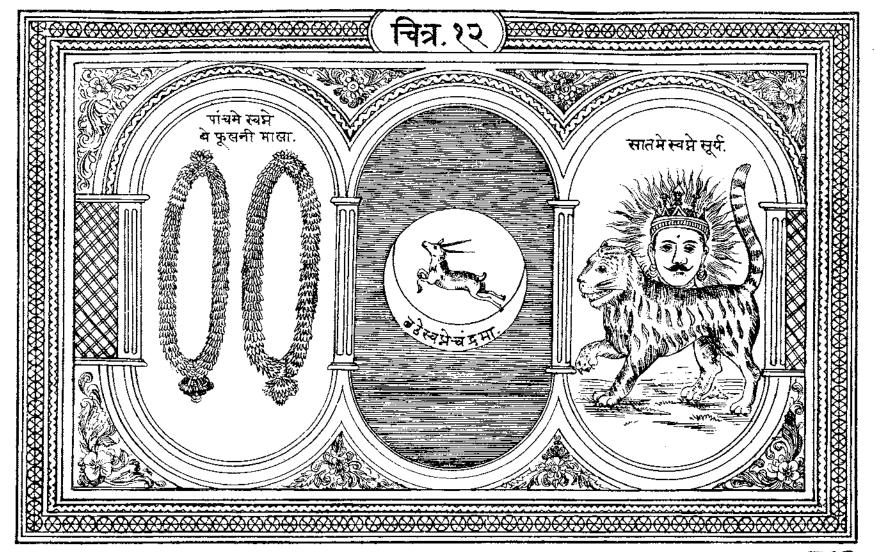
हवे एवी रीतनुं खक्कीनुं खप्त जोया बाद, त्रिशक्षा क्तियाणीए नजस्तल कहेतां आकाश-तलमांथी पमती एवी जे दाम कहेतां पुष्पनी मालानुं, पांचमुं खप्त जोयुं. ते पुष्पोनी माला केवी हे, तो के सरस कहेतां मकरंदे करीने युक्त हे पुष्पो कहेतां फुलो जेमां, एवां जे कल्प-बृक्तोनां पुष्पो, तेर्न वडे करीने रमणीय कहेतां मनोहर थएखी एवी. वली ते पुष्पोनी माला कहप

॥ २७ ॥

केवी हे, तो के चंपो, छशोक, पुन्नाग, नाग, प्रियंग्र, शिरीष, मुफर, मल्लिका, जाइ, जूइ, श्रंकोल, कोज, कोरंट, दमनकपत्र, नवमालिका, वकुल, तिलक, वासंतिक, सूर्य-विकाशी कमल, चंद्रविकाशी कमल, पाटल, कुंद, अतिमुक्त तथा सहकार आदिकनां पुष्पोनी हे सुगंधी जेमां एवी. वली ते पुष्पोनी माला केवी हे, तो के अनुपम एटखे जेने कंइ पण उपमा श्रापी शकाय नहीं एवो श्रद्धितीय, श्रने मनने श्रायंत श्रानंद उपजावे एवो जे सु-गंध, तेले करीने आसपास दशे दिशाउने सुगंध युक्त करती एवी. वली ते पुष्पोनी माला केवी हे, तो के सर्वर्त्तुकं कहेतां सघली क्तुर्डमां मलतां जे पुष्पो तेणे करीने युक्त थएली एवी, अर्थात ते पुष्पमालामां छए क्तुमां यतां पुष्पो ग्रंथेलां हतां. वली ते पुष्पोनी माला केवी हे,तो के अलंत दिदीप्यमान थतां, अने तेथीज अत्यंत मनोहर खागतां, एवां जे जुदी जुदी जातनां खाल, पीला विगेरे रंगोनां जे पुष्पो, तेर्डए करीने वचेवचे करेली जे रचना कहेतां गुंथणी, तेथी चित्र कहेतां आश्चर्य करनारी एवी. आ विशेषणथी एवो जावार्य कह्यों के ते पुष्पमालामां घणो सफेद वर्ण वर्ते हे, अने अंदर थोडा थोमा बीजा पण वर्णों हे, एम सूचव्युं. वसी ते माला केवी हे, तो के ग्रमग्रमा-यमान एटले कर्णने मधुर लागे एवो जे शब्द, तेने करतो, श्रने श्रन्य स्थानकेथी त्यां श्रावीने, ते पुष्पोनी मालामां अत्यंत आसक्त थतो, तथा न समजी शकाय एवा गुंजारवने करतो एवो षट्-पद, मधुकरी (मधमाख) तथा च्रमरोनो जे समूह,ते हे श्रम जागमां, बन्ने पमखांना जागमां तथा नीचेना जागमां जेने एवी अर्थात् ते पुष्पमालानो विस्तार पामतो जे अत्यंत सुगंध, तेथी करीने ते मालाना सघला जागो पर जमरार्ज छावीने वलगेला इता. छहीं षट्पद (व पगवालो), मधु-करी, तथा ज्रमर विगैरे जुदा जुदा रंगना जमरावनी जातिव कहेली है, एम जाणी खेवुं. एवी रीतनी पुष्पोनी मालाने आकाशमांथी पनती त्रिशला इतियाणीए पांचमा स्वप्नमां जोइ. त्यार पढी बहा सममां त्रिशला क्तियाणीए चंडने जोयो. ते चंड केवो हतो, तो के गोक्तीर क-

सुबो०

॥ २७ ॥



पा.२⊂

हैतां गायनुं हूध, फीण, पाणीना कणीश्रा, तथा रजतकलश कहेतां रूपानो कलश, तेना सरखा सफेद रंगवालों वली ते चंड केवो हतो तो के शुज एटले शांतता श्रापनारो एवो. वली ते चंड केवो हतो, तो के श्रा डिनयामां रहेता जेलोकों, तेर्नां हृदय एटले मन, श्रने नयन कहेतां श्रांखोने, कांत कि हेतां वल्लज लागे एवो. वली ते चंड केवो हतो तो के संपूर्ण हे मंडल जेनुं एवो वली ते चंड केवो हतो तो के तिमिर कहेतां श्रंधकारोंनो जे समूह तेणे करीने निबिक श्रने गंजीर एवां जे वननां गहारों कहेतां कांमीर्ट्या जरपूर एवा वनना जागों, तेर्टमां श्रंधकारनो श्रजाव करनारों, श्रर्थात् कांमीर्टमां रहेला श्रंधकारनो एण नाश करनारों. कह्युं हे के:—

विरम तिमिर साहसादमुष्मा-चदि रविरस्तमितः खतस्ततः किम्॥ कलयसि न पुरो महोमहोर्मि-स्फुटतरकैरवितांतरिक्तमिं इम् ॥ १॥

अर्थ-हे अंधकार, श्रा तारा साहसथी तुं श्रटकी जा (एटले विराम पाम), कारण के सूर्यना श्राथम्या पढ़ी, तेजनां मोटां मोजांउंए करीने, प्रफुद्धित थयेखा चंद्रविकासी कैरव सरखुं करेख हे श्राकाश जेणे, श्रथवा कांतिवाखां किरणोए करीने रक्तण करेखुं हे श्राकाशनुं जेणे एवा श्रा चंद्रने शुं, तुं श्रगामी जोतो नथी ?

वली ते चंड केवो तो के वर्ष श्राने मास श्रादिकना प्रमाणने करनारा, ग्रुक्क श्राने कृष्ण एवा जे बे पक्तो, तेनी मध्यमा रहेली जे पूर्णिमा, तेने विषे राजती कहेतां शोजती हे, लेखा कहेतां कला जेनी एवो. वली ते चंड केवो हे तो के कुमुद कहेतां चंद्रविकासी जे कमलो, तेर्डने विकखर करनारों कह्युं हे के:— दिनकरताप्रयाप-प्रपन्नमूर्ज्ञानि कुमुदगहनानि॥ उत्तस्थुरमृतदीधिति-कांतिसुधासेकतस्त्वरितं ॥१॥

अर्थ-दिनकर कहेतां सूर्यना तापनी जे व्याप्ति कहेतां फेलावुं, तेथी प्राप्त थएली हे मूर्छा जेर्नने, अर्थात् करमाइ गएलां, एवां जे कुमुदगहनानि कहेतां चंडनिकासी कमलोनां जे वनो, ते, अमृतदीधिति कहेतां चंडनी जे कांति, तेरूपी जे अमृत, तेना सिंचावाथी, अर्थात् तेर्जना क्रह्प□

॥ ५७ ॥

💯 पर चंद्रनां किरणो पनवाथी, एकदम पाठां विकखरपणाने कहेतां प्रफुझितपणाने पाम्या. वली ते चंद्र केवो हे तो के निशा कहेतां जे रात्रि, तेने शोजावनारों, वली ते चंद्र केवो हे तो के सुर रिमृष्ट कहेतां राख आदिकथी मांजीने उज्ज्वल करेलों जे अरिसो, तेना तलीयानी हे उपमा जैने एवो. वली ते चंद्र केवे। वे तो के हंसनी पेठे पटु कहेतां सफेड वे, वर्ण कहेतां रंग जेनो एवो. वली ते चंद्र केवो हे तो के ज्योतिष कहेतां जे ताराई, तेईनां मुखोने शोजावनारो, अर्थात् तेईनो छपरी एवो. वली ते चंड केवो हे तो के तम कहेतां जे छंधकार, तेना प्रत्ये रिपु कहेतां वैरी सरखो एवो. वली ते चंद्र केवो हे तो के सदन कहेतां जे कामदेव, तेनां शरापूर कहेतां जायां (जे तां तीरो रखाय हे, तथा जेने पीठ पाठल योद्धार्ज बांधी राखे हे) ते सरखो अर्थात् धनुषने धारण करनारो माणस, तुणीर कहेतां नाथांने मेलवीने, हर्षित थयो थको, जेम हरिण आदिकनो वध करे हे, तेम मदन कहेतां कामदेव वण चंद्रना उदयने पामीने जरा वण शंका राख्या विना माणसोने पोतानां पुष्पोरूपी वाणोधी व्या-कुल करे हे. वली ते चंद्र केवो हे तो के जलिंघ कहेतां जे समुद्र, तेनी जे वेला कहेतां पाणीनी होता, तेने वधारनारो एवो. वली ते चंड केवो हे तो के प्राणवल्लन कहेतां जे नरतार, तेनाथी थएलो हे वि-रह जेणीने श्रने तेथी करीने छर्मनस्क कहेतां व्ययचित्तवाली एवी जे स्त्री, तेने पोतानां किरणोए करीने शोषमां (शोकमां) गरकाव करतो, श्रर्थात् स्त्रीनां जरतारना वियोगरूपी छःखने उखटो वृद्धि करतो. वली ते चंद्र केवो हे तो के सौम्य कहेतां मनोहर हे रूप जेनुं एवो. वली ते चंद्र केवो हे तो के गगनमंग्रल कहेतां आकाशमंग्रल तेनुं विशाल अने सुंदर आकारवालुं तथा चंकम्यमाण कहेतां चल-नखनाववासुं, एवं शोना करनारुं जाणे तिलकन होय नहीं, एवो. वसी ते चंद्र केवो ने तो के रोहि णी नामनी जे पोतानी स्त्री तेनो खामी हे, तथा तेणीने हित करनारो हे, हितकारी एवं विशेषण एक पक्तना प्रेमने दूर करवा माटे हे. (अर्थात् बन्ने पक्तना प्रेमने बतावनारुं हे.) आवी रीतनो चंड अने रोहि ए। वचे हि प्रीजरतारनो संबंध कविसमयनी अपेक्तायी हे,केमके रोहि ए। तो एक नक्तत्रविशेष हे, अने चंड तथा

॥ शृष् ॥

नक्तत्रनी वश्चे तो खामिसेवकपणानो जाव सिद्धांतमां प्रसिद्ध हे,पण कंइ स्त्रीजरतारपणानो जाव कहेलो नश्री. एवी रीते हहा खप्तमां त्रिशला कत्रियाणीए उल्लसायमान थता एवा संपूर्ण चंद्रने जोयोः ते वार पढ़ी सातमा खप्तमां त्रिशला कत्रियाणीए सूर्यने जोयोः हवे ते सूर्य केवो हतो, तेनुं वर्णन करे

हे. निश्चचे करीने तमःपटल कहेतां अंधकारनो जे समूह, तेने परिस्फोटक कहेतां नाश करनारो एवो. वसी ते सूर्य केवो हे तो के तेज वड़े करीने प्रज्वसत् कहेतां जाज्वस्यमान हे रूप जेतुं एवो. हवे सूर्यनां विवसां रहेला बादर एवा जे पृथ्वीकाय, ते तो हमेशां शीतल कहेतां छंकक आपनारा छे, पण आतपनामकर्मनो तेने (सूर्यने) जदय होवाथी तेजे करीने तेर्ज माणसोने व्याकुल एटले पीमा-युक्त करे हे, एवी रीते जाणवुं बली ते सूर्य केवो हे तो के रक्ताशोक कहेतां लाल रंगवालुं अशोक जातनं कोइ वृक्तविशेष, तथा प्रफुद्धित थएबुं जे किंशुक कहेतां केसुमानुं पुष्प, तथा शुक्रमुख कहे-तां पोपटनुं मुख (चांच) तथा गुंजार्ध कहेतां चणोठीनो अर्थो जाग, के जे खोकोमां प्रसिद्ध है; एटखी वस्तुर्जनी जे रताश, तेना सरखो छे लाल वर्ण जेनो एवो. वसी ते सूर्य केवो छे तो के कमलो-नां जे वनो, तेर्रने अलंकरण कहेतां शोजा करनारो, अर्थात् तेर्रने विकखर करनारो, कारण के विक-खर एटखे प्रफुल्लित थएलां, एवां जे कमलो, ते जाणे के छलंकारोज होय नहीं तेवां शोजी नीकक्षे वे. वसी ते सूर्य केवो वे तो के ज्योतिषनुं जे चक्र, ते प्रत्ये अंकन कहेतां चिह्नरूप, अर्थात् मेष आदिक जे राशिज, तेजमां जे पोतानुं संक्रमण, तेणे करीने ज्योतिषनां लक्कणने जणावनारोः वसी ते सूर्य के-वो हे तो के खंबरतल कहेतां जे खाकाशतल, ते प्रत्ये प्रदीपक कहेतां प्रकाशनो करनारो वली ते सूर्य केवो हे तो के हिमपटल कहेतां बरफनो जे समूह तेने गलग्रह एटखे गलहस्त देनारो, अर्थात् बरफना समूहनो नाश करनारो. वसी ते सूर्य केवो है तो के ग्रहगण कहेतां ग्रहोना जे समूहो तेर्ज-नो जरु कहेतां महान् एवो नायक कहेतां खामी है वली ते सूर्य केवो हेतो के रात्रिविनाश कहेतां रात्रिने नाश करवाना एक कारणरूप एवो. वली ते सूर्य केवो है तो के छदयास्त कहेतां तेना छदय क हपण

11 30 11

यवाना श्रवसर वखते तथा तेना श्रस्त थवाना श्रवसर वखते, फक्त एक मुहूर्तवार सुधी हे सुखदर्शन कहेतां सुखे करीने जोवापणुं जेनुं एवो, अने ते सिवाय बीजे वखते दुर्निरी हैं यरूपं कहेतां छःखे करी-ने जोइ शकाय एवं हे खरूप जेनुं एवो, अर्थात् जेनी सन्मुख पण जोइ शकातुं नथी एवो. वसी ते सूर्य केवो हे तो के रात्रिने वखते उद्धत कहेतां पोतानी इहा प्रमाणे चालनारा, अर्थात् स्वेहाचारी एवा जे अन्याय करनारा चोर आदिको, तेउंनो जे प्रचार, एटले चोरी माटे आमतेम नटकवुं, तेने निवा-रक कहेतां श्रटकाव करनारो. वली ते सूर्य केवो छे तो के शीतवेग कहेतां छंकीनो जे वेग, तेने मधन करनारो, अर्थात् पोताना तापथी ठंकीने दूर करनारो एवो वली ते सूर्य केवो ठे तो के मेरु नामनो जे पर्वत तेनो आश्रय करीने प्रदक्तिणा वडे करीने (तेनी) मेरुनी आसपास जमनारो एवो वली ते सूर्य केवो हे तो के विशास कहेतां विस्तारवासुं हे मंगप कहेतां मांडसुं जेनुं एवो. वसी ते सूर्य केवो वेतो के रिमसइस्रेण कहेतां दश सो, अर्थात् एक हजार एवां जे पोतानां किरणो तेणे करीने प्रद-बित कहेतां नाश करेली हे, दीप्तिवंत कहेतां चलकाटवाला एवा जे चंड तारा ख्रादिको, तेर्जनी शो-जा जेणे एवा, अर्थात् तेणे पोतानां किरणोए करीने सघला तेजस्वी पदार्थोंनी कांतिनो नाश करेलो छे. हवे छहीं जे सूर्यनां एक हजार किरणो कह्यां,ते तो फक्त लोकमां एवी रीते प्रसिद्ध होवाथी कह्यां हे,पण तेनां किरणो तो काल विशेषनी अपेकाए अधिक पण यह शके हे. लोकिक शास्त्रोमां पण कह्युं हे के:-क्तुजेदात्पुनस्तस्या-तिरिच्यंतेऽपि रहमयः ॥ शतानि द्वादश मधी, त्रयोदश तु माधवे ॥ १ ॥ अर्थ-क्तुर्रना नेदो प्रमाणे वली ते सूर्यनां किरणो वृद्धिपण पामे हे, जेमके चैत्र मासमां तेनां बारसो किरणो थाय हे, अने वैशाख मासमां तेनां तेरसो किरणो पण थाय है ॥ स्तो किरणो थाय हे, अने वैशाख मासमां तेनां तेरसो किरणो पण थाय हे ॥
चतुर्दश पुनर्ज्येष्ठे, नजोनजस्ययोस्तथा, ॥ पंचदशैव त्वाषाढे, षोडशैव तथाश्विने ॥ १ ॥
अर्थ-वद्धी जेह महिनामां तेनां किरणो चौदसो थाय हे,तेम श्रावण अने जादरवामां पण तेटला-

11 30 11

ज एटले चौदसो थाय हे, खने खाषाढ मासमां तेनां किरणो पंदरसो थाय हे, खने खासो महिनामां तेनां किरणो सोलसो थाय हे॥

कार्तिके खेकादश च, शतान्येवं तपस्यि ॥ मागें च दशसार्थानि, शतान्येवं च फाल्गुने ॥ ३॥ पोषे एव परं मासि, सहस्रं किरणा रवेः ॥

श्रर्थ-कार्तिक मासमां तेनां किरणो श्रग्यारसो थाय हे, श्रने माघ मिहनामां पण तेटलांज एटसे श्रग्यारसो किरणो थाय हे, श्रने मागशर मिहनामां एक हजार श्रने पचास किरणो तेनां होय हे, श्रने फागण मिहनामां पण तेटलांज, एटसे एक हजार श्रने पचास किरणो होय हे. वसी पोष मिहनामां तेनां एक हजार किरणो होय हे. एवी रीते सूर्यनुं यंत्र जाणवुं.

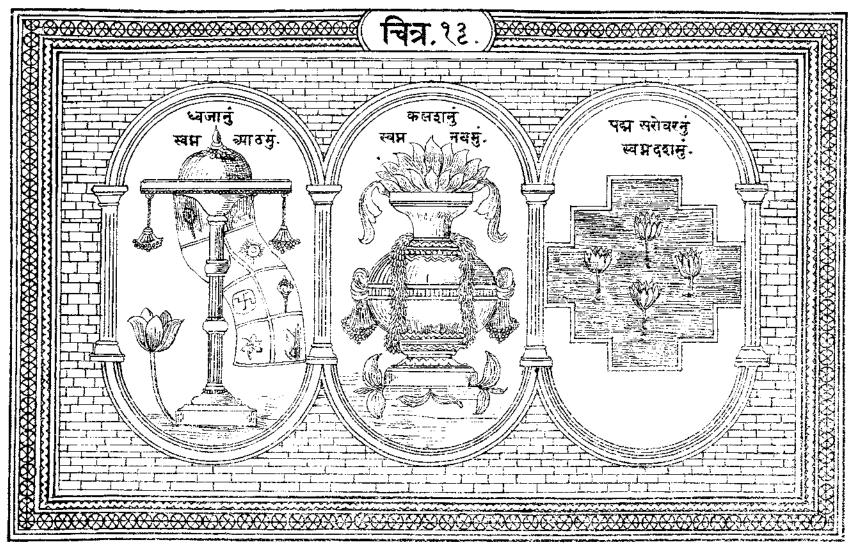
एवी रीते सातमा सक्षमां सूर्यने जोया बाद त्रिशंसा क्रित्रयाणीए खाउमा सक्षमां ध्वजने जोयो. ते ध्वज केवो हे तो के जाल कहेतां उत्तम जातिनुं एटले सो टचनुं जे कनक कहेतां सुवर्ण तेनो बनावेलो जे दंम, तेना पर रहेलो; अर्थात् सुवर्णमय जे दंम तेना शिखर पर रहेलो. वली ते ध्वज केवो वे तो के समूर हीजूत कहेतां जथावंध रहेलां एवां, अने खीलां, कालां, रातां, पीलां अने सफेद, एवी रीते पांचे जा-तिनां रंगवालां, अने तेथी मनोहर लागतां अने वली सुकुमाल कहेतां कोमल, तथा उल्लसायमान थतां, एटखे आम तेम फरकतां एवी रीतनां जे मयूरिए कहेतां मोर नामना पक्तीनां जे पिंडा, तेर्डए करीने जाणे ध्वज पर वाल बनावेला होय नहीं, एवी रीते ते पिंडांड जेना पर शोजी रह्यां हे, एवा ध्वजने, श्रर्थात् जेम माणसना मस्तक पर चोटलो शोने हे, तेम आ ध्वज पर पण वेणिनी जगोए मोर-पिंछनो गुड़ो स्थापेलो हे. वली ते ध्वज केवो हे तो के अधिकसश्रीक कहेतां अत्यंत शोजाए करीने युक्त एवा. वसी ते ध्वज केवा हे तो के नीचे वर्णन करेलां विशेषणोवाला सिंहे करीने शोजायुक्त थएलो. ते सिंह केवो, तेनुं वर्णन हवे करे हे. स्फटिक एटक्षे स्फटिक जातिनुं रत्नविषेष, शंख एटले समुझमां जे थाय है ते, अने वसी जे लोकमां प्रसिद्ध है ते, श्रंक पण रतनी जातिविशेष है ते, कुंद ए सफेद पुष्पनी कह्प□

॥ ३१ ॥

जाति हे, जेने डोलर पण कहे हे ते, दकरजम् एटले पाणीना कणीया, रजतकलश कहेतां रूपानो बना-वेलो जे कलश ते,एवी रीते उपर जणावेली सघली वस्तुउनी पेठे उज्ज्वल वर्णवालो. वली ते सिंह केवो हे तो के मस्तक पर रहेलो, छर्थात् चित्रामणरूपे ध्वजना उपरना जाग पर चित्री राखेलो एवो. वली ते सिंह केवो हे तो के राजमान कहेतां पोताना सुंदरपणाथी अत्यंत शोजायुक्त थएलो एवो, वली ते सिंह केवों ने तो के खाकाशतलना मंमलने फोमी नाखवानेज जाणे नयमवालो थयो होय नहीं. एवो, अर्थात् पवनना जपाटाथी ध्वजा आकाश मार्गमां उंचे उंचे उड्या करती हती, अने तेथी करीने तेमां चित्रामण रूपे करेलो सिंह पण श्राकाश प्रत्ये उठला करतो हतो; तेना पर कविए उत्प्रेक्ता करी के श्रा सिंह जे आकाश तरफ उढ़खा करे हे, ते शुं आकाशने फोभी नाखवानोज उद्यम करे हे शुं? एवो जा-वार्थ जाण्यो. एवी रीते उपर वर्णन करेंद्वा सिंहना चित्रामणवालो ध्वज. वली ते ध्वज केवो हे तो के मंद मंद अने सुखकारी एवो जे मरुत कहेतां पवन, तेनुं जे आश्लेष कहेतां मखवुं, तेणे करीने जे आंदोखन कहेतां चलायमान थवुं,ते वे खजाव जेनो एवो, अर्थात् मंद मंद वाता एवा वायुथी चलायमान थएलो. वली ते ध्वज केवो हे तो के अति प्रमाणवालो एटले मोटो एवो. वलो ते ध्वज केवो तो के माणसोने जोवाने लायक हे खरूप जेनुं एवो. एवी रीतना खातमा खप्तमां त्रिशला कत्रियाणीए ध्वजने जोयो. हवे ते जोया बाद नवमा स्वप्नमां तेणीए रजतपूर्णकलश, एटखे रूपाना बनावेला स्रने संपूर्ण जरेला एवा कलश एटले कुंजने जोयो. ते कलश केवो हे तो के जात्य कहेतां अत्यंत उंची जातिनुं जे कांचन कहेतां सोनुं तेनी पेठे अत्यंत देदीप्यमान हे रूप जेनुं एवो, अर्थात् जेम उत्तम जातिना सुवर्णनुं तेज श्रत्यंत निर्मल होय हे, तेम ते कलशनुं तेज पण श्रत्यंत निर्मल जाणवुं. वली ते कलश केवो है तो के निर्मल एटले बिलकुल मेल विनानुं जे पाणी, तेनाथी संपूर्ण रीते जरेलो, अने तेथीज कल्याणने सूचवनारो एवो. वलीते कलश केवो हे तो के देदीप्यमान है शोजा कहेतां कांति जेनी एवो. वली ते कलश केवो हे तो के कमलोनो कलाप कहेतां जे समूह, ते वडे करीने आसपास सर्व बाजु-

सुबो□

11 32 11



पा.३१.

उंधी शोजतो एवो. वसी ते कलश केवो ने तो के प्रतिपूर्ण एटले जरा पण न्यून नहीं एवा जे मंगलजेदो कहेतां मंगलना प्रकारो, तेर्रनो जे समागम कहेतां संकेत तेना स्थानकरूप; अर्थात् जेम संकेत करी राखेला स्थानक प्रत्ये माणसो श्रवस्य दाखल थाय हे, तेम त्या कलश पण दृष्टि-गोचर थयाथी सर्व प्रकारनां जे मंगलो, ते पण प्राप्त थाय हे एवो जाव जाएको वसी ते कलश केवो वे तो के प्रवररत्नो एटले श्रत्यंत उत्तम उत्तम जातिनां जे रत्नो, तेर्रए करीने शोजतुं जे कमल तेना पर रहेलो एवो; अर्थात् रलोए करीने विकस्तर एटले प्रफुद्वित थएलुं जे कमल, तेना पर ते कलश मुक्यो हतो एवो जावार्थ जाणवो वसी ते कलश केवो है तो के नयन कहेतां जे आंखो, तेर्न प्रत्ये जूषण करनारो, एटझे छांखोने छानंद छापनारो, कारण के कमलनुं विकखर यवुं ते जेम कमलतुं जूषण हे, तेम आंखोने आनंद यवो ते पण तेनुं जूषण हे. वली ते कलश केवो हे तो के अत्यंत देदीप्यमान एवो. वसी ते कलश केवो हे तो के सर्वतः कहेतां सर्व जे दिशार्ट, तेर्ट प्रत्ये निश्चये करीने दीपतो एवो. वली ते कलश केवो हे तो के सौम्य एटले अत्यंत पशस्त कहेतां अत्यंत उत्तम प्रकारनी जे लक्की, तेना तो स्थानक समान एवो. वली ते कलश केवो वे तो के सर्वे प्रकारनां जे पापो कहेतां अमंगलो, तेउंए करीने परिवर्जित कहेतां बिलकुल रहित, अने तेथी करीनेज ग्रुज अने देदीप्यमान देखातो एवो तथा श्री एटखे जे शोजा, तेथी करीने प्रधान कहेतां छारयंत मनोहर लागतो एवो. वली ते कलश केवो हे तो के सर्वर्तुक एटले सवली क्तुर्डमां उत्पन्न यतां जे सुगंध युक्त पुष्पो, तेर्जनी गुंथेक्षी जे मालार्ज, तेर्जने स्थापन करेली वे जे कलशना कंउना जागमां, एवा कलशने त्रिशला क्षत्रियाणीए नवमा स्वप्तमां जोयो.

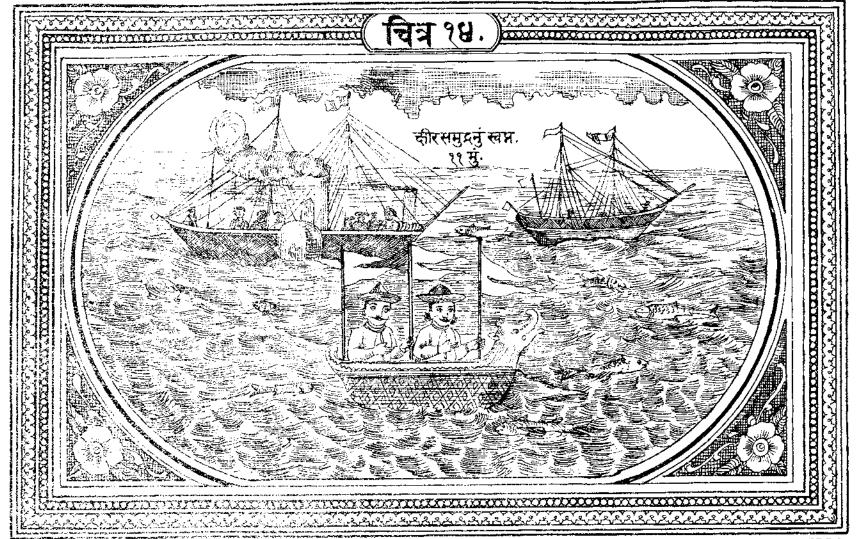
पढ़ी दशमा स्वप्नमां तेणीए पद्मसरोवरने जोयुं. हवे ते पद्मसरोवर केंबुं ढे तो के तरुण कहेतां नूतन एटसे नवो डगेसो जे सूर्य, तेनां जे किरणो, तेर्डए करीने बोधित एटसे विकस्वर अएसां जे सह-स्वपत्रो कहेतां मोटां मोटां जे कमसो, तेर्डए करीने छात्यंत सुगंधीवासुं तथा जरा पीसाश अने रताश कह्य

श ३२ ॥

🖔 मारतुं हे पाणी जेनुं एवुं. वसी ते पद्मसरोवर केवुं हे तो के जलचर कहेतां पाणीमां वसनारा जे प्राणी, तेर्चनों जे समूह, तेणे करीने परिपूर्ण कहेतां चारे बाजुएथी व्याप्त थए बुं एवं. वसी ते पद्मसरोवर केंग्रे है हो तो के मत्स्य कहेतां माहलांए करीने वपराइ रहेलों हे पाणीनो समूह जेनों एवं. वली ते पद्मसरोवर केवुं हे तो के ज्वसत् कहेतां देदीप्यमान एवं. शाथी देदीप्यमान, ते हवे कहे हैं कमलो एटसे सूर्यना प्रकाशधी विकस्वर थतां कमलविशेषो, कुवलयो कहेतां चंद्रना प्रकाशयी विकासने पामतां कमलेवि-शेषो, जत्यत एटसे लाल रंगनां कमलो, तामरस एटसे मोटां मोटां कमलो, तथा पुंडरीक एटसे सफेद रंगनां कमलो, एवी रीते जुदी जुदी जातिननां कमलोनो विस्तीर्ण अने फेलावों पामतो एवो जे श्रीसमुद्य कहेतां शोजानो जे समूह (कमलोने तो शोजाना समूहचीज शोजापणुं मखे हे, पण कंइ तेमने सूर्यनां बिंब छादिकनी पेठे देदी प्यमानपणुं होतुं नथी) तेणे करीने जाणे देदी प्यमा-नज लागतुं होय नहीं, एवं पद्मसरोवर. (एवी रीते कविए एटले श्रीजडवाहुखामिजीए अत्रे जरप्रेक्ता अलंकार मुक्यो है.) वली ते पद्मसरोवर केवुं हे तो के रमणीय कहेतां मनने अत्यंत आनंद उपजावे एवी हे रूपनी शोजा जेनी एवं. वसी ते पद्मसरोवर केवं हे तो के प्रमुदित कहेतां श्चत्यंत हर्षित थए बुं वे श्रंतः कहेतां श्रंतः करण जेर्डनुं एवा जे जमराना श्रने मत्त कहेतां मदोन्मत्त थएली जे जमरी है, तेर्हना समूहो,तेर्हए करीने अविद्यमान कहेतां चुंबन करातां हे कमलो जेमां एवं. वसी ते पद्मसरोवर केंबुं हे तो के कादंब जातिनां पक्ती है, बसाका कहेतां बगखां है, चक्र कहेतां चक्रवाक नामनां पक्तीर्ज, कलहंस एटले कल कहेतां मधुर वे शब्द जेर्जनो एवा जे हंसो एटले राजहंसो, तथा सारस कहेतां लांबा ने घंटणो जेर्नना एवां एक जातिनां पद्दीर्ज इत्यादिक जे गर्वित थए-लां हे एटले आवा मनोहर स्थानकनी प्राप्तिथी थएलो हे अहंकार जेउंने, एवा जे शकुनिगण कहेतां 👸 पद्मीर्जनी जातिर्जना जे समूहो, तेर्जनां जे छंछ कहेतां स्त्रीजरतारोनां जे जोमलां, तेर्जए करीने सेवातुं हे पाणी जेनुं एवं. वली ते पद्मसरोवर केवुं हे तो के पद्मिनी एटले जे कमिलिनी, तेर्चनां जे पत्रो कहेतां पांद-मांड, तेर पर लागेलां एटले चोंटेला जे जलबिंड निचय कहेतां पाणी नां विंड र्ना जे समूहो, तेणे क-

सुबोव

11 32 11



पा.३२.

रीने जाणे मंमन युक्त यए छुं होय नहीं ? अर्थात् तेमां रहे खां कम खिनीनां पांदडां जे जाणे के नीख रखो-मय हे अने ते उप मुक्ताफल कहेतां मोती उनुं अनुकरण करनारां पडे खां जे पाणीनां बिंड उन, ते उप करीने कम खो अत्यंत शोजा आपनारां देखाय हे. एवां पत्रोप करीने ते तलाव कृतिचत्रं इव कहेतां करे-खुं हे आश्चर्य जेणे, एवं होय नहीं ? तेम देखाय हे. वहीं ते पद्म सरोवर के बुं हे तो के हृदय कहेतां जे अं-तःकरण, अने नयन कहेतां जे आंखो, ते उने अत्यंत वल्लान कहेतां मनोहर खागे एवं तथा ''पद्म सरो-वर" हे नाम जेनुं एवं वित्ती ते पद्म सरोवर के बुं हे तो के सरस्सु कहेतां तलावोने विषे पूज्य कहेतां पूजा करवाने खायक एवं, अने तेथीज अजिराम कहेतां अत्यंत रमणीय खागे हे. एवी रीतना पद्म सरोवरने त्रिशला क्रियाणीए दशमा खमने विषे जोयं.

पठी अग्यारमे स्त्रे शरद नामनी जे क्तु, तेना चंडमा सरखुं हे बदन कहेतां मुख जेनुं,एवी ते त्रिशक्षा क्तियाणीए कीरसमुझने जोयो ते कीरसमुझ केवो हे तो के चंझिकरणराशि कहेतां चंझनां जे किरणो, तेर्नो जे समूह, तेना सरखी जे श्री कहेतां शोजा, ते सरखी हे वक्तःस्थलनी शोजा जेनी एवो. हवे वक्तः शब्दनो अर्थ तो हृदय याय हे, अने ते हृदय तो प्राणी र्रने होय हे, पण कंइ समुद्रने होतुं नथी; माटे छाहीं हृदय शब्द वमे करीने मध्य जाग कह्यों हे छाने तेथी जेनो मध्यजाग घणो उज्ज्वल हे एम जाण्**तुं.** वसी ते कीरसमुद्र केवो वे तो के चतुर्ष दिग्मार्गेषु कहेतां चारे दिशारीना जे मार्गों, तेरीने विषे प्रकर्षेण एटसे अत्यंत वेग वडे करीने वर्धमान कहेतां वृद्धि पामतो हे, जलसंचय कहेतां पाणीनो समूह जेनो ए-वो. खर्थात् चारे दिशार्जमां ते समुद्रमां ऋत्यंत उंमो एवो जलनो प्रवाह हे, एवो जावार्थ जाएवो. वली ते कीरसमुद्र केवो हे तो के चपस अने अत्यंत चपस एवा, अत्यंत मोटा मोटा जे कल्लोसो कहेतां मो-जांडे, तेर्डए करीने चलायनान थतुं, तथा वली पाढुं एकठुं थइने जुडुं पमतुं, एवी रीतनुं ठे,तोय कहेतां पाणी जेनुं एवो. वली ते कीरसमुद्ध केवो हे तो के पदु एटले जरा पण मंदता विनानो एवो जे पहन, तेणे करीने आहत कहेता हणाएला, श्रने तेथी करीनेज उपरा उपरी दोडवाने प्रवृत्त थएला, श्रने तेथी कहपण

॥ ३३ ॥

करीनेज चपल जणाता अने प्रकट रीते देखाता,एवा जे तरंगो कहेतां कल्लोलो,तथा आसपास (आजु-बाजु) नाचता एवा पण जे जंग कहेतां कल्लोलविशेषो,तथा खत्यंत कोज पामेक्षा,खर्थात् जाणे जयज्ञां-तज थया होय तेम चारे कोरे जमण करता अर्थात् अथनाता श्रने तेथी करीने शोजावाला थएला, तथा निर्मेख एटले जरा पण मिलनता विनाना, श्रने उत्कट एटले उंचे उठलती एवी जे उर्मिं कहेतां तरंगो (मोजांर्र) (एवी रीते तरंग, जंग, कल्लोल, ठार्मे विगेरे मोजांर्रना प्रकारो जाएवा) एवी रीतनां मोजांडेनो जे संबंध कहेतां परस्पर मखवुं, तेणे करीने श्रत्यंत उतावस्त्रश्री तीराजिमुख कहेतां कांठानी सन्मुख दोकतो तथा अपनिवर्तमान कहेतां कांठाथी पाठो वलतो थको, जासुरतर कहेतां अत्यंत दी तिवालो लागतो अने तेथी करीने अजिराम कहेतां मनने आहाद उपजावतो एवो वली ते कीर समुद्र केवो हे तो के महान् कहेतां मोटा मोटा जे मगरमहो, तथा प्रसिद्ध एवां जे माहलांडी, तथा तिमि, तिमिंगल, निरुद्ध, तिलितिलिका विगेरे जुदी जुदी जातिना जलचर प्राणीविशेषो, तिर्जना जे श्रजिघातो कहेतां पुंबभीर्जना पाणी पर करवामां श्रावता जे पढाकार्ज, तेणे करीने उत्पन्न थएलो, अने कर्पूरवत् कहेतां कपूरनी पेठे उज्ज्वल कहेतां सफेद वे रंग जेनो, एवो जे फीणनो समूह ते हे जेनी खंदर एवो. वली ते कीरसमुद्र केवो हे तो के मोटी मोटी एवी जे गंगा आ-दिक नदी जे, तेर्जना अत्यंत वेगथी जोसजर दोमी आवता जे प्रवाहो, तेर्जथी जत्पन्न थतुं जे गंगावर्त नामनुं च्रमण एटले आवर्त्तविशेष (पाणीनी घूमरी अथवा वंटोलीर्ट) त्यां व्याकुल थतुं एटले मुंका-इ जतुं, छने तेथीज उंचा उठाला मारतुं (एटले छावर्तमां पमवाथी छने बीजी जगो तरफ जवाने छव- 🦃 काश नहीं मखवाथी उंचे उठखतुं) श्रने उंचे उठलीने पाढुं तेना तेज श्रावर्त्तमां पमतुं, श्रने तेथी करीने ते आवर्त्तनी अंदरज च्रमणपणाने प्राप्त थएक्षुं, अने तेथी करीनेज, तथा खजावथी पण चपल थएक्षं, ते आवत्तेनी अंदरज च्रमणपणाने प्राप्त थएखुं, अने तेथी करीनेज, तथा खजावथी पण चपल थएखुं, हैं एवी रीतनुं हे पाणी जेनी अंदर,एवा कीरसमुद्धने त्रिशला कत्रियाणीए अग्यारमा खप्तनी अंदर जोयो. हि ते अग्यारमुं सप्त जोया बाद तेणीए बारमा स्वप्तमां एक अति उत्तम एवा विमानने जोयुं. इवे

सुबो०

॥ ३३ ॥

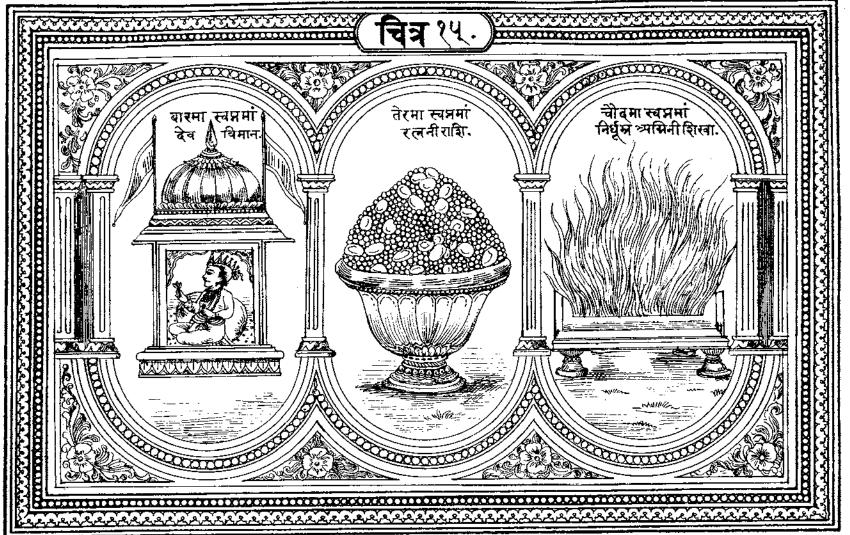
ते विमान केंबुं हे तो के तरुण कहेतां नवो छगेखो जे सूर्य, तेनुं जे मंडल कहेतां बिंब, तेना सरखी हे प्रचा कहेतां कांति जेनी एवं. वसी ते विमान केवुं वे तो के देदी प्यमान कहेतां अत्यंत तेज युक्त वे शोजा जेनी एवं. वसी ते विमान केवं वे तो के उत्तम प्रकारनुं जे कंचन कहेतां सुवर्ण अने मणि उनो जे समूह, तेणे करीने बहुज मनोहर थएला जे एक हजार ने छाठ स्तंत्रो, तेउंए करीने छत्यंत देदी प्यमान होवाथी नज कहेतां आकाशने पण कांति युक्त बनावतुं एवं. वसी ते विमान केवं हे तो के कनकप्रतर कहेतां सोनानां बनावेखां जे पत्रांच,तेचमां खटकतां जे मोतीचं, तेणे करीने उज्ज्वस थएझुं एवुं. वसी ते विमान केवं हे तो के अत्यंत जाज्वहयमान थएसी श्रने देवतार्तने सायकनी, संवायमान थएसी एटसे लटकेंसी हे, एवी रीतनी पुष्पनी मालाई जेना पर एवं. वसी ते विमान केवुं हे तो ईहामृग कहेतां वरगमां, वृषज, तुरग कहेतां घोमा, नर कहेतां माणसो, मकर कहेतां मगरमहो, विहंग कहेतां पक्ती छै, व्याख कहेतां सपीं, किन्नर कहेतां देवजातिविशेष, रुरु कहेतां हरिएजा-तिविशेष, शरज कहेतां अष्टापद नामना जीवो, चमरी कहेतां जेना वेमाना वासनां चमर बने वे एवी गायो, संसक्त कहेतां कोइ जंगसी प्राणीविशेष, कुंजर कहेतां हाथीर्ड, वनसता कहेतां खशोक वृक्तनी खतार्ज खादिक खतार्ज, तथा पद्मखता कहेतां कमिखनी, ते संघखांजनां चित्रोनी जे विचित्र प्र-कारनी रचना, तेर्रंए करीने चित्रकारी कहेतां मनने अत्यंत आश्चर्य उपजावनारुं वही ते विमान केवुं हे तो के (''गांधर्व " शब्दे करीने श्रहीं गीतनो श्रर्थ करवो, तथा " जपवाद्यमान " शब्दनो श्रर्थ वाजित्रो करवो) गांधर्वोए करीने गवातां जे गायनो तथा वगाडातां जे वाजित्रो तेर्रनो संपूर्ण रीते हे घोष कहेतां नाद जेमां एवं. वसी ते विमान केवं हे तो के नित्य कहेतां जरा पण आंतरारहित, स-जल कहेतां वरसादनां पाणीए करीने संपूर्ण कहेतां जरेलो, अने निविम तथा पृथुल एटले विस्तार-वालो, एवो जे जलधर कहेतां मेघ, तेनो जे गर्जित शब्द कहेतां गर्जारव, एटले गर्जना वखते यतो जे ध्वनि, तेनो श्रनुनादि कहेता तेना तुल्य नादवालो, एवो जे देव संबंधी छुं छु जिनो मोटो शब्द, ते वडे

क्टपण

॥ इत्र ॥

करीने समस्त एवो जे था जीवलोक, तेने पूरतुं, अर्थात् दुंड जिना नादथी समस्त जगतने व्यास करतुं है एवं. वसी ते विमान केवं वे तो के कालागुरु एटले कृष्णागुरु, प्रवरकुन्छुरुष्क (कोइ सुगंधवालुं ड्रव्यवि-है होष) तथा तुरुष्क इत्यादि, के जेर्चनां नामो श्रगाडी श्रावी गएलां वे तेर्चनो, श्रने बीजां पण सुगं-धीर्जनां खंगजूत द्रव्यो, तथा दशांग खादिक धुपोनो बलातो, खने तेथी मधमधायमान थइ रहेलो, द्यने वली त्राजुबाजु फेलावो पामतो जेगंध, तेले करीने स्वतिराम कहेतां मनोहर धएझुं एवुं. वली ते विमान केवुं हे तो के ज्यां नित्य प्रकाश रहे हे एवुं. वखी ते विमान केवुं हे तो के जे उज्ज्वल है अने तेथी करीने जेनी कांति उज्ज्वल हे एवं. चली ते विमान केवं हे तो के सुरवर कहेतां उत्तम उत्तम जा-तिना जे देवो, तेर्जए करीने सुशोजित एटक्षे जरपूर थएक्षुं, पण खासी नहीं रहेक्षुं एवुं. वसी ते विमान केवुं हे तो के शातावेदनीय नामनुं जे कर्म, तेनो है जपत्रोग जेनी ऋंदर एवं. वली ते विमान केवुं हे तो के विमानवरपुंमरीक कहेतां वीजां सवलां विमानोमां पुंमरीकनी पेठे छति जत्तम एवुं. एवी रीतना वि-मानने त्रिशला क्तियाणीए बारमा स्वप्ननी श्रंदर जोयुं.

त्यार पढ़ी तेरमा स्वममां तेणीए रहानिकरराशि कहेतां रह्योना समूहनो हगखो जोयो ते रह्यनो ढगलो केवो हे तो के पुलक जातिनां रत्नो, वज्र कहेतां हीरानी जातिनां रत्नो, इंझनील कहेतां लील-मनी जातिनां रत्नो, सस्यक जातिनां रत्नो, ककेयण कहेतां कर्केतन जातिनां रत्नो, लोहियरुख क-हेतां लोहिताक् जातिनां रत्नो, मरगय कहेतां मरकत जातिनां रत्नो, मसारगल्ल जातिनां रत्नो, प्र-वाल जातिनां रत्नो, स्फटिक जातिनां रत्नो, सौगंधिक जातिनां रत्नो, इंसगर्ज जातिनां रत्नो, अंजण कहेतां ऋंजन जातिनां रत्नो तथा चंडकांतमणिनी जातिनां रत्नो इत्यादि ऋनेक जातिनां रत्नोए करीने, महीतल कहेतां पृथ्वीतल,ते पर रह्यो ठतां पण गगनमंमल कहेतां श्राकाशना मंडलना श्रंत जागने पण प्रजाए करीने युक्त करतो एवो. अर्थात् लोकमां प्रसिद्ध एवं जे आकाश, तेना शिखरने पण पोतानी कांतिथी शोजावतो एवो वली ते रत्नोनो ढगलो केवो छेतो के तुंग कहेतां छंचो एवो ते केटलो



पा.३४.

उंचो ? ते हवे कहे हे. मेरुगिरिसदशं कहेतां मेरु नामनो जे पर्वत, तेना सरखो, एवो उंचो थएखो रलोनो समृह ते त्रिशला क्तियाणीए तेरमा खप्तमां जोयो

हवे "सिंहिं चेत्यादितः सिहिं यावत्" एटखे शिखि कहेतां अग्निथी मांभीने शिखि कहेतां अग्नि सुधीनुं पद ग्रहण करवुं. हवे अहीं कोइ शंका करे के पहेलां पण शिखिपद अने पाढ़ं पण शिखिपद ब्रहण करवाथी पुनरुक्ति दोष छुं न आवे ? तेने माटे कहे हे. पहेलां "शिखि" ("सिंहिं") एवं पद कहेबुं हे, ते पद "गयवसहेति" गाथामां कहेबुं जे "सिंहिं" पद तेना यहण माटे हे, श्रमे श्रंते रहेबुं "सिंहिं" पद खरूपना यहण करवा माटे हे. माटे तेनो जावार्थ ए के ''गयवसह" ए गाथामां जे ''सिं-हिं" पद कहेबुं हे, ते चौदमुं स्वप्न जाणवुं, श्रने तेथी श्रावी रीतना "सिंहिं" (शिखि) कहेतां श्रग्नि-ने जुए हे, एम योजना करी सेवी; अने तेथी करीनेज ''तर्ज पुणों" एटसे अने वसी पण, एवं पर कह्युं नथी; केमके "सिंहिं च" ए पदथी तेनो जावार्थ खबमेवज जणाइ आवे हे. माटे जे गाथाना अं-तमां ''सिंहिं" पद रहे हुं हे, तेनेज विशेष्यपद तरीके जाण हुं. एवी रीते चौदमा स्वप्नमां त्रिशाला क्तत्रियाणीए श्रमिने जोयो. ते श्रमि केवो हे तो के विपुत्त कहेतां विस्तारवाली, श्रने उज्ज्वल एवुं जे घी तथा पीखा रंगनुं जे मध, ते बन्नेथी सिंचाती, श्रने तेथी करीनेज धूमामा वि-नानी स्रने "धग्र धग्" एवी रीतना शब्दने प्रगट करती, तथा जाज्वख्यमान एटले बहुज तेजवाली थएली एबी जे ज्वालार्ट, तेर्टए करीने उज्ज्वल लागतो अने तेथी करीनेज श्रजिराम कहेतां मनने अखंत आनंद आपतो एवो वली ते अग्नि केवो है तो के तरतम योगे करीने युक्त एवा जे ज्वाखार्जना समूह, तेणे करीने श्रवुक्रम प्रमाणेज जाणे निचित थएखो होय नहीं एवो, श्रर्थात् तरतम योग एटखे एक ज्वाला उंची, बीजी तेथी पण उंची, त्रीजी तेनाथी पण वधारे उंची, एवी रीतना तरतम योगे करीने युक्त थएला जे ज्वालाउंना समूहो तेणे करीने, अन्योन्य कहेतां अर-स्परस सघली ज्वालार्ज जाणे मांहे प्रवेशज करी गइ होय नहीं ? एवो (अर्थात् विलकुल अंतर कहपण

॥ ३५॥

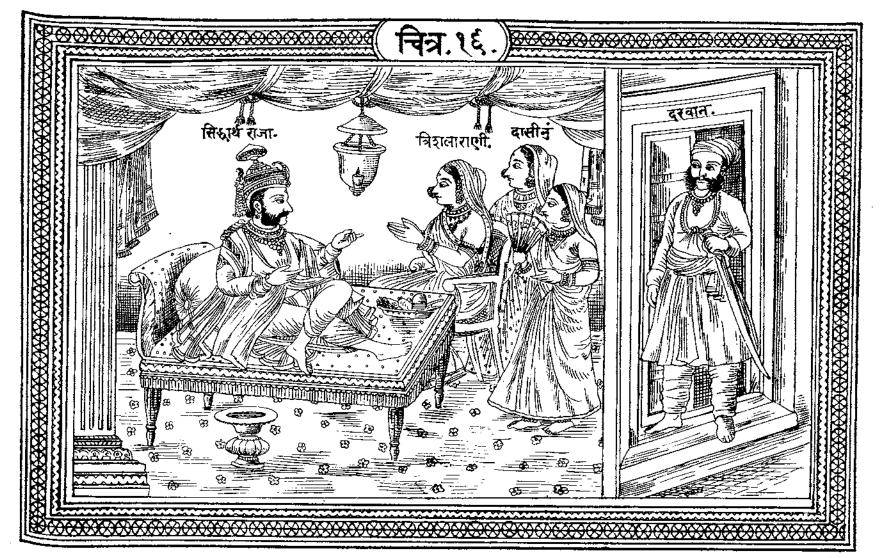
विना ज्वालार्स ते श्रक्षिमां इती.) वसी ते श्रक्षि केवो हे तो के ज्वालार्ट्स जे ऊर्ध्व कहेतां उंचेना 💢 नागोमां प्रसरीने जे ''ज्वलनक'' कहेतां बलवुं, (छहीं ''ज्वलनक'' शब्दने जे ''क" प्रत्यय लागेलो बे, ते "खार्थेंक" एवी रीतना ब्याकरणना सूत्रे करीने खागेखों हे.) (वखी श्रहीं तृतीया विजक्तिना एक वचननो लोप यहने समास थयेलो है.) ते बलवाए करीने कोइ कोइ प्रदेशमां आकाशने पण जाणे पकावतो होय नहीं ? एवो, अर्थात् ते अग्निनी शिखाउं आकाश प्रत्ये पहोंचवाथी, जाणे तेने (आकाराने) पेण पकाववानीज तैयारी करतो होय नहीं ? एवो. (एवी रीतनो कविए उत्प्रेक्ता अलं-कार मेहयो.) वर्ती ते ऋिन केवो हे तो के ऋतिराय एवो जे वेग, तेणे करीने चंचलपणाने प्राप्त थए-लो एवो श्रक्ति त्रिशला क्तत्रियाणीए चौदमा स्वप्तमां जोयो एवी रीतनां श्रुज कहेतां कल्याणना हितुरूप, तथा जमया एटखे कीर्तिए करीने पण सहित एवां, तथा त्रियदर्शन कहेतां फक्त जोवा मात्र-थीज प्रीतिने जलन्न करनारां एवां, तथा उत्तम वे खरूप जेनुं एवां ते खप्तोने निद्यानी श्रंदर जोइने, अरविंद कहेतां कमलना सरखां हे लोचन कहेतां आंखो जेनी एवी तथा हर्षे करीने पुलकित कहेतां रोमांच युक्त थएखुं हे शरीर जेणीनुं एवी ते त्रिशला क्तियाणी प्रतिबुद्धा कहेतां जागी उही. हवे श्रहीं प्रसंग होवाथी उपर कहेलां खन्नोने गर्जकालना समय वखते सघला जिनेश्वरोनी माताउ पण जुए हे, एवं देखामता थका गाथा कहे हे.

एए चउदस सुमिणे, सद्या पासेइ तित्थयरमाया ॥ जं रयणिं वक्कमई, कुर्न्निस महायसो ऋरिहा ॥ १ ॥ अर्थ—जे रात्रिए महायशवाला एवा अरिहंत प्रजुर्ज मातानी कुक्तिमां आवे हे, ते रात्रिए सघला जिनेश्वर प्रजुनी सघली माताजं उपर कहेलां चौद स्वप्नांजं जुए हे.

पढ़ी उपर वर्णवेलां चौद महास्वमोने जोइने जागी उठी ठती हर्ष पामेली, संतोष पामेली, हर्षथी पूर्ण हैं हृदयवाली, मेघधाराथी सिंचन थएलां कदंबपुष्पनी पेठे शरीरनां ठिड़रूप क्वाने विषे उल्लास पाम्यां हैं हे रंवामां जेनां एवी त्रिशला कत्रियाणी स्वमोनं स्मरण करे हे, अने स्मरण करीने शय्यामांथी उठे हे, हैं

सुबो0

ાા રૂપ ાા



पा.३५.

श्रने उठीने पादपीठथी नीचे उतरे हें, अने नीचे उतरान ।चत्तना उत्सुकताराहत, कायाना रहित,स्खलना रहित, विलंब रहित एवी राजहंसना जेवी गति वडे ज्यां शय्यागृह हे अने ज्यां सिद्धार्थ क्तिय है त्यां आवे है अने आवीने तेवी रीतनी वाणीए करीने,बोलती थकी तेने जगामवा लागी. हवे ते वाणी केवी हे तो के विशिष्ट कहेतां उत्तम उत्तम जातिईना जे गुणो तेईए करीने संयुक्त कहेतां प्ररेखी एवी वली ते वाणी केवी हे तो के इष्ट कहेतां ते सिद्धार्थ कत्रियना मनने वस्त्र लागे एवी. वली ते वाणी केवी हे तो के हमेशां वांहित है अने तेथी करीने प्रिय एवी, वली ते वाणी केवी हे तो के मनने विनोद कराववावाली, अने तेथी करीनेज मनने गमे तेवी, पण कोइ दहाको जूबी जवाय नहीं एवी. वसी ते वाणी केवी छे तो के उदार कहेतां सुंदर एवो छे ध्वनि कहेतां अवाज जेनो एवा जे वर्णों कहेतां अक्रो, तेर्डए करीने संयुत थएली एवी. वली ते वाणी केवी है तो के कह्याण कहेतां समस्त प्रकारनी जे समृद्धिन, तेनेने करनारी. वली तेवाणी केवी हे तो के शिव कहेतां कोइ पण प्रकारना जे उपझ्वो कहेतां विघ्नो, तेउंए करीने रहित एवी, कारण के ते वाणीमां एवा तो छक्तरो गोठवेला हता के जेथी विलकुल उपद्रव थवानो तो संजवज नहोतो, छने तेथी करीनेज धन्य कहेतां धननी जे प्राप्ति, तेने कराववावाली वली ते वाणी केवी हे तो के मंगल कहेतां जे कल्याण, ते करवामां प्रवीण एवी. वली ते वाणी केवी हे तो के शोजाए करीने युक्त, अर्थात् अलंकारोए करीने वि-राजित चएछी. वली ते वाणी केवी हे तो के सुकुमाल कहेतां सुखे करीने तेनो अर्थ जणाइ जाय अने तेथी करीने हृदयने छत्यंत प्यारी खागे एवी. वली ते वाणी केवी हे तो के हृदयने प्रह्लाद करनारी, एटखे हृदयमां रहेलो जे चिंता आदिकनो शोक,तेना उछेदने करनारी वली ते वाणी केवी हे तो के मित कहे-मधुर कहेतां कानने अत्यंत सुखनी करनारी एवी, तथा मंजुल कहेतां जत्तम खालित्य कहेतां ऊडफ-मकवाला शब्दो अने वाक्यो तथा वर्णोवाली,(एवी रीते अहीं त्रणे पदनो कर्मधारय समास करी खेवो,)

कह्पण

॥ ३६ ॥

श्चर्थात् मित, मधुर श्चने मंजुल एवी वाणीर्डए करीने बोलती यकी ते त्रिशला क्तत्रियाणी सिद्धार्थ रा-जाने जगामती हवी. तेवी रीते तेने जगाड्या बाद,तेनी एटखे सिद्धार्थ राजानी आङ्का थवाथी ते त्रिश-खा क्तियाणी,नाना प्रकारना एटखे जुदी जुदी जातिनां जे मणि, कनक कहेतां सुवर्ण,तथा रखो,तेर्जनी के रचना,तेणे करीने चित्र कहेतां मनने आश्चर्य जपजावे एवा जुड़ासन् कहेतां सिंहासन् पर बेठी बेसी-ने, मार्गे चालतां यएलो जे खेद तेनो नाश थवाथी शांतताने पामेली, अने तेथी करीने ज,को जना अजावे करीने विश्वास पामेली अने अत्यंत सुखे करीने आसन पर बेठेली त्रिशला सिद्धार्थ राजाने,आगल करे-क्षं हे वर्णन जेनुं एवी वाणीए करीने कहेवा खागी के हे खामिन्! आजे में चौद महाखप्तो जोयां हे, अने तेथी मनोहर एवां जे ते स्वप्नो, तेउं नुं कख्याण एटखे मंगलने करनारुं, एवुं शुं फल तथा वृत्तिविशेष थशे ? त्यारे सिद्धार्थ राजा पण त्रिशला कत्रियाणीना मुखबी एवो अर्थ (शुं कह्याणकारी फल वृत्ति विगेरे) कानथी सांजलीने,तथा तेने हृदयमां सारी रीते धारीने हर्षित थयो यको,संतुष्ट थयो यको अर्थात् हर्ष-थी पूर्ण हृदयवालो थयो थको, मेघनी धाराथी सिंचाएलां कदंबनां सुगंधी पुष्पनी पेठे शरीरनां ठिडरूप कूंवाने विषे उल्लास पामेलां रुवाडांवालो थयो थको,ते स्वप्नोने ग्रहण करतो हवो, एटखे चित्तने विषे धारण करतो हवो; तथा हृदयमां धारण करीने ईहा कहेतां खरा अर्थनी विचारशक्तिमां खीन यतो ह-वो; अने एवी रीते लीन थइने पोतानी खाजाविक मतिपूर्वक बुद्धिना विकाने करीने ते खप्तोना अर्थोंनो निश्चय करतो हवो, श्रने श्रर्थनो निश्चय कर्या बाद ते सिद्धार्थ राजा त्रिशखा क त्रियाणीने, श्रागल जेतुं वर्णन करवामां श्रावेद्धं हे, एवी उत्तम प्रकारनी वाणीडिए करीने बोखतो थको कहेवा खाग्यो के हे देवा-नुप्रिये कहेतां सरल हे खत्राव जेणीनो एवी है त्रिशला कत्रियाणि, तें उदार कहेतां मनोहर खन्नां जोयां हे, कह्याण कहेतां कह्याणना करनारां खन्नो तें जोयां हे, शिव कहेतां निरुपंडव करनारां खन्नो तें जोयां है, धन्ना कहेतां धनप्राप्ति करावे एवां खन्नो तें खाजे जोयां हे, मंगल कहेतां मंगलने अर्थात् 🏋 कस्याणने करनारां खेन्नो तें आजे जोयां हे,वसी खद्मीए करीने युक्त एवां ते खन्नो आजे तें जोयां हे, 🎉

सुबो०

11 38 11

वही आरोग्यने पण करनारां एवां खन्नो तें आजे जोयां हे, वही तुष्टि कहेतां संतोषने आपनारां एवां खन्नो आजे तें जोयां हे. वही दीर्घायु करनारां खन्नो आजे तें जोयां हे, वही कह्याण अने मंगिलकनां करनारां एवां खन्नो तें आजे जोएलां हे. माटे हवे एवां मनोहर खन्नोनुं तमोने शुं फल थशे ? ते हवे हुं कहुं हुं. हे देवानुन्निये, ते खन्नोथी अर्थनो कहेतां मणि माणिक सुवर्ण आदिकनो लाज थशे, वली जोग कहेतां शब्दादिक जे जोग्य पदार्थों, तेनो पण लाज थशे, पुत्र एटले संतान आदिकनो पण लाज थशे, सुल एटले निवृत्तिनो पण लाज थशे, वली राज्य कहेतां सात लक्षणो युक्त जे राज्य, तेनो पण लाज थशे, राज्यनां ते सात लक्षणो क्यां क्यां, तेनीचे प्रमाणे जाणी लेवां. खामी एटले राजा, अमात्य एटले प्रधान, सुहृद् एटले मित्र, कोश एटले जंनार, राष्ट्र एटले देश, छ्यं एटले किल्लो,तथा सैन्य एटले चतु- रंगी (हाथी, घोना, पाला अने रथ) सेना. एवी रीतनां सात अंगयुक्त राज्यनो लाज थशे. हिंदी सामान्यपणाधी फलनुं वर्णन करीने हवे विशेषपणाथी तेनुं वर्णन करे हे.

हे देवानु ित्रये, आजणी नव महिना संपूर्ण गया बाद, तथा ते उपरांत सामा आठ रात्रिदिवसो पण अतिक्रमण थये उते, उत्तम ठे खरूप जेनुं, एवा एक पुत्रने तुं जन्म आपीश. हवे ते पुत्र केवो तो के अमारा कुलने विषे केतु कहेतां व्या सरखा एवा अति अञ्चत पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के अमारा कुलने विषे दीपक समान, अर्थात् कुलने प्रकाश करनारो तथा मंगल करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वसीते पुत्र केवो तो के कुलने विषे पर्वत समान, अर्थात् पर्वतनी पेठे जेने कोइ पण इश्मन पराजव न करी शके एवा, तथा स्थिर अने कुलना आधारजूत एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. विशे ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे अवतंस कहेतां मुकुट समान, कारण के ते यश अने शोजाने धारण करनारो थशे. वली ते पुत्र केवो तो के लोकोने विषे तिलक समान, अने वली कुलने विषे कीर्तिना करनारा एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश.वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे दिनकर होतां आजीविका चलावनारा एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश; वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे दिनकर

11 29 11

तेम तुं पण कुलने आश्रयजूत एवा पुत्रने जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलनी सर्व रीते वृद्धि करनार एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के सुकुमाल हे हाथ श्रने पगो जेना, तथा जरा पण न्यूनता विनाना स्रने संपूर्ण पांचे इंडियो सहित शरीरवाला, तथा लक्कण स्रने व्यंजन स्रादिक गु-णोए करीने सहित, तथा मानोपमाने करीने सुंदर हे सर्व छंग जेतुं एवा, तथा चंड सरखा सौम्य आ-कारवाला, तथा कांत एटले मनोहर तथा त्रिय हे दर्शन जेनुं एवा, तथा उत्तम रूपवाला एवा पुत्र-ने तुं जन्म आपीश वली ते बालक पण बाल्यावस्थाने त्यजी दइ सर्व जातना विकाने करीने युक्त अर्थात् परिपक विज्ञानवालो थरो, वली यौवनावस्था पाम्यो उतो दान देवामां ग्रूरो अर्थात् अंगीकार करेलां कार्योंने निर्वाह करवामां समर्थ, वीर कहेतां रण संघाम करवामां समर्थ तथा विक्रांत कहेतां परराज्यने आक्रमण करवामां समर्थ अर्थात् महा पराक्रमे करीने युक्त थहो. वसीते विस्तीर्ण थकी पण विपुल अ-र्थात् श्रत्यंत विस्तारवालां बल कहेतां सेना तथा वाइन कहेतां बेल श्रादिके करीने युक्त थहो. वली ते राज्यनो स्वामी कहेतां राजा थहो. माटे हे देवानुप्रिये, त्रिशला क्तियाणि, तें श्रत्यंत मनोहर एवां ख-मो जोयां हे. एम वे त्रण वार प्रशंसा करी. त्यार पही ते त्रिशला क्रित्रयाणी सिद्धार्थ राजानी पासे ए सः मांना अर्थने सांजलीने अने अवधारीने हर्षित यएली, संतुष्ट यएली, यावत् हर्षथी नराइ गएला हृद-

॥ ३९ ॥

यवाली थइ थकी बंने हाथ एकठा करीने तथा मस्तके श्रंजिंदि करीने श्रा प्रमाणे कहेवा लागी. हे स्वामिन्! ए एमज हे, ए तेमज हे. ए यथार्थ हे, ए संदेह रहित हे, ए इहित हे. हे स्वामिन्! तमारा सु-खथी पनतां एवां ते वचनने में यहण कर्यां हे. हे खामिन् ! वांहेखुं हतां वारंवार ए वांहेखुं हे. हे खामिन् ! ए छार्थ सत्य हे. जेवी रीते ए छार्थ तमे कह्यों हे तेज प्रमाणे ते हे. एम कही तेणीए ते खप्तने सारी रीते श्चंगीकार कर्याः तथा तेम करीने सिद्धार्थ राजाए तेने श्चनुका श्चापवाश्री, एटखे तेने स्थानके जवानी तेणीने रजा आपवाथी ते त्रिशला क्तियाणी, नाना प्रकारनां मणि अने रलोनी रचनाथी विचित्र एवा ते जडासन परथी उठी; तथा उठीने उतावल रहित, चापखपणाए करीने रहित, संज्ञांत विनानी तथा विखंब विनानी राजहंस जे गतिथी चाले तेवी गतिथी ज्यां पोतानी शय्या हती, त्यां चाली गइः तथा तेम करीने, एटक्षे त्यां जइने, एम कहेवा खागी के, मारां आ उत्तम कहेतां खरूपथीज संदर एवां. तथा प्रधान कहेतां उत्तम फखने देनारां, छने तेथीज मंगलिक करनारां, एवां छा खनो, बीजां खराव स्वन्नोथी नाज्ञ नपामे तो सारुं, एम विचारीने देव गुरुजन विगेरेना संबंधवाली, श्रने तेथी करीनेज प्रशस्त कहेतां महामंगलकारी एवी धर्म संबंधी कथार्डए करीने, खन्नजागरिका कहेतां स्वप्नोने रक्तण करवा माटेनुं जे जागरण,तेने करती थकी,तथा स्वप्नोनेज याद करती थकी रहेवा खागी.

हवेते सिद्धार्थ राजा पण प्रत्युषकाले कहेतां जे वखते प्रजातकाल थयो ते वखते, कौंटुंबिक पुरुषो कहेतां सेवक पुरुषोने वोलावतो हवो; तथा वोलावीने तेर्डने ते कहेवा लाग्यो के हे सेवको ! आज उत्तरसविन कहेतां मोटा महोत्सवनो दिवस हो, तेथी एकदम विशेष प्रकारथी जेम थाय तेम, बहारना जाग पर रहेली उपस्थानशाला कहेतां वेठकनी जगो, अर्थात् कचेरी, तेने गंधोदक कहेतां सुगंध युक्त थए खुं जे पाणी, तेनाथी पवित्र करो, तथा त्यां रहेलो जे कचरो, तेने दूर फेंकावीने ते साफ करो, तथा हाण आदिकथी तेने लीपावो; तथा सुगंधी एवां पांच वर्णीनां जे उत्तम उत्तम पुष्पो, ते त्यां पथरावो तथा बलता एवा कृष्णागुरु, श्रेष्ट कुन्दरुष्क, तुरुष्क विगेरे धूपोनो उत्तम अने मधमधायमान थइ रहेलो जे

कृष्ट्य

११ ३७ ११

सुगंध तेण करीने ते कचेरीने सुंदर तथा चूर्णादिकथी अत्यंत सुगंधमय करो; श्राने त्यां सुगंधवाली गोर् ही वण पथरावो; ए सघ हुं कार्य तमो पोते जाते जहने करो, बीजार्ठनी पासे पण करावो श्राने तेम कर्या बाद त्यां तमो सिंहासननी रचना करो; श्राने तेम करीने, श्रावीने मने कहो के, तमारी श्राङ्का प्रमाणे श्रान्ने मोए सघ हुं तैयार करी राक्ष्युं हे. ते सांजलीने ते कौ हुं विको पण, एवी रीते सिद्धार्थ राजायी श्राङ्का करा-या हता, श्रत्यंत हर्षित तथा संतुष्ट थया, श्राने हाथ जोडीने तथा मस्तके श्रंजलि करीने, तेठ सिद्धार्थ राजाने कहेवा लाग्या के, जेम श्राप कहो हो, ते प्रमाणेज श्रमो पण करी शुं; एम कहीने श्राङ्का प्रमाणे विनयशी सिद्धार्थ राजानां वचनने सांजले हे, श्राने सांजलीने सिद्धार्थ क्रियनी पासेथी बहार नीकले हे; श्राने बहार नीकलोने ज्यां बहार कचेरी हे त्यां जाय हे. त्यां जहने बहारनी कचेरीने सुगंधी जलथी सिंचन करवा पूर्वक पवित्र करीने त्यां सिंहासननी रचना सुधी हुं सर्व कार्य करे हे श्राने ते करीने ज्यां सि-द्धार्थ क्रिय हे त्यां तेर्ज श्रावे हे, श्राने श्रावीने वे हाथ जो कीने मस्तक उपर श्रंजलि करीने सिद्धार्थ क्र-हियने "श्रापनी श्राङ्का प्रमाणे श्रमोए सघ हुं तैयार कर्युं हे" एम निवेदन कर्युं.

हवे ते वार पढ़ी सिद्धार्थ राजा पण रजनी कहेतां रात्रि वीत्या बाद, पद्म तथा "कमल" एटले हरिणनी जाति विशेष, तेनुं जे नयन कहेतां लोचन, ते प्रफुद्धित कहेतां विकस्वर थाते ढते अर्थात् जे
बखते कमलोनां पत्रो तथा हरिणनां नेत्रो पण विकस्वर एटले खुद्धां थयां हतां एवो पांकुर कहेतां
श्वेत रंगवालो प्रजातकाल होते ढते, एवी रीते रात्रिना वीत्या बाद, प्रजात थवाथी, अनुक्रमे सूर्य
पण उगते ढते; ते सूर्य केवो तो के रक्त कहेतां लाल रंगनुं जे अशोक नामनुं वृक्त तेनी कांतिना
समूह सरखो, वली ते सूर्य केवो तो के किंशुक कहेतां केसुमांनां पुष्प सरखो, वली ते सूर्य केवो तो
के शुक कहेतां जे पोपट तेनी चांच सरखो, वली ते सूर्य केवो तो के चणोठीनो जे अर्थ जाग तेना
जेवो, एटले चणोठीमां रहेलो कालो जाग वर्जीने वाकी जे लाल जाग होय तेना जेवो, वली ते
सूर्य केवो तो के बंधुजीवक एटले एक फुलनी जातनुं नाम ढे, के जेने लोको बपोरीया कहे ढे, तेना

सुवीव

॥ ३७ ॥

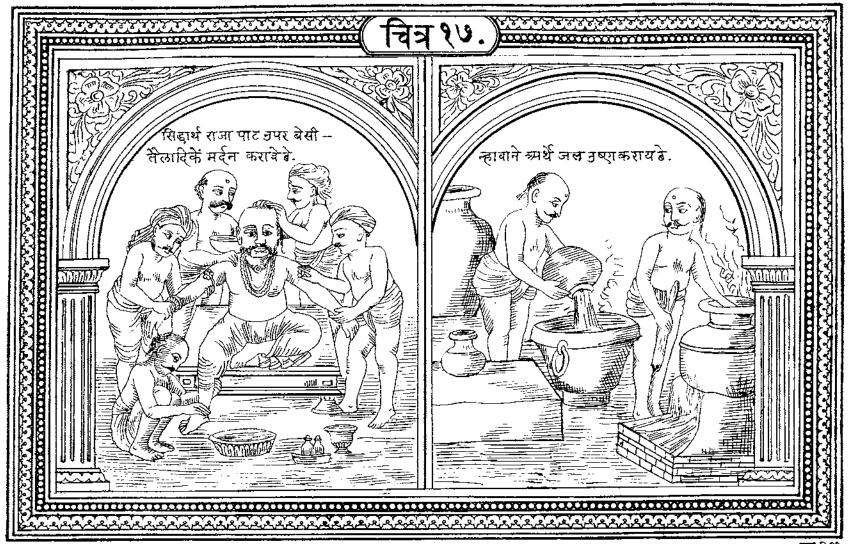
जिवो, वसी ते सूर्य केवो तो के पारापत कहेतां जे पारेवां (कबुतर) तेना पग अने आंखो जेवो, वसी ते सूर्य केवो तो के परभृत कहेतां जे कोयल, तेणे कोध आदिकथी लाल करेली जे आंखो, ते आंखोना जेवो, वसी ते सूर्य केवो तो के जपापुष्य कहेतां जासूद नामनी जातिनां जे पुष्पो, तेर्च-नो जे राशि कहेतां ढगलों, तेना जेवो, बली ते सूर्य केवो तो के प्रसिद्ध एवो जे हिंगलो तेनो जे ढगलो, तेना जेवो. उपर जे सघली लाल रंगनी वस्तु उंकही, तेनाथी पण अधिक शोजतो एवो. तेर्ननाथी पण श्रिधिक शोजतो, एम शा माटे कह्यों ? एम जो कोइ शंका करे तो तेने माटे खुला-सो एवो के, रताशमां तो तेना सरखो, पण कांतिए करीने तो तेनाथी पण श्रधिक सूर्य शोजे हे, एम वृद्ध श्राचायोंनो मत हे. श्रथवा लाल रंगमां श्रशोकथी मांकी ने हेक हिंगलाना ढगला सुधीनां जे विशेषणो, तेर्ननो शोजतो एवो जे श्रितिरेक कहेतां प्रकर्ष, तेना जेवो सूर्य एवो श्रर्थ पण करवो. वसी ते सूर्य केवो तो के कमलोना जे आकरो कहेतां उत्पत्तिनां स्थानको, अर्थात् पद्मनी उत्पत्ति थवानां जे तलावो, तेने विषे रहेलां जे कमलोनां वनो, तेर्डने विकखर करनारो, एवो, वली ते सूर्य केवो तो के हजार है किरणो जेनां एवो, वसी ते सूर्य केवो हे, तो के दिनकर कहेतां दिवसने उत्पन्न करवामां समर्थ एवो, वसी ते सूर्य केवो तो के तेजे करीने देदीप्यमान एवो, वली ते सूर्य केवो तो के तेनां (सूर्यनां) किरणोना जे अ-जियात, तेणे करीने अपराधी एटखे छुश्मनरूप एवो जे अंधकार, तेनो नाश होते छते, नवो एवो जे तेनो लाल रंगनो ताप, ते जाणे के कुंकुमज होय नहीं ? तेनाथी तमाम मनुष्यलोक व्यास होते बते, अ-र्थात् जेम कुंकुमे करीने कंइक वस्तुने पिंजरी कराय है, तेस ते सूर्यनां तेजे करीने पण समस्त मनुष्यलोक पण पिंजरा रंगनो (कंइक रातो अने कंइक पीला रंगनो) कराते छते, ते सिद्धार्थ राजा शयनीय कहेतां पोतानी शय्यामांथी जनतो हवो. ते शय्यामांथी जनीने ते पादपीन परथी (पतंग उपरथी नीचे जत-रवा माटे मुकेली सी मी जपरथी) नीचे जतयों नीचे जतरीने ज्यां अहनशाला कहेतां कसरतशाला है हती, ते तरफ चाल्यों. ते तरफ चालीने ते तेनी अंदर दाखल थयों. त्यां दाखल थइने अनेक प्रकारनां कल्प

॥ ३ए॥

जि कसरतने लायकनां साधनो, (मुजल छादिक) ते ते**णे लीधां. तथा तेथी व**ल्गन, व्यामर्दन तथा म-ब्लयुद्ध थादिक तेणे कर्यां. वहगन[े] एटखे कुदका मारवा विगेरे, व्यामर्दन एटखे परस्पर हाथ आदिक अंगोने मोमवा ते, तथा महायुद्ध तो लोकोमां प्रसिद्ध हे. ए सघली कियार्च करीने,श्रांत यएली ए-टबे सामान्य प्रकारे श्रमने प्राप्त थयो थको,तथा परिश्रांत एटबे सर्व छंगो प्रत्ये श्रमने प्राप्त थयो थको, मर्दन कराववा लाग्यो. ते मर्दन केवा प्रकारनुं ? तेनुं वर्णन हवे करे हे. शतपाकतैल कहेतां सो वखत नवी नवी श्रोषधिर्यना रसोए करीने पकावेद्धं,श्रथवा जेने पकाववामां एक सो सोनामोहोरो खागे एवं, श्चने एवीज रीते सहस्रपाकतेल कहेतां एक हजार श्रीषधिनना रसथी पकावेल्लं, श्रथवा जेने पकावतां एक हजार सोनामोहोरो लागे एवुं एवी रीतनां श्रत्यंत सुगंधी छए करीने युक्त थएलां जे तेल श्रादिको, (छादि शब्दथी कपूरनां पाणी छादिकनुं पण ग्रहण करवुं.) तेर्डए करीने तेणे मर्दन कराव्युं. इवे ते तैल आदिको केवां तेनुं वर्णन करे हे. प्रीणनीय कहैतां रस, रुधिर एटखे खोही इत्यादि शरीरनी अं-दर रहेली धातुर्रने समता करनारां, वली ते तैलादिक केवां तो के दीपनीय कहेतां जठरामिने प्रदीस करनारां, वली ते तैलादिक केवां तो के मदनीय कहेतां कामनी वृद्धि करनारां, वली ते तैलादिक केवां तो के बृंहणीय कहेतां मांसने पुष्टि करनारां, वली ते केवां तो के दर्पणीय कहेतां वसने करवावालां, वली ते केवां तो के सघलां इंडिय छाने छंगोने प्रहादनीय कहेतां छानंद उपजावनारां, एवी रीतनां तैल छादिकची तेणे माणसो पासे पोताना अंगर्नु मर्दन कराट्युं, छने तेची तेनो याक पण उतरी गयो. हवे ते मर्दन करनारा माणसो केवा तो के निपुण कहेतां सघला प्रकारना जपायोमां विचक्षण एवा. वली ते माणसो केवा तो के संपूर्ण हे, हाथ अने पंगो जेर्डना, अर्थात् हाथ पंगमां कंइ पण खोमखापण विनाना. वली ते माणसो केवा तो के जेर्जना हाथनां तलीयांर्ज पण अत्यंत सुकुमाल हे एवा. (अहीं किरणावली नामनी टीका करनार श्रीधर्मसागर जपाध्याये तथा दीपिका नामनी टीका करनारे पण " पाणिपा-दस्य " ने बदसे " पाणिपादानां " एवो प्रयोग सख्यो हे, ते विजारवा जेवो हे; अर्थात् ते व्याकरणना

सुबोव

॥ ३ए ॥



पा.३%.

नियम् थी विरुद्ध हे, कारण के '' प्राणितुर्यांगाणां '' एवी रीतना हेमचंद्र महाराजे कहेला व्याकरणना सूत्रने अनुसारे तेनो " एकवज्ञाव" थवो जोइए. अर्थात् "पणिपादानां " एम पद नहीं मुकतां "पाणि-पादस्य " एवं पद मूकवुं जोइए. वसी ते पुरुषो केवा तो के अप्यंगन कहेतां तेल आदिकवं चोपमवुं ते, तथा मर्दन कहेतां तेने चोखवुं ते, तथा उद्घलन कहेतां तेज तेलने चोलीने तेनी वाटो करीने पाढ़ं काढी नाखवुं ते, इत्यादिक जे प्रकारो, तेर्चमां उत्कृष्ट अज्यासवाखा एवा. वली ते माणसो केवा तो अवसरने एटले उचित कालने जाणनारा पवा. वली ते माणसो केवा तो के दक्त कहेतां तुरतातुरत कार्य करनारा एवा. वली ते माणसो केवा तो के मर्दन करनारा माणसोमां पण अथेसर एवा. वली ते माणसो केवा तो के कुशल कहेतां विवेके करीने युक्त एवा. वली ते माणसो केवा तो के मेधावी कहेतां अपूर्व ए-टखे छति जस्कृष्ट जे चतुराइ तेने ग्रहण करवामां समर्थ एवा. वसी ते माणसो केवा तो के जीतेसो हे प-रिश्रम जेणे एवा, श्रर्थात् बहु महेनत करता ठतां नहीं थाकी जता एवा पुरुषोए करीने पहेंबो अस्थि-सुखकारिष्या कहेतां जे चंपीए करीने शरीररमां रहेलां हामकांउने सुख उपजे एवो प्रकार, बीजो मांस सुखकारिष्या कहेतां जे चंपीए करीने शरीरमां रहेला मांसने पण सुख उपजे एवो प्रकार, त्रीजो त्वचा-सुखकारि खा कहेतां, जे चंपीथी त्वचा कहेतां चामडीने पण सुख उपजे एवो प्रकार, तथा चोथो रोम-सुखकारि खा कहेतां जे चंपीथी रोमोने पण सुख उपजे एवो प्रकार, एवी रीतनी चार प्रकारनी शरीरने 🦃 सुख करनारी चंपी विगेरेनी क्रियाथी, चंपाएला थवाथी थाक रहित थएला ते सिद्धार्थ राजा तरत श्रद्दनशाला कहेतां कसरतशालामांथी बहार नीकछा. त्यांथी नीकछा बाद तुरतज ते ज्यां मज्जनपह कहेतां स्नान करवानुं ग्रह एटले स्थानक हतुं,ते तरफ ते सिद्धार्थ राजा श्राव्या ते तरफ श्रावीने तेणे ते-मां प्रवेश कर्यों त्यां प्रवेश करीने मुक्ताफल कहेतां मोती आदिकथी व्याप्त एटले जडेला एवा जे गवाको कहेतां करुखार्छ, ते हे जेनी खंदर, अने तेर्छए करीने श्रिजराम कहेतां मनने श्रत्यंत श्रानंद श्रापनारा एवा, तथा विचित्र एटक्षे जुदी जुदी जातिनां श्रयवा श्राश्चर्य उपजावनारां एवा जे मणि श्रने रत्नो, ते-

कस्पण

11 08 11

र्जए करीने जडेलो हे, कुद्दिमतल कहेतां तलीयानो जाग जेनो, एवी हे जूमि ज्यां, एवा प्रकारना स्नान-मंगप कहेतां स्नान करवाने माटे बनावेला मांगवामां नाना प्रकारना कहेतां विचित्र प्रकारनां जे मणिज तथा रत्नो, तेर्जं करीने जडेला, अने तेथी मनने आश्चर्य जपजावनारा, एवा स्नानपीठ कहेतां स्नान करवा माटे तैयार करी राखेला बाजोठ पर ते सुखे करीने बेठा अने एवी रीते सखे समाघे त्यां बेठा बाद पुष्पोदक कहेतां फुलोना रसयी मिश्रित थएलां जे जलो कहेतां पाणी,तेर्डंए करीने,तथा गंधोदक एटखे श्रीखंग कहेतां जे सुखम,तेनो जे रस,तेणे करीने मिश्रित थएलां जल,तेर्डए करीने,तथा उण्णोदक कहेतां अग्निए करीने वासण आदिकोमां गरम करेलां पाणी उंधी तथा ग्रुजोदक कहेतां पवित्र एवां जे तीथों, त्यांथी मगावेखां एवां जे पाणी, तेर्डए करीने, तथा ग्रुकोदक एटखे खजावथीज निर्मेख कहेतां जरा पण मेल विनानां एवां जे पाणी, तेर्नए करीने, एवी रीतनां विविध कहेतां जुदा जुदा प्रकारनां जे पाणी, तेर्जए करीने, कल्याणकरणप्रवर कहेतां मंगिखक कार्योंने करवामां समर्थ एवो जे स्नान करवानो विधि, तेणे करीने, मिक्तितः ताहशैः पुरुषैः कहेतां, उपर जेनुं वर्णन करवामां आवेलुं हे, एवा पुरुषोए करीने ते सिद्धार्थ राजाए स्नान कर्युं. ते स्नान श्रवसरे, बहु प्रकारनां सेंकडो कौतुकोए करीने युक्त थयो थको, ते राजा मंगलकारी श्रेष्ट स्नान करी रह्या पठी पदमल कहेतां रुंवाटीवालुं, अने तेथी करीनेज स्प-रीमां अत्यंत कोमल लागे एवं तथा उत्तम प्रकारनी ढांटेली है सुगंधी है जेनी अंदर एवं लाल रंगनं जे कापम, तेणे करीने, निर्जलीकृत कहेतां विलकुल पाणी विनानुं पोतानुं श्रंग कहेतां शरीर करतो इ-वो. तथा त्यार बाद छहतं कहेतां आखुं छने बहुमृद्ध कहेतां जेने खरीदवा जतां छथवा बनावतां घणुं द्रव्य लागे एवं,तथा अत्यंत उत्तम जातिनुं जे द्वष्यरत कहेतां रेशमी कापमनुं बनावेक्षं जे वस्त्र, तेणे क-रीने तेणे पोताना शरीरने खपेटी खीधुं;श्रर्थात् तेणे ते उत्तम वस्त्र पहेर्युं. वखी ते राजा केवो तो के सरस कहेतां रसे करीने संयुक्त थएखुं एवं तथा सुरित कहेतां सुगंध युक्त थएखुं एवं जे गोशिषचंदन कहेतां 🞇 गायनां मस्तकमांथी नीकलतुं एवं जे गोरुचंदन(गोरोचन)तेषे करीने श्रवुद्धित कहेतां सेपन युक्त थएखं

विशरीर जेनुं एवो. वली ते सिकार्थ राजा केवो तो के माला एटले पुष्पोनी माला तथा वर्णक एटले पीठी अने शरीरने शोजावनारं कुंकुम आदिकनुं विखेपन, ते सघखुं शुचि कहेतां पवित्र हे जेने एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के परिहित कहेतां शरीर पर पहेरेलां हे, मणि श्रने सुवर्णमय कहेतां सोनामय, जूषण कहेतां अलंकारो जेणे एवो वली तेसिद्धार्थ राजा केवो तो के कहिपत कहेतां शरीर पर योग्य स्थानके पहेरेला हे, हार कहेतां जेमां जुदी जुदी छाढार सेरो होय ते, तथा छार्यहार कहेतां जेमां जुदी जुदी नव सेरो होय ते, घ्यने त्रिसरिक एटले जैमां त्रण सेरो जुदी जुदी होय एवो हार, तथा प्रलं-वमान कहेतां खांबो खटकतो एवो, प्राखंब कहेतां छुंबनक (छुंमणुं) तथा कटिसूत्र कहेतां केनने स्थान-के पहेरवानुं जे आजूषण ते, अर्थात् कंदोरो, एटखां उपर वर्णवेखां जे आजूषणो, तेउंए करीने करेखी हे उत्तम प्रकारनी शोजा जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के पिनद्ध कहेतां पहेरेखां हे, धैवेयक कहैतां कंठमां पहेरवानां कंठा श्रादि क्र जुदी जुदी जातिनां श्राजूषणो जेणे एवो. वसी ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के अंग्रुलीयक कहेतां आंगली र्रमां पहेरवानां जुदा जुदा प्रकारनां आजूषणो के जेर्र वेढ,वींटी विगेरेनां नामधी छुनियामां प्रसिद्ध हे ते तथा लक्षित कहेतां अत्यंत शोजा आपे एवां कचाजरण कहे-तां केशोने शोजावनारां पुष्प ऋादिकनां आजूषणो, ते जेणे योग्य स्थानके पहेरेलां हे एवो वली ते सि-कार्थ राजा केवो तो के वर एटसे ऋत्यंत उत्तम जातिनां एवां जे कटक कहेतां कडां तथा ब्रुटित कहेतां पोंची, बाजुबंध विगेरे जातिनां आजूषणोधी स्तंजित थयेला हे हाथ जेना एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के अधिक एवं जे तेनुं पोतानुं स्वाजाविक रूप,तेषे करीने अत्यंत शोजायुक्त थएलो एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के कानमां पहेरवानां जे कुंमलो, तेणे करीने अत्यंत प्रकाशित थएलुं हे आ-नन कहेतां मुख जेनुं एवो. वही ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के मस्तक पर पहेरवानो जे मुकुट, तेणे करीने अत्यंत तेजवाझुं अएझुं हे मस्तक जेनुं एवो वही ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के हारे करीने आहादित एट-बे आहादन युक्त करेख़ं, अने तेथी करीने जोनार माणसोने प्रमोद कहेतां अतिशय हर्षने आपनारं हे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.c

कृद्पः

॥ ४४ ॥

हृद्य कहेतां वक्तःस्थल जेनुं एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो वे तो के मुझिका कहेतां वीटी श्रादि-कथी पिंगल कहेतां पीला रंगवाली थएली हे हाथनी आंगली है जेनी एवो, वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के प्रलंब कहेतां लांबो, अने तेथी करीनेज नीचे लटकतो एवो जे छपहो, तेले करीने उत्तम रीते करे-ह्युं हे उत्तरासंग जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के नाना प्रकारनां एटक्षे जुदी जुदी जातिनां जे मणि अने कनक कहेतां जे सुवर्णों, अने रलो,तेणे करीने दी सिमंत कहेतां कांतिवालां, अने तेथी करी-नेज महार्घ्य कहेतां जेने खरीद करतां अने बनावतां पण घणुं मूख पडे एवां,तथा निपुण एटखे शिख्प-विद्यामां अत्यंत प्रवीण थएलो एवो जे शिख्पी कहेतां कारिगर, तेणे उपचित कहेतां घडीने बनावेलां, तथा अत्यंत दीपतां, तथा घणीज चीवट राखीने बनावेलां, तथा कोइ जाणी न शके तथा उखमी पण न जाय एवी रीते जोडेला हे सांधार्त जेर्तनी अंदर एवां,अने तेथी करीनेज विशिष्ट कहेतां बीजां आजू-षणोश्री अत्यंत रमणीय लागे एवां, तथा मनने पण हरी लीए एवां, धारण करेल हे वीरवलय कहेतां वीरपणानो जे पोतानो छाहंकार तेने सूचवनारां वलयो कहेतां करांठ जेणे एवो; खर्थात् जे कोइ पोताने वीर तरिके मानतो होय, ते मने जीतीने छा कडांडे छतरावे, एवी बुद्धिश्री धारण करेख हे वीरवलय जे-है यो एवो सिद्धार्थ राजा. हवे किव कहे वे के वधारे तेनुं शुं वर्णन करवुं ? ते राजा तो कल्पवृक्तनी पेवे वि-प्रिचित यएको हतो; एटबे कल्पवृक्त जेम पत्र कहेतां पांदमां खादिकथी खलंकृत होय, खने पुष्प एटसे फुल आदिकथी जेम जूषित होय, तेम आ सिद्धार्थ राजा पण मुकुट आदिकथी अलंकृत हतो, तथा व-स्त्र श्रादिकथी विजूषित थयो हतो. वसी ते राजा केवो तो के कोरिंट नामनां वृक्तनां जे पुष्पो, तेनी बना-वेसी जे मालार्ड, तेर्डए करीने सिंहत एवं, श्रने तेना पर धारण करातुं जे छत्र, तथा श्वेत वर्णवालां श्रने 🖔 मनोहर एवां, स्रने बन्ने बाजुए वींजातां एवां जे चामरो, तेउंए करीने सूषित थएको एवो. वसी ते राजा केवो तो के मंगलजूत कहेतां कल्याणकारी एवो जे"जय जय" नो शब्द ते कराइ रहेलो हे, स्रालोकमा-त्रे कहेतां जेना जोवा मात्रथी एवो; छर्थात् जेने जोतां थकाज लोको जय जय राब्द करी रह्या हे एवो. 🧗

सुबोव

॥ ४४ ॥

वसी तेराजा केवो तो के श्रनेक कहेतां घणा एवा जे गणनायको कहेतां पोतपोताना समुदायना खामी-र्ज एटले उपरीज, तथा दंडनायक कहेतां तंत्रपाल एटले देशनी चिंता करनारार्ज, तथा राजार्ज एटले मांमुलिक राजार्ट, श्रर्थात् पोताना ताबा तसेना देशोना खंमीश्रा राजार्ट, तथा ईश्वरो एटसे युवराजा, (श्रहीं कल्पसूत्रनी किरणावली नामनी टीका करनारा धर्मसागर उपाध्याय तथा दी पिका नामनीटीका करनार ए बन्नेए ईश्वरनो अर्थ "युवराजाः" ने बदसे "युवराजानः" एम करीने प्रयोग मुकेस्रो हे ते विचारवा लायक हे,केमके ते व्याकरणना नियमश्री छलटो हे; कारण के "श्रद्धसमासांतागमनेन" एवी रीतना व्याकरणना सूत्रथी "युवराजाः" एवी रीतनो प्रयोग थाय हे, पण "युवराजानः" थइ शकतो नची, तेथी विद्वानोए मुकेलो प्रयोग विचार करवा जेवो हे) तथा तलवरा कहेतां संतुष्ट थएला राजा-जेए दीधेलो जे पहबंध कहेतां चांद, तेले करीने विजूषित चएला एवा राजस्थानीय कहेतां राजदरबारी माणसो तथा मांडलिक कहेतां मंमलना खामी एटखे उपरीठ, तथा कौटुं विक कहेतां केटलांक एवां जे कुटुंबो, तेर्जनां स्वामी जं, तथा मंत्रिजं कहेतां राज्यना अधिष्ठायक एवा सचिवो, के जेर्ज तमाम राज्य संबंधी कार्यने चलावे हे तेर्ड, तथा महामें त्रिडं कहेतां उपर कहेला मंत्रिडं करतां पण जेने वधारे ऋधि-कार हे एवा, तथा गणक एटसे ज्योतिष संबंधी विद्यानां शास्त्रोने पार पहोंचेला ज्योतिषीर्छ, तथा दौ-वारिक कहेतां द्वार पासे चोकी करनारा प्रतिहारो एटखे बनीदारो,तथा ख्रमात्यो कहेतां पोतानी साथे-ज जेर्जनो जन्म थएलो होय एवा मंत्रिज, तथा चेटो कहेतां चाकरोतुं कार्य करनारा माणसो,पीठमर्दको एटसे पीठ कहेतां छासनेने जे मर्दन करे ते छर्थात् नजदीकमां रही सेवा करनारा, एटसे मित्रो, (का-रण के तेर्ड मित्रो होवाथी, तेमने कोइ बखते पोताना श्रासन पर पण जोममां राजार्ड बेसामे हे,) तथा नागरो कहेतां नगरमां वसनारा लोको, तथा निगमो एटले वेपार करनारा लोको, तथा श्रेष्टी कहेतां नगरना मुख्य मुख्य वेपार करनारा लोको, तथा सेनापति एटले चतुरंगी सेनाना अधिकारी छ, तथा सार्थवाहो कहेतां सार्थना नायको, एटखे उपरीठ, तथा छूतो कहेतां बीजा राजार्ठनी पासे जइ, पोताना

कहपण

॥ ४१ ॥

🎖 राजार्जनो संदेशो कहेनारा, तथा संधिपालो कहेतां श्रन्य राजार्जनी साथे पोताना राजार्जने संधि करावनारा, ऋर्थात् एलची है, ए छपर कहेला सघला माणसोधी वींटाएलो एवो ते सिकार्थ राजा स्नान-गृह कहेतां ते स्नान करवाना घरमांथी बहार नीकलतो हवो.हवे श्रहीं तेनां संबंधमां महाकवि श्री जड़-बाहुस्वामी उपमा खलंकार मुके हे के ग्रहसमूहथी देदी प्यमान एवो जे नक्तत्र खने ताराउनो जे सम्ह. तिर्जं वचे वर्ततो एवो, जाणे ते राजा, चंद्र होय नहीं ? तेम शोजतो हतो; केमके उपर वर्णवेखो जे परि-वार ते प्रहगण, नक्तत्र अने तारार्थ सरखो हतो, तथा तेर्धनी वचे राजा चंड सरखो शोजतो हतो. हवे ते सिद्धार्थ राजा जे स्नान करवाना घर मांहेथी बहार नीकष्टयो, तेने माटे कवि उपमा अलंकार मुके हे के ते राजा स्नानग्रहमांथी बहार नीकहयो, ते जाणे के सफेद रंगनां जे वादलां ने,तेर्नमांथी यहोना समू-होनी साथे चंद्र जाणे बहार नीकल्यो होय नहीं ? एवो ते राजा शोजतो हतो. वली ते राजा केवो तो के जेनुं दर्शन प्रिय हे एवो एटसे वादलांमांथी वहार नीकळेलो छने नकत्र छादिथी वींटाएलो चंड जेम त्रियदर्शनी थाय हे तेम छहीं राजाना संबंधमां पण जाणवुं. वसी ते राजा केवो तो के नरेंद्र कहेतां माणसोनो इंद्र कहेतां राजा तथा नरवृषत कहेतां माणसोने विषे वृषत समान एटखे पृथ्वीनो जार धारण करवामां समर्थ एवो, तथा नरसिंह कहेतां मनुष्योमां सिंह समान, केमके ते छःखे करीने सहन यह शके एवां पराक्रमवालो हतो. वली ते राजा केवो तो के खत्यंत खिधक एवी जे राज्य सं-बंधीनी लक्षी, तेले करीने छत्यंत देदीप्यमान एवो, ते राजा मझनग्रह एटले स्नानग्रहमांथी नीक-हीने, वहार रहेली जे उपस्थानशाखा कहेतां बेठकनी जगो अर्थात् कचेरी, तेनी अंदर आव्यो त्यां श्रावी ते पूर्व दिशा तरफ पोतानुं मुख करीने वेठो. एवी रीते सिंहासन पर पूर्व सन्मुख बेसीने, तेणे पोताथी इशान खुणानी बाजुमां आठ जडासनो कहेतां सिंहासनो मंगाव्यां, तथा तेमना पर श्वेत एटखे सफेद वस्त्रो बीठाव्यां, तथा तेर्रने सिद्धार्थ कहेतां सफेद सरसवोना दाणार्रंथी मांगिखक उप-चार कराव्यो, श्रर्थात् ते सफेद सरसवोना दाणार्जथी तेर्जनी पूजा करी. तेम कराव्या बाद तेणे पोता-

सुबोव

॥ ४४ ॥

ना सिंहासनथी नहीं बहु नजदीकमां, तेम नहीं बहु हेटे, एवी रीते तेले एक यवनिका कहेतां कना-त तणावी. हवे ते कनात केवी तो के नाना प्रकारनां एटखे जुदी जुदी जातिनां जे मणि,माणिक, रत्नो विगेरे जवाहीरश्री मंभित थएखी, अने तेथी करीनेज अधिक रीते प्रेक्णीय कहेतां जोवा खायक एवी. वली ते यवतिका कहेतां कनात केवी तो के महाध्ये कहेतां जेनुं अत्यंत मूख्य थाय एवी. वली ते कनात केवी तो के वर कहेतां प्रधान एवं जे पत्तन कहेतां नगर, ते नगर पण केवं तो के ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां वस्त्रो वणाय हे,तथा ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां रत्नो नीपजे हे,एवा नगरनी खंदर बनावेसी. वसी ते यवनिका कहेतां कनात केवी तो के अत्यंत कोमल हे स्पर्श जेनो एवी वली ते कनात केवी तो के उत्तम जातिना रुनुं बनावेलुं बारिक ए वुं जे सुतर,तेनी सेंकडो गमे जे रचनार्च,तेर्चए करीने मनने आश्चर्य उपजे एवो हे ताणें कहेतां ताणो जेनी छंदर एवी.वली ते कनात केवी तो के इहामृग कहेतां वर,रूपज कहेतां बलदो,तुरग कहेतां घोडार्च,नर कहेतां मनुष्यो,मगर कहेतां मगरमञ्जो,विहंग कहेतां जुदी जुदी जातिनां पक्ती जं, डयाख कहेतां सर्पों, किन्नर कहेतां किन्नरों, रुरु कहेतां एक जातिनां हरिणों, सरज कहेतां अष्टापद नामनां प्राणी छ,चमरी कहेतां जेनां पुंछनां छना वालोनां चामरो बने छे एवी चमरी गायो,कुंजर कहेतां हाथीर्ड, तथा वनसता कहेतां श्रदवीमां थती चंपक, श्रांबा विगेरेनी सतार्ड, पद्मसता कहेतां कम-लनी लतार्ड, के जेर्ड छुनियामां प्रसिद्ध हे, एवी रीते उपर वर्णवेलां सघलांडंनी जे रचना कहेतां चित्रकामो, तेर्जुए करीने चित्र कहेतां मनने छत्यंत छाश्चर्य जपजावनारी एवी रीतनी छन्यंतर यव-निका कहेतां अंतेजरने (राणीवासने) बेसवानी जे कनात, तेने रचावीने, तेणे (राजाए) तेनी अंद-रना जागमां एक सिंहासन मंनाव्युं. ते सिंहासन केवुं तो के नाना प्रकारनां जे मणि माणेकादि फवेरात, तेनी जे रचना, तेणे करीने चित्र कहेतां चित्तने आश्चर्य उपजावे एवं वसी ते सिंहासन केवं तो के गादी श्रने कोमल तकीश्राए करीने श्राष्टादित करेलुं एवं. वली ते सिंहासन केवं तो के श्वेत कहेतां सफेद एवं जे मलमल आदिकनुं सुकुमाल वस्त्र, तेणे करीने प्रत्यवस्तृत कहेतां पातुं उपर आ-

कहप०

11 88 11

हादित करें खुं एवं (उपर खोल चडावें खुं.) वली ते सिंहासन कें चुं तो के (रेशमनी गादी तेना पर बी-बाववा वमें करीने) अत्यंत सुकुमाल थए खुं एवं. वली ते सिंहासन कें चुं तो के स्रंगने सुख आप-नारों वे स्पर्श जेनो एवं, स्रने तेथी करीनेज स्रत्यंत शोजाए करीने युक्त थए खुं एवं ते सिंहासन सिद्धार्थ राजाए त्रिशला कत्रियाणीने बेसवा माटे तैयार कराव्युं. एवी रीतनी सघली तैयारी छं कर्या बाद तेणे कौ दुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, स्रने तेष्ठने बोलावीने तेणे कह्युं के, हे देवानुप्रियो, तमो क्रिप्र कहेतां तुरतज जहने स्वप्रायको कहेतां स्वप्रशास्त्रोमां पार पहोंचेला एवा पंडितोने बोलावी लावो ते स्वप्रयावको केवा तो के स्वावनारुं जे शास्त्र, तथा जेमां स्वप्रादिकनां फलोनुं माहात्म्य कहे खुं होय एवा जे मंत्रो, तेष्ठनां मूलसूत्रो स्वने वली तेष्ठना जे स्र्यों, तेष्ठने संपूर्ण रीते जाणनारा एवा वली ते स्वप्रयावको केवा तो के विविध प्रकारनां जे शास्त्रो तेष्ठने विषे पण कुशल कहेता पंडित एवा हवे ते ज्योतिषशास्त्रनां स्वाव स्रगं क्यां कयां ते देखाने हे

श्रुं स्त्रां स्वरं चैव, जीमं व्यंजनलक्षो ॥ उत्पातमंतिरक्तं च, निमित्तं स्मृतमध्धा ॥ १॥ श्रायं परे सुं श्रंग एटले श्रंगस्फुरणनी चेष्टार्ड जाणवी ते, जेमके पुरुषतुं जमणुं श्रंग स्फुरे तो सारं, श्रने श्रीतुं मांचुं श्रंग स्फुरे तो सारं, बीजुं स्वप्त पटले उत्तम जातिनां, मध्यम जातिनां तथा श्रथम जातिनां जे स्वप्तो माणसोने श्रावे हे, तेनां फलादिकने जे जाणवां ते. त्रीजुं स्वर कहेतां प्टुर्गा (पक्तीविशेष), रुपारेल, काली, शियाल विगेरेना शब्दोधी थतां फलादिकने जाणवुं ते. चोथुं जोम कहेतां पृथ्वीमां थता कंप एटले धुजारा श्रादिकनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. पांचमुं व्यंजन कहेतां मधा, तल श्रादिकनां फलोनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. हां हाथपगोनी रेलाश्रादिकनुं जे ज्ञान सामुद्रिकशास्त्रोमां कहेतुं हे, तेना विज्ञानने जाणवुं ते. सातमुं उत्पात तथा उद्यापात कहेतां तारा श्रादिकना खरवाथी सारां नरसां फलने जे जाणवुं

सुबो०

॥ ४३ ॥

ते. तथा आठमुं अंतरिक्त कहेतां घहोना उदय अथवा अस्त आदिक थवाथी जे सारा माठा बनावो बने तेनुं जे विज्ञान थवुं ते

एवी रीते सिद्धार्थ राजाए करेख हे हुकम जेइंने एवा ते कौंटुंबिक लोको हर्ष पामेखा,संतोष पामेखा, यावत हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया थका राजानी ते श्राङ्गाने हाथ जोमीने सांजलवा लाग्या, श्रने सां-जलीने सिद्धार्थं क्तियनी पासेथी बहार जाय हे, श्रने बहार जर्ने क्तियकुंग्याम नगरना मध्य जा-गमां थइने ज्यां स्वभपाठकोनां घर हे त्यां जाय हे अने जइने तेर्रने बोलावे हे. पही ते स्वभपाठको पण सिद्धार्थ राजाना कौदुंबिकोने बोलाववा आवेला जाणीने अत्यंत हर्षित यया;तया पठी तेर्डए स्नान क-र्थुं, त्यार बाद तेर्जं व बिकर्म कहेतां पूजा करी वसी ते स्वप्तपाठको केवा तो के करेखां हे तिखक श्रादिक जेर्डए एवा. वली ते समपाठको केवा तो के दिध कहेतां दहीं, दूवी कहेतां भ्रो तथा श्रक्त कहेतां चोसा **आदिकथी करे**ख़ें हे मंगल जे**र्ड**ए एवा. ते मंगलोशाने माटे तो के छुःस्वप्त कहेतां खराब एवां जे स्वप्त आ-दिक तेर्रीनो नाश करवा माटे. वसी ते खप्तपाठको केवा तो के शुद्ध एटसे पवित्र अने उज्ज्वस एवां तथा प्रवेश्य कहेतां राजानी सन्नामां जेवां कपमां उपहेरीने जवाय एवां तथा मंगलसूचक पहेरेलां हे श्रेष्ठ कपमां जेणे एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के श्रष्टप कहेतां घोमां श्रमे महार्घ कहेतां मोटी किमतनां जे श्राजूषणो, तेउंए करीने श्रखंकृत कहेतां शोजावें हुं हे शरीर जेउंए एवा वली ते स्वप्नपा-ठको केवा तो के सिद्धार्थ कहेतां जे सफेद रंगना सरसवो तथा हरितालिका एटखे जे हुर्वा ते बन्ने वस्तुर्जने जेर्डए मंगल कहेतां कळाणने माटे धारण करेली हे मस्तकमां जेर्डए एवा. एवी रीतना थइने तेर्ज सघला पोतपोताने घेरथी नीकख्या. एवी रीते पोतानां घरोमांथी नीकख्या बाद तेर्ज ते क्तियकुं न प्रामनी मध्यमां थइने, ज्यां सिद्धार्थ राजानुं ज्वननवर कहेतां उत्तम मेहेलो तेने विषे पण श्रवतंसक कहेतां मुकुट सरखुं एवुं जे जुवन हे, तेना प्रतिद्वार कहेतां मूख दरवाजा पासे तेर्ड श्राच्या त्यां श्राच्या बाद तेर्च सघला एकठा श्रइने, एक सरखा मतवाला श्रया, श्रने तेर्चए कहपः

॥ ४४ ॥

पोतामांना एकने त्रगामी करोने बीजा सघलाठं तेना त्रज्ञयायी कहेतां ते उपरी कहे तेम करनारा तथा बोलनारा थया, त्रश्चीत् तेवो सघला संपकरीने एक मतवाला थया;कारण के कह्युं ठे के:— सर्वेऽपि यत्र नेतारः, सर्वे पंडितमानिनः ॥ सर्वे महत्त्वमिन्नंति, तद्वृंदमवसीद्ति ॥ १ ॥ श्वर्थ—उयां सघला माणसो उपरी थइने बेसे, तथा ज्यां सघलाठं पोताने पंकित माननाराठं होय, तथा ज्यां सघलाठं पोताने प्राप्त थाय.

तेना पर श्रत्रे पांचसो सुजटोनुं एक दृष्टांत कहे हे एक दहानों कोइक पांचसें सुजटो एक हा चार हो मांहो मां हे संबंध विनाना यया चका, नोकरी माटे एक राजा पासे श्राव्या लारे राजाए मंत्रिना वचनश्री
तेर्जनी परी हा करवा माटे, तेर्जने सुवा माटे एकज शब्या मोकली. हवे तेर्जमां सघलार्ज श्रहंकारी हता,
श्रमे तेश्री तेर्जनानामोटानो पण व्यवहार राखता नहोता, तेश्री ते एक शब्या श्रावेली जोइने, ते लेवा
माटे मांहोमांहे विवाद तथा क्षेश करवा लाग्या. श्रंते एवा ठराव पर श्राव्या के कोइ पण ते शब्या पर
सुवे नहीं, श्रमे तेश्री तेर्ज शब्याने वचमां राखीने तेनी तरफ पोताना पगो राखीने सुता. हवे राजाए तेराजाए विचार्युं के श्रावी रीते ठेकाणा विनाना श्रमे मांहोमांहे संप विनाना तथा श्रहंकारी एवा श्रा सुजटो युद्धादिक शी रीते करी शकशे? एम विचारी तेर्जने निश्ंहीने काढी मेथ्या

तेथी ते स्वप्तपाठको पण सघला एकठा मसीने तथा एकसंपवाला घइने ज्यां सिद्धार्थ क्रत्रिय बेठो इतो, त्यां आव्या. तथा आवीने हाथ जोमीने राजाने तेर्ज आशिष देवा लाग्या के हे राजा! तुं जय पाम, विजय पाम. वली तेर्जए कह्युं के:-

दीर्घायुर्जन,वृत्तवान् जव,जव श्रीमान्,यशस्त्री जव,प्रज्ञावान् जव,ज्रूरिसत्त्वकरुणादानैकशुंको जव, जोगा-ढ्यो जव, जाग्यवान् जव,महासीजाग्यशासी जव,प्रौढश्रीर्जव,कीर्तिमान् जव,सदा विश्वोपजीव्यो जव१ अर्थ-हे राजा, तुं दीर्घ कहेतां सांबा श्रायुष्यवासो था, वृत्तवान् कहेतां यम नियमादि वतने सुबोव

n br n

धारण करनारो था, श्रीमान् कहेतां लक्कीवान् था, यशस्त्री कहेतां यशवालो था, प्रज्ञावान् कहेतां बुद्धिवालो था, प्रूरिकहेतां घणां एवां जे सत्त्र कहेतां प्राणी उं, ते उं प्रत्ये जे करुणादान कहेतां दया-दान, तेने विषे ग्रुंक कहेतां पराक्रमी था, श्रर्थात् प्राणी उपर दयालु था, जोगोए करीने श्राल्य कहेतां सहित था, जाग्यवान् कहेतां जाग्यवालो था, तथा उत्तम प्रकारनुं जे सौजाग्य तेणे करीने पण मनोहर था, प्रौढ कहेतां मोटी एवी जे श्री कहेतां लक्की श्रथवा शोजा तेणे करीने युक्त था, वली कीर्तिए करीने पण तुं युक्त था, तथा हमेशां समस्त जगत्ने उपजीव्यक कहेतां श्राजीविका देनारो, श्रने रक्षण करनारो था.

(छाहीं किरणावलीकारे तथा दीपिकाकारे "कोटिंजर" एवो प्रयोग मुक्यो है, ते व्याकरणधी विरुद्ध होवाधी विद्वानोने विचारवा जेवो है.)

वली पण तेर्ड बीजा काव्ये करीने पण राजाने आशीर्वाद आपे हे, ते नीचे प्रमाणे जाणवुं. कह्याणमस्तु शिवमस्तु धनागमोऽस्तु, दीर्घायुरस्तु सुतजनमसमृद्धिरस्तु ॥ वैरिक्तयोऽस्तु नरनाथ सदा जयोऽस्तु, युष्मस्कुखे च सततं जिनजक्तिरस्तु ॥ १॥

अर्थ-हे नरनाय, तमने कछाए याओ, निरुपद्मवपणुं याओ, धननुं आवागमन याओ, खांबुं आयुष्य याओ, पुत्रजन्मनी समृद्धि याओ, वैरीओनो नाश याओ, हमेशां तमारो जय याओ तथा तमारा कुलमां हमेशां जिनेश्वर प्रजुनी जिक्त रहो.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेही कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती जाषांतरमां त्रीजो क्रण समाप्त थयो श्रीरस्तु.

॥ श्रीजिनाय नमः॥

॥ चतुर्थं व्याख्यानं प्रारञ्यते ॥

ते वार पढ़ी ते सिद्धार्थ राजाए ते स्वप्नपाठकोने तेमना गुणोनी स्तुति करीने वांचा, पुष्पादिकथी

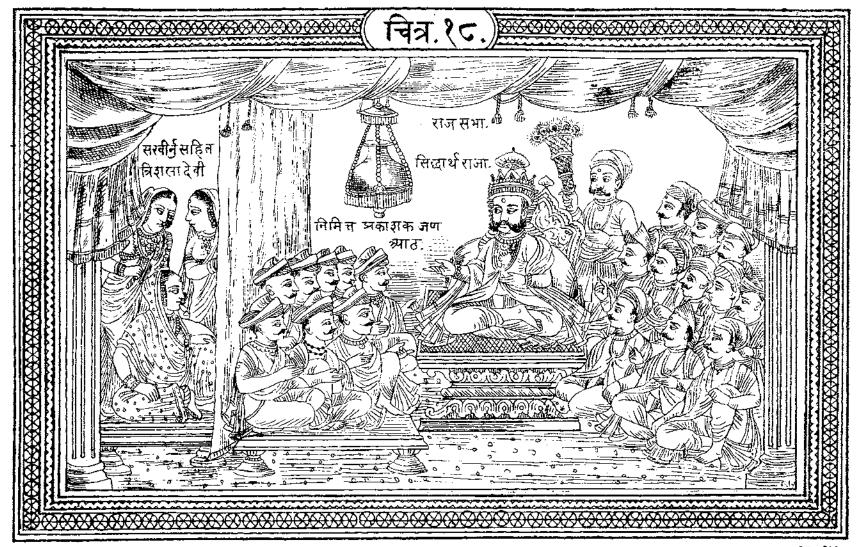
कहप

॥ ४५॥

तेमने पूज्या, फल वस्त्र आदिकना दानथी तेमनो सत्कार कर्यो, अने उना थवा विगेरेथी तेमनुं सन्मान कर्युं. एवी रीते थया थका तेख्रो दरेक खगाफी राखेलां खासनो पर वेठा; ते वार पठी ते सिद्धार्थ राजा त्रिशला कत्रियाणीने पमदानी अंदर राखीने पुष्प तथा नालीयेर आदिक फलोए करीने जरेखा हे हाथ जेना (केमके खाखी हाथे देव, ग्रंह, राजा तथा विशेषे करीने निमि-करीने जरेखा है हाथ जेना (केमके खाली हाथे देव, ग्रंह, राजा तथा विशेषे करीने निमि-तियाने मलवुं नहीं, केमके फलथी फल मले हे) एवो राजा ते खप्तपाहकोने घणा विनयथी एम कहेवा लाग्यों के हे देवानुप्रियो ! श्राजे त्रिशला कत्रियाणी तेवी शय्यामां सुती जागती श्रर्थात् अदृप निद्रा करती वृती आ आवा प्रकारनां (गज, वृषज विगेरेनां) श्रेष्ठ चौद महा स्वप्तोने जोइने जागी गइ, माटे हे देवानुप्रियो ! ते चौद श्रेष्ठ महा स्वप्तोमां हुं विचारं हुं के कयुं स्वप्त कख्याणकारी अने फलवृत्तिविशेष आपनारं थशे ? पढी ते स्वमपाठको सिकार्थ राजानी पासेथी ए स्वमोने सांजलीने, जाणीने,हर्ष पामेला, संतोष पामेला,यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया ढता ते स्वप्नोने सा-री रीते हृदयमां धारी राखे हे अने हृदयमां धारी राखीने खप्तोना अर्थनो विचार करवा खाग्या अने अर्थनो विचार करीने ते परस्पर मसखत करवा खाग्या अने मसखत करीने पोतानी बुद्धिथी जाणेल ने खर्थ जेर्डए, परस्पर ग्रहण करेल ने खर्थ जेर्डए, संशय पमते नते परस्पर पूर्वेलो ने खर्थ जिउंए, निश्चित करेलो हे ऋर्थ जेउंए, ऋवधारण करेल हे ऋर्थ जेउंए, एवा थया यका, सिद्धार्थ राजा-नी पासे स्वप्नशास्त्रोने उचारता थका एम कहेता हवा. श्रनुत्रवेखं, सांत्रक्षेद्धं, दीवेखं, प्रकृतिना विका-रथी जत्पन्न थए हुं, स्वजावे जत्पन्न थए हुं, चिंतानी परंपराथी जत्पन्न थए हुं, देवतादिकना उपदेशथी उत्पन्न थए खुं, धर्मकार्यना प्रजावयी जत्पन्न थए खुं तथा पापना जदयथी जत्पन्न थए खुं, एवी रीते नव प्र-कारनुं माणसोनुं स्वप्त जाण खुं. पहे खा उपकारोधी दी वे खुं ग्रुप अथवा अशुप्त स्वप्त निरर्थक जाय वे, अने पढ़ीना त्रण प्रकारोधी दी वे खुं स्वप्त सार्थक थाय वे; रात्रिना चारे पहोरमां दी वे खुं स्वप्त बार, ठ, त्रण तथा एक मासे अनुक्रमे फलदायक थाय ठे. रात्रिनी ठेल्ली बे घमीए जोएलुं स्वप्न

सुबोध

ાા ૪૫ (ા



पा. ४५

दश दिवसमां निश्चे फले हे,तथा सूर्योदय वखते दी हें इंस्वम तुरत निश्चे फले हे.दिवसमां दी हेल खन-नी श्रेणी तेमज आधि, व्याधि तथा मलमूत्रादिकनी पीकाथी उत्पन्न थएलुं स्वप्न ए सर्व निरर्थक जाण-वुं. धर्ममां रक्त (श्रासक्त), समधातुवालों, स्थिर चित्तवालों, जितें दिय तथा दयालु माणस प्राये करीने स्वप्तथी प्रार्थित छर्थने साधे है. खराव स्वप्त कोइने संजलावदुंज नहीं; सारं स्वप्त गुरु श्रादिकने संजला-ववुं; अने ते न होय तो गायना कानमां पण संजलाववुं. उत्तम स्वप्नने जोइ बुद्धिवान् माणसे सुवुं नहीं; केमके तेथी तेनुं फल मलतुं नथी, श्रने श्राखी रात्रि जिनेश्वर प्रज्ञनां स्तवनमांज ग्रजारवी. खराब स्वप्त जोइने फरीने पाढुं सुइ जवुं, अने ते कोइने कहेवुं पण नहीं; अने तेथी ते फखवंत यतुं नथी. जे माण्स पहेलां अनिष्ट स्वमने जोइने पाठलथी ग्रुज स्वम जुए हे, ते तेने (ग्रुज) फलदायक थाय हे छने एम परावर्ते जाणवुं. स्वप्तमां मनुष्य, सिंह, घोमो, हाथी, वृषत छने सिंहणथी युक्त एवा रथमां आरूढ थयेलो जे माण्स जाय हे ते राजा थाय है. स्वप्तमां घोमा, हाथी, वाहन, आसन, घर, निवसन छादिकनो जे छपहार ते, राजा तरफनी बीक तथा शोक करनारो, बंधुर्जनो वि-रोध करनारो, तथा पैसानी हानि करनारो थाय हे. जे पुरुष सूर्यचंडनां संपूर्ण विंबने गली जाय, ते गरीब होय तोपण सुवर्ण अने समुद्र सहित पृथ्वीने निश्चे मेलवे हे. प्रहरण, श्राजूषण, मणि, मोती, सोनुं, रूपुं तथा धातुर्वनुं जे इरण, ते धन अने मानने नाश करनारं, तथा प्रायः जयंकर मरण करनारुं हे. सफेद हाथी पर बेठों थको नदीने कांठे जातनुं जोजन करे, ते जातिहीन होय तोपण धर्मरूपी धनने यहण करतो थको आखी पृथ्वीने जोगवे. पोतानी स्त्रीना हरणयी धननो नाश थाय, पराजवधी क्केश थाय, अने गोत्रनी स्त्रीना हरण तथा पराजवधी बंधुर्डनो वधबंधन थाय. सफेद सर्वथी जे माणस पोतानी जमणी जुजामां मंखाय, ते माणसने पांच रात्रिमां हजार सोनामोहोरो मखे. जे माणसनी शच्या तथा पगरखांनुं हरण स्वप्नमां थाय, तेनी स्त्री मृत्यु पामे, तथा तेना शरीरे छात्यंत पीना थाय. जे माणस मनुष्यनां मस्तक, पगतथा हाथनुं स्वप्नमां जद्गण करे हे, तेने अनुक्रमे

करूप 🛚

॥ ध६ ॥

राज्य, हजार सोनामोहोरो, तथा तेथी श्रर्थी सोनामोहोरो मसे हे. जे माण्स बारणानी जोगलनो, राय्यानो, हिंचोलानो, पाडुकानो तथा घरनो जंग जुए हे, तेनी स्त्रीनो नाश थाय हे. जे माणस तलाव, समुद्र, जलची नरेली नदी, तथा मित्रनुं मरण जुए हे, ते माणसने निमित्त विना पण श्रत्यंत धन मसे हे. हाणवाहुं गमुल तथा श्रीषघ सहित तपेहुं पाणी जे माणस पीए हे, ते माणस निश्चे श्वतिसार रोगथी मृत्यु पामे हे. जे माणस स्वप्तमां देवनी प्रतिमानी यात्रा, स्नान, जेट तथा पूजा छादिक करे हे, ते माणसने सर्व जगोएथी दृद्धि थाय हे. जे माणस स्वप्नमां पोताना हृद यरूपी तलावमां उत्पन्न थएलां कमलोने जुए हे, ते माणस कुष्टी यइने तुरत मृत्यु पामे हे. जे मा-णस स्वप्नमां मनोहर घी मेखवे हे, तेनो यश वृद्धि पामे हे; वखी कीरान्ननी साथे तेनुं खावुं जुए ए प्रशस्त हे. स्वप्तमां हसे तो शोक थाय, नाचवाथी वधवंधन थाय,जणवाथीव लेश थाय,एम माह्या माणसे जाण-बुं; गाय, घोनो, राजा,हाथी श्रने देव सिवायनां सघलां काला रंगनां स्वप्न खराव जाणवां वली कपास, लवण आदि सिवायनां सघलां सफेद रंगनां खन्नां सारां जाणवां. जे स्वनां पोता प्रत्ये जोयेल होय ते शुज अथवा अशुज ते माणसने चाय हे अने जे स्वप्नां बीजा प्रत्येनां होय तेमां तेने पोताने कांइ नथी. खराव स्वप्त देखाय तो देव गुरुने पूजवा तथा शक्ति प्रमाणे तप करवो; केमके हमेशां ध-र्ममां रक्त थयेखा माणसोने खराव स्वप्त पण उत्तम स्वप्त तुख्य थाय हे. एवी रीते हे देवानुत्रिय हे सिकार्थ राजन्! अमारा स्वप्नशास्त्रने विषे बेंताबीश स्वप्न सामान्य फल आपनारां अने त्रीश म-हा स्वप्त उत्तम फल खापनारां हे. एम सर्वे मलीने वहोंतर स्वप्त कहेलां हे. तेमां पण हे देवानुप्रिय! छरिहंतनी माता छथवा चक्रवर्तीनी माता छरिहंत छथवा चक्रवर्ती गर्नमां छावते उते छा त्रीश महा स्वप्नोमांथी छावां चौद महा खन्नो जोइने जागी जाय हे. ते चौद खन्न गज, वृषज विगेरे. वा-महा स्वप्नोमांथी छावां चौद महा खप्तो जोइने जागी जाय है. ते चौद खप्त गज, वृषज विगेरे. वा-जागी जाय हे. बलदेवनी माता बलदेव गर्जमां खावते हते छा चौद महा स्वप्तमांथी मात्र चार

सुबो०

।। ଧୃତ୍ୟ 🛭

स्वप्त जोइने जागी जाय हे, श्रने मंमिखकनी माता मंडलिक गर्नमां श्रावते हते श्रा चौद महास्वप्त-मांघी मात्र एक स्वप्नने जोइने जागी जाय हे; माटे हें देवानुप्रिय ! आ त्रिशक्षा क्वियाणीए तो आ चौदे महा स्वमो जोयेलां हे, माटे हे देवानुत्रिय ! आ त्रिशला क्तियाणीए ए प्रशस्त स्वम जोयेलां हे. हे देवानुत्रिय! त्रिशला कत्रियाणीए यावत् मंगलकारक स्वप्त जोयेलां हे. तेथी हे देवानुत्रिय! तमोने अर्थनो लाज, जोगनो लाज, पुत्रनो लाज, सुखनो लाज अने राज्यनो लाज यहो; अने एवे प्रकारे हे देवानु प्रिय ! त्रिशला क्तियाणी नव मास संपूर्ण थह सामा सात रात्रि दिवस जाते वते तमारा कु-लमां ध्वज समान, दीपक समान, मुकुट समान, पर्वत समान, तिलक समान, कुलनी कीर्त्तिना कर-नार, कुलना निर्वाह करनार, कुलमां सूर्य समान, कुलना आधाररूप, कुलना यश करनार, कुलने विषे वृक्त समान, कुलनी परंपराने वधारनार, सुकोमल हाथपगनां तलीयावाला, नहीं श्रोठा परिपूर्ण पंचें द्रिय युक्त शरीरवाला, खद्राण श्रने व्यंजनना गुणोए करीने युक्त, मान श्रने जन्मानना प्रमाणुषी परिपूर्ण छने सारी रीते प्रगट थयेला छावयवोए करीने सुंदर छंगवाला, चंड समान म-नोहर छाकृतिवाला, त्रिय, त्रियदर्शनी छने सुंदर रूपवाला एवा पुत्रने जन्म छापशे. वली ते पुत्र वा-ह्य अवस्थाने तजीने परिपक्व विज्ञानवाला घइ यौवनावस्थाने प्राप्त यये उते दानादिक आपवामां शूरा, संग्रामने विषे वीर, परराज्यने आक्रमण करवामां समर्थ, घणा विस्तार युक्त सेना तथा वाहन-वाला अने चारे दिशार्रना स्वामीएवा चकवर्ती राज्यपति राजा थहो, तेमज त्रण लोकना नायक अने धर्मने विषे श्रेष्ठ एवा चार गतिना नाश करनार चक्रवर्ती जिनेश्वर थशे.

तेमां जिनपणामां ते चौदे स्वप्तनां पृथक पृथक फलो नीचे प्रमाणे जाणवां चार दांतवाला हाथीने जोवाथी चार प्रकारना धर्मने ते कहेशे. वृषजने जोवाथी आ जरतकेत्रमां ते बोधिरूपी बीजने वावशे. क्षिहने जोवाथी कामदेव आदिकरूप जे जन्मत्त हाथीओ, तेणे करीने जंगातुं एवं जे जव्यजनरूपी वन, तेनी रक्ता करशे. लक्ष्मीने जोवाथी वार्षिक दान दहने तीर्थंकरनी लक्ष्मीने जोगवशे. माक्षा जो-

कङ्प□

11 88 11

वाथी त्रणे जुवनने मस्तकमां धारवाने ते खायक थशे. चंद्रने जोवाधी जब्यरूपी जे कुवखय कहेतां चं- 🧗 इविकासी कमल, तेने विकस्वरपणुं श्रापशे. सूर्यने जोवाथी कांतिना मंग्रे करीने ते जूषित यशे. देवो,तेश्रोने पण पूजनीय थरो. रत्नना राशिने जोवाथी रत्नना गढोए करीने ते सूषित थरो. धूमामा विनाना श्रिते जोवाथी जव्यजनरूपी सुवर्णने शुरू करनारा थरो. चौदे स्वप्ननां एकठां फलरूप चौदे रज्वात्मक लोकना श्रम जाग पर रहेनारा थरो.माटे हे देवानुप्रिय! त्रिशला क्रियाणीए श्रत्यंत जदार, यावत् मंगलकारक एवां ह्या चौद महा स्वप्नो जोयेलां हे. पही सिद्धार्थ राजाए स्वप्नपाहकोनी पासेथी ए अर्थ सांजलीने अने धारीने हर्ष पामेला,संतोष पामेला,यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया यका बे हाथथी यावत् अंजिक्ष करीने ते स्वप्तपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं. हे देवानुप्रिय पाठको ! ए एमज हे. हे स्वभपाठको ! ते तेमज हे. हे पाठको ! ए यथार्थ हे. हे पाठको ! ए वां छित हे. हे पाठको ! तमारा मुखर्थी पमतांज ए वचनने में प्रहण करेलुं हे. हे पाठको ! ए वांहित हतां वारंवार वांहेलुं हे. ए अर्थ साचो है. जेवी रीते ए अर्थने तमे कहो हो तेवी रीते ते है एम कहीने सिद्धार्थ राजा ते स्वप्नोने सारी रीते धारण करे हे ब्यने धारण करीने ते स्वप्नपानकोने विपुल एवा शालि ब्यादि-कना श्रशन एटले जोजननी वस्तुश्रोए करीने, श्रत्यंत उत्तम एवां पुष्पोए करीने, वस्त्रोए करीने, सुगंधी ओए करीने, पुष्पोनी गुंथेली मालाओए करीने, मुकुट आदिक आजूषणोए करीने तेमनो सत्कार करता हवा, तेमने विनयपूर्वक वचनोथी सन्मान करता हवा; खने तेम करीने बेक जीवित पर्यंत तेमनो निर्वाह चाले एटबुं तेमने प्रीतिदान देता हवा, तथा तेम करीने तेउने विसर्जन करता हवा. पठी सिद्धार्थ राजा सिंहासन परथी उठीने ज्यां त्रिशला कत्रियाणी कना-

सुबो़□

11 88 11

तनी खंदर बेठां हतां, त्यां खाठ्या, खने खावीने तेने कहेता हवा के हे विश्वाला! खा प्रमाणे स्वप्तशास्त्रमां बेंतालीश सामान्य स्वप्त खने त्रीश महा स्वप्तथी खारंजीने ठेवट एक महा स्वप्तने जोइने जगाय ठे खने हे त्रिशला! तें तो खा चौद महा स्वप्तो दीठां ठे, तें उदार स्वप्तो दीठां ठे, मादे त्रण लोकना नायक खने धर्मने विषे श्रेष्ठ एवा चार गतिना नाश करनार चक्रवर्ती जिनेश्वर तारा पुत्र थशो. पठी ते त्रिशला क्तियाणी ए खर्चने सांजलीने खने धारीने हषे पामेली, संतोष पामेली, यावत् हषेथी पूर्ण हृद्द- यवाली यह थकी वे हाथ वहे खंजलि करीने ते स्वप्तोने सारी रीते हृदयमां धारी राखे ठे खने धारी राखीने सिद्धार्थ राजाए जवानी रजा खापी एटले नाना प्रकारनां मणि खने रत्नोनी रचनाथी मनोहर एवा जड़ासन उपरथी उठे ठे खने उठीने उतावल विनानी, चपलता विनानी, यावत् राजहंसना सरखी गति वहे उथां पोतानुं निवासमंदिर ठे त्यां खावे ठे खने खावीने पोताना मंदिरमां पेठां.

हवे जे दिवसथी आरंजीने अमण जगवान् महाबीर प्रज ते राजकुलने विषे आव्या ते दिवसथी आरंजीने जेओ धनदना खाधीनपणाने धारण करे हे, एवा जे तिर्यम् लोकमां रहेनारा घणा जुंजक देवता-ओ, शकनां वचने करीने, अर्थात् इंद्रे वैश्रमण एटले कुवेरने कह्यं, अने कुवरे तिर्यक्तृंजकोने कह्यं, अने तेथी ते जुंजक देवो, जेनुं आगल खरूप वर्णववामां आवशे, एवा पूर्वे निधानरूपे माटी राखेलां अने तेथीज पुराणां एवां महानिधानो लाव्या. ते नीचे प्रमाणे जाणवां नाश थएला हे मालिको जेओना, नाश थएला हे एकठा करवावाला जेओना एवां निधानो, वली ते निधानो केंवां तो के जे निधानोनां गोत्रीयो तथा घरो नाश पामेलां हे एवां,तथा सर्व प्रकारे आता यएला हे खामीठं जेना, तथा सर्व प्रकारे नाश पाम्या हे एकठा करनारा जेना, तथा सर्व प्रकारे नाश पाम्यां हे गोत्रीयो अने घरो जेनां; हवे ते निधानो कयां कयां स्थानकोमां हे? ते कहे हे गाममां, आकर कहेतां लोखंक आदिकनी छत्पत्तिनां स्थानकमां,नगर एटले ज्यां कर न लेवातो होय तेमां,खेट कहेतां जेनी आसपास धृलिनो कोट हे तेमां, कर्वट एटले कुनगरोमां, ममंब एटले चारे वाजुएथी अर्धा योजन हूर रहेलां

कह्पण

गामोमां, डोण एटसे ज्यां जलवाटे खने स्थलवाटे बन्ने वाटे रस्ताओ होय हे त्यां, पत्तन एटसे जल अथवा स्थल वहेमांथी एक मार्ग ज्यां होय तेमां, आश्रमो कहेतां तीर्थनां स्थानको, अथवा क्रिष-त्रोने रहेवानां स्थानकोमां, संबाह कहेतां सपाट जूमिमां के ज्यां खेद्यतो रक्ता माटे धान्यने राखे हे, ते स्थानकोमां, सन्निवेश कहेतां ज्यां संघ, खश्कर विगेरे छावीने उतरे हें, ते स्थानकोमां, तथा शूंगा-टक कहेतां सिंघ्याटक (सींघोमां) नामे फलना आकारेत्रण खुणावालुं जे स्थानक होय तेमां, त्रिक ए-टले ज्यां त्रण रस्तात्रो आवीने एकठा थाय हे, ते स्थानकमां, चतुष्क कहेतां ज्यां चार रस्तात्रो एकठा थाय है, ते स्थानकमां, चत्वर कहेतां ज्यां श्रनेक रस्ताश्रो एकहा थाय है, ते स्थानकर्मां, चतुर्मुख कहेतां जेनां चार बारणांत्रो होय एवा देवकुल कहेतां देवालयोमां, महापथ कहेतां राजमार्गमां, यामस्थान कहेतां गाममाश्रोनां जे उंचां स्थानको, तेश्रोने विषे, तथा नगरस्थानक कहेतां नगर-नां जंचां स्थानकोमां, तथा प्रामनिर्धमन कहेतां गाममांथी पाणी जवाना मार्गरूप जे खालो तेर्नमां, एवी रीतेज नगरनिर्धमन कहेतां नगरमांथी पाणी जवाना मार्गरूप जे खालो तेर्जमां, आपण एटखे जे डिकानो तेश्रोमां, देवकुल कहेतां यक्त श्रादिकनां जे स्थानको तेश्रोमां,सन्ना कहेतां माणसोने वेस-वानां जे स्थानको तेख्रोमां,प्रपा कहेतां पाणीनां जे पर्वो तेख्रोमां,तथा ख्राराम कहेतां केख ख्रादिक वृ-कोए करीने आहादित थएला तथा स्त्री पुरुषोने कीना करवानां स्थानकरूप एवा बगीचाओमां, तथा उचान कहेतां पुष्प अने फलोए करीने सहित एवां जे बृक्तो, तेओए करीने शोजायुक्त थएलां तथा घणां माणसोने उपजोगमां श्रावी शके एवां उद्यानिकाना स्थानकोमां,तथा वन कहेतां एक जातिनां वृक्तना समूहो वे जेमां एवां स्थानकोमां, तथा वनखंद कहेतां खनेक जातिनां वे हकोना समुदायो जेमां एवां स्थानकोमां,तथा साशान कहेतां ज्यां माखसोनी खासोने छिन्नदाह करवामां छावे हे एवां स्थानकोमां, शून्यागार कहेतां जेमां कोइनी वस्ती न होय एवां शून्य घरोमां, तथा गिरिकंदरा कहेतां पर्वतोनी जे गुफार्ज तेर्जमां, तथा शांतिग्रह कहेतां ज्यां शांतिनां कार्यो थाय हे एवां स्थानकोमां, तथा शैलग्रह

11 96 11

कहेतां पर्वतनां घरोमां, तथा उपस्थानग्रह कहेतां ज्यां आस्थानसजानां मकानो हे एवां स्थानकोमां तथा जवनग्रह कहेतां कुटुंबीर्डने वसवानां जे स्थानको तेर्डमां, एवी रीते ग्रामादिक अने, श्रृंगाटकादिने विषे रहेलां महा निधानो, के जेर्ड त्यां पूर्वे थइ गएला कृपण माणसोए काटेलां हे,ते सघलां निधानोने लहने तिर्थकजुंजक देवो सिद्धार्थ राजाना घरमां संघरता हवा.

हवे जे रात्रिने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर खामी ज्ञात्कुलनी खंदर संहराया, ते रात्रिधी आरंजीने ते ज्ञातकुल हिरएय अने सूवर्णथी वृद्धि पामतुं हवुं. ते हिरएय एटले रूपुं अथवा नहीं घडेलुं सुवर्ण, अने सुवर्ण एटले घमेलुं सोनुं. धन चार प्रकारनुं एक तो गणी शकाय तेवुं, बीजुं धारी शकाय तेवुं, त्रीजं मापी शकाय तेवुं, तथा चोथुं परिछेच थइ शके तेवुं. तेमां फल पुष्पादिक गणी शकाय एवुं, कुंकुम गोल आदिक धारी शकाय तेवुं (जोखी शकाय तेवुं), चोपड तथा खुण विगेरे मापी शकाय तेवुं, तथा रलादिक परिक्वेदी शकाय तेवुं जाणवुं. तथा धान्य चोवीश प्रकारनु जाणवुं. तेनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां. जव, घउं, शाक्षि, बीहि, सघीय, कुद्दव, श्रणुश्रा, कंग्र, रालय, तिल, मग, श्रमद, श्रलसी, हरि-मंथ, तिज्ञा, निष्फाव, सिलिंद, रायमासा, ज्ञू, मसूर,तुवरी, कलथी, धन्नय श्रने कलाया, ए चोवीश प्रकारनं धान्य जाणवुं. तथा राज्यनां सात अंगो जाणवां, ते नीचे प्रमाणे. एक तो राष्ट्र कहेतां देश, बीजुं बल कहेतां चतुरंगी सेना, त्रीजुं वाइन कहेतां खचर खादिक वाहनो, चोथुं कोश कहेतां त्रंगार, पांचमुं कोष्ठागार कहेतां धान्य जरी राखवाना कोठारो, ठठुं पुर एटखे नगर, तथा सातमुं श्रंतःपुर कहेतां राणीजेने रहेवानुं स्थानक अर्थात् जनानखानुं; तथा जानपद कहेतां देशवासी लोकथी तथा यशोवाद एटसे कीर्ति, ए सघलाथी ते ज्ञातकुल वृद्धि पामतुं हवुं. तथा विपुल एटसे विस्तारवासं धन एटले गायो श्रादिक,तथा कनक एटले घमेलुं श्रथवा नहीं घडेलुं एवं वन्ने प्रकारनुं सुवर्ण, तथा रत एटले कर्केतन आदिक तथा मणि एटले चंडकांत आदिक तथा मौक्तिक एटले मोती के जे प्रसिद्ध हे, तथा शंख कहेतां दक्षिणावर्तादिक शंखो तथा शिखा एटखे राजपद्दादिक तथा प्रवास एटखे विद्वमो,

कख्प०

॥ अए ॥

तथा रक्तरत्न कहेतां.पद्मराग आदिक अर्थात् माणिक आदिक, अहीं आदि " एवा राब्दशी वस्न, कंबल विगेरेने महण करवां, तथा सत् एटसे विद्यमान एवं, पण इंडजालनी पेठे असत् नहीं एवं जे सारस्वापतेय कहेतां प्रधान अर्थात् उत्तम जातिनुं जे डव्य, तेणे करीने, तथा प्रीति कहेतां मन संबंधीनी जे तुष्टि, तथा सत्कार कहेतां वस्र आदिकथी सजनोए करेली जिक्त, ते सधलाउंना समुदाये करीने ते झातकुल अत्यंत वृद्धि पामतुं हवुं.

हवे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजनां मातापिताने हवे पढ़ी कहेवारो एवा प्रकारनो पोताना सं-बंधी चिंतवेलो, प्रार्थेलो, मनमां रहेलो श्रध्यवसाय उपजतो हवो ते श्रध्यवसाय केवो? ते हवे कहे हैं ज्यारश्री श्रमारो श्रा पुत्र कुक्तिने विषे गर्जपणाए करीने उत्पन्न श्रएलो हे, त्यारश्री मांमीने श्रमे रूपाश्री वृद्धि पामीए हीए, सुवर्णश्री वृद्धि पामीए हीए, एवी रीते उपर कहेलां हेक प्रीतिसत्कार सुधीनां विशेषणोए करीने श्रत्यंत वृद्धि पामीए हीए, तेश्री करीने उयारे श्रमारा श्रा वालकनो जनम श्रदो, त्यारे श्रमो पण श्रा धनादिकनी वृद्धिने श्रतुरूप एवं श्रा बालकनुं गुणोए करीने निष्पन्न एवं नाम पामशुं. ते नाम शुं? ते हवे कहे हे. "वर्धमान इति" एटले "वर्धमान" एवं श्रमो तेमनुं नाम पामशुं.

ते वार पठी श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामीए गर्जमांज रहीने विचार्य के मारा हलनचलनथी।
माताने कष्ट मा थार्ठ, एवी रीते मातानी अनुकंपा माटे, अर्थात् मातानी जिक्त माटे, तथा बीजाए
पण श्रावी रीते मातानी जिक्त करवी, एवं देखामवा माटे, पोते निश्चल, निष्पंद श्रर्थात् कंइ पण हाहया
चाहया विना, श्रने तेथी करीनेज निष्कंप कहेतां कंप विना,तथा श्रंगोना गोपववाथी जरा लीन थएला,
तथा श्रंगोपांगना गोपववाथी प्रकर्षे करीने लीन थएला, श्रने तेथी करीनेज गुप्त रहेला एवा श्री
वीर प्रज होता हवा. तेना पर कविए उत्प्रेह्मा करी के, शुं एकांतमां माताना गर्जमां रहीने प्रज
मोह राजाने जीतवा माटे विचार करे हे? श्रथवा परब्रह्म माटे कंइ श्रगोचर एवा ध्यानने रचे हे?

सुबो∘

॥ अए ॥

अथवा ग्रुं कल्याण रसने साधे हे ? अथवा कामनो नाश करवा माटे पोताना रूपने तेणे लोपी नारुयुं हे ग्रुं ? एवा श्रीवीर प्रज्ञ तमारी लक्कीने माटे थार्ड.

एवी रीते प्रजुना निश्चल रहेवा बाद ते त्रिशला कत्रियाणीने एवी रीतनो श्रध्यवसाय जरपन्न श्रयो; ते श्रध्यवसाय केवी रीतनो ? ते हवे कहे हे. ह्युं श्रा मारो गर्न कोइ देवादिके हरी लीधो हे ? श्रथवा ह्युं मारो गर्न मृत्यु पाम्यो ? श्रथवा ह्युं ते मारो गर्न च्युत थएलो हे ? श्रर्थात् ग-र्जना स्वजावणी द्युं परिज्रष्ट थएलो हे ? श्रथवा द्युं ते मारो गर्ज गसी गयो हे ? श्रर्थात् इवरूप थइने हुं खरी गयो हे ? के जेथी पहेखां तो मारो गर्ज हालतो हतो अने कंपायमान थतो हतो, अने हवे तो विलकुल हालतो नथी अने कंपतो नथी एवा विचारथी उपहत कहेतां कलुपी जूत यएल है मननो संकट्प जेणीनो एवी, तथा एवी रीते गर्जहरणादिकना विकट्पथी उत्पन्न यएसी जे आर्ति कहेतां पीमा, तेथी थएलो जे शोक, तेरूपी जे समुद्र, तेमां पमी, अर्थात् बूमी; अने ते-थीज करतल कहेतां हथेलीमां स्थापन करेल हे मुख जैगीए एवी, तथा आर्तध्यानने प्राप्त थएली तथा जूमि तरफ राखेली हे दृष्टि जेणीए एवी त्रिशला क्तियाणी मनमां विचारवा लागी के आवी रीते मारा गर्जने जो कंइ नुकशानी यह होय तो खरेखर हुं पुण्यरहित जीवोनी अवधिरूप प्रख्यात थएसी हुं. अथवा चिंतामणिरत जाग्यहीन माणसने घेर समृद्धि पामी शकतुं नथी अर्थात् रही शकतुं नथीं; केमके रत्ननो पंडार कंइ दरिद्रीना घरनी सोवत करतो नथी वली पृथ्वीनां अजाग्यना वशयी मारवाम देशमां कल्पवृक्त जगतुं नथी, तेम पुण्यरहित एवा तृषाकुल माण्सने पण अमृतनी सामग्री मलती नथी; अरे! दैव प्रत्ये पण धिकार हे! हमेशां वक एवा ते दैवे अरे! आ द्युं कर्युं ? तेणे मारुं मनोरथरूपी वृक्त मूलमांथी उखेमी नाख्युं; कलंकरहित खोचनयुगल मने आपीने लइ लीधुं; वली आ पापी दैवे निधिरत आपीने पाहुँ खेंची खीधुं; वली आ पापी दैवे मने मेरु पर्वतना शिखर पर चमावीने पामी नाखी; तथा ते निर्वज्जे जोजननुं जाजन पीर-

Jain Education International

कहप्□

॥ ५० ॥

सीने खेंची लीधुं. श्रयवा हे विधात्रि, में नवांतर श्रयवा श्रा नवसां पण कंइ तारो शुं श्रपराध कर्यों हे? के जेथी स्थाम करतां तुं उचित स्रतुचितनो विचारज करती नथी! हवे हुं हुं करुं!! क्यां जर्ज !!! अथवा कोनी पासे कहुं !! आ अधम छुदैवे मने वाली तथा खाधी तथा मूर्जा पमानी. हवे मारे आ राजनी शी जरूर हे? अथवा विषयजन्य एवां आ कृत्रिम सुखोनी पण मारे हवे शी जरुर हे ? अथवा इकूलनी शय्यामां शयनथी जत्पन्न थतुं हे सुख जेमां एवा आ महे-लनी पण मारे शी जरुर हे ? हाथी, दृषत आदिक स्वप्नधी सूचित थएला, उचित, पवित्र तथा त्रण जगतने पूजनिक, त्रण जुवनना माणसो प्रत्ये श्रतुद्ध एवा पुत्ररूपी रत्न विना हवे मारे क-शानी शी जरुर हे ? आ असार संसारने धिकार हे, तथा डु:खबी प्राप्त धता एवा विषयसुखना क्केशोने पण धिकार हे, तेम मधथी खेपयुक्त थएखी खड़नी धाराने चाटवा सरखा खामोने पण धिकार है. अथवा क्षिओए धर्मशास्त्रोमां कहें खुं एवं कंइक डुष्कर्म में पूर्व जवमां करें खुं हे. (ते इष्कर्म कयुं ? तो के पशु पंखी अथवा माणसोनां बालकोनो में तेमनां मातपिताथी वियोग पकाव्यो लागे हैं) अथवा अधम बुद्धिवाली एवी जे हुं, तेणीए ह्यं नानां वाहरमां ओने तेमनी माता ओथी वियोग कराव्यों वे ? वली तेस्रोने इधनों में स्रंतराय कर्यों वे, स्रयवा कराव्यों वे, स्रयवा सुंबचांस्रों स-हित में उंदरनां दरो पाणीएथी पूर्यां ठे? अथवा शुं में इंना अने बचांओ सहित पद्मीओना माला नीचे जमीन पर पानी नारुया है? श्रयवा कोयल, पोपट तथा कुकना श्रादिकनां वचांश्रोनो में शुं वियोग कराव्यो वे ? अथवा में शुं वाखहत्या करी वे ? अथवा शोकोनां वाखको पर में शुं फुष्ट विचारो चिंतव्या है ? अथवा में कंइ कामण आदिक कर्या है ? अथवा में कोइना गर्नोंनुं स्तंत्रन, नाश अथवा पानवा प्रमुख द्युं कर्युं हे? अथवा ते संबंधी कंइ में मंत्र अथवा औषधो कर्यां हे ? अथवा जवांतरमां में द्युं घणीवार शीलखंगन कर्युं हे? कारण के ते विना जीवोने आवुं छःख होय नहीं. एवी रीते चिंतातुर थएली, तथा तेथी करमाइ गएला कमल सरखुं ने मुख जेणीनुं एवी ते

सुबोण

॥ ५० ॥

त्रिशला राणीने जोवाथी सखीउंए तेनुं कारण तेणीने पूज्युं त्यारे ते त्रिशला क्तियाणी आंखोमां अश्रु लावीने, निःश्वास सहित वचने करीने कहेवा लागी के, हुं मंदनाग्यवाली हवे शुं कहुं ? मारं तो जीवित पण चाद्युं गयुं हे. त्यारे सखी छोए कह्युं के हे सिख, बीज़ं सघ हुं छमंगल शांत थार्र ? पण तारा गर्नने तो कुशब के के नहीं ? ते बात है चतुर सिख, तुं सत्य कहे ? त्यारे तेणीए कह्युं के हे सखीर्ज! ज्यारे मारा गर्जनेज कुशल होय लारे तो बीजुं मारे शुं श्रकुशल हे ? इलादिक कहीने मूर्जा खाइने ते पृथ्वी पर पड़ी. पढ़ी सखीउंए ज्ञीतल पवन आदिकथी घणा उपचारो क-र्याथी तेलीने चैतन्य आद्या बाद पाठी ते रमवा खागी. अपार पाणीवाखा, मोटा तथा रलोनां निधानरूप एवा समुद्रमां पढेलो विद्रवालो घमो ज्यारे जराइ शकतो नथी, लारे तेमां समुद्रनो शो दोष हे ? वली वसंत क्रुमां ज्यारे सघली वनस्पति प्रकुल्लित थाय हे, खने ते वखते ज्यारे कंथेरने (केरमानां वृक्तने)पत्रो ब्यावतां नथी, तेमां वसंत क्तुनो शो दोष हे ? उंचुं ब्यने सीधुं एवं वृक्त घणां एवां फलोना जारे करीने ज्यारे नमेलुं हे, अने ते उपरनां फलने ज्यारे कुबमो माणस मेलवी शकतो नथी, त्यारे ते वृक्तनो शो दोष हे ? माटे हे प्रजु ! ज्यारे हुं मारा इहितने मेलवी शकती नथी तेमां तमारो झुं दोष हे ? तेमां मारां कर्मनोज दोष हे, केमके धुवम ज्यारे दिवसे जोइ शकतो नथी, त्यारे तेमां सूर्यनो शो दोष हे? माटे इवे तो मारे मरणनुंज शरण क्षेतुं, केमके फोकट जीववावडे करीने हुं ? एवी रीते तेणीना विलापने सांजलीने सघली सखीड आ-दिक परिवार पण रमवा लाग्यो. अरे !! आ द्युं थइ गयुं ? कारण विना दैव वैरीरूप थयो छे; अरे ! कुलदेवीर्ज ! तमो क्यां गइर्ज ? श्राम उदासीन शइने केम वेठी हो ? हवे एवी रीते विव्र श्रावी पमते उते विचक्तण एवी कुलनी वृद्ध स्त्री उंशांति तथा मंत्रना उपचारों तथा मानता आलमी (बाधा) श्रादिक करवा लागी, जोशीउने बोलावीने पूछवा लागी. नाटक श्रादिकने श्रट-काववा लागी. तथा श्रत्यंत उंचा सादनां वचनोने निवारेवा लागी. उत्तम बुद्धिवालो एवो राजा ॥ ५४ ॥

पण लोको सहित चिंतातुर थयो, तथा सघला मंत्री पण हवे शुं करवुं ? एवी रीते अत्यंत विमृह थया.

हवे ते श्रवसरने विषे सिद्धार्थ राजानुं जवन केवुं थयुं हतुं ? ते सूत्रकार पोते वर्णवे हे. ते सिद्धार्थ राजानुं जवन, मृदंग कहेतां मर्दल, तंत्री एटले वीणा, ताल एटले हाथनी ताली है, तथा नाटकनां पात्रो तेर्नुं जे मनौक्षपणुं ते निवृत्त थएखुं वे जेमां एवं थयुं, अने तेथी करीने विमनस्क कहेतां चपलचित्तवालुं थयुं. एवी रीतनो वृत्तांत ते श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजु गर्जमां रह्या थका, स्रवधिज्ञानयी जोइने विचारवा लाग्या के हवे शुं करवुं ? स्रथवा कोने क-हेवुं ? मोहनी गति आवी रीतनीज हे. इष्ट धातुनी पेहे अमारों जे गुण ते जलटो दोषनी प्रष्टि! वास्ते थयो. में तो मारी माताना सुख माटे कर्युं, ते जबहुं तेणीना खेद माटे थयुं. माटे आ जावी एवो जे कलिकाल तेने सूचववावालुं आ लक्षण है माटे जेम नालीयेरना पाणीमां नाखेलो क-पूर मृत्यु माटे थाय हे, तेम आ पंचम आरामां गुण पण दोषने करनारो थहो. एवी रीते अमण जगवंत श्री महावीर प्रञु माताने जलक थएला एवी रीतना पोताना संबंधी इन्नित, प्रार्थित श्रने मनमां रहेला संकल्पने अवधिकानथी जाणीने एक देश कहेतां आंगली आदिकथी कंपता हवा. ते जाणीने ते त्रिशला इत्रियाणी हर्षित थइ यकी, तथा संतुष्ट थइ यकी कहेवा लागी. शुं कहेवा लागी ? ते हवे कहे हे. निश्चे मारो गर्ज हरायेलो नथी, मृत्यु पामेलो नथी, चवेलो नथी, अने गली गयो पण नथी. ए मारो गर्ज पूर्वे इालतो नहोतो; परंतु हमणां हाले हे एम कहीने हर्ष पामेसी, प्रसन्न ययेसी, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवासी त्रिशसा क्तियाणी आ प्रमाणे विसा-स करवा लागी. एवी रीते ते त्रिशला कत्रियाणी केवी रीते हर्षित थइ ? तेनुं हवे वर्णन करे हे. जलसाय-मान थयें वां वे नयन युगल जेणीनां, तथा स्मेर थयें वा वे कपोल जेणीना, तथा प्रफुल्लित थयेल वे मु-खरूपी कमल जेणीनं, तथा जाणेल हे गर्जने कुशलपणुं जेणीए तथा रोमांचित थयेल हे कंचुक जेणीनो

सुबोव

॥ ५१ ।

एवी यह यकी मधुर वाणीयी कहेवा लागी के, मारा गर्जने कह्याण हे. अरे! धिकार हे! के में अति मोहयुक्त मितपणाए करीने कुविकह्यों चिंतव्या; हजु मारां जाग्यों विद्यमान हे, तेम हुं त्रणे जुन्वोमां माननीय हुं, तथा धन्य हुं. मारुं जीवित वलाणवालायक हे, तथा मारों जन्म कृतार्थय-णाने प्राप्त थयों हे. श्री जिनेश्वर प्रजु मारा प्रत्ये प्रसादयुक्त थयेला हे, तथा गोत्रदेवीए पण मारा मोइयुक्त मतिपणाए करीने कुविकल्पो चिंतव्याः हजु मारां जाग्यो विद्यमान हे, तेम हूं त्रणे ज-वनोमां माननीय हुं, तथा धन्य हुं. मारुं जीवित वखाणवाखायक हे, तथा मारो जन्म कृतार्थप-णाने प्राप्त थयो है. श्री जिनेश्वर प्रज मारा प्रत्ये प्रसादयुक्त थयेला है, तथा गोत्रदेवीए पण मारा पर कृपा करी है, छने हेक जन्म पर्यंत जे में जिनधर्मरूपी कल्पवृक्तनी आराधना करी, ते आज मारी सफल थइ हे. एवी रीते अरयंत हर्षयुक्त चित्तवाली त्रिशला देवीने जोइने वृद्ध स्त्री रीनां मुखकमलोमांथी " जय जय नंदा "इलादि छाशीषना ध्वनिर्ज नीकलवा लाग्या बली कुलांगनाजं हर्षपूर्वक मनोहर एवां धवलो गावा लागी. तथा ध्वज, पताकार्ड उडवा लागी, मोतीर्डना सा-थीआं पूरावा लाग्या, तथा ते वखते सघ हुं राजकुल आनंदमय थइ रह्यं. तथा वाजित्र, गीत छने नाटकोए करीने समस्त राजकुल देवलोक सरखी शोजावालुं ययुं, तथा कोमो गमे धननां वधामणां जेने सिद्धार्थ राजाए यहण कर्यां, तथा कोनो गमे धन आप्युं अने एवी रीते सिद्धार्थ राजा अत्यंत हर्षयुक्त थयो थको कल्पवृक्तनी पेठेशोजवा लाग्यो-

ते वार पठी श्रमण जगवंत श्रीमहावीर प्रज गर्जमां रह्या घकाज पक्षि श्रिधक व मास, एटले सामा व महिना गये वते, श्रावी रीतना श्रिज्ञ बहुण करता ह्वा ते कयो श्रिज्ञ है ते हवे कहे वे खरे स्वर मारां मातापिता ज्यांसुधी जीवे, त्यांसुधी मारे लोच करी घरषी नीकलीने श्रणगारपणुं एटले दीका लेवी नहीं एवी रीतना श्रिज्ञ होने तेमणे प्रहण कर्यों हुं उदरमां हुं त्यारे पण मारी मातानो मारा पर ज्यारे श्रावो स्नेह वे, त्यारे ज्यारे मारो जन्म थरों, त्यारे तो ते स्नेह केवो थरों ? एवी रीतनी बुद्धि लावीने तेमणे एवो श्रिज्ञ प्रहण कर्यों, श्राने वली बीजार्जने पण माताने विषे बहु मान देलाम्बा माटे तेमणे तेम कर्युं, केमके कह्यं वे के पशुर्ज ज्यांसुधी माता धवरावे वे, त्यांसुधी स्नेह राखे वे, श्रिधम माणसो ज्यांसुधी स्री मसे वे, त्यांसुधी माता पर स्नेह राखे वे,

कहपण

॥ यश ॥

मध्यम माणसो ज्यांसुधी माता घरनुं कामकाज करे हे, त्यांसुधी स्नेह राखे हे, तथा उत्तम मा-

ते वार पढ़ी ते त्रिशला कतियाणीए स्नान कर्युं, त्यारबाद पूजा करी तथा कैतिक मं-गल कर्या, तथा सर्व प्रकारनां आजूषणोथी ते जूषित यह; पढ़ी ते गर्नने ते त्रिशला इत्रियाणी नहीं अति गंमां, नहीं अति उष्ण, नहीं अति तिखां, नहीं अति कडवां, नहीं अति कषायेलां, नहीं अति खाटां, नहीं अति मधुरां, नहीं अति चीकणां, नहीं अति खुखां, नहीं अति आई, नहीं अति सुकेलां तेमज सर्व क्तुने विषे सुलकारी एवी रीतनां जोजन, आहादन, गंध तथा पुष्पमालाए करीने पोषवा लागी. तेमां जोजन तो प्रसिद्ध हे, आहादन एटले वस्त्र, गंध एटले पटवासादिक, माह्य एटसे पुष्पमालार्छ, तेर्डए करीने गर्जने पोषवा लागी स्रति शीतल एवा आहारादिक गर्जने हितकारी होता नथी; केमके तेर्नमांथी केटलाक वायु करनारा होय हे, केट-लाक पित्त करनारा होय हे अने केटलाक श्लेष्म करनारा होय हे, ते गर्नने अहितकारी होय है; कारण के वाग्जह नामना वैद्यक यंथमां पण कहां है के वायुवाला पदार्थी खावाथी गर्ज कुबमो, श्रांधलो, जम तथा वामनरूप थाय हे, पित्तवाला पदार्थो जक्तण करवाथी खलति, पीलो. तथा चित्रीवालो थाय हे, तथा कफवाला पदार्थों जक्षण करवाथी पांकुरोगवालो थाय हे, श्रित खारं जोजन नेत्रोने नाश करनारं हे, अति हंडुं पवनने कोपाववावाद्धं हे, अति उष्ण बलने हरे हे, तथा अति काम सेववाथी जीवितने हरे हे. वसी पण मैथुन, यान, वाहन, मार्गमां जबुं, स्खलना पामवी, पनी जबुं, पीना थवी, श्रत्यंत दोमबुं, श्रथमाबुं, विषम जगो पर सुवापणुं, विषम जगो पर वेसवुं ते, उपवास करवा ते, वेग, विघात, श्रति खुखां, श्रति तीखां, तथा श्रति कमवां जोजन, स्रति राग, स्रति शोक, स्रति खारी वस्तुर्वनुं सेवन, स्रतिसार, वमन, जुद्धा-ब, हींचका खावा, तथा अजीर्ष आदिकथी गर्न तेना वंधनथी मुक्त थाय हे. माटे एवी रीते

सुबो∙

॥ ५४॥

श्रवि शीतल श्रादिक श्राहारथी गर्जने पोषवो नहीं. वली केवां जोजन, श्राहादन, गंध तथा मा-ह्यथी गर्जने पोषवो ते कहे हे. सघक्षी ऋतुर्डमां जोजन करातां अने जे सुखना हेतुर्ड होय हे, अने गुणोने करवावालां होय हे तेवां तेवुं हवे वर्णन करे हे. वर्षा क्रतुमां लवण खोवुं ते अमृत तुख है, शरद क्रुमां पाणी अमृत सरखुं है, हैमंत क्रुमां गायनुं दूध अमृत तुख्य है, शिशिर क्र-तुमां खादुं जोजन अमृत तुख हे, वसंतमां घीनुं जोजन अमृत सरखुं हे, तथा हेल्ली क्तुमां गो-लनुं जोजन अमृत सरखुं हे. इवे ते त्रिशला क्तियाणी केवी हे ? ते कहे हे. रोग एटले ज्वर आदिक, शोक एटसे इष्टना वियोग आदिकथी उत्पन्न चती दिलगिरी, मोह एटसे मूर्जा, जय एटले बीक, परिश्रम एटले कसरत इलादिक इरगयां हे जेणीनां एवी, श्रर्थात् रोग श्रादिकथी रहित थएली, कारण के ते सघलां गर्जने छहित करनारां हे सुश्रुत नामना वैद्यक ग्रंथमां पण कह्युं हे के गर्जवती स्त्री जो दिवसे उंघे तो गर्ज पण उंघणसी थाय, श्रंजन करवाथी गर्ज ड्यां-थिलो थाय, रोवाथी विकारवाली व्यांखोवालो याय, स्नान श्रने लेपनथी छःशील याय, तैलना मर्दनथी कुष्टरोगवालो याय, नख कातरवाथी खराब नखवालो याय, दोमवाथी चंचल इसवाषी काला दांतवालो, काला होठवालो, काला तालवावालो, तथा काली जीजवालो घाय, बहु बोखवाथी बकबकीओ याय, छति शब्दो सांजलवाथी बहेरो याय, अवलेखनथी खलति याय, वींजणो श्रादिक हलाववाथी (पवन क्षेवाथी) जन्मत्त थाय, एवी रीते कुलनी वृद्धलीश्रो तेणीने शीखामण आपती इवी. वली ते स्त्री उं तेने कहेती के हे त्रिशला कत्रियाणी, तुं धीरे धीरे चाल, धीरे धीरे बोल, क्रोधना कमने तजी दे, पथ्य वस्तु श्रोनुं जोजन कर, नामी पोची बांध, ख-🖔 मलम हस नहीं, आकाशमां (खुल्ली जगामां) बेस नहीं, पथारीमां सुती रहे, अतिशय नीचे अथवा बहार जा नहीं; एवी रीते गर्जना सबबधी मंद थयेखी त्रिशला कत्रियाणीने स-खीर्ज कहेती हवी. वली ते त्रिशला कत्रियाणी केवी हती ? ते कहे हे. ते गर्जने जे हित लागे

कृष्टप

॥ ५३ ॥

एवुं, श्रने ते पण परिमाणवाबुं, श्रोबुं नहीं, तेम वधारे पण नहीं, पथ्य कहेतां श्रारोग्यताने क-रनारुं, श्रने तेथीज गर्जने पुष्टि करे एवं, श्रने ते पण जिनत एवा स्थानके, पण श्राकाश श्रादिक जागमां नहीं, श्रने ते पण समये एटले जोजननो समय होते उते, श्राहार करती हवी तथा विविक्त एटले दोषोए करीने रहित तथा मुड एटले कोमल एवां जे शयन श्रने श्रास्ता, तेश्रोए करीने, तथा प्रतिरिक्त एटले श्रन्य माणसोनी श्रपेकाए माणसो विनानी, श्रने तथी करीनेज सुलने करनारी, श्रने तथी करीने मनने श्रनुकूल लागे एवी एटले मनने हर्ष उपजावे एवी, एवी रीतना जे विहारनी पृथ्वी, ते पर विहार करती हवी.

हवे ते त्रिशला क्तियाणी केवी रीते गर्जने धारण करती हवी ? ते कहे है. उत्तम प्रका-रना गर्जना प्रजावधी उत्पन्न थयेला हे दोइद कहेतां मनोरयो जेणीने एवी, ते मनमां एम जाएती हवी के हुं अमारी पड़ो एटखें सर्वे जीवोनी हिंसा बंध करवानो पटह वग-माबुं, दान दछं, गुरुत्रोने सारी रीते पूजुं, तीर्थंकरोनी पूजा रचाबुं, संघने विषे घणे प्रकारे वात्सख्यता करुं, सिंहासन पर बेसुं, उत्तम बत्र माथे धारण करावुं, उत्तम सफेद चामरो मारी था-सपास वींकावुं, सघलात्रो पर खाङ्गा चलावुं तथा राजाख्यो खावीने मारा पादपीठने नमे, एवी हुं थाउं. वली हाथीना मस्तक पर बेसीने पताका उनते उते तथा वाजित्रोना नादोथी दिशायोना जागो पूराते बते, तथा लोको जय जय शब्दोधी स्तुति करते बते, हर्षथी हुं जवाननी पाप-रहित कीना करुं वसीते त्रिशला कत्रियाणी केवी ? तो के सिद्धार्थ राजाए सर्वे मनोरथो संपूर्ण 🥻 करवाथी संपूर्ण थयेल हे दोहद जेणीनो एवी, तथा तथी करीने सन्मानयुक्त करेल हे दोहद 💃 जेणीए एवी; श्रने तेथी करीनेज नथी करेख कोइ पण दोहदनी श्रवगणना जेणीए एवी; वसी ते केवी ? तो के संपूर्ण रीते वांबित थयेल वे दोहद जेणीनो एवी, तथा सर्वे प्रकारे संपूर्ण थयेल हैं वे दोहद जेणीनो एवी, एवी रीतनी थइ थकी, ते गर्जने धारण करती हवी. तथा सुखेथी एटखे

सुबो०

ા પર ॥

जेम गर्जने बाधा न आवे एवी रीतथी स्तंज आदिकनुं अवलंबन क्षेती हवी, तथा निद्रा करती हवी, उत्ती यती हवी, आसन पर बेसती हवी, तथा निदा विना शय्या पर सुइने आलोटती हवी, कुट्टिमतल कहेतां जमीन पर विहार करती हवी, अने एवी रीते सुखे सुखे गर्जने धारण करती हवी. हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर खामी गर्जमां श्राव्या बाद, जे या उनालानो पहेलो मास, बीजुं पखवामीयुं ते चैत्र मासनो ग्रुक्क पक्त, ते चैत्र मासना शुक्क पक्तनी तेरसने दिवसे नव महीना संपूर्ण होते बते, तथा अरधी आवमी रात्रि जाते उते, एटक्षे नव महीना धने सामासात दिवसो जाते उते (पुत्रने जन्म आप्यो). एवी रीते सघला जिनेश्वरोतुं गर्जवासनी स्थितितुं मान कंइ तुख्य नथी. रूपनदेव प्रज्ञ नव मास स्थने चार दिवस गर्जमां रह्या, श्रजितनाथ प्रजु श्राठ मास श्रने पचीश दिवस गर्जमां रह्या, संजवनाथ प्रजु नव मास खने व दिवस गर्जमां रह्या, खितनंदन स्वामी खाव मास ने खठ्यावीश दिवस गर्जमां रह्या, सुमतिनाथ प्रञ्जनव मास खने छ दिवस गर्जमां रह्या, पद्मप्रज खामी नव मास खने छ दिवस गर्जमां रह्या, सुपार्श्वनाथ प्रज्ञ नव मास अने उंगणीश दिवस गर्जमां रह्या, चंड्रप्रज प्रज्ञ नव मास ने सात दिवस गर्जमां रह्या, सुविधिनाथ प्रजु आठ महीना ने ठवीश दिवस गर्जमां रह्या, शीतस-नाथ प्रजुनव मास श्रने व दिवस गर्जमां रह्या, श्रेयांसनाथ प्रजुनव मास ने व दिवस गर्जमां रह्या, वासुपूज्य खामी खाठ महीना ने वीश दिवस गर्जमां रह्या,विमखनाथ प्रज्ज खाठ महीना ने एकवीश दिवस गर्जमां रह्या, अनंतनाथ प्रजु नव मास अने व दिवस गर्जमां रह्या, धर्मनाथ प्रजु आव म-हीना ने बबीश दिवस गर्जमां रह्या, शांतिनाथ प्रजु नव महीना ने ब दिवस गर्जमां रह्या, कुंथुनाथ प्रज नव महीना ने पांच दिवस गर्जमां रह्या, अरनाथ प्रज नव महीना ने आठ दिवस गर्जमां रह्या, मिल्लनाथ प्रजु नव महीना ने सात दिवस गर्जमां रह्या, मुनिसुत्रत स्वामी नव महीना ने

आठ दिवस गर्जमां रह्या, नमिनाथ प्रज्ञ नव महीना ने आठ दिवस गर्जमां रह्या, नेमनाथ

कहपण

ા પશ

प्रञ्ज नव महीना ने आठ दिवस गर्जमां रह्या, पार्श्वनाथ प्रज्ज नव महीना ने ठ दिवस गर्जमां रह्या, तथा महावीर प्रज्ज नव महीना ने सामा सात दिवस गर्जमां रह्या, एवी रीते श्री सोम-तिलक सूरीश्वरे करेल सप्ततिशत स्थानक नामे प्रथमां तेनुं यंत्र कहेलुं हे.

ते वखते सघला यहो उच्च स्थानक प्रत्ये ष्ठावते ठते, एटखे मेषादि राशिमां रहेला सूर्यादिक उंचा जाणवा, तेमां पण दशादिक छंशो सुधी परम उच्च जाणवा. तेउं फल सुखी, जोगी, धनवान्, खामी, मंमलाधिप,राजा,चक्री एम छानुक्रमे उच्च यहोनुं फल जाणवुं तेउंमां त्रण उंचा होय तो राजा थाय,पांच उंचा होय तो छार्धचक्री थाय, ठ उंचा होय तो चक्रवर्ती थाय तथा सात उंचा होय तो तीर्थंकर थाय.

एवी रीते उत्तम चंद्रनो योग आवते उते, दिशार्छ पण सौम्य कहेतां रजनी वृष्टि आदिकथी रहित होते उते, वली ते दिशार्छ केवी ? तो के अंधकारे करीने रहित होते उते, केमके प्रजुना जनम वलते सर्व जगोए उद्योतज यह रहे हे; तथा दिग्दाह आदिकना अजावधी शुद्ध होते उते, तथा कागमा, धुवम, छुर्गा आदिकनां पण जयकारक शुकन होते उते, तथा दिक्तणावर्त्तवालो अने अनुकूल कहेतां सुगंधी अने शीतल, तथा सुलने देनारो, तथा मंद होवाधी एथ्वीने स्पर्श करतो, केमके प्रचंक वायु तो उपरना जागमां फेलाय हे एवी रीतनो वायु वाते उते, तथा जे वखते सिचला प्रकारनां जमीन पर धान्य उगेलां हे, एवो काल होते उते, तथा सुकाल होवाथी खुरी थिया अने वसंतोत्सवादिकथी कीनामां पहेला एवा देशना लोको होते उते, अपर रात्रिना सम्य वखते चंद्रनो उत्तराफाल्युनी नक्तत्र साथे योग आवते उते जरा पण बाधारहित थयेलां ते त्रिशला क्वियाणी आरोग्य कहेतां पीकारहित एवा पुत्रने जन्म आपतां हवां.

एवी रीते महोपाध्याय श्रीकीर्त्तिविजयगणिना शिष्योपाध्याय श्रीविनयविजयगणिए रचेली श्री कब्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती जाषांतरमां चोथो क्रण समाप्त थयो. श्रीरस्तु. सुबो०

॥ ५४ ॥



पा. ५३

॥ श्रीजिनाय नमः॥

॥ पंचमं व्याख्यानं प्रारज्यते ॥

जे रात्रिए श्रमण जगवान् महावीर प्रजुनो जन्म थयो, ते रात्रि केवी हती? तेनुं हवे वर्णन करे हे इंद्र श्रादिक घणा देवोए करीने, तथा प्रजुना जन्मोत्सव माटे ब्यावती एवी घणी दिक्कुमारिकार्ड तथा देवांगनार्डए करीने, तथा खर्गथी पृथ्वी पर श्रावता श्रने मेरुना शिखर पर जवा माटे उंचे चकता एवा देवोए करीने जाणे श्रत्यंत श्राकुल थह होय तेम हर्षने लीधे श्रद्धाट हासादिकथी श्रस्पष्ट उच्चार वर्षे कोलाहल करती होय तेवी थह; श्रने श्रा सूत्रे करीने विस्तार सिहत प्रजुनो जन्मोत्सव देवोए कर्यों, एम सूचव्युं. ते वखते श्रचेतन एवी दिशार्ड पण जाणे हर्षितज थयेली होय तेम श्रानंद पामवा लागी, तथा ते वखते सुखेषी थतो हे स्पर्श जेउनो, एवा वायुर्ड पण मंद मंद वावा लाग्या. त्रणे जगतमां उच्चोत थह रह्यों, श्राकाशमां इंद्रजिनाद वागवा लाग्यों, नारकीर्डमां रहेला जीवो पण खुशी थवा लाग्या, तथा पृथ्वी पण जन्नासने पामी.

हवे त्यां पहेलां तीर्थंकर प्रजना जन्मना स्तिकर्भने विषे उपन्न दिक्कुमारिकार्ड आवीने पो-तानो शाश्वतो एवो आचार करवा लागी ते आचार नीचे प्रमाणे जाणवो.

अधोलोकमां रहेनारी आठ दिक्कुमारिकार्ड पोतानां आसनो कंपवाथी, अवधिकाने करीने अरिहंत प्रजुनो जन्म थयेलो जाणीने तेर्ड सूतिकायहने विषे आवी. तेर्डनां नामो जोगंकरा, जोग-वती, सुजोगा, जोगमालिनी, सुवत्सा, वत्सिमित्रा, पुष्पमाला तथा अनिदिता. तेर्ड प्रजुने तथा ते-मिनी माताने नमीने ईशानिदशामां सूतिकायहने करती हवी, तथा त्यांथी एक योजन सुधीनी पृथ्वीने संवर्त वायुथी शोधती हवी. वली मेघंकरा,मेघवती, सुमेघा, मेघमालिनी, तोयधारा, विचित्रा, वारिषेणा अने बलाहका नामनी आठ दिक्कुमारिकार्ड ऊर्ध्व लोकथी आवीने प्रजुने माता स-

क्षस्प

ા પથા

हित नमीने हर्षपूर्वक गंधोदक तथा पुष्पोना समूहनी दृष्टि करती हवी तथा नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा, नंदिदर्धना, विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता नामनी आठ दिक्कुमारिकार्ड पूर्व रुचकथी आवीने अगामीमां जोवा माटे द्र्पणने धारण करती हवी. तथा समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, सङ्गीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता तथा वसुंधरा नामनी आठ दिक्कुमारिकार्जं द-क्षणि रचकथी आवीने स्नानने माटे जरेला कलशाउने हाथमां धारण करीने गीतगान करवा लागी. तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी, पद्मावती, एकनासा, नविमका, जडा श्रने शीता नामनी श्राठ दिक्कुमारिकार्ड पश्चिम रुचकथी श्रावीने पवन माटे हाथमां पंखार्ड खइने उत्ती. तथा श्रखंबुसा, मितकेशी, पुंमरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रचा, श्री छने ही ए नामे छाठ दिक्कुमारिकार्ड उत्तर रुचकथी आवीने चामर वींजवा लागी। तथा चित्रा, चित्रकरा, शतेरा अने वसुदामिनी ए चार कुमारिकार्ज विदिग् रुचका डिथी आवीने हाथमां दीवा लइ विदिशामां उत्ती. तथा रूपा, रूपा-सिका, सुरूपा अने रूपवती नामनी चार दिक्कुमारिकार्ड रुचक द्वीपथी आवी, अने चार अंगुलची हेटे नालने हेदीने खोदेला खामामां दाटी, तथा ते खामाने वेडुर्य मणिची पूरीने, तेना पर पीठ बनाव्युं, तथा तेने छूर्वाथी बांधीने, ते जन्मग्रहथी पूर्व दिशामां, दक्षिण दिशामां स्थने उत्तर दिशामां एम त्रण दिशार्यमां त्रण केलनां घरो बनाव्यां. तेर्यमांथी दक्षिण तरफना केलना घरमां तेर्च बन्नेने (मातापुत्रने) खइः जइने, तेर्चए तेमने छान्यंग (तैलमर्दन) कर्युं तथा पढ़ी पूर्व तरफना घरमां स्नान करावी, कपमां तथा आजूषणो पहेराव्यां पढ़ी उत्तर 🤾 तरफना केलना घरमां बे श्वरणीनां काष्टो घसीने, तेमांथी श्वित्त निपजावी, चंदनथी होम करीने तेउंए बन्नेने रक्षापोटसी बांधी. तथा पढ़ी मिणना वे गोलार्ज आस्फालती थकी "तमो पवर्त जेटला आयु-ष्यवाला थार्ज" एम कही प्रञुने तथा तेमनी माताने जन्मस्थानके मूकीने तेर्ज पोतपोताने स्थानके गइ ते दिक्कुमारिजेनी साथे प्रत्येकना चार हजार सामानिक देवो होय, चारमहत्तराजे होय, सोख

सुबोव

ા પપ ા



षाः ५४

ह्जार श्रंगरक्तको होय, सात खश्कर तथा तेना श्रधिपतिन होय, तथा बीजा पण महर्धिक देवो होय; तथा तेन श्राजियोगिक देवोए योजनप्रमाण करेलां विमानोमां बेसीने त्यां श्रावे हे. एवी रीते दिक्कुमारिकार्जनो महोत्सव जाणवो.

ते वार पढ़ी पर्वत सरखुं निश्चल एवं इंड्रनुं श्रासन चलायमान थयुं, त्यारे इंड्रे अवधिक्ञानश्री वेह्ना तीर्थंकरनो जन्म थयो एम जाएयुं, अने तेथी तेणे वज्रमय एवी योजननी सुघोषा नामनी घंटा नैगमेषी देव पासे वगकावी श्रने तथी सघलां विमानोमां रहेली घंटाउं पण वागवा लागी. पठी ते नैगमेषी देवे उंचे प्रकारे पोतेज इंडनो हुकम देवोने जणाव्यो, अने तेथी देवो पण हर्ष-युक्त थइ चालवानी तैयारी करवा लाग्या. पालक नामना देवे वनावेला तथा लाख योजनना मा-नवाला एवा पालक नामना विमान पर इंड बेठो; ए पालक नामना विमानमां इंडना खासननी सन्मुख अयमहिषी छीनां आठ जडासनो इतां, माबी बाजुमां चौराशी हजार सामानिक देवोनां चोराशी हजार जडासनो हतां, दिक्षण बाजुमां बार हजार अन्यंतर पर्षदानां बार हजार जडासनो हतां, तथा चौद हजार मध्य पर्षदानां चौद हजार जडासनो हतां,एवी रीते सोख हजार बाह्य पर्षदानां सोख हजार जडासनो हतां, पाठलना जागमां सात सेनापतिर्जनां सात जडासनो हतां. चारे दिशा-र्जमां प्रत्येकमां चोराशी हजार आत्मरक्तक देवोनां चोराशी हजार जडासनो इतां. तथा एवी रीते बीजा पण घणा देवोथी वींटाएलो तथा सिंहासन पर बेठेलो, तथा गवाता हे गुणो जेना एवो ते इंड त्यांथी चालवा लाग्यो, तथा बीजा देवो पण एवी रीते त्यांथी चालवा लाग्या तेत्रोमां केटलाक तो इंडना हुकमथी, केटलाक मित्रना श्रमुवर्त्तनथी, केटलाक स्त्रीर्जथी (देवीर्जथी) प्रेरायेखा, केटलाक पोतानाज जावधी, केटलाक कोतुकधी, केटलाक विस्मयपणाधी तथा केट-लाक जिल्छी, एवी रीते सघला देवो विविध प्रकारनां वाहनोए करीने युक्त थया थका चाल-वा लाग्या. ते वखते विविध प्रकारनां वाजित्रोना शब्दोधी तथा घंटास्रोना नादोधी तथा देवोना

कृहप्ण

कोलाइलथी सघलुं ब्रह्मांक गाजी रह्युं. तेत्र्योमांथी सिंह पर स्वार थयेलो देव हाथी पर स्वार कोलाइलथी सघलुं ब्रह्मांन गार्जी रह्युं. तेत्र्योमांथी सिंह पर स्वार थयेला देव हाथी पर स्वार थियेला देव हाथी पर स्वार थियेला देव हाथी पर स्वार थियेला देवने कहेवा लाग्यो के तारा हाथीने तुं हर कर, केमके नहींतर मारो था। जोरावर के-॥ यह ॥ 🎢 सरी सिंह खरेखर तारा हाथीने मारी नाखरो. तथा एवीज रीते पांका पर बेठेखो घोडे स्वारने, गरुम पर बेठेलो सर्पवालाने तथा चित्रा पर बेठेलो बकरा पर बेठेलाने आदरपूर्वक कहेवा लाग्यो. ते वखते देवोनां क्रोमो गमे विमानो छादिक वाहनोए करीने विस्तीर्ण एवो पण छाकाशमार्ग सांकमो घइ गयो. केटलाक देवो तो मित्रने पण तजीने दक्षपणाए करी श्रगाडी जता हवा. तथा बीजो देव वसी कोइने एम कहेतो हवो के हे जाइ! तुं जरा मारे माटे थोनी वार तो थोज. केटलाक तो वली एम कहेवा साग्या के हे देवो! पर्वना दिवसो तो एवी रीते सांकमाज होय हे, माटे हमणां तो मौन करीनेज चालो. एवीरीते आकाशमां आवता यका देवोनां मस्तको पर चंद्रनां किरणो पमवाथी तेर्ड "निर्जर" वर्ता पण जाणे जरायुक्त थयेला होय तेम शोजता हवा. (केमके तेमनां मस्तको चंद्रनां किरणोधी सफेद लागतां हतां.) देवोनां मस्तकपर रहेला तारार्च घटिका सरखा, कंठमां कंठा सरखा तथा शरीर पर पसीनानां विंड्रुं सरखा शोजता हता. एवी रीते इंद्र नंदीश्चर द्वीप पासे विमानने संदेवीने त्यां खाव्यो, तथा जिनेंद्र खने तेमनी मा-🖔 ताने तेणे त्रण प्रदक्षिणा करी, तथा तेमने नमस्कार करी ते कहेवा खाग्यो के हे रत्नकुकि! तथा जगत्मां दीपिका सरखी माता! तमारा प्रत्ये नमस्कार थार्ड हुं देवोनो खामी इंझ हुं, तथा देव-🤾 लोकथी छहीं छाव्यो हुं, तथा छा प्रजुनो हुं जन्ममहोत्सव करीश. माटे हे माता ! तमारे करतुं 🕻 नहीं, एम कही तेणीने अवस्वापिनी निद्धा तेणे आपी; तथा जिनेश्वर प्रजुनुं प्रतिबिंब करीने ते मातानी पासे राख्युं. पठी तीर्थंकर प्रजुने तेणे हस्तसंपुटमां ग्रहण कर्या, तथा सघलो लावो पोते 🐒 है बिवा माटे तेणे (इंडे) पोतानां पांच रूपो कर्यां. एक रूपे करी प्रजुने ग्रहण कर्या, वे रूपोए कर रीने पक्ले रही चामर उनाड्यां, एक रूपे करी उत्र धर्युं, तथा एक रूपे करीने वज्र धारण कर्युं।



पान्प्पू

हवे देवोमांथी जे खगामी होय हे, ते पहाडी रहेलाने धन्य माने हे, तथा पहाडी रहेलो खगामी रहेलाने धन्य माने हे, तथा केटलाक अगामीना जागमां गयेला देवो प्रजुने जोवा माटे पोतानी पीठमां पण नेत्रने इन्जवा लाग्या. एवी रीते इंद्र मेरु पर्वतना शिखर पर जइ, त्यां दक्षिण जागमां रहेला पांछुक वनमां पांछुकंबला नामनी शिला पर गयो. त्यां प्रजुने खोलामां लइ पूर्व सन्मुख ते बेठो; तथा ते वखते सघला देवो पण प्रजुना चरणनी समीप आव्या दश वैमानिक, वीश जवन-पतिन, बन्नीश व्यंतरो, बे ज्योतिष्क एम मली चोसन इंद्रो त्यां आव्या त्यां सोनाना,रूपाना,रलोना, सोनारूपाना, सोना खने रलोना, रूपा खने रलोना, सोना, रूपा खने रलना,तथा माटीना,एवा खाठ जातिना प्रत्येकना एक हजार ने छाठ एक योजनना मुखवाला कलशो (पचीश योजन उंचा, बार यो-जन पोहोला स्रने एक योजनना नालवाला सर्व देवोना एक करोड स्रने साठ लाख कलश) तथा एवी रीते संगार, दर्पण, रलकरंक्क, सुप्रतिष्ठक एवा थाल, पुष्प, चंगेरिकादिक पूजानां उपकरणो, प्रत्येक कलशनी पेठे एक हजार ने आठ प्रमाणे जाणवां, तथा मागध आदिक तीर्थनी माटी, गंगा-दिकनां जल, पद्मसरोवर आदिकनां पाणी तथा कमलो, क्युब्लिमवंत, वर्षधर, वैताट्य विजय तथा व-क्तस्कार छादिक पर्वतो परथी सर्पव, पुष्प, गंध विगेरे सर्व प्रकारनी छौषधी छोने छन्युतें इ छा-जियोगिक देवोनी मारफते मगावी खेतो हवो. ते वखते वक्तःस्थल पासे राखेल हे कीरसमुद्रना पाणीना घमार्ज जेर्जए एवा देवो जाणे संसारनो समृह तरवा माटे घमार्जनेज तेर्जए धारण कर्या होय तेम शोजवा लाग्या; तथा जाणे जावरूप वृक्तने सिंचता होय अथवा पोतानो मेल जाणे घोइ ना-खताज होय ख्रथवा धर्मरूप प्रासाद उपर जाणे कलश स्थापन करता होय तेम ते देवो शोजता हवा. हवे ते वखते इंद्रना संशयने जाणीने वीर प्रजुए जमणा अंग्रुठाथी चारे बाजुएथी मेरु पर्व-तने कंपाच्यो; ते वखते पृथ्वी ध्रुजवा लागी, शिखरो पमवा लाग्यां तथा समुद्रो कोजायमान थवा खाग्या. तथा एवी रीते ब्रह्मांम फुटी जाय एवा शब्दो यते वते, क्रोध पामेल इंडे अवधिथी जाणी

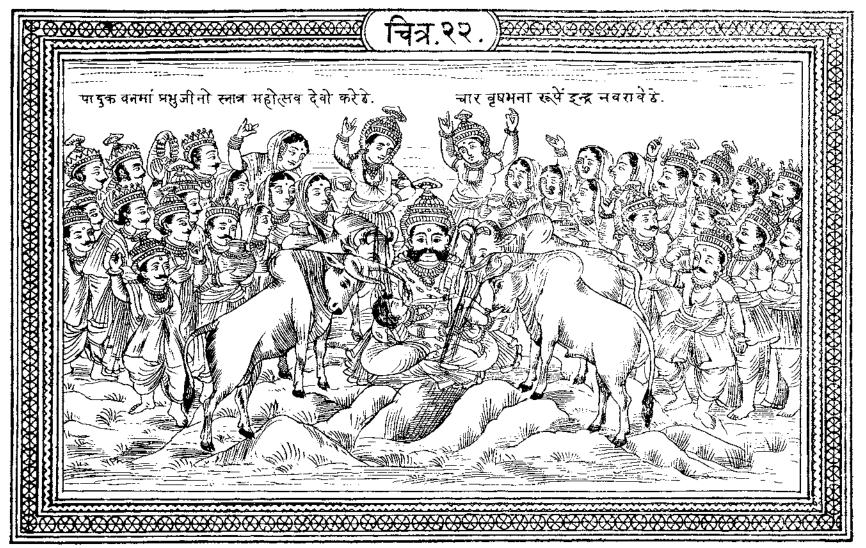
कह्प□

11 49 11

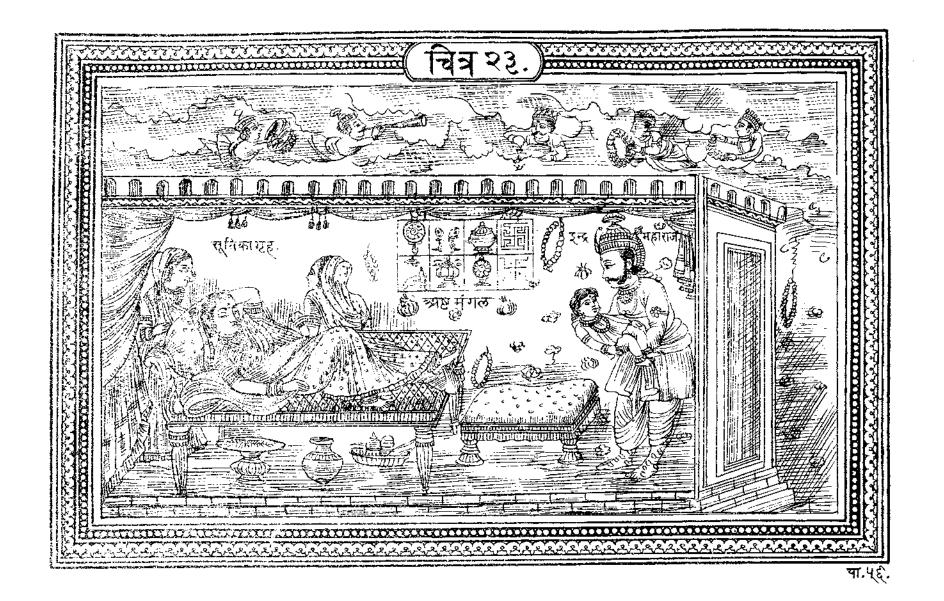
प्रजु पासे क्तमा मागी. असंख्याता तीर्थंकरो मांहेथी आज दिन सुधी मने कोइए पगेथी स्पर्श कर्यों नची, श्रने श्राजे श्रा वीर प्रजुए कर्यों, एवा हर्षेथी जाणे ते मेरु नाचतोज होय नहीं ! तेम देखावा लाग्यो. वली तेणे विचार्युं के आ स्नात्रनीरना अभिषेकथी जरतां सवलां जरणां उरूपी में हारो प-हेर्या, तथा जिनेश्वररूपी मुकुटने धारीने हुं सघला पर्वतोनो राजा थयो हुं. हवे त्यां पहेलां व्यच्युतेंद्र प्रजुने नवरावे, तथा एवी रीते व्यनुक्रमे ठेक चंद्र सूर्यादिक सुधी सवलाउं व्यक्तिषेक करे. अहीं कवि घटना करे हे के, स्नात्रमहोत्सव वखते चरम तीर्थंकरना मस्तक पर श्वेत हत्रनी पेठे आचरण करतुं, मुखरूपी चंद्र प्रत्ये किरणोना समूहनी पेठे आचरण करतुं, तथा कंठमां हा-रनी पेठे छाचरण करतुं, तथा समस्त शरीर पर चीन देशना कपकानी पेठे छाचरण करतुं, तथा इंडोना समूहोए उंचा करेला घमार्जना समूहना मध्य जागमांथी नीचे पडतुं एवं कीरसमुझनुं पाणी तमारी खद्मीने माटे यार्ज !

पठी इंडे पोते चार वृषजोनुं स्वरूप कर्युं, तथा तेनां खाठ शिंगडांर्डमांथी पनता इधयी पोते प्रजुनुं श्रजिषेचन करवा खाग्यो. ते देवो प्रजुने पाणीथी स्नान करावतां एवी रीते उखटा पोते नि-में बपणाने प्राप्त थया ! ! पढ़ी तेर्ड मंगबदीवो तथा आरात्रिक किया करीने नृत्य, गीत, वाद्य श्रादिकथी विविध प्रकारे महोत्सव करवा खाग्या. पढी इंडे गंधकाषाय्य नामना दिव्य वस्त्रथी प्र-जुना श्रंगने ब्रुंडीने श्रने चंदन श्रादिकथी क्षेपन करीने पुष्पोधी तेमनी पूजा करी पड़ी इंडे प्रजुनी सन्मुख रत्नना पाटला पर रूपाना चोखाएकरीने दर्पण,वर्धमान, कलश,मत्स्ययुगल,श्रीवत्स, खस्तिक, नंदावर्त्त तथा सिंहासन, ए श्रष्टमंगलो श्राक्षेत्रीने प्रजुनी स्तुति करवा मांनी. पठी प्र-जुने तेमनी माता पासे लाबीने मूक्या, तथा पेड्डं प्रतिबिंब अने अवस्वापिनी निद्राने पोतानी हैं॥ ५७॥ शक्तिथी इंद्रे पाठां ग्रहण करी लीधां.

पढ़ी इंडे खोशीका प्रत्ये कुंमल खने रेशमी कपमांनी जोमी मूकी तथा चंडवामां श्रीदाम,



पा• ५५.







रलदाम श्रने सोनानो दमो राख्यां. तथा वत्रीश कोम रत्न, सोना श्रने रूपानी वृष्टि करीने इंडे श्राजियोगिक देवोने मोढेथी घोषणा करावी के प्रश्च श्रथवा प्रजुनी माता तरफ जे कोइ श्रशुज चिंतवशे, तेना मस्तकना श्रर्जुन वृक्तना मांजरनी पेठे सात दुकमा थशे. वसी प्रजुना श्रंगुठा पर श्रमृत मूकीने तथा नंदीश्वर द्वीपमां श्रष्ठाइ महोत्सव करीने सघला देवो पोताने स्थानके गया. एवी रीते देवोए करेलो श्री वीर प्रजुनो जन्मोत्सव जाणवो.

हवे ते श्रवसरने विषे प्रियंवदा नामनी दासी जलदी राजा पासे जह ते पुत्रना जन्मना वृ-त्तांतने कहेती हवी. सिद्धार्थ राजा पण ते वृत्तांतने सांजलीने श्रत्यंत हिषेत थयो, तथा हर्षथी तेनी वाचा पण गद्गद शब्दोवाली थह, तथा तेना शरीर पर रोमांच थयां वली तेणीने राजाए मुक्कट सिवाय सघलां श्राजूषणो वधामणीमां श्राप्यां, तथा तेणीनुं माथुं धोवरावीने तेने दासीपणाथी मुक्त करी.

जे रात्रिने विषे श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज जन्म्या ते रात्रिने विषे छुबेरनी आज्ञा सा-ननारा घणा तिर्थग्जुंजक देवतार्छ सिद्धार्थ राजाना घरने विषे रूपानी दृष्टि, सोनानी दृष्टि, हीरानी दृष्टि, वस्त्रनी दृष्टि, श्राजरणनी दृष्टि, नागरवेल विगेरे पांदकांनी दृष्टि, पुष्पनी दृष्टि, नालियेर विगेरे फलनी दृष्टि,शालि विगेरे वीजनी दृष्टि, पुष्पमालानी दृष्टि, सुगंधनी दृष्टि, वासकेपनी दृष्टि, हिंगला-दिक वर्णनी दृष्टि तथा द्रव्यनी दृष्टि वरसाववा लाग्या-

पठी सिद्धार्थ राजाए जवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क छने वैमानिक देवोए तीर्थंकरना जन्मा-जिषकनो जत्सव कर्ये ठते प्रजात कालना छवसरे नगरना छारककोने वोलाव्या छने वोलावीने तेमने कह्युं के हे देवानुप्रियो, तमे शीध छा क्तियकुंमग्रामनामना नगरमां जे केदखानां छो होय तेने साफ करो, छर्थात् तेमां रहेला केदीछोने ठोफी मूको; केमके कह्युं ठे के युवराजना छजिषेक व-खते, शत्रुना राज्यनो नाश करती वखते, तथा पुत्रजन्मना महोत्सवने दिवसे केदीछोने बंधन- कहपण

॥ युष्ट ॥

मुक्त कराय है. वली तमो मान एटले रस छाने धान्यना विषयरूप, तथा जन्मान एटले जोलाय ते, ते सघलामां वधारो करो; अने तेम करीने आ क्तियकुंम्याम नामना नगरने अंदरथी अने बहारथी पण तमे अत्यंत शोजायुक्त करो. ते नगरने केवी रीते शोजायुक्त करो ? ते हवे कहे हे. सुगंधी जलनो इंटकाव करीने तेथी आसिक्त करो, तथा कचरो विगेरे दूर करो तथा हाए आदि-कथी लींपावो. वली केंबुं करो ? तो के शृंगाटक कहेतां त्रण खुणावालां स्थानको, त्रिक कहेतां ज्यां त्रण मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चतुष्क कहेतां ज्यां चार मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चत्वर कहेतां ज्यां अनेक मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चतुर्मुख कहेतां देवाखय आदिक, महापथ कहेतां राजमार्ग, पंथ कहेतां सामान्य मार्गो, एटलां स्थानकोमां पाणीए करीने सिंचेला, द्यने तेथी करीनेज पवित्र तथा कचरो विगेरे पूर करवाथी शोजायुक्त करेला, एवा जे रथ्यांतर कहेतां मार्गना मध्यत्रागो तथा आपणवीथि कहेतां इकानोना मार्गो अर्थात् बजारो, ते हे जेनी अंदर एवं. तथा वली ते नगर केवं ? तो के मंच कहेतां महोत्सव जोवा माटे लोकोए बेसवा माटे करेला फरुखास्रो, तथा स्रतिमंच कहेतां तेस्रोनी पण उपर करेल फरुखास्रो, तेस्रोए करीने शहरने शोजायुक्त करो. वसी ते नगर केवुं ? तो के नाना प्रकारनी रंगबेरंगी जे ध्यजाश्रो (क-हेतां जेनी अंदर सिंह आदिकनां चित्रामणोए करीने सहित एवां मोटां ख़गमांओ खटकी रह्यां हे एवी ध्वजाश्रो) तथा पताका कहेतां नानी ध्वजाश्रो, तेश्रोए करीने शोजायुक्त करो. वली ते नगर केंबुं ? तो के ठाण आदिकथी जूमि पर क्षेपनवाबुं तथा चाक आदिकथी जिंतो पर करेखी हे सफेदाइ ज्यां एवं करीने पूजना कर्या सरखं करो ? वली ते नगर केवं ? तो के गो-शीर्ष चंदन तथा रसयुक्त एवं जे रक्तचंदन, तथा दर्दर एटले पर्वतमां उत्पन्न थयें हुं जे चंदन, तेर्रं करीने जिंत आदिक पर दीघेला वे पांच आंगलीर्रंना हाथाओ ज्यां एवं ते नगर करो. वली ते नगर केवुं ? तो के घरनी अंदर चोकमीओ पर राखेल हे चंदनना कलशो ज्यां एवुं

सुबो०

॥ यत ।

करो वली ते नगर केवुं ? तो के बारणांश्रोना जागोमां चंदनना कलशोए करीने करेलां हे तो-रणो जेमां एवं ते नगर करो वदी ते नगर केवं ? तो के जूमि पर तथा उपरना जागमां पण वि-स्तीर्ण श्रने गोल श्राकारवालो लटकावेल हे पुष्पोनी मालाश्रोनो समृह जेमां एवं ते नगर करो। वली ते नगर केवुं ? तो के पंच वर्णना तथा रसे करीने युक्त छजे सुरिज कहेतां सुगंधवाला एवा जे पुष्पोना समूहो, तें श्रोनो करेख जे उपचार कहेतां शोजा, तेणे करीने ते नगरने युक्त करो. वसी ते नगर केंबुं ? तो के बसता एवा कृष्णागर, श्रेष्ठ कुंडुरुक, तुरुष्क विगेरे जातिना धूप-थी मघमघी रहेला सुगंधथी अत्यंत मनोहर एवं करो तथा चूर्णोना श्रेष्ठ सुगंधथी उत्तम सुगंधवाद्यं करो तथा सुगंधनी गोटी सरखुं करो वहीं ते नगर केंबुं ?तो के नट कहेतां नाटक करावनारा तथा नर्तक कहेतां पोते नाचनारा, तथा जल्ला एटले दोरी छो पर खेल करनारा, तथा मल्ल, तथा मुठी श्रोषी युद्ध करनारा, तथा विमंबक एटले माणसोने हास्य कुतूहल करावनारा विद्धूषको, छ-थवा जेओ मोढांओना चालाओ करीने कुदे हे तेओ, हेकनारा तथा नदी विगरेने तरनारा तथा रसे करीने युक्त एवी वार्क्तार्जना करनाराश्रो तथा सुंदर कथा कहेनारा तथा खासक कहेतांरास रमनाराश्रो, तथा आरक्तको कहेतां कोटवालो, तथा लंख कहेतां वांसपर चमी तेना अग्रजाग पर खेल करनाराओ, तथा मंख कहेतां हाथमां ठबीउ राखी जिक्ता मागनाराश्रो के जेखो 'गौरीपुत्रो' एवा नामथी प्रसिद्ध हे तेस्रो, तथा तूण नामनां वाजित्र वगामनारात्रं, तथा तुंबवीणिका एटले वीणा वगाडना-रार्च, तथा जेर्च तालीचं वगामीने कथाओं कहे हे एवा लोको, तेर्चए करीने संयुक्त, एवा आ कत्रियकुंम्प्राम नामना नगरने तमो पोते करो, बीजार्ड पासे तेम करावो छने तेम करीने तथा करावीने हजारो गमे गामांनां धोंसरां तथा प्रसिद्ध एवां हजारो गमे मुशलो उत्सवनी खंदर उनां करावो. (तेम कराववानी मतलब ए के ते महोत्सव चालते बते, तेम करवाथी, गाडां खे-मवानी तथा खांमवा आदिकनी मनाइ करेखी हो, एम इद्य आचार्योंनो मत हे.) एम करीने

कृद्प्ण

ા પણા

ते मारी आज्ञा तमो पाठी आपो. तथा पाठी आपीने आवीने मने कहो के तमारी आज्ञाप्रमाणे संघक्षं तैयार कर्युं हे.

एवी रीते सिद्धार्थ राजाथी आज्ञा कराएला ते कौटुंबिक पुरुषो हर्ष पाम्या, संतोष पाम्या, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला यया ठता वे हथेलीथी यावत् अंजलि करीने ते सिद्धार्थ राजानी आज्ञा सांजली तरतज क्षत्रियकुंमश्राम नगरमां बंदिजनने ठोडी मूकवाथी आरंजीने हजारो मुश्चल उत्ता करवा सुधीनां सर्व कार्य करीने ज्यां सिद्धार्थ राजा हता त्यां आव्या अने आवीने तेमने तेमनी आज्ञा पाठी सोंपता हवा

ते वार पढ़ी ते सिद्धार्थ राजा, ज्यां कसरतशाखा इती त्यां गया; तथा त्यां जइ आवीने सर्व प्रकारनी क्रिक्षए करीने युक्त, तथा सर्वे युक्तिए करीने एटले सघली उचित वस्तुर्जना संयोगे करीने युक्त,सर्व सैन्य वडे करीने, तथा पालखी घोडा छादिक सर्व प्रकारनां वाहनोए करीने, तथा प-रिवार छादिकना समूहे करीने, तथा सघला छंतःपुरे करीने, तथा सघली पुष्प, गंध, वस्त्र, माख्य, श्रखंकार श्रादिकनी जे शोजा, तेणेकरीने, तथा सघला प्रकारनां वागतां एवां जे वाजित्रो,तेना निनादो कहेतां शब्दोए करीने, तथा वाजित्रोना एकी वखते थता शब्दोए करीने, तथा शंख, माटीना पटह, तथा जेरी, तथा कालर,तथा खरमुखी एटले काइला नामनुं वाजित्र, तथा मुरज कहेतां ढोल,तथा मृदंग तथा इंडिजि, ए सवलां वाजित्रोनो जे मोटो शब्द, तथा तेना पमघारूप थतो जे प्रतिशब्द, तेणे करीने, तथा एवी रीते सामग्री सहित सिद्धार्थ राजा दश दिवस सुधी महोत्सवपूर्वक कुलम-र्यादा करता हवा. हवे ते कुलमर्यादा केवी ? ते कहे हे. तेणे वेचाण यती वस्तुत्रोने जगातथी मुक्त करी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के कर कहेतां दरेक वर्षे राजार्ड जे प्रजा पासेची से हे ते करे करीने प्रजाने रहित करी, अर्थात् कर माफ कर्याः अने तेथीज सघलाउने हर्षना हेतुरूप होवाथी उक्त ए प्वी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के जे जे वस्तु ने जे जे माणसोने जोती

सुबो •

। यए ।

होय, ते ते बजारमांश्री मूख्य दीधा विनाज लोकोए यहण करवी, केमके तेनुं मूख्य राजा श्रापशे एवी रीतनी जाहेरखबरवाली, अने तेथी करीनेज अमेय कहेतां प्रमाण विनानी वस्तु मेलवी शकाय एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नास्तिकोने घेर पण राजानी आजाने आपनारा राजपुरुषोनो वे प्रवेश जेनी अंदर एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के दंग कहेतां राजा वडे अपराधना प्रमाणमां प्रजा पासेथी ग्रहण करातुं जे धन ते, तथा कुदंग कहेतां मोटो अपराध होते वते पण अल्प एवो जेराजा दंग से वे ते, ते वन्नेशी रहित एवी. वसी ते कुलमर्यादा केवी ? तो के करजे करीने पण रहित एवी अर्थात् सघलानुं करज पण राजा आपरो एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी? तो के उत्तम एवी गणिकास्रो, तथा नाटकमां जोडायेखां पात्रोए करीने सहित एवी. वली ते कुल-मर्यादा केवी ? तो के छानेक एवा जे प्रेक्ताकारी, तेउंए करीने सेवित थयेखी वेखी ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नथी तजायेलां मृदंगो जेनी छंदर एवी वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नथी क-रमायेली पुष्पनी मालाओं जेनी अंदर एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी? तो के प्रमुदित कहेतां ह-षेवंत, अने तेथी करीनेज क्रीमा करवाने लागेला है नगरना लोको सहित देशना लोको जेनी अंदर एवी. एवी रीतनी उत्सवरूप कुलमर्यादा सिद्धार्थ राजा दश दिवस सुधी पालता हवा. पढ़ी ते सिद्धार्थ राजा, तेवी रीते दश दिवस सुधी कुलमर्यादा पालते हते, सेंकमो, हजारो छने लाखो प्रमाणे अरिहंतनी प्रतिमानी पूजाओ करता हवा; केमके प्रजुनां मातिपता श्री पार्श्वनाथ प्रजुनां संतानना श्रावको हता. ''यज" धातु देवपूजाना अर्थने कहेनारी हे, माटे श्रहीं ''याग" एवा शब्दथी प्रतिमानी पूजाज यहण करवी, केमके बीजा यक्ञोनो असंजव हे; वसी तेश्रो पार्श्वनाय प्रजुनां संतानना श्रावको हता, एम श्राचारांगमां कहेब्रुं हे वसी ते राजा पर्वने दहाडे दानने छने मानेखी मानताने पोते देता छने सेवको पासे देवरावता ठता सेंकमो, हजारो छने लाखो एवां वधामणांने पोते ग्रहण करता छने सेवको पासे ग्रहण करावता छता छा प्रकारे महोत्सव करता हवा.

कृढ्प्०

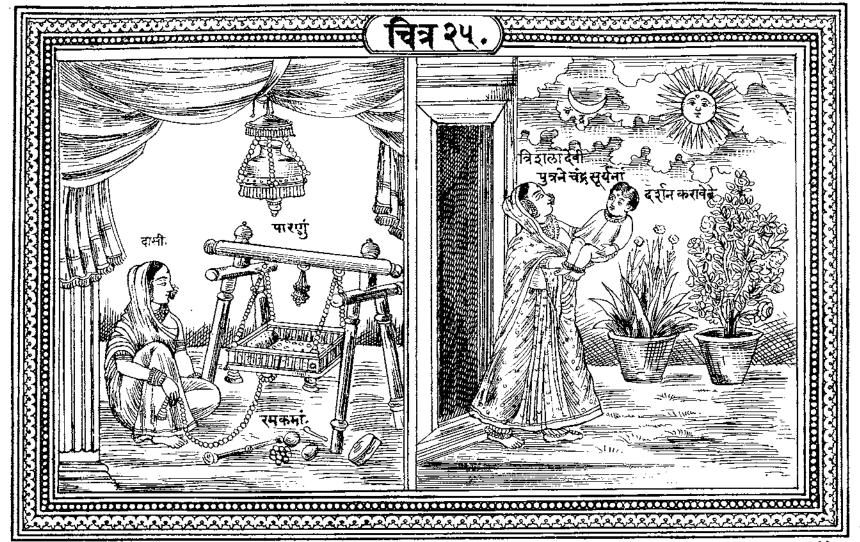
११ ६० ॥

ते वार पठी श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुनां मातापिताए पहेंखे दिवसे एवी रीते कुल-मर्यादा करी. तथा त्रीजे दिवसे चंड्र सूर्य देखामवानो महोत्सव करता हवा.

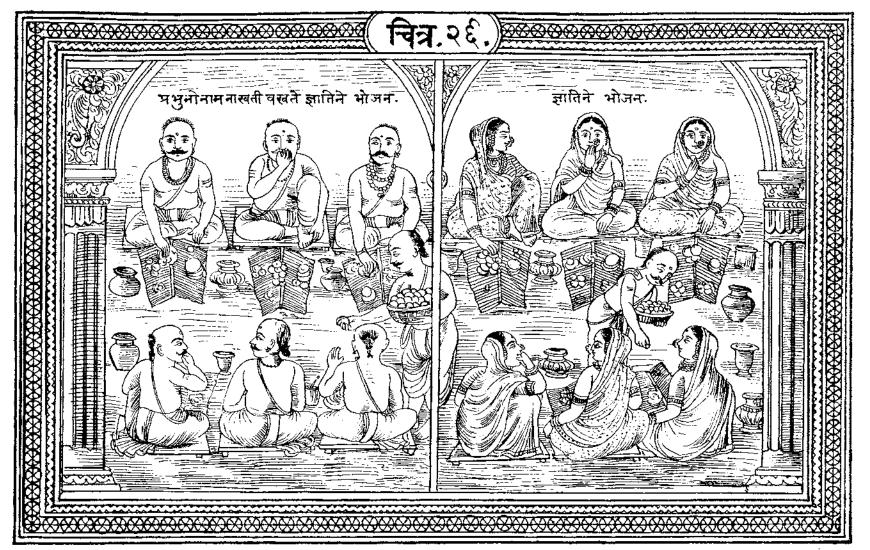
तेनो विधि नीचे प्रमाणे जाणवोः जन्मश्री मांमी वे दिवस जाते वते, ग्रहस्थ ग्रुरु श्रिरहंत प्रजुनी प्रतिमा पासे रूपानी चंद्रनी मूर्तिने प्रतिष्ठित करीने पूजीने विधिपूर्वक स्थापे ते वार पढ़ी स्नान करेखी तथा उत्तम वस्त्राजूषणो पहेरेखी एवी प्रजुनी माताने पुत्र सहित, चंद्रनो उदय होते ढते, प्रसक्त चंद्रनी सन्मुख खइ जइने "डि अर्ह चंद्रोऽसि, निशाकरोऽसि, नक्तत्रपतिरसि, सु-धाकरोऽसि, श्रोषधीगर्जोऽसि, अस्य कुलस्य वृद्धिं कुरु खाहा" एवी रीतनो चंडनो मंत्र उचारण करतो थको चंद्रने देखाडे; पढ़ी माता पुत्र सहित थइ थकी गुरुने नमे; त्यारे गुरु पण आशीर्वाद आपे के सघली औषधी उंए करी मिश्रित ययेल है किरणोनी पंक्ति जेनी, तथा सघली आ पदाञ्चोने हरवामां जे प्रवीण हे एवो श्रा चंद्र हमेशां प्रसन्न थयो थको तमारा समस्त वंशने विषे वृद्धि करो. एवीज रीते सूर्यनुं पण दर्शन करावे; तेमां मूर्ति सोनानी श्रथवा तो त्रांबानी करे, श्रने मंत्र नीचे प्रमाणे बोह्ने. " उँ श्रह सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, तमोऽपहोऽसि, सहस्रकिर-णोऽसि, जगचकुरसि प्रसीद" पठी गुरु आशीर्वाद आपे के सघला देव अने असुरोने वंदनीय, सर्वे अपूर्वे कार्योना करनारा तथा त्रण जगतने चक्क समान एवा सूर्य पुत्र सहित तमोने मंगलना देनारा थाछो. एवी रीते चंद्र सूर्यनां दर्शननो विधि जाणवो. हमणांना काखमां तो तेने बदसे बालकने आरिसो देखाडे हे.

ते वार पठी ठठे दहाडे एटले कुलधमें करीने ठठी रात्रिए जागता यका जागरणमहोत्सव करे. एवी रीते अग्यारमो दिवस गये ठते अशुचि एवां जे जन्मकार्यों, जेवां के नाल हेद इत्यादि कार्यों समाप्त होते ठते अने वारमो दिवस आवते ठते प्रजनां मातापिताए घणां एवां अशन, पान, ला-दिम अने खादिम एम चार प्रकारनां जोजन तैयार कराव्यां; अने तेम करावीने मित्रोने, इति सुबो०

11 E0 11



पा.५०



पा. ५०

एटल पाताना जातवालाजन, पुत्रा।दक सगाजन, ।पत्रा२७न, पुत्र तथा पुत्राना संसरा आ।दकन, 🔀 दास दासी उने तथा श्री क्षवदेव प्रजना वंशना कत्रि उने ते उप जमवा माटे नोतरं छाएं युं, छने तेम कर्या पढ़ी पूजा आदिक कार्यों करीने तथा कौतुकमंगल करीने, तथा ग्रुद्ध सनाप्रवेशने योग्य मंगलिक अने श्रेष्ठ वस्त्रो पहेरीने, तथा थोनां पण महा मूखवालां आजूबणोथी शरीर अलंकृत करीने जगवंतनां मातापिता जोजनसमये जोजनमंगपमां सारां आसनो पर वेठां. तथा उपर कहेला खजनादिकनी साथे तेघणां एवां छशन,पान, खादिम छने खादिम एवा प्रकारनां जोजनोने सेलडीनी पेठे थोडुं खातां थकां वधारे तजतां थकां, खजूर श्रादिकनी पेठे घणुं खातां श्रने थोडं तजतां थकां, अने उत्तम जोजननी पेठे सघहुं खाइ जतां अने केटलीक वस्तुर्ज एकवीजाने आए-तां थकां जमवा लाग्यां; अर्थात् एवी रीते जोजन करतां हवां. एवी रीते जोजन कर्या बाद तेर्र बेठकनी जगो पर आवी वेठां; एवी रीते रहेता थकां त्यां शुद्ध एवं पाणी पीता हवां. ते वार पठी परम पवित्र थइने ते मित्रादिक वर्गनो तेउंए घणां एवां पुष्प,वस्त्र,गंध,माला तथा श्रात्रूषण श्रादिकश्री सत्कार कर्यो अने सन्मान कर्युं तथा तेम करीने ते मित्रादिक वर्गने प्रजुनां सातापिताए आ प्रमाणे कह्युं के, हे खजनो! प्रथम पण श्रमारो श्रा बाबक गर्जमां उत्पन्न थये उते श्रा श्रावा प्रकारनो चिंत-वेलो संकल्प थयो हतो ते संकल्प कयो हे ते हवे कहे हे. ज्यारथी आरंजीने अमारो आ वालक उदरमां गर्जरूपे उत्पन्न थयो हतो ते दिवसथी खमे रूपा वडे वृद्धि पामीए ठीए, सोना वडे वृद्धि पामीए ठीए, तेमज धनथी, धान्यश्री, राज्यथी यावत् सर्वे प्रकारनां द्रव्यथी अने प्री-तिसत्कारची अमे बहु बहु वृद्धि पामीए ठीए. वही सीमाडाना राजाउँ पण अमारे वश अयेखा हे. माटे ज्यारे श्रमारा श्रा वालकनो जन्म श्रहो त्यारे श्रा वालकनुं श्रा एने योग्य, गुणवालुं अने ग्रणने अनुसरतुं 'वर्द्धमान' एवुं नाम पाडशुं. ते पूर्वे जत्पन्न थयेसी अमारी मनोरयसंपत्ति श्राजे फलीजूत यह है, माटे श्रमारों कुमार वर्द्धमान ए नामे यार्ज.

कहपण

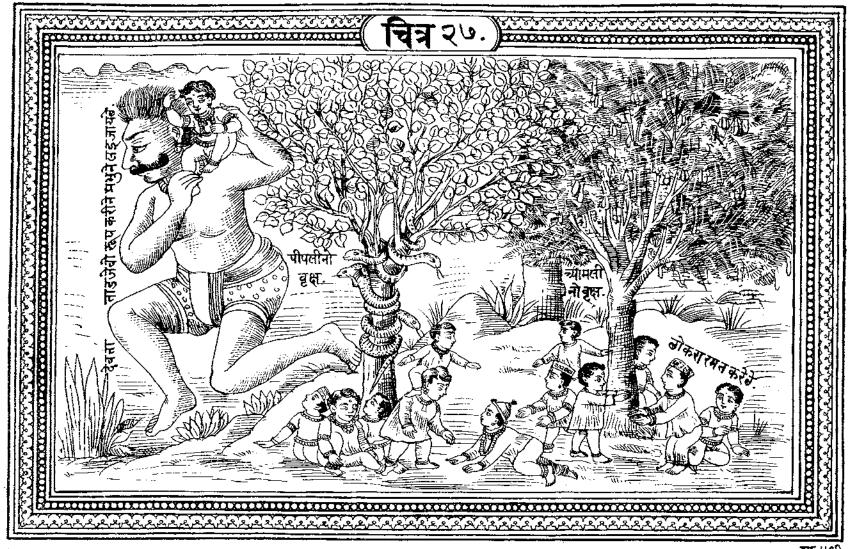
॥ ६१ ॥

हवे कास्यप गोत्रवाला श्रमण जगवंत श्रीमहावीर प्रजुनां त्रण नामो कहेवाय हे, ते आ प्र-माणे जाणवां. तेर्नमांश्री मातापिताए "वर्द्धमान " एवं प्रथम नाम पाड्युं; तप करवा विगेरेनी शक्ति प्रजुनी साथेज उत्पन्न थइ हे माटे "श्रमण" एवं बीजुं नाम जाणवं तथा जय अने जैरवमां निष्कंप रहेवाथी; तेमां जय एटले अकस्मात् वीजली आदिकथी उत्पन्न थयेलो जय, तथा जैरव एटसे सिंह आदिक, तथा जूख, तरस आदिक वावीश परिषहो, तथा देवता संबंधी चार उप-सर्गों, तथा तेना जुदा जुदा जेदो खेखीए तो सोल उपसर्गों, तेने प्रजुए कमाए करीने सहन कर्या हे, पण असमर्थपणाए करीने नहीं; वली जड़ादिक तथा एकरात्रिकी आदिक प्रतिमार्चना तथा छि जियहोना पालनारा, तथा त्रण ज्ञाने करीने मनोहर होवाथी बुद्धिवंत, तेम तेमणे रित अरित पण सहन करेखी हे, अर्थात् तेमां हर्ष शोक तेमणे कर्यों नथी; एवी रीते ते ते गुणोना ते जाजनरूप हे, अर्थात् रागद्वेपरहित हे एम इक आचार्योनो मत हे; तथा वीर्व कहेतां पराक्रमे करीने संपन्न हे. एवी रीतना प्रजुने देवोए "अमण जगवान् सहावीर" एवं नाम आप्युं हे. एवं नाम देवोए केम कर्युं ? तेने माटे छहीं वृद्ध संप्रदायनो मत हे.

एवी रीते उपर वर्णवेखी युक्तिए करीने सुरासुरनरेश्वरोए करेख हे जन्मोत्सव जेमनो एवा ते वीर प्रज बीजना चंद्रनी पेहे, अथवा कल्पवृक्तना अंकुरनी पेहे वृद्धि पामता यका अनुक्रमें केवा थया ? ते कहे हे. चंद्र सरखुं तेमनुं मुख थयुं, ऐरावण हाथी सरखी तेमनी चाल यह, तेमना होत खाल थया, दांतनी पंक्ति सफेद थह, केशनो समूह कालो थयो, हाथ कमल सरखा कोमल थया; श्वासोह्वास सुगंधी थयो, तथा कांतिए करीने पण ते उद्यसायमान थया. वही ते मित, श्रुत तथा अविद्वान संयुत हता, वली तेमने पूर्वजवनुं पण स्मरण हतुं, रोग रहित हता, वली मिति, कांति, धीरज आदिक पोताना ग्रणोए करीने जगतथी पण अधिक हता, तेम जगतमां तिलक समान हता.

सुबोव

॥ ६१ ॥



पा.५७

एक दहामों ते वीर कुमार कैंातुक रहित हता, तोपण समान वयवाला कुमारोना उपरोधशी तेमनी साथे क्रीडा करता थका, श्रामलकीक्रीडा करवाने माटे नगरनी बहार गया; त्यां ते कुमारो वृक्त पर चमवा छादिके करीने कीमा करता हता. एटलामां सौधर्में इ पोतानी सनामां वीर प्रजुनी धेर्यता आदिक गुणोनुं वर्णन करता हवा; तेमणे कह्यं के हे देवो! हमणांना कालमां मन नुष्यलोकमां श्री वर्क्षमान कुमार वालक हे, तोपण महा पराक्रमी हे; तेने इंडादिक देवो पण वीवराववाने समर्थ नथी; ते सांजली कोइक मिथ्यादृष्टि देवे विचार्युं के अहो ! इंडने तो पोताना स्वामिपणाना ऋजिमाने करीने निरंकुश अने विचारो विनानी, एक पुंबहुं नाखी नगरने दाटी देवा जेवां नहीं श्रद्धा आवे एवां वचनोनी चतुराइ आवी होय तेम लागे हे, के जेथी एक मतु-ध्यकीटने पण आटली हदे चमावी दे हे, माटे आजेज त्यां जइ तेने बीवरावीने इंडना वचनने हुं जुत्रुं पाडुं. एम विचारी ते देवे मनुष्यखोकमां श्रावीने सांवेखा सरखा जामा, चपल एवी बे जीजोवाला, जयंकर फुंफामावाला, अत्यंत क्र श्राकारवाला,विस्तार पामता कोपवाला,विस्तारवाली फणावाला तथा चलकता मिणवाला एवा सर्पे करीने तेणे ते कीमा करवाना वक्तने वींट्युं. ते जोइ सर्व कुमारो त्यांथी नासी गया, त्यारे श्रीवीर कुमारे जरा पण जय राख्या विना, पोते त्यां जरू, ते सर्पने हाथमां खइ दूर फेंकी दीघो. लार पठी सघला कुमारो पाग एकठा थइने दमानी रमत करते ठते ते देव पण एक कुमारनुं रूप विकुर्वीने तेमनी साथे क्रीमा करवा लाग्यो ते रमतमां नीचे प्रमाणे शरत हती. जे कोइ कुमार हारी जाय, ते जीतेला कुमारने पोतानी पीठ पर चमावे. पढ़ी ते देवकु-मारे जाणीने हारी जहने प्रजुने पोतानी पीठ पर बेसामी पोतानुं सात ताड जेटखुं उंचुं शरीर कर्युं. त्यारे जगवाने पण तेनुं खरूप जाणीने तेने पोतानी वज्र सरखी किवन मुठीयी पीठ पर मार्थों; त्यारे ते देव पण ते प्रहारनी वेदनाथी पीडित थयो थको मशकनी पेठे संकोच पाम्यो ते वार पढ़ी ते देवे शक्रनुं वचन खरुं मानीने पोतानुं खरूप प्रगट कर्युं, तथा सवलो आगलनो वृत्तांत

lain Education International

कहप्र

॥ ६१ ॥

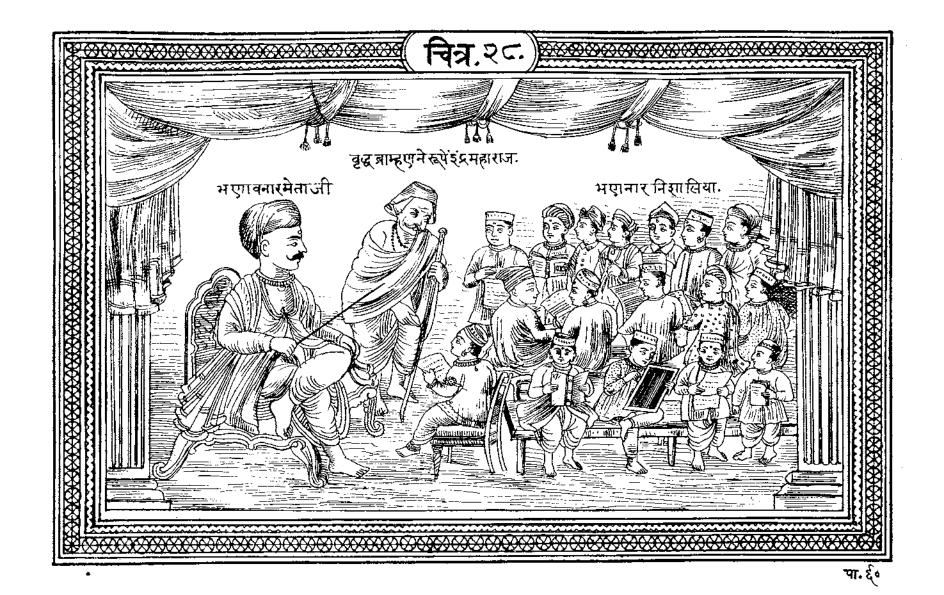
कही संजलावीने वारंवार प्रजनी तेणे कमा मागी, तथा तेम करीने ते पोताने स्थानके गयो. ते विकार विकार विकार करीने के पोताने स्थानके गयो. ते विकार विकार करीने इंडे संतुष्ट थहने प्रजनुं ''वीर" एवं नाम कर्युं एवी रीते श्रामलकीकीमानुं वृत्तांत जाणवुं. विकार विकार करीने श्रामलकीकीमानुं वृत्तांत जाणवुं. विकार विकार करीने श्रामलकीकी क्यांत क्यांत श्रामलकी

आदिक पहेरावीने पाठशालामां लइ गया ते वखते मातापिताए लग्नस्थितिपूर्वक अति हर्षित यइने घणुं धन खरचीने मोटो श्रने मृख्यवान् उत्सव कर्यो.

ते वखते हाथी तथा घोमार्ठना समूहे करीने, तथा मनोहर एवा बाजुवंध तथा हारोए क-रीने, तथा सोनानां घमावेलां एवां विंटी, कुंडल तथा कंकण आदिके करीने, तथा अत्यंत म-नोहर एवां पंच वर्णनां रेशमी कापडे करीने स्वजन आदिक राजाओनो तेमणे जिक्तपूर्वक स-त्कार कर्यों तथा पंभितने माटे नाना प्रकारनां वस्त्र, आजूषणो, नालियेर आदिक तथा निशा-लीष्टात्रोने वहेंचवा माटे सोपारी, शींगोनां, खजूर, साकर, खांम, चारोली तथा द्राक्त छादिक मनोहर खावानी वस्तुत्रो पण तेमणे साथे खीधी तथा सोना, रूपा अने रत्नोनां मिश्रणथी ब-नावेलां पुस्तकोनां उपकरणो, तथा मनोहर खमीया, बेखण तथा पाटीओ पण साथे खीधां वली सरस्वती देवीनी मूर्तिनी पूजा माटे मनोहर, नवुं तथा घणां रत्नोथी जडित एवुं सोनानुं न्रूषण, तथा निशाली आस्त्रो माटे विविध प्रकारनां वस्त्रो पण साथे लीधां. एवी रीते सघली ज-णवानी सामग्रीओ सहित कुलनी वृद्ध स्त्रीओथी तीर्थोंदके करीने स्नान करायेला, पहेरेला एवा घणा जे अलंकारो, तेस्रोए करीने कांतियुक्त थयेला, मस्तक पर मेधामंबर सरखुं धारण करेल हे हत्र जेणे एवा, चार चामरोथी वींकातुं हे छांग जेमनुं एवा, चतुरंगी सेनाथी वींटा-येला, वागतां है विविध वाजां यो जेनी यागल एवा ते वीर प्रजु पंडितने घेर जता हवा ते वखते पं िनत पण राजाना पुत्रने जणाववाने उचित एवी, तथा क्रीरसमुद्रना पाणी सरखा उज्ज्वस घोतीयां, सोनानी जनोइ, तथा केसरनां तिलक आदिकनी सामग्री करतो हवो.

सुबो०

॥ ६२ ॥



हवे ते वखते इंड्रनुं आसन हालता पीपलानां पाननी पेठे, तथा हाथीना काननी पेठे, तथा कपटीना ध्याननी पेठे, तथा राजाना माननी पेठे चलायमान थयुं. तेथी श्रवधिङ्गाने करीने ते वृत्तांत जाखा वाद इंझ देवोने कहेवा लाग्या के खहो ! आ तो मोद्धं आश्चर्य है के प्रजुने पण निशासे जणवा माटे मोकलाय हे!!! माटे ते तो जेम आंबा पर तोरण, अमृतमां मीहाश, ब्राह्मीने पावनी विधि, चंडमां सफेदाइनुं श्रारोपण, कुंदनमां सुवर्णनुं स्थापन, तथा पवित्रतानी संपत्तिने माटे शास्त्रनुं जणवुं, एटलानी माफक प्रजुने पण पाठशालामां जणवा माटे मोकलवानुं कार्य हे. तीर्थंकर प्रज पासे जे वचनो बोखवां हे, ते तो मानी पासे मामानुं वर्णन, खंका नगरी प्रत्ये स-मुझनां मोजांर्रनुं वर्णन, तथा समुझने खवणनी जेट छापवा जेवुं हे; केमके जिनेश्वरो तो ज-एया विना विद्यावान, इव्य विना परमेश्वर तथा आजूषण विना मनोहर हे, माटे एवा प्रजुर्ज त-मारुं रक्तण करो. एम कही ते इंड तुरत ब्राह्मण्डुं खरूप करीने ज्यां प्रजु हता, ते पंक्तिने घेर श्राव्यो तथा त्यां प्रज्ञने पंिततने योग्य एवा श्रासन पर वेसाडीने पंिततना पण मनमां रहेखा संदेहो प्रजुने पूठतो हवो. ते जोइ लोको विचारवा लाग्या के आ बालक ते आनो शो उत्तर दृ शकरो ? एम विचारता हता, तेटलामां श्री वीर प्रजुए तेना संघला उत्तरो दीधा. त्यारथी ''जिनेंड" नामनुं व्याकरण थयुं. ए जोइ सघला लोको आश्चर्य पाम्या, तथा पंकित पण मनमां चिंतववा लाग्यों के छहो । छा बालक एवा वर्द्धमान कुमारे पण छाटली बधी विद्यानो क्यां छ-प्यास कर्यों इशे !!! अरे ! वली आ केटलुं बधुं आश्चर्य हे के बालपणायी मने पडेला जे संदेहोनुं कोइए पण निराकरण कर्युं नहोतुं, ते सघला संदेहो आ वालक एवा पण वीर प्रजुए टूर कर्या. वली आवी विद्या जाणनारनुं आटलुं बधुं गंत्रीरपणुं !! अथवा आवा महात्मार्चने ते युक्तज है, केमके मेघ पण शरद क्रतुमां खाखी गाजे है, ते वरसतो नथी, अने वर्षा क्रतुमां जे गाजतो नथी ते वरसे हे; एवीज रीते नीच माणस पण बोखे हे, अने करतो नथी, अने ज-

कल्प**ः** ॥ ६३ ॥ त्तम माणस बोलता नथी, पण करी देखांके हे. तेमज श्रमार पदार्थनो प्राये मोटो आडंबर होय, केमके जेवो कांसानो श्रवाज थाय हे, तेवो सोनानो श्रवाज थतो नथी. इत्यादिक विचार करता एवा पंितने इंडे कह्युं के हे विप्र! तारे मनमां श्रामने मनुष्य मात्र एवा बालक नहीं जाणवा, पण श्राने तो त्रण जगतना नाथ श्रने सघलां शास्त्रोना पारने पहोंचेला एवा श्री वीर जिनेश्वर तारे जाणवा. इत्यादिक श्री वीर प्रजुनी स्तुति करीने इंड पोताने स्थानके गयो. श्री वीर प्रजु पण सघला इातकुलना क्षित्रं परिवारयुक्त थया थका पोताने घेर श्राह्या. एवी रीते प्रजुने पाठशालामां मोकलवानो श्रिधकार जाणवो.

एवी रीते प्रजुनी वाख्यावस्था गया बाद यौवन युक्त थये बते, तथा जोगो जोगववाने समर्थ थये बते प्रजुने मातापिताए ग्रुज मुहूर्त्तमां समरवीर राजानी यशोदा नामे पुत्री परणावी. तेणीनी साथे सुख जोगवतां प्रजुने एक पुत्री थइ, छने तेणीने पण कोइ मोटा राजाना पुत्र एवा पोताना जा-णेज जमाखी साथे परणावी, छने तेणीने पण शेषवती नामनी पुत्री थइ, छने ते प्रजुनी देशहित्री थाय.

श्रमण जगवंत श्री महाबीर प्रजुना पिता काश्यप गोत्रवाला हता. तेमनां त्रण नाम छा प्रमणे कहेवाय हे. एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस छने त्रीजुं यशस्वी. श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुनी मातानुं वाशिष्ठ गोत्र हतुं. तेमनां त्रण नाम छा प्रमाणे कहेवाय हे. एक त्रिशला, बीजुं विदेहित्रा छने त्रीजुं प्रीतिकारिणी. श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुना काका सुपार्श्व, मोटा जाइ नंदिवर्धन, बहेन सुदर्शना, छने स्त्री को िन्य गोत्रवाली यशोदा हती. श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुनी काश्यप गोत्रवाली पुत्री एक हती. तेनां वे नाम छावी रीते कहेवाय हे. एक छन्णों छाने वीजुं प्रियदर्शना. श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुनी कोशिक गोत्रवाली एक पौत्री हती. तेनां वे नाम छावी रीते कहेवाय हे. एक थन्णों इती. तेनां वे नाम छावी रीते कहेवाय हे. एक श्रीका स्त्री हती. तेनां वे नाम छावी रीते कहेवाय हे. एक श्रीववती छने वीजुं यशस्त्रती.

हवे दक्त कहेतां सकल कलाउंमां छुशल एवा, तथा निपुण हे प्रतिक्रा जेनी एवा, तथा सुंदर

सुबोष

॥ ६३ ॥

रूपवाला, तथा सर्व प्रकारना गुणोए करीने श्रालिंगित थयेला, तथा सरल, तथा विनयवान, तथा प्रख्यात, तथा कात कहेतां जे सिद्धार्थ राजा, तेना पुत्र, तथा केवल पुत्र सात्रज एटढ्यंज नहीं, पण ज्ञातकुलने विषे चंड सरखा, वज्रक्षजनाराच संघयण तथा समचतुरस्र संस्थानना मनोहरपणाने लीधे सुंदर हे देह जेमनो एवा, तथा वैदेहदिन्न कहेतां त्रिशलाना पुत्र एटसे विदेहां कहेतां जे त्रिशला क्रित्रियाणी, तेणीनी कुक्तिए उत्पन्न थयेलुं हे शरीर जेमनुं एवा, य-हस्थावासमां सुकुमाल एवा, (केमके दीका वखते तो परिषहो सहन करवाथी सुकुमालपणाए करीने रहित हता) श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजु त्रीश वर्ष सुधी एहस्थावासमां रहीने, मातापिता ज्यारे देवलोके गयां, त्यारे नंदिवर्धन छादिक वनीलोनी लीधेल है रजा जेमणे एवा एटसे गर्नमांज होते वते प्रतिका करी हती के मातापिताना वेठां हुं दीका खदश नहीं, एवी रीतनी प्रतिका संपूर्ण थर ने जेमनी एवा, ऋहीं धावस्यकसूत्रना ऋतिप्राये प्रजुने ऋहवावीश वर्ष वीत्या बाद तेमनां मातापिता चोथे स्वर्गे गयां, छने छाचारांगना अतिप्राये अनशन करी अच्युत देवलोके गयां. ते वार पठी प्रजुए पोताना मोटा लाइ नंदिवर्धनने कह्युं के हे राजन्! मारो श्रजियह संपूर्ण थयो हे, माटे हुं हवे दीका खद्दा खारे नंदिवर्धने कह्युं के हे जाइ! मा-तिपताना विरद्धी खिन्न थयेखा एवा मने छा वात कहीने तुं घा पर खार मेखवा जेवुं केम करे हे ? त्यारे प्रजुए कह्युं के हे जाइ! पिता, माता, चाता, बेहेन विगेरेनो संबंध आ जीव अनेक वार परस्परना स्नेहथी बांधी चुक्यो हे; माटे शामाटे आपे प्रतिबंध करवो जोइए ? त्यारे नंदि-वर्धने कह्युं के हे जाइ! ते सघ हुं हुं जाणुं हुं, पण प्राण यकी पण अत्यंत वहाला एवा जे तमो, तेनो विरह मने अत्यंत पीमा उपजावे हे, माटे मारा उपरोधयी तसे वे वर्ष सुधी घरमां रहो. त्यारे प्रजुए कह्युं के ठीक; पण है राजन्! मारा माटे तमारे कोइपण जातनो आरंज करवो नहीं; हुं प्राप्तक एवां आहार पाणी प्रहण करीने रहीश; त्यारे नंदिवर्धन राजाए पण ते कबूब कर्युं.

कहप्र

॥ ६४ ॥

तेथी बीजां वे वर्ष सुधी वस्त्रालंकारथी जूषित एवा प्रजु पण प्रासुक छने एषणीय एवा छाहारथी, सचित्त पाणीने पण नहीं पीता थका घरमां रहा। ते वारथी मांकी प्रजुए छचित्त पाणीथी पण सर्व झान कर्युं नहीं, तथा त्यारथी जीवित पर्यंत ब्रह्मचर्य तेमणे पाह्युं; पण दीक्तोत्सवमां तो सचित्त पाणीथी प्रजुए झान कर्युं हे, केमके तेवो कहप कहेतां छाचार हे। एवी रीते प्रजुने वै-राग्ययुक्त जाणीने चौद स्वभोधी सूचित एवा चक्रवर्तिपणानी बुद्धिथी तेमनी सेवा करता एवा श्रेणिक तथा चंकप्रधोत छादिक राजकुमारो पोतपोताने स्थानके गया.

एवी रीते प्रजुनी प्रतिक्वा एक बाजुए समाप्त थइ, श्रने बीजी तरफ लोकांतिक देवोए प्रजुने प्रतिबोध कर्यों. लोकांतिक एटले संसारने अंते रहेला देवो, अर्थात एकावतारी देवो, केमके जो तेम न सानीए तो ब्रह्मलोकमां रहेनारा एवा देवोने लोकांतिक पणुं घटी शकतुं नथी; ते देवो नव प्रकारना हे. तेर्नुनां नाम सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गईतोय, तुषित, अव्याबाध, अप्रि अने श्चरिष्ट. हवे प्रज जो के खयंबुद्ध हता तेथी तेवंना उपदेशनी प्रजुने जरुर नथी, तोपण श्राम करवुं ए तेमनो छाचार हे. तेज कहे हे. जीत एटले छावस्य जावे करीने हे कल्प कहेतां छाचार जे-र्जनो ते जीतक दिपक कहेवाय; एवा ते देवो इष्ट, मनोहर छादिक गुणोवाली वाणीयी प्रजुने नि-रंतर श्रजिनंदता थका तथा स्तुति करता थका एम कहेवा खाग्या के हे नंदा! कहेतां हे समृ-किवाला प्रञु! तमे जय पामो, जय पामो. हे कल्याणवान्! तमे जय पामो, जय पामो. हे जतम क्तिय! तमे जय पामो, जय पामो. हे जगवान्! हे लोकना नाथ! तमे प्रतिबोध पामो, अने सवला जगतना जीवोने हितकारी एवा धर्मतीर्थने प्रवर्तावो, केमके ते तीर्थ सर्व लोकने विषे सर्व जीवोने हितकारी, सुखकारी अने मोक्तने आपनारुं थहो,एम कही तेर्र जय जय शब्द करवा लाग्या.

हवे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने तो मनुष्यने छचित एवो जे विवाहादिक ग्रहस्थधर्म तैथी हैं। पहेलांज, श्रनुपम तथा छपयोगवालां तथा केवलक्कान छपजे त्यां सुधी स्थिर रहे एवां श्रवधिक्कान हैं सुबो०

॥ ६४ ॥



पाद्ध



पा.६२

अने अवधिदर्शन तो हतांज;तेथी ते अनुत्तर अने आजोगिक ज्ञान दर्शने करीने पोताना दीक्ता-कालने जाणता हवा, अने जाणीने रूपुं,सोनुं, धन, राज्य, देश तथा एवी रीते सेना,वाहन, धनना जंनार, श्रमाजना जंनार, तेमज नगर, श्रंतः पुर, देशवासी लोकने तजी दहने तथा घणां एवां धन, सुवर्ण,रत्न, मणि, मुक्ताफल, शंख, स्फटिक, प्रवाल,रक्त रत्न प्रचुख उत्तम सार वस्तु उने तजी दहने, तथा वली हुं करीने ? तो के विशेष प्रकारे ते सचलुं तजीने, तथा वली हुं करीने ? तो के ते सुवर्ण छादिकने छस्थिर मानीने, ते सघढुं याचको प्रत्ये जागे पमतुं वहेंची छापीने, छथवा आटलुं आने देवुं, आटलुं आने देवुं, एम विचार करीने, तथा गोत्री प्रत्ये तेनो जाग पामी आ-वीने प्रज नीकछा। आ सूत्रे करीने प्रजुनुं वार्षिक दान सूचव्युं, श्रने ते नीचे प्रमाणे जाणवुं. जगवान दीकाना दिवसथी पहेलानुं एक वर्ष बाकी रहे त्यारे प्रातःकाले वार्षिक दान देवा मांडे हैं; अने ते दान स्योंदयथी मांकीने कल्पवर्तवेला पर्यंत आपे; एवी रीते हमेश प्रत्ये प्रज एक कोक ने आठ लाख सोनैया आपे. वली "जेने जे जोइए, ते लो" एवी रीतनी उद्घोषणापूर्वक जे कंद्र जेने जोइए, ते प्रजु तेने आपे हे, अने ते सघलुं प्रव्य इंप्रना हुकमधी सघला देवो प्रं पानी आपे. एवी रीते एक वर्षमां त्रणसो अध्यासी कोम अने एंशी लाख सोनैया देवाय. ते वर्षिदाननुं अहीं कि वर्षन करे हे के वरसतुं एवं जे ते वर्षिदान, तथी नाश अयेल हे जगवान् दी हाना दिवसथी पहेलानुं एक वर्ष बाकी रहे त्यारे प्रातःकाले वार्षिक दान देवा मांडे

दारिद्यरूपी दावानलो जेर्जना, अने तैयार करेला एवा घोडार्जनी पंक्ति, वस्र तथा आजूषणोधी नथी उंखली शकाती कांति जेउंनी एवा मागण लोको ज्यारे पोताने घेर दान लइने पाठा आव्या, ्री त्यारे तेमनी स्त्री चेए पण जेलली नहीं शकवाथी सोगन स्त्रादिक दहने तेजेने खात्री करवी पनी, तथा केटलाक मश्करा लोकोए तो पोतानुं हसवुं रोकीने तेमने कह्युं के हे खामिन्! तमो कोण हो? एवी रीते दान दहने फरीने जगवाने नंदिवर्धनने पूछ्युं के हे राजन्! तमारा कहेवा प्रमाणे

एवी रीते दान दइने फरीने जगवाने नंदिवर्धनने पूट्युं के हे राजन्! तमारा कहेवा प्रमाणे हवे श्रविध संपूर्ण थयो हे, माटे हवे हुं दीक्षा खां हुं. ते सांजली नंदिवर्धने पण ध्वज, तोरण

क्ष्पण

॥ ६५ ॥

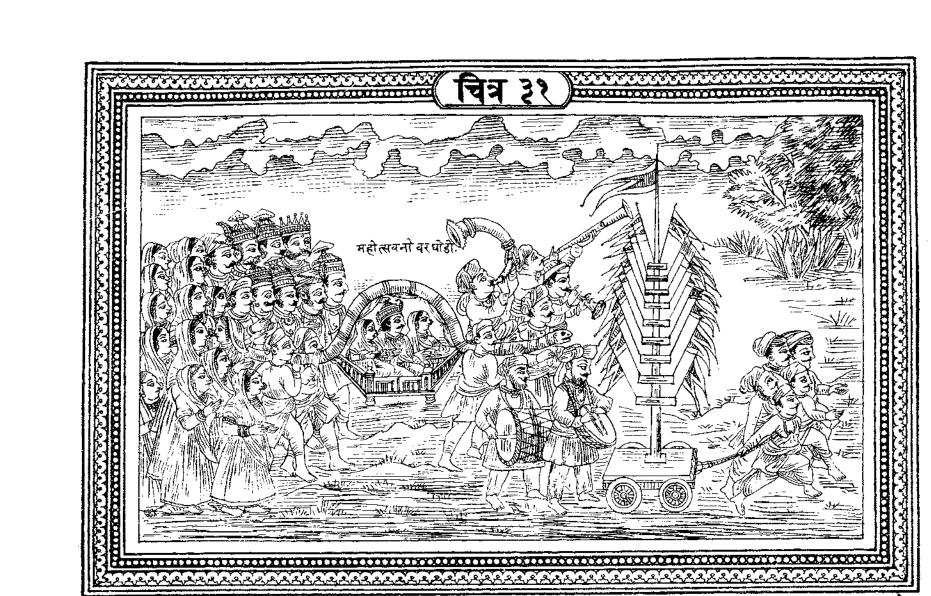
विगेरेची बजार तथा आ कुंमपुर नगरने देवलोक सरखुं बनाव्युं ते वार पठी नंदिवर्धन राजा तथा इंड आदिके सोनाना, रूपाना, मणिना, सोनारूपाना, सोनामणिना, रूपामणिना, सोना रूपा मणिना, तथा माटीना, दरेकना एक हजार ने आठ कलशो तथा बीजी पण सघली सामग्री करावी.

ते वार पठी श्राच्युतेंद्रादिक चोसर्व इंद्रे अनिषेक करते ठते, ते देवोए करेला कलशो, देव संबंधी प्रजावथी राजाए करावेखा कलशोमां पेठा, अने तेथी तेर्ड अत्यंत शोजवा खाग्या पडी नंदिवर्धन राजाए प्रजुने पूर्व सन्मुख वेसामीने देवोए खावेखा कीरसमुद्रना पाणीथी तथा सर्व तीर्थनी माटीथी तथा सर्वे औषधित्रेथी अजिषेक कर्यों ते वखते इंडो हाथमां कारी तथा आ-रिसार्ज सहित जय, जय शब्द करता थका श्रगामी उना रहा। एवी रीते प्रजुने स्नान कराव्या वाद गंधकाषाय्य नामना वस्त्रथी खुबेक्षुं वे शरीर जेनुं, तथा दिव्य चंदनथी क्षेपनयुक्त करेलां वे गात्र जेनां, तथा कटपवृक्षनां पुष्पोनी मालाउंथी मनोहर थयेल हे कंहनो जाग जेनो, तथा जेना हेमार्जमां सोनुं जडेक्षुं हे एवां स्वन्न, जन्जवल तथा लाखोनां मूख्यनां श्वेत वस्त्रोथी वींटायेक्षं हे शरीर जैनुं, तथा हारथी शोजतुं हे वक्तःस्थल जेनुं, तथा बाजुबंध अने कमांर्रथी शोजतो हे जुज-दंम जेनो, तथा कुंमलथी शोजता हे गाल जेना एवा प्रज्ञ, श्रीनंदिवर्धन राजाए करावेली तथा पचास धनुष्य खांबी, श्रमे पचीश धनुष्य पोहोली, तथा बत्रीश धनुष्य उंची, तथा घणा स्तंत्रोधी शोजती, तथा मणि अने सुवर्णयी विचित्र लागती, तथा दिव्य प्रजावयी अंदर समायेखी हे देवोए करेखी पण पालखी जेमां, एवी चंडप्रता नामनी पालखीमां बेसीने दीका क्षेत्रा माटे चालवा लाग्या.

बाकीनुं वर्णन सूत्रकार पोतेज कहे हे.

ते कालने विषे तथा ते समयने विषे जे आ शियालानो पहेलो मास अने पहेलुं पलवाकीयुं ते माग-शर मासनो कृष्ण पक्त,तेनी दशमीने दिवसे,पूर्व दिशा प्रत्ये ठाया जते पाठलनी पोरसी संपूर्ण होते ठते, अने ते पण प्रमाणने प्राप्त होते ठते, एटले जरा पण न्यूनाधिक नहीं, एवी रीते होते ठते सुवत नामना सुबोव

॥ ६**५ ॥**



पा.६२

दिवसे, विजय नामना मुहर्ते, करेख हे हठनो तप जेमणे, तथा शुद्ध हे खेश्या जेमनी, एवा ते प्रजु आगल वर्णवेसी चंडप्रजा नामनी पालखीमां, पूर्व दिशा सन्मुख सिंहासन पर वेठा त्यां प्रजुनी जमणी बाजुए कुलनी महत्तरिका हंसनां लक्तणे करी युक्त एवा पटशाटकने लइने बेठी, तथा डाबी वाजुए प्रजुनी धावमाता दीकानां उपकरणो खद्दने बेठी, तथा पाठलना जागमां एक तरुण स्त्री उत्तम श्रृंगार पहेरीने तथा हाथमां श्वेत ठत्र लइने बेठी, ईशानखुणामां एक स्त्री संपूर्ण ज-रेलो कलश लइने बेठी, अग्निखुणामां एक स्त्री मणिमय एवो हाथमां पंलो लइने सिंहासन पर वेठी; पढी नंदिवर्धन राजाए हुकम करेला माणसो जेटलामां ते पालखी उपाडे हे, तेटलामां शकेंद्रे दक्षिण तरफनी उपरनी वाहा उपामी, ईशानैंद्रे उत्तर तरफनी उपरनी बाहा उपामी, च-मरेंडे दिक्षण तरफनी नीचेनी बाहा जपामी, तथा बलींडे उत्तर तरफनी नीचेनी बाहा जपामी, श्चने वाकीना जवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा वैमानिकना इंद्रो के जेर्ड चलायमान यतां कुंमल आदिक आजरणोए करीने मनोहर खागता हता, तथा पंच वर्णनां पुष्पोनी दृष्टि करता हता, तथा इंडुनि वगामता हता, तेर्ड पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे ते पालखीने उपामता हवा. पठी शकेंड तथा ईशानेंड ते वाहाने होडीने प्रजुने चामर वींजवा लाग्या. एवी रीते प्रजु पालखी पर चमते वते देवोए करीने गगनतल शरद क्तुमां रहेला पद्म सरोवर सरखं, प्रफुल्लित अयेला अल्राना वन सरखुं, करेणना वन सरखुं, चंपाना वन सरखुं तथा तिलकना वन सरखुं मनोहर रीते शोजवा लाग्युं. तेम श्रंतर रहित वागतां एवां जंजा, जेरी, मृदंग, छछित तथा शंख श्रा-दिक अनेक वाजित्रोना नादो आकाशतलमां विस्तार पामवा लाग्या, अने ते नादथी नगरनी स्त्री जे पोतपोतानां कार्यों तजीने आवती यकी पोतानी विविध प्रकारनी चेष्टाउंथी माणसोने आ-श्चर्य करती हवी. कह्युं हे के त्रण वानां स्त्रीर्डने वल्लग हे. एक जगमो, बीजुं काजल, त्रीजुंसिंडूर. वसी पण त्रण वानां बीजां अत्यंत वह्नज है। एक टूध, बीजो जमाइ अने त्रीजुं वाजुं. तेनी चे।

सुवोष

कहप्र० ॥ ६६ ॥ ष्टार्ज नीचे प्रमाणे हे. केटसीक बालिकार्ज जस्तुकपणाधी पोताना गालो पर काजलना अंको करती हवी, श्रने श्रांखमां कस्तुरी नाखती हवी, गंखामां नूपुर पहेरती हवी, तथा पगमां कंगो पहे-रती हवी. कोइए तो केन पर हार पहेर्यों, तथा घमघमती घुघरीवाखो कंदोरो गंखामां पहेर्यों, तथा गोशीर्ष चंदनथी पगने रंग्या, अने अलताथी शरीरने रंग्युं कोइक वालिका तो अर्धु स्नान करेखी, श्रने तेथी गखतुं हे पाणी एवी तथा हुटा हे केश जेणीना एवी पहेखां त्रास, तथा जाएया बाद कोने हास्य न करावती हवी? कोइक मुग्ध वालानां वस्त्रो ढीलां थेइ खसी जवाथी तेणी हाथमां केवल नामी पकमीनेज रहेली हती, तोपण सवला लोको प्रजुने जोवामां लागते ठते तेणीने जरा पण शरम लागी नहीं कोइक तरुण स्त्री तो उत्सुकपणाधी पोताना रडता वाल-कने तजीने, तथा हाथमां तेने बदले बीलामाने लइने, केम पर बेसामीने रस्ते जती थकी कोने हास्य नहीं करावती हवी? कोइक स्त्री तो कहेवा खागी के प्रजुनुं छहो महा रूप ! छहो तेज! खहो शरीरनुं सौनाग्य केवुं हे!!! हुं तो विधात्राना हाथनी खा चतुराइ जोइ तेनां **डुःख ल**ुं. विकखर थयेल हे कपोल जेणीना एवी कोइक स्त्री तो प्रजुनुं मुख जोवामां अत्यंत लोलुप थवाथी पोतानां पनी गयेखां सोनानां आजूषणोने जाणती पण न इती. कोइक चंचख नेत्रवाखी स्त्री तो पोताना इस्तकमलथी पवित्र मोतीर्ज जमामवा लागी छाने केटलीक तो संगलोने कोमल स्वरघी गावा लागी, तथा केटलीक तो हर्षथी संपूर्ण थइने नाचवा लागी.

स ६६ ॥

तेटलाज जत्तम पुरुषो, ते वार पठी अनुक्रमे घोका, हाथी, रथ तथा पालानां सैन्यो, ते वार पठी एक हजार नानी पताकार्रथी मंंकित थयेलो तथा एक हजार जोजन उंचो एवो ध्वज, ते वार पठी खड़ धरनारार्ज, ते वार पठी जालांवालार्ज, ते वार पठी ढालवालार्ज, ते वार पठी हास्य क-रावनारां है, ते वार पढ़ी नर्त करनारा है, ते वार पढ़ी जय जय शब्द करती कंदर्पिका है, ते वार पढी घणा उपकुलना जोगकुलना राजाउं, क्तियो, कोटवालो, मांमलिको, कौदुंबिको, शेठी-आर्ड, सार्थवाहो, देवो, देवीर्ड विगेरे प्रजुनी स्थगामी चालता हता, ते वार पढी खर्ग, मृत्युलोक श्रने पातालमां रहेनारा देव, मनुष्य श्रने श्रमुरो सहित एवी पर्षदाए करीने सारी रीते श्रनुग-मन करातुं, तथा श्रगामी शंख वगामनारार्च, चक्र धारण करनारार्च, इल धारण करनारार्च एटखे गलामां सोनानां लांगलना आकारनां आजूषण धरनारा जह विशेषो, मुख्यी चादु वचन बोलनारा माणुसो, पोतानी खांध पर वेसाडेल वे माणुसो जेर्डए एवा माणुसो, तथा मागुध एटसे बिरुदावसी बोलनारा माणसो, तथा घंटा लइ चालनारा राउलीश्रा माणसो, ते सघलाउंथी वींटायेला प्रजुने कुलना विमल खादिक खजनो, इष्टादिक विशेषणोवासी वाणीउंए करीने प्रजुने खितनंदता यका बोलवा लाग्या के "जय जय नंदा, जय जय जहा नहं ते" एटले हे समृद्धिमन् ! तथा हे जडकारक ! तमे जय पामो, तमने जड थार्ड. तथा श्रजित एवी इंडियोने श्रतिचार रहित एवां क्वान, दर्शन, चारि-त्रथी वश करो. तथा तमोए वश करेल एवा श्रमणधर्मने तमे पालो. वली हे प्रजु !तमोए विधने जीत्या हे, तोपण तमे सिद्धि मांहे जइ वसो स्त्रर्थात् तमे त्यां मोक्तमां स्रंतराय रहित रहो. तथा रागद्वेषरूपी मझनो तमे निश्चेयपूर्वक नाश करो. शाथी ? तो के बाह्य अने अप्यंतर एवां त-पथी. तथा संतोष अने धैर्यतामां प्रवीण थया थका आठ कर्मोरूपी रात्रु वंतुं मईन करो शायी ? तो के उत्तम एवा शुक्क ध्यानथी. वली है वीर ! अप्रमत्त थया थका त्रण लोकरूपी जे महायुद्धनो श्रवामो, तेनी श्रंदर श्राराधनपताकाने तमे बहुण करो तथा तिमिर रहित एवं श्रनुपम जे के-

कहप०

11 E3 11

वसङ्गान तेने मेखवो छाने मोक्षरूपी परम पदने तमे प्राप्त थार्ड. केवी रीते ? तो के जिनेश्वर प्रजुए कहेला श्रकुटिल मार्ग बने करीने हुं करीने ? तो के परिषहोनी सेनाने हणीने तथा है क्तियने विषे वृषत्र समान ! तमे जय पामो, जय पामो तथा घणा दिवसो सुधी, घणां पखवामीयां सुधी तथा घणा महिना सुधी, तथा घणी एवी हेमंत आदिक बे मासना परि-माणवासी क्तुरं सुधी, तथा घणी रमासीरं सुधी, तथा घणां वर्षो सुधी, उपसगींथी निर्नय थया थका, विजली, सिंह आदिकना जयोने क्तमाए करीने सहन करता थका तमे जय पामो. वली तमारा धर्ममां विद्योनो श्रजाव थात्रो. एम कही खजन लोको जय जय शब्दो करवा लाग्या ते वार पढ़ी श्रमण जगवंत श्री महावीरखामी क्वित्रयकुंम नगरनी मध्यमां घइने ज्यां क्वातखंम नामे वन हतुं तथा ज्यां अशोक वृक्त हतुं, त्यां आव्या. केवी रीते आव्या? तो केहजारो एवां नेत्रोनी पंक्तियी जोवाता, तथा वारंवार जोवातुं हे सोंदर्य जेमनुं एवा; वली केवा ? तो के श्रेणिवंध य-येखा लोकोनां मुखनी हजारो गमे पंक्तिजंथी वारंवार स्तुति कराता; वखी केवा ? तो के हजारो गमे हृदयनी पंक्तिर्रंथी तमे जय पामो, जीवो, इत्यादि ध्याने करीने समृद्धिने पमानाता; वली केवा ? तो के हजारो गमे मनोरथोनी पंक्तिथी विशेष प्रकारे स्पर्श कराता, अर्थात आपणे एमना सिवक थइए तो सारुं, एवी रीते लोकोथी चिंतवाता; वली केवा ? तो के कांति, रूप श्रने गुणोए करीने प्रार्थना कराता, अर्थात् स्वामिपणाए करीने वांठा कराता; वली केवा ? तो के आंगली-उनी हजारो पंक्तिथी देखामाता; वली केवा ? तो के जमणा हायथी हजारो स्त्रीपुरुषोना नम-स्कारोने यहण करता; वली केवा ? तो के जबनोनी हजारो गमे श्रेणिउने उल्लंघन करता: वली केवा ? तो के वीणा, तखताख, वादित्र, गीत, वादन विगेरेना शब्दोधी, तथा मध्रश्रमे मनोहर एवा जय जय शब्दना उद्घोषणयी मिश्रित थयेला एवा श्रिति कोमल मनुष्योना शब्दे करीने सावधान थता तथा, समस्त छत्रादिक राज्यचिह्ननी कृष्टिए करीने तथा, छाजूषण छादिकनी सर्व प्र- सुबोध

॥ हम्र ॥

कारनी कांतिए करीने, तथा हाथी, घोमा आदिक सर्व प्रकारनी सेनाए करीने, तथा शिबिकादिक सर्व प्रकारनां वाहने करीने, तथा सघला महाजनोना मेलापे करीने, तथा सर्व प्रकारना आदरे करीने, तथा सर्व प्रकारनी संपदाए करीने,तथा समस्त शोजाए करीने, तथा सर्व हर्षश्री थता जस्सकपणाए क रीने, तथा सर्व स्वजनोना मेलापे करीने, तथा छढार एवी निगमादिक नगरमां रहेती प्रजाउंए करी-ने, तथा सर्व नाटकोए करीने, तथा सर्व तालचरोए करीने, तथा सर्व अंतःपुरे करीने, तथा सर्व पुष्प. गंध, माख्य छने छालंकारोनी शोजाए करीने, तथा सर्व वाजित्रोना एकठा मलता एवा शब्दे छने प्रति-रवे करीने, तथा मोटी इद्धिए करीने,तथा मोटी युतिए करीने, तथा मोटा बख एटक्षे सैन्ये करीने, त-था मोटा वाहने करीने, तथा मोटा समुद्ये करीने, तथा श्रेष्ठ वाजित्रोतुं समकाक्षे वागवुं हे जेमां एवा शंख, ढोख, पटह, जेरी, फल्लरी, खरमुखी, हुकुक श्रने देवछं छ जिना यता शब्दना प्रतिशब्दरूप मोटा शब्दे करीने युक्त,एवा प्रकारनी क्रिक्रयी व्रत क्षेत्रा माटे जता प्रजुनी पाठल चतुरंगी सेनाथी वींटायेलो तथा मनोहर वत्र चामरथी शोजतो एवो नंदिवर्धन राजा पण जवा लाग्यो. उपर वर्णवेला आमम्बरे करीने युक्त एवा जगवान् इत्रियहंम्याम नगरना मध्य जागमां यहने नीकसे हे, अने नीकसीने ज्यां क्ञातखंग्वन नामे उद्यान हे अने जे उद्यानमां उत्तम अशोक नामे वृक्ष हे त्यां प्रशु आव्या अने छावीने ते वृक्तनी नीचे प्रजुए पालखीने स्थापन करावी. तथा ते स्थापन करावीने तेमांथी प्रजु नीचे उतर्या एम करीने प्रजु पोतानी मेक्षेज घरेणां, माला प्रमुख आजूषण आदिकने उतारवा लाग्या. ते एवी रीते के आंगलीएथी वींटी है, हाथ परथी वीरवलय, जुजा परथी बाजुबंध, कंठथी हार, कानथी कुंमल तथा मस्तक परथी मुकुट पण जतायों ते सघलां आजूषणो कुलनी महत्तराए हंसबक्षणवाली सामीमां सीधां. ते बइने तेणीए "इख्खागकुलसमुप्पन्नेसि णं तुमं जाया "इत्यादि पाठ कहाो. एम कही प्रजुने वांदीने ते एक बाजु खसी गइ. ते वार पढी प्रजुए एक मुष्टियी माढी मुढना वालोनो, तथा चार मुष्टियी मस्तक परना केशोनो, एम पंच मुष्टियी पोतानी मेक्षेज लोच

कहप०

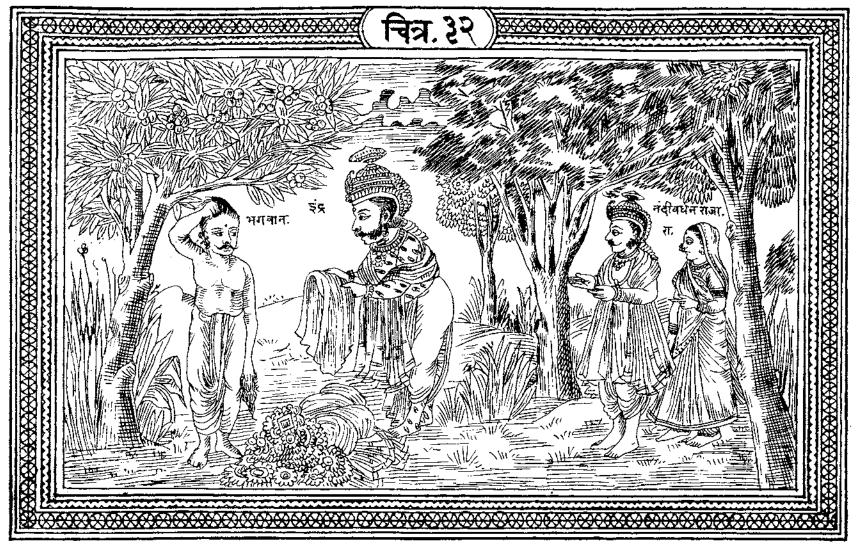
॥ ६७ ॥

क्षीकर्यों. तेम करीने पाणी पीधा वगर छन्ना तप सहित, उत्तराफाब्युनी नक्तत्र साथे चंद्रनो योग आवते उते इंडे माबा खना पर धारण करेला एक देव हूष्य वस्नने खद्दने प्रज एकला एटसे 👸 रागद्वेषनी सहाय विना, श्रद्धितीय एटखे जेम क्षत्रदेव प्रजुए चोसठ हजार राजाउँ साथे, मब्लिनाथ अने पार्श्वनाथजीए त्रणसो साथे, वासुपूज्यजीए उसो साथे, तथा बाकीना जिनेश्व-रोए जेम एक हजार साथे दीका खीधी हती, तेम वीर जगवाननी साथे कोइ पण नहोतुं, तिथी छद्वितीय एटक्षे एकाकी, तथा इब्यथी केशलोचे करीने मुंडित थयेला तथा जानथी कोधादिकने दूर करवाथी मुंकित थयेला घरथी नीकली आगारीपणानो त्याग करी एटले अना-गारताने (साधुपणाने) प्राप्त थया. तेनो विधि नीचे मुजब जाणवो एवी रीते उपर कहेवा प्र-माणे कर्यों ने पंचमुष्टि लोच जेणे एवा ते प्रज ज्यारे सामायिक करवाने इन्नता हवा, त्यारे इंडे सघलो वाजित्र श्रादिकनो कोलाहल वंध कराव्यो. त्यार पठी प्रजुए "नमो सिद्धाएं" इत्यादि कथनपूर्वक "करेमि सामाइयं सब्वं सावजं जोगं पचकामि" इत्यादि पाठ उचारण कर्यों; पण "जंते"एवो पाठ बोख्या नहीं, केमके एवो तेमनो कख्प कहेतां आचार हे. एवी रीते चारित्र प्रहण कर्युं के तुर-तज प्रजुने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वार पठी इंद्रादिक देवो प्रजुने वांदीने नंदी-श्वर घीपनी यात्रा करीने पोतपोताने स्थानके गया.

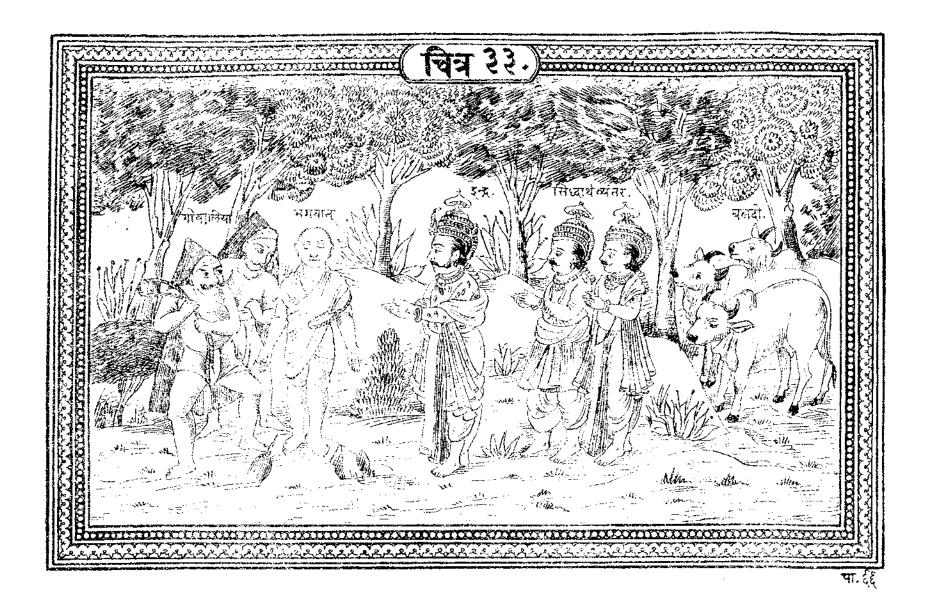
एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेखी कढ्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना ग्रजराती जाषांतरमां पांचमो क्रण समाप्त थयो. श्रीरस्तुः ॥ षष्ठं व्याख्यानं प्रारप्यते ॥

ते वार पठी चार ज्ञानवाला जगवान् वंधुवर्गनी रज्ञा लड्ने विहार करवा लाग्याः वंधुवर्ग पण ज्यांसुधी प्रजु दृष्टिगोचर रह्या, त्यांसुधी त्यां ठेरीने "हे वीर" हवे छमे तमारा विना शून्य वन सरखा घेर प्रत्ये केम जइशुं ? वल्ली हे बंधु ! कोनी साथे छमे वातचित करीने सुख जोग- सुबोण

॥ इत् ॥



पा. ६५



वीशुं ? तथा हवे कोनी साथे जोजन करीशुं ? वली हे आर्थ! सघलां कार्योमां हे वीर! हे वीर! एम बोलावीने तमारां दर्शनथी तथा अतिशय प्रीतियी अमे हर्ष पामता हता. हवे आश्रय विनाना अमे कोनो आश्रय लड्शुं ? वली हे बांधव! अमारी आंलोने अमृतांजन सरखुं तमारं अतिप्रिय दर्शन हवे अमोने क्यारे थशे ? वली हे उत्तम गुणोए करीने मनोहर! रागरहित चित्तवाला एवा पण तमे अमोने क्यारे संजालशो ? एम बोलता थका अश्रु सहित आंलोवाला थया थका केटलाक कृष्टियी पोताने घेर गया।

हवे प्रजुने दीकामहोत्सव वखते देवोए जे गोशीर्षचंदन आदिकथी तथा पुष्पोए करीने पूज्या हता, तेनो सुगंध चार महीनाधी पण अधिक प्रजुना शरीर पर रह्यो हतो, अने ते गंधथी खेंचाइने जमराठ आवीने प्रजुने मंख देवा लाग्या केटलाक युवानीआठ प्रजु पासे ते सुगंधी मागवा लाग्या, पण प्रजु तो मौन रह्या, तेथी तेठ कोधायमान थइने प्रजुने आकरा उपसर्गों करता हवा. स्त्रीठ पण प्रजुने अझुत रूपवंाला तथा सुगंध युक्त शरीरवाला जोइने कामातुर थइ थकी आनुकूल उपसर्गों करती हती, पण प्रजु तो मेरुनी पेठे स्थिर थया थका ते सधलुं सहन करता थका विहार करवा लाग्या. हवे ते दिवसे वे घनी दिवस वाकी हतो, त्यारे प्रजुकुमारप्राम प्रत्ये पहोंच्या, तथा त्यां रात्रिए कायोत्सर्गध्यानमां रह्या.

एटलामां कोइ गोवाली इशाखो दिवस हलमां बलदोने जोमीने संध्यावखते तेउने प्रजनी पासे मूकीने गायो दोवा माटे घर गयो, श्राने ते वेलो तो वनमां चरवा माटे चाछा गया पठी ते गोवालीए श्रावीने प्रजने पूछ्यं के हे श्रार्थ! मारा बलदो क्यां हे ? पण प्रज बोल्या नहीं, त्यारे तेणे जाएयुं के श्राने खबर नशी, तेशी तेउनी वनमां ते शोध करवा लाग्यो पठी बलदो तो थोमी रात्रि बाकी रही त्यारे पोतानी मेलेज प्रज पासे श्राव्या ते वखते गोवाली एण त्यां श्राव्यो, श्राने बलदोने जोइ तेणे विचार्यं के श्रहो! श्राने खबर हती, तोपण तेणे मने श्राखी रात जमाव्यो

कृद्प०

॥ ६ए॥

एम विचारी कोधथी रासमी लइ मारवा माटे ते प्रज तरफ दोड्यो एटलामां इंडे ते इत्तांत अव-धिक्वानथी जाणीने गोवालीआने आवीने शिक्वा करी.

पठी इंद्रे प्रजुने विनंति करी के हे प्रजु! तमोने घणा उपसर्गों घवाना हे, माटे बार वर्ष सुधी वैयावृत्य माटे हुं आपनी पासेज रहुं. त्यारे प्रजुए कहां के हे देवेंड ! एवं कदापि घयुं नघी, घतुं नघी, छने घको पण नहीं, केमके तीर्थंकरों कोइ देवेंड अथवा असुरेंडनी सहायघी केवलज्ञान उपार्जन करता नघी, पण फक्त पोतानांज पराक्रमधी केवलज्ञान उपार्जन करे हे. त्यारे इंड पण मरणांत उपसर्गने टालवा माटे प्रजुनी मासीना पुत्र सिकार्थ व्यंतरने प्रजुनी वैयावृत्य माटे स्थापीने पोते देवलोंके गयो.

ते वार पठी प्रजुए सवारमां कोल्लाग नामना सन्निवेशमां बहुल नामना ब्राह्मणने घेर "मारे पात्र सिहत धर्म प्ररूपवो" एम विचारी पहेल्लं पारणुं त्यां ग्रहस्थना पात्रमां परमान्नश्री कर्युं. ते वखते चेलो-त्हेप, गंधोदकनी वृष्टि, छंछि जिनो नाद, "श्रहो दानमहो दानं" इत्यादि उद्घोषणा, तथा वसु-धारानी वृष्टि, एम पांच दिव्यो प्रगट थयां.

त्यांथी प्रज विहार करीने मोराक नामना सिन्नवेशमां छइक्तंत नामना तापसना आश्रममां गया. लां सिद्धार्थ राजानो मित्र एवो ते कुलपित प्रज पासे आव्योः प्रज पण प्रवेरियासथी मलवा माटे हाथ पहोला कर्या. पठी तेनी प्रार्थनाथी प्रज पण एक रात्रि तिहां रहीने पोते निरागी चित्तवाला हता, पण तेना आग्रहथी त्यां चोमासुं रहेवानुं कबुल करीने प्रज बीजी जगोए विहार करवा लाग्याः आठ मास सुधी विहार करीने पाठा प्रज वर्षाकृत गालवा माटे त्यां आव्याः तथा त्यां आवीने कुलपितए आपेली धासनी छुंपनीमां रह्याः त्यां वहारना जागमांथी घास नहीं मलवाथी अन्य तापसोए पोतपोतानी छुंपनीमांथी निवारण करेली गायो प्रजुषी मंनित थयेली छुंपडीने निःशंकपणाथी लावा लागीः त्यारे ते छुंपनीना स्वामीए कुलपित आगल तेनी राव

सुबोध

ા કૃષ્ણા

खाधी. लारे कुलपित पण प्रजुने खावी कहेवा लाग्यों के हे वर्धमान ! पद्दी उपण पोतपोताना मालानुं रक्षण करवामां दक्ष होय हे, खने तुं तो राजपुत्र थइने पोताना खाश्रमनुं रक्षण करवाने केम खराक्त थाय हे ? लारे प्रजुए विचार्युं के मारा खहीं रहेवाथी खामने खप्रीति थाय हे, एम विचारी छाताम सुदि पूनमधी मांमी पंदर दिवसो गया बाद वर्षाकालमां पण प्रजु पांच ख्रित्रमहो लइने खस्थिकग्राम प्रत्ये गया ते पांच अतिग्रहो नीचे प्रमाणे जाणवा अप्रीति छपजे एवा घरमां मारे वास करवो नहीं, हमेशां प्रतिमा धारीने रहेवुं, एहस्थीनो विनय करवो नहीं, मौन रहेवुं तथा हाथमांज ख्राहार करवो.

हवे एवी रीते श्रमण जगवंत श्री महावीर खामी एक वर्ष श्रने एक मास सुधी वस्त्रधारी रह्या, तथा ते वार पठी वस्त्ररहित रह्या, तथा हाथरूपीज पात्रवाला रह्या प्रजुनुं वस्त्ररहितपणुं नीचेना वृत्तांतथी जाणुवुं

प्रज्ञुए दीक्ता क्षीधा बाद एक वर्ष छने एक मास गया बाद दिक्तणवाचाल नामना नगरनी पासे सुवर्णवाद्यका नामनी नदीने किनारे कांटामां जरावाथी श्रधुँ देवदूष्य वस्त्र पढ़ी जते उते प्रज्ञुए सिंहावलोकनथी तेनी पाठल दृष्टि करी. छहीं केटलाको कहे ठे के ममताथी प्रज्ञुए पाठल जोयुं; छने बीजा केटलाको कहे ठे के ते स्थंिनल जगो पर पड्युं के छस्थंिमल जगो पर पड्युं, ते जोवा माटे प्रज्ञुए पाठुं वाली जोयुं; छने केटलाको कहे ठे के छमारी संतितमां वस्त्र पात्र सुलज या फुर्लज थशे, ते जोवा माटे पाठुं वाली जोयुं, तथा केटलाक वृद्धो वस्त्री एम कहे ठे के कांटामां वस्त्र जरायुं, तेथी पोतानुं शासन कंटकबहुल थशे एम विचारी पोते निर्लोजी होवाथी ते छर्युं वस्त्र प्रजुए पाठुं लीधुं नहीं.

हवे ते वस्त्र प्रजुना पिताजीना मित्र एवा कोइ ब्राह्मणे लीधुं, छने अर्धुं तो प्रजुए तेने पहे-लांज छापी दीधुं हतुं. ते वृत्तांत नीच प्रमाणे जाणवुं. कद्प०

11 20 11

ते बाह्मण दरिडी हतो, पण प्रज ज्यारे वार्षिक दान देता हता, त्यारे ते परदेशमां गयो हतो. त्यां पण जर्जाग्यपणाश्री कंइ नहीं मलवाश्री घेर पाठो आव्यो, त्यारे स्त्रीए तेनी तर्जना करी के है अज्ञाग्यमां शिरोमणि! ज्यारे श्रीवर्धमान प्रजुए सुवर्णनों वरसाद वरसादयों, त्यारे तुं परदेश गयो हतो, अने हवे पाठो पण तुं निर्धनज रहीने आद्यो, माटे दूर जा, मोद्धं देखाम मां. अ-थवा तो हजु पण ते जंगम कल्पवृक्त सरखा प्रजुपासे जह याचना कर, के जेथी ते तारुं दरिड़ी-पणुं हरें; केमके जेणे पहेलां दान दीधां हे, ते फरी पण आपवाने समर्थ श्रहो, केमके पाणीना अर्थी माणसो सुकाइ गयेलो एवो पण नदीनो मार्ग खोदे हे. एवी रीतनां स्त्रीनां वाक्योथी प्रे-रायेलो ते ब्राह्मण प्रजुनी पासे आवीने विनंति करवा लाग्यो के हे प्रजो! तमे जगतना उपकारी डो, तमोए सघला जगतनुं दारिद्य निर्मूल कर्युं हे, अने हुं निर्जागी ते वखते त्यां नहीं हतो, अने मने परदेशमां जमतां चका पण कंइ मब्युं नहीं, माटे पुएय रहित तथा विनानो श्रने निर्धन एवो हुं जगतनां वां वितने आपनार एवा आपने शरणे आव्यो हुं, आखा जगतनुं दारिद्य हरनार एवा आपने मारुं दारिद्य हरवुं ए शुं हिसाबमां वे जरी दीघेल हे सघक्षुं महीतल जेणे, तथा छाड़्त शक्तिवाला एवा वरसादने एक तुंबंदु ज-रवा माटे द्युं प्रयास पनी शके तेम हे ? एवी रीते याचना करता करता एवा ते ब्राह्मणने करु-णावंत जगवाने ऋर्धुं देवटूष्य वस्त्र आप्युं. ऋहीं केटलाक आचार्यों कहे हे के एवा दानेश्वरी जगवाने पण प्रयोजन विनाना वस्त्रनुं पण जे ऋर्धुं दान दीधुं, ते प्रजुनी संततिमां यनारी वस्त्रपात्रनी मूर्वा सूचवे हे, श्रने बीजार्ड कहे हे के पहेलां जे विषकुलमां उत्पन्न थया हता, तेना ते संस्कार हे. इवे ते ब्राह्मणे ते अर्ध वस्त्र लइने तेना छेमार्ड वणवा माटे एक वणकरने बताव्युं. त्यारे ते वणकरे पण कह्युं के हे विप्र ! तुं तेज प्रजुनी पाठल इजु जा ते निर्मम श्रने करुणावंत एवा विणकरे पण कह्युं के हे विप्र ! तुं तेज प्रजुनी पाठल हुजु जा ते निर्मम श्रमे करुणावंत एवा

सुवोण

|| OC ||

ते छक्त जेवुं देखाहो छने तेवुं एक लाख सोनामोहोर जेटलुं मृख यहो, छने पढ़ी छापणे ते धन वहेंची लह्छुं, तेथी छापण वहेनुं दारिद्य चूर्ण यहो. एवी रीते तेणे प्रेरणा करेलो ब्राह्मण फरीने पाठो प्रजु पासे छाट्यो, पण लङ्काथी मागणी कर्या विना एक वर्ष सुधी प्रजुनी पाठल जम्यो, छने पठी पोतानी मेले पकी गयेलुं ते छाईं वस्त्र लहने चालतो थयो; माटे एवी रीते प्रजुए सवस्त्रधर्म प्रकृपवा माटे एक वर्ष छने एक मास सुधी वस्त्र धारण कर्युं, छने सपात्रधर्म स्थापवा माटे पहेलुं पारण गहस्थना पात्रमां प्रजुए कर्युं, छने त्यार पठी ठेक जीवित पर्यंत प्रजु वस्त्र तथा पात्र विना रह्या.

एवी रीते विहार करता एवा प्रज्ञनी कोइ दिवसे गंगाने कांठे सूझ्य माटीवाला कादवमां प्रतिबिंबित थयेली पदपंक्तिमां चक्र, ध्वज, श्रंकुश श्रादिक लक्षणोंने जोइने पुष्पक नामनो सामुद्रिक विचारवा लाग्यों के श्रहींथी कोइ चक्रवर्ती एकाकी चाल्यों जाय हे, माटे जइने हुं तेनी
सेवा करुं, के जेथी मारों मोटो उदय थाय. एम विचारी तुरत ते पगलांने श्रनुसारे चालीने ते
प्रज्ञनी पासे श्राव्यो, श्रने तेमने जोइ विचारवा लाग्यों के श्ररे! हुं तो फोकटज मोटुं कष्ट वेठीने पण सामुद्रिकशास्त्र जएयो; जे श्रावी रीतनां लक्षणयुक्त थइने पण साधु थइ व्रतकष्टने
श्राचरे हे; माटे सामुद्रिकशास्त्रनुं पुस्तक तो हवे मारे पाणीमांज बोलवुं.

एटलामां दिशिल वे जपयोग जेणे एवो इंड तुरत त्यां श्रावीने प्रजुने नमस्कार करीने ते पुप्यक्तने कहेवा लाग्यो के हे सामुडिकवेता! तुं खेद कर नहीं; तारुं शास्त्र सत्यज वे; श्रा लक्रणश्री त्या प्रजु त्रणे जगतने पूजनीक, तथा सुरासुरना पण खामी, तथा सर्व प्रकारनी जत्तम
संपदाना आश्रयज्ञत एवा तीर्थंकर थहो; केमके आ प्रजुनी काया परसेवाना मेल रहित वे,
श्वासोश्वास सुगंधी वे, रुधिर तथा मांस गायना इध सरखां श्वेत रंगनां वे, तथा इत्यादिक
बाह्य अने अन्यंतर एवां एमनां अनेक सुलक्षणोने गणवाने कोण समर्थ वे ? इत्यादिक तेने
कहीने, तथा तेने मणि, सुवर्ण आदिकथी समृद्धिवान् करीने इंड पोताने स्थानके गयो ते सा-

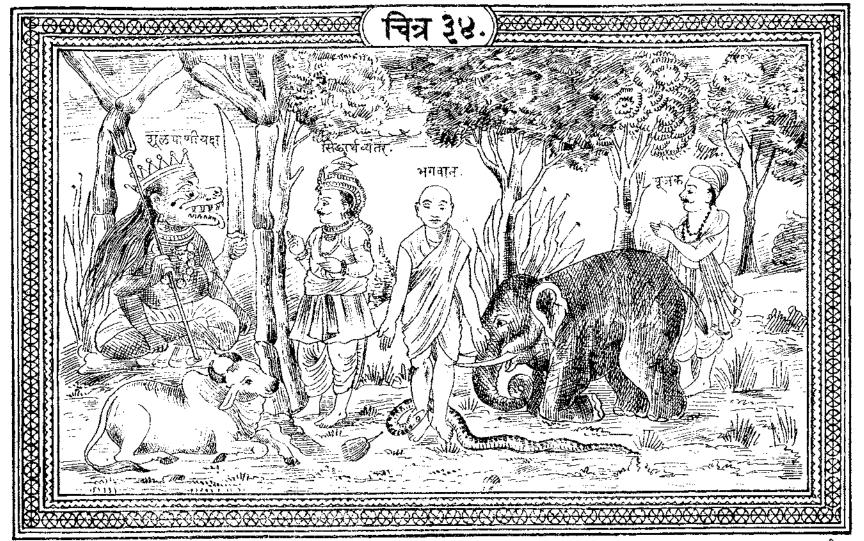
कृहप्रव

H 25 H

मुद्भिकवेता पण हर्ष पामीने पोताने देश गयो, तथा प्रज पण बीजी जगोए विहार करवा लागा. हवे श्रमण जगवान् श्री महाबीर प्रज बार वर्ष उपरांत कांइ थोना वखत सुधी नित्य कायाने वोस-राबीने छने शरीर उपरथी ममताने तजीने रह्या हता, एवामां जे कोइ उपसर्ग तेमने उपज्या हता ते जे छा कहेवामां छावे छे ते देवे करेवा, मनुष्ये करेला, जोगप्रार्थनारूप छनुकूल उप-सर्गों, तामनादि प्रतिकूल उपसर्गों, ते उत्पन्न थयेला उपसर्गोंने प्रजुए निर्नयपणे सम्यक् प्रकारे सहन कर्या, कोध कर्या विना खम्या, दीनता कर्या विना सहन कर्या छने निश्चलपणाथी सहन कर्या, होवे संबंधी, मनुष्य संबंधी तथा तिर्यंच संबंधी छनुकूल तथा प्रतिकूल विगेरे जे उपसर्गों सहन कर्या हे, तेनुं वर्णन करे हे.

प्रजु पहें बुं चोमासुं मोराक नामना सन्निवेषधी आवीने ज्ञूलपाणि यक्तना चैत्यमां रह्या. तेयक्त पूर्व जनमां धनदेव नामे वेपारीनो बलद हतो. ते वेपारी नदी उतरतो हतो, ते वारे तेनां पांचसो गा-मां कादवमां खुंची बेठां. त्यारे जल्लसायमान थयुं हे वीर्य जेनुं एवा ते वृषने मादी बाजुए जोमाइने विचार्य के जो माराज कनका करीने बन्ने पनखें मने जोड़े, तो हुं एकलोज सघलां गामां खेंची ला-बुं, एम विचारतां ते**णे सघलां गामां अकादवमां थी खेंची का**ढ्यां. एवी रीते पराक्रम कर्याथी ते बल-द शरीरना सांधार्च त्रुटी जवाथी श्रशक्त यह गयो. त्यारे तेने त्रश्रक्त जोइने धनदेवे वर्धमान नामे गाममां जइ गामना मुखीर्टने तेने माटे घास पाणी विगेरेना पैसा छापीने ते बेखने त्यां मुक्यो, पण ते मुखीउं ए तेनी सारसंजाल सीधी नहीं, तेथी जूल अने तृषाथी पीमित यइ शुज अध्य-वसायना योगधी मृत्यु पामीने व्यंतर थयो. त्यां तेणे श्रागला जन्मनो व्रतांत याद लावीने को-धथी तेगाममां मरकी फेलावीने घ्यनेक माणसोने मारी नाख्या- ''केटलाकनो ते संस्कार याय" एम विचारी ममदां तेमनां तेम पमी रहेवाथी तेर्ननां हामकांर्नना समूह उपरथी ते गामनुं श्र-स्थिकप्राम एवं नाम प्रसिद्ध थयुं. पठी बाकी रहेखा लोकोए तेनुं छाराधन करवाथी तेणे प्रत्यक्त थ- सुबो∘

11 98 11



पा. ६८.

इने पोनानुं देवल तथा प्रतिमा करावी. त्यां माणसो तेनी हमेशां पूजा करता हता. जगवान् पण तेने प्रित्वोधवा वास्ते तेज चैत्यमां आव्याः लोकोए प्रजुने कह्युं के आ छ्रष्ट यक्त पोताना चैत्यमां जे रात्रि रहें है, तेने मारी नाखे हे, एम लोकोए वार्या हतां पण प्रजु त्यांज रात्रि रह्याः तेणे प्रजुने क्लोज पमा कवा माटे पृथ्वी फाटी जाय एवी अट्टहास कर्यों. पही हाथीनुं अने सर्पनुं रूप करीने छः सह उपसर्गों कर्या, तोपण प्रजु तो जरा पण कोजायमान थया नहीं। पही अन्यनो जीव जाय एवी तेणे प्रजुने मस्तकमां, कानमां, नासिकामां, चक्कमां, दांतमां, पीहमां नखमां विगेरे अनेक सुकुमाल स्थानकोमां वेदना करवा मांगी, तेथी पण प्रजुने निष्कंप जोइने ते प्रतिवोध पाम्योः तेज वखते सिद्धार्थ व्यंतर पण त्यां आवी तेने कहेवा लाग्यो के हे निर्जागि, छुष्ट, शुलपाणि!तें आ शुं आचर्छं? जे तें इंडने पण पूजनीक एवा प्रजुनी आशातना करीः जो आ वात इंड जाणशे, तो तारा स्थाननो पण ते नाश करशेः ते सांजली शुलपाणि पण जय पामीने प्रजुने पूजवा लाग्यो, तथा तेमनी आगल गायन अने नाच करवा लाग्यो. ते सांजली लोकोए विचार्युं के आणे ते प्रजुने मार्या हे, तथी गाय हे, अने नाचे हे.

हवे त्यां प्रजुए एक देश ऊणा एवा रात्रिना चार पोहोरो सुधी जे अत्यंत वेदना सहन करी, तेथी प्रजाते तेमने क्षणवार निद्धा खाबी. ते बखते प्रजु उजा थकांज दश खप्तो जोइने जाग्या. हवे प्रजात थयुं एटक्षे लोको एकठा थया. ते बखते त्यां उत्पल खने इंडशर्मा नामे छष्टांग नि-मित्तना जाणनारा वे निमित्ति छाउं पण छाव्या. तेउं सघलाउंए प्रजुने दिव्य गंध, चूर्ण, पुष्प छादिकथी पूजित जोइने हर्ष सहित नमस्कार कथों.

पठी उत्पत्त निमित्ति बोढ्यों के हे जगवन्! आपे रात्रिने ठेडे जे दश खप्तो जोयां ठे तेउनुं फल आप तो जाणो ठो, तोपण हुं कहुं हुं. जे आपे तालिपशाचने हण्यो, तेथी करीने तमो योगाज वख-तमां मोहनीय कर्मने हणशो तथा सेवा करतुं एवुं आपे जे श्वेत पद्गी जोयुं, तेथी तमो शुक्क-ध्यानने धारण करशो जे तमे चित्र कोकिलने सेवा करतो जोयो, तेथी तमो द्वादशांगीनो अर्थ

11 32 11

विस्तारशो. जे तमोए गायोनो वर्ग सेवा करतो जोयो, तेथी साधु,साध्वी,श्रावक स्रने श्राविकारूप च-तुर्विध संघ आपनी सेवा करशे. वली जे आपे खप्तमां समुद्रने तथों, तेथी आप संसारने तरी जशो. वली आपे उगतो सूर्य जोयो, तेथी आपने तुरत केवलङ्गान उत्पन्न यहो. वली आपे आंतरमां-जेथी जे मानुषोत्तरने वींट्यो, तेथी करीने तमारी कीर्ति त्रण छवनमां थहो. वली आप जे मं-दराचलना शिखर पर चड्या, तेथी आप सिंहासन पर वेसीने देव अने मनुष्यनी पर्षदामां ध-र्मने प्ररूपशो. वली आपे जे देवोए करीने शोजायुक्त ययें सुं पद्मसरोवर जोयुं, तेथी करीने आ-पने चारे निकायना देवो सेवशे. वली आपे जे मालानुं युग्म जोयुं, तेनो अर्थ हुं जाणी शकतो नथी. त्यारे जगवाने कह्युं के हे जलल ! जे में मालानुं युग्म जोयुं, तेथी हुं साधुधर्म तथा आवकधर्म, एम बे प्रकारना धर्म प्ररूपीश. पठी ते उत्पत्न पण प्रजुने वांदीने चालतो ययो. त्यां प्रजु स्नाठ अर्धमा-सक्तपणे करीने ते चोमासुं अतिक्रमण करीने मोराक नामना सन्निवेशमां गया. त्यां प्रतिमा धारीने रहेखा प्रजुना शरीरमां तेमना सत्कार माटे सिद्धार्थ व्यंतरे दाखल थइने निमित्तो कहेते वते, प्रजुनो महिमा फेलायो. एवी रीते प्रजुना थता महिमाने जोइने श्रहंदक नामना त्यां रहेता निमित्तिष्ठाए गुस्से यइने तृण्छेदना विषयमां प्रश्न करते वते सिद्धार्थे कह्युं के नहीं वेदाय: एम कहेते वते जेवो ते वेदवा जाय वे के तुरत उपयोगपूर्वक इंडे त्यां खावीने वज्रथी तेनी खांगली वेदी नाखी. पत्नी रुष्ट अयेला सिकार्थे लोकोने जणाव्युं के आ निमित्ति चोर हे. त्यारे लो-कोए पूड्युं के शी रीते ? त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के छा माणसे वीरघोष कर्मकरनो दश पलना प्र-माणनो वाटको चोरीने खजुरीना इक नीचे राख्यो हे, तथा इंडशर्मानो घेटो पण ते खाइ गयो हे, तेनां हामकां पोतानां घर श्रागल रहेली बोरमी नीचे तेणे दाव्यां हे, श्रने तेनुं त्रीजुं द्रवण 🥻 तो मुखर्थी कही शकाय तेवुं नथी, ते तेनी स्त्रीज कहेशे. त्यारे माणसोए जह तेनी स्त्रीने पूछ- 🖔 ता मुख्या कहा शकाय तुषु नया, त जान जान गरुर विवासी ग्रम्सायी कह्युं के हे माणसो !

11 32 11



पा. ई्४)

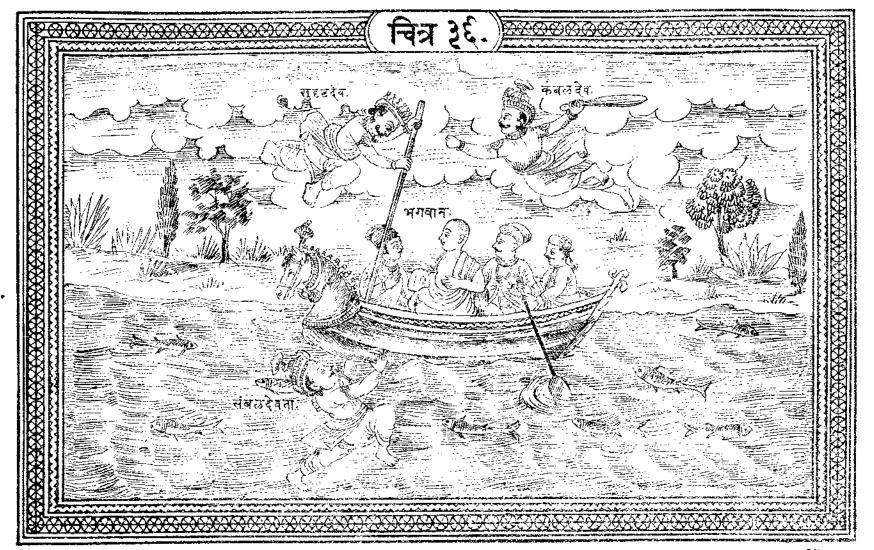
जेनुं मुखपण जोवाखायक नथी एवो ते घुष्ट हे,केमके ते तो पोतानी बेनने पण जोगवे हे.त्यारे ते निमिन्तिए अत्यंत खज्जायुक्त यह एकांतमां आवीने प्रजुने विनंति करी के हे स्वामिन्! आप तो विश्वपूज्य हो अने सर्व जगोए पूजाशो, अने मारी तो अत्रेज आजीविका हे.त्यारे प्रजुए तेनी अप्रीति जाणीने त्यांथी विहार क्यों; अने श्वेतांबी प्रत्ये जतां यका लोकोए वार्या हतां पण कनकखल नामे तापसना आश्रममां चंमकोशिकने प्रतिबोधवा माटे प्रजु त्यां गया.

ते चंनकौशिक आगला जवमां महा तपस्वी साधु हतो; पारणाने दिवसे गोचरी जतां ययेली देनकीनी विराधनाने प्रायश्चित्तपूर्वक पिकक्षमवा मार्टे ईर्यापिश्वकी प्रतिक्रमण वखते, गोचरी प्रति-क्रमण वखते तथा संध्याकालना प्रतिक्रमण वखते एम त्रण वार कोइ लघु शिष्ये तेने संजाली दीधाथी कोधायमान थइ ते खघु शिष्यने मारवा माटे दोड्यो,पण वच्चे स्तंत्रमां श्रथमाइ मृत्यु पामी ज्योतिष्क देव थयो. त्यांथी चवीने ते आश्रममां पांचसें तापसोनो चंमकेंशिक नामे अधिपति थयो. त्यां पण पोताना छाश्रमनां फलोने ग्रहण करता एवा राजकुमारोने जोइने ग्रस्से थयो थको तेमने मारवा तैयार थयो श्रने हाथमां कुहानी खद्दोनतां कूवामां पनी गयो. त्यां एवी रीते क्रोधयुक्त मरण पामीने तेज आश्रममां पूर्वजवना नामवालो दृष्टिविष सर्प थयो. ते सर्प प्रजुने प्रतिमामां रहेला जोइने कोधथी बलतो थको सूर्य तरफ जोइ जोइने दृष्टिज्वाला मुकवा लाग्यो श्रने मुकीने तेणे विचार्यं के श्रा प्रजुपडता थका मने न दाबो एम धारीने ते हूर हट्यो, पण प्रजुने तो आगखनी पेठे निश्चल जोइने अत्यंत कोधातुर यइने तेणे प्रजुने कंख मार्या, तोपण प्रजुने अव्याकुल जोइने तथा प्रजुना रुधि-रने पण कीर सरखुं जोइने तथा ''बुज्ज बुज्ज चंनकोसिया" एम प्रजुनां वचनने सांजलीने थये खुं हे जातिस्मरणज्ञान जेने एवो ते चंनकौशिक सर्प प्रजुने त्रण प्रदक्तिणा दक्ष्ने श्रहो! करुणासागर एवा प्रजुए मने छुर्गतिरूपी कूवामांथी जद्धयों, इत्यादि प्रकारनुं मनमां चिंतवन करीने अनशन बइएक पखवामीया सुधी विक्षमां पोतानुं मुख राखोने रह्यो. त्यां घी छादिक वेचनारी स्त्रीजिए कहपण

11 53 11

तेने घी आदिक नाखीने पूज्यो; अने ते घी आदिकनी गंधयी त्यां आवेसी कीमी उंथी अत्यंत है पीका पामतो तथा प्रजनी दृष्टिरूपी अमृतथी सिंचातो थको मृत्यु पामी सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. पढी प्रजु पण त्यांथी बीजी जगोए विहार करी गया. पढी उत्तरवाचालामां नागसेने प्रजुने क्तीर वोराव्युं. त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां. त्यांथी श्वेतांबी नगरीमां प्रदेशी राजाए प्रजुनो महिमा कर्यो त्यांची सुरितपुर प्रत्ये जता प्रजुने पांच रथ खावीने नैयका गोत्रवाखा राजार्ज वांदता हवा. त्यांथी सुरिनपुर नगरे प्रद्य गया त्यां गंगा नदीने कांठे सिक्रयात्र नाविक स्रोकोने नाव पर चडावतो हवो, जगवान् पण ते नावमां चढ्या. ते श्रवसरे घुवडनो शब्द सांज-सीने देमिल नामना निमित्तिए कह्युं के छाजे छापणने मरणांत कष्ट छावरो, पण छा महात्माना प्रजावथी ते संकटनो नाश यशे एवी रीते गंगा नदी उतरतां प्रजुना त्रिष्टवा जवमां मारेखा सिंहना जीव सुदंष्ट्र नामना देवे नाव बुमामवा खादिकतुं विव्यकर्युं, पण कंबल खने शंबल नामना नाग-कुमारोए आवीने ते विव्न निवार्युं. ते बन्नेनी उत्पत्ति नीचे प्रमाणे जाणवी. मथुरा नगरीमां साधु-दासी छने जिनदास नामे बे स्त्री जरतार हता, तेर्च परम श्रावक हता, तेथी पांचमा वतमां सर्वथा प्रकारे चोपगां पशुर्र राखवानुं पचलाण तेमणे कर्युं हतुं. त्यां एक जरवामण पोतानुं गोरस खावीने साधुदासीने छापती इती,श्रने तेथी ते पण तेणीने यथोचित द्रव्य छापती इती.एवी रीते केटलेक काले तेर्ज बन्नेमां अत्यंत प्रीति यइ. एक दहामों ते जरवामणे पोताने घेर विवाह आववाश्री ते बन्ने स्त्री जरतारने निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेउंए कह्युं के अमे त्यां आवी शकीशुं तो नहीं, पण तमारे विवाहमां जे कंइ वस्तु जे जोइए, ते अमारे घेरथी सेवी. पढी तेर्जए दीधेलां चंडवादिक उपकरणो तथा वस्त्र, आजूषण,धूप आदिकथी ते जरवामणनो विवाह अत्यंत उत्कृष्टो थयो;तेथी ते जरवाड तथा जरवामणे खुशी थइने अत्यंत मनोहर तथा समान वयवाला एवा बे बालवृषजो लावीने तेमने आप्याः तेर्जनी इन्हा नहोती, तोपण तेर्ज ते बेलोने तेने घेर पराणे बांधीने पोताने घेर गयाः त्यारे ते वेपारीए विचार्थं खुर्री थइने अत्यंत मनोहर तथा समान वयवाला एवा वे बालपृषत्रो लावीने तेमने आप्याः तेर्जनी दें इहा नहोती, तोपण तेर्ज ते बेलोने तेने घेर पराणे बांधीने पोताने घेर गयाः त्यारे ते वेपारीए विचार्यं

सुबो•



ায়া, ৬০

ठने घेर बांध्या. रोठे तेमने एवी अवस्थावाला जोइने आंखोमां आंसु लावी खावा आदिकनां पच-काण करावी नवकार आदिकथी तेमनी निर्यामणा करी. पढी त्यांथी तेर्च बन्ने मृत्यु पामीने नाग-कुमार देवो थया; ते त्यां नवा उत्पन्न थया के तेउंए उपयोग दीधाथी बन्नेमांथी एके ते नावनुं रक्षण कर्युं, तथा बीजो ते प्रजुने उपसर्ग करता सुदंष्ट्र देवनी सामो थयो. त्यार पढी तेने जीतीने जगवाननां सत्त्व तथा रूपनुं गायन करता तथा नाचता थका महोत्सवपूर्वक सुंगंधी जल श्रने पुष्पनी वृष्टि करीने तेर्ड पोताने स्थानके गया-

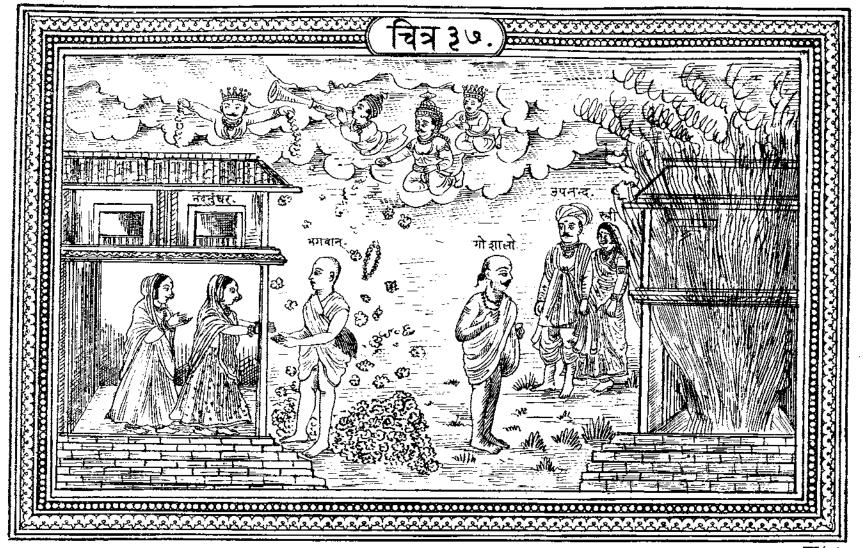
जगवान् पण राजगृही नगरीमां नालंदा नामना पामामां शालवीनी शालाना एक जागमां तेनी रजा लक्ष्मे पहेलुं मासक्तपण करीने रह्याः त्यां मंखिल नामे मंख (चित्रकला जाणनार जिक्काचर विशेष) नी सुजदा नामनी स्त्रीने पेटे पुत्र थयो हतो.ते बहुल नामना ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो हतो,माटे तेनुं गोशालो नाम पाड्युं हतुं ते मंखिकशोर जगवान् पासे श्राव्यो त्यां जगवानने मासक्तपणने पारणे विजय नामना शेते कूर श्रादिक विपुल जोजन विधिए करीने वोराव्युं, तेथी त्यां प्रगट थयेलां पंच दिव्यादि महिमाने जोइने ते गोशाले जगवानने कह्युं के हुं तमारो शिष्य ढुं पढ़ी बीजे पारणे नंद शेते

11 38 11

पक्वान्न छादियी, तथा त्रीजे पारणे सुनंद होते परमान्न छादियी प्रजुने प्रतिलाज्या चोथा मास-क्रपणे प्रजु कोल्लाग नामे सन्निवेशमां पधार्या. त्यां बहुल नामे बाह्मणे प्रजुने छथपाक वोराव्यो. त्यां पण पंच दिव्यो प्रगट थयां.

हवे गोशालो पण प्रजुने ते तंतुशालामां नहीं जोइने श्राला राजगृह नगरमां शोधतो थको पोतानुं उपकरण ब्राह्मणोने श्रापीने मुख तथा मस्तकने मुंनावीने कोल्लागमां जगवानने जोइने "तमारी दीका मने होजो"एम कहीने तेमनी साथे रहेवा लाग्यो.प्रजुपण ते शिष्यनी साथे सुवर्णखल नामे गाम तरफ चाख्या.मार्गमां गोवालीयार्जं एक मोटा वासणमां छथपाक पकावता हता,ते जोइ गोशाले जगवा-नने कह्युं के आपणे अहीं जोजन करीने चालीशुं. त्यारे सिद्धार्थें कह्युं के ते वासण जांगी जरो, तेथी गोवाखीयार्डए यत वंडे तेनुं घणुं रक्षण कर्युं, तोपण ते वासण जांगी गयुं त्यारे गोशाखे एवो निश्चय कयों के जे यवानुं हे ते थाय हेज, एवो नियतिवाद छंगीकार कयों. ते वार पही प्रज्ञ ब्राह्मण्याम प्रत्ये गया. त्यां नंद अने उपनंद नामे वे जाइउना वे पामा हता. प्रजुए नंदना पामामां प्रवेश कयों त्यां नंदे प्रजुने वोराव्युं. गोशालो उपनंदना पामामां गयो. त्यां वासी खन्न उपनंदे वोरा-व्याथी ते ग्रस्ते थयो, स्रने शाप दीधो के मारा धर्मा वार्यनुं जो तपतेज होय, तो स्रानुं घर बली जार्जः त्यारपढी प्रजुनो महिमा राखवा वास्ते नजदीकमां रहेला देवे तेनुं घर बाली नारूयुं. पढी प्रजु चंपा नगरीमां आव्या. त्यां द्विमासक्तपणे करीने ते चतुर्मास रह्या. हेह्ना द्विमासनुं पारणुं चंपानी बहार करीने कोल्लाग सन्निवेशमां गया त्यां शून्य घरमां ते कायोत्सर्गध्याने रह्या गोशाखे पण तेज घरमां रहीने सिंह नामे एक ग्रामणीपुत्रने विद्युन्मती दासीनी साथे कीडा करतां जोइ हांसी करी, त्यारे तेणे गोशालाने मार्यो.त्यारे तेणे प्रजने कह्युं के मने एकलानेज छहीं छाणे मार्यो,पण छापे तेने केम निवार्यों नहीं ? त्यारे सिद्धार्थें कह्युं के फरीने तुं एवं करीश नहीं. पठी प्रज पातालक प्रत्ये गया, तथा त्यां शून्य घरमां रह्या. त्यां पण गोशाखे स्कंदने पोतानी दासी स्कंदिखा साथे क्रीमा करतां सुबोध

11 86 11



पा.७१

जोइ हांसी करी, खने तेथी त्यां पण तेणे प्रथमनी पेठे मार खाधो. पठी प्रजु कुमारक नामे सन्निवेशमां 🛱 जइने चंपारमणीय नामना उद्यानमां कायोत्सर्गध्याने रह्या त्यां पार्श्वनाय प्रजुना शिष्य मुनिचंड मुनि घणा शिष्योना परिवार सहित कुंजारनी शाखामां रह्या हता. तेना साधुर्वने जोइ गोशाखे कह्युं के तमो कोण हो ? त्यारे तेउंए कह्युं के स्रमो निर्गंथ हीए त्यारे फरीने गोशाखे कह्युं के तमों क्यां तथा श्रमारा ग्रह क्यां ? त्यारे ते हैए कह्युं के जेवो तुं हे, तेवा तारा धर्माचार्य पण हशे. त्यारे गोशाक्षे गुस्से थइने कह्युं के मारा धर्माचार्यना तपथी तमारो आश्रम बली जार्ड. त्यारे तेर्रं कह्युं के स्रमोने कंइ तेनी बीक नथी. पठीयी तेणे स्रावी सघलो वृत्तांत कही बताव्यो. त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के ते साधुर्व कंइ बली शके नहीं रात्रिए जिनकल्पनी तुलना करता मुनिचंड मुनि का जस्सग्गमां हता, ते वखते मदोन्मत्त एवा कुंजारे चोरनी बुद्धिथी तेमने मार्या, तेथी श्रविधान जलक थया बाद ते मृत्यु पामी खर्गे गया. पठी तेना महिमा माटे देवोए त्यां उद्योत कर्यो, त्यारे गोशाक्षे कह्युं के स्रहो ! स्रा तेमनो उपाश्रय बक्षे हे. पही सिद्धार्थे तेने खरी वात जणाववासी ते त्यां जइ तेना शिष्योने निजृंढीने पाठो छाटयो.पढी प्रजु चौरा प्रत्ये गया.त्यां प्रजु छने गोशालाने हुपी खबर खइ जनारा जासुस जाणीने श्वारक्षकोए (श्वगक)हेडमां नाखवा मांड्यात्यां प्रथम गोशाखाने श्व**गर**मां नाख्यो,पण प्रजुने हुजु नाख्या नथी,तेटलामां त्यां जत्पल निमित्तिखानी सोमा खने जयंती नामनी वे बहे-नो के जेर्ड संयम पासवाने असमर्थ थइने परिव्राजिकार्ड थइ हती,तेर्डए प्रजुने जोइ अने डेलखीने ते संकटथी होमाव्या.पही प्रजु पृष्ठचंपा प्रत्ये गया.त्यां प्रजु चोमासुं चतुर्मासक्तपण वडे निर्गमन करीने तथा बहारना जागमां ते पारीने (पारणुं करीने) कायंगख नामें सिन्नवेश प्रत्ये जइने श्रावस्ती नगरीए गयाः त्यां बहारना जागमां कायोत्सर्गध्यानमां रह्या. त्यां सिद्धार्थं गोशालाने कह्युं के आजे तुं मनु-ष्यनुं मांस खाइश पठी ते सांजली ते पण तेनुं निवारण करवा माटे वाणी आर्जने घेर जिक्ता माटे जमवा लाग्यो. त्यां पितृदत्त नामे विणक रहेतो हतो, तेनी स्त्री मरेल बालकने जन्म आपनारी हती. तेणीने

कस्प□

॥ ७५ ॥

शिवदत्त नामे निमित्तिए ढोकरां जीववानो जपाय कह्यो के 'तारे तारा मरी गयेखा बालकनुं मांस प्रधपाकनी साथे मिश्रित करीने कोइ जिक्ककने आपवुं'. त्यारे तेणीए तेज विधिपूर्वक गोशालाने ते छाप्युं, श्रने घर बाली नाखवानी बीकथी घरनुं बारणुं तेणीए बदलावी नार्ख्युं. गोशासो पण तेनुं स्वरूप नहीं जाणतां तेनुं तक्षण करीने तगवान् पासे आव्यो. सिद्धार्थे तेने सघसो वृत्तांत कही बताव्याची तेणे वमन करीने तेनो निश्चय कर्यो, तथा पढी तेणीनुं घर बालवा चाढ्यो, पण घर नहीं मलवाथी तेणे प्रजुने नामे ते पानोज बाली नाख्यो. त्यांथी प्रजु दरिफ सन्निवेशनी बहार हरिद्र वृक्तनी नीचे प्रतिमा धारीने रह्या. त्यां पंथितंए सलगावेला श्रप्ति वडे प्रजु नहीं खसवाथी तेना चरणो दाज्या; ते जोइ गोशालो त्यांथी नासी गयो त्यांथी प्रज नामे गाममां वासुदेवना स्थानके प्रतिमाधी रह्या. त्यां बालकोने बीवराववा माटे श्रांखोना विकारो करता गोशालाने ते बालकोनां माबापोए मार्यो श्रने मुनिपिशाच कहीने तेनी उपेका करी. त्यांथी प्रजु श्रावर्त गाममां बलदेवने स्थानके प्रतिमाथी रह्या. त्यां पण ठोकरांउने बीवराववा माटे गोशालो मुखना चाला करवा लाग्यो. त्यारे तेर्जनां माबापोए विचार्युं के व्या तो गांको हे, माटे श्याने मारवाशी हुं हे ? एना गुरुनेज मारवा. एम जाणी जेवा तेर्ड प्रजुने मारवाने श्राव्या के तुरत ते बलदेवनी मूर्तिए हाथमां इल लइने तेरेने वार्या,त्यारे ते सर्वे पण प्रजुने नमवा लाग्या. त्यार पढी प्रजु चोराक सन्निवेश गया त्यां मंग्रपने विषे जोजन रंधातुं जोइने गोशाखो वारंवार नीचो नमीने तक जोवा खाग्यो. त्यारे खोकोए चोर जाणीने तेने मार्यो. यारे तेणे गुस्से थइने प्रजुना नामथी ते मंगपने बाली नाख्यो. त्यार पढी प्रजु कलम्बुका सिन्नवेश प्रत्ये गया त्यां मेघ छने कालहस्ति नामे वे जाइ इता. तेमां कालह स्तिए प्रजुने उपसर्ग कर्या छने मेघे तेमने उल्लीने खमाव्या, त्यार पठी प्रजु क्लिष्ट कमोंनी निर्जरा करवाने अर्थे लाट देश प्रत्ये गया. त्यां हीलना आदि घणा घोर उपसर्गों लोकोए कर्या पढी पूर्णकलश नामे अनार्य गाममां जता जगवानने मार्गमां बेचोर मख्या तेउं जगवानने

सुबोव

॥ ५५ ॥

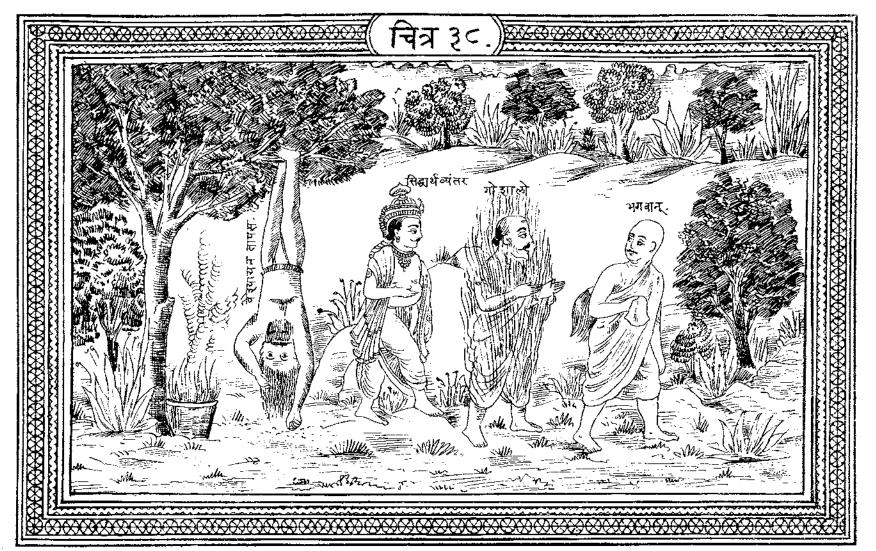
देखी श्रपशुकन थयां जाणी खड्ग खड़ने मारवा दोड्या, त्यारे उपयोग दीघो हे एवा इंडे वज्र वडे तेर्रंने मारी नाख्या. त्यांथी प्रज्ञ जिका नगरीमां चोमासुं करीने तथा चतुर्मासक्तपणनुं पारणुं बहार करीने श्रनुक्रमे तंबाखयाम प्रत्ये गया. त्यां पार्श्वनाथ प्रजुना संतानीय नंदिषेण नामना आचार्य बहु शिष्योना परिवार सहित प्रतिमा धारीने रह्या इता. त्यां आरक्षकना पुत्रे चोरनी बुद्धियी तेने जालायी इएया, अने अवधिज्ञान पामीने ते देवलोके गया. अहीं पण गोशा-लानां वचन श्रादिकनो वृत्तांत मुनिचंद्रनी पेठेज जाणी लेवो. त्यांथी प्रजु कृषिक सक्निवेहो गया. त्यां चारकनी शंकायी खारक्तकोए तेमने पकड्या, पण पार्श्वनाय प्रजुनी शिष्या खने पात-लची परित्राजिका थयेली एवी विजया श्राने प्रगहनाए प्रजुने होमाव्या त्यांथी गोशालो प्रजुची बुटो थइने बीजे मार्गे चालवा लाग्यो. त्यां पांचसें चोरोए तेने मामो मामो करीने तेनी खांध पर चमीने चलाव्यो, तेथी याकी जइने ते विचारवा लाग्यो के प्रजुनी साथे रहेवुं तेज सारं हे; एम विचारी प्रजुने शोधवा लाग्यो प्रजुपए वैशासीनगरीए जइने त्यां लुहारनी शालामां प्रतिमाथी रह्या. त्यां एक बुहार ब मास सुधी रोगी थइने नीरोगी थयो थको उपकरणो बइने ते शाखामां आव्यो. प्रजुने जोइ अपग्रकननी बुद्धिथी तेमने घणे करीने ते मारवाने तैयार थयो, ते वखते इंडे ते वात अवधिका-नधी जाणीने अने आवीने तेज घणथी तेने हएयो. त्यांथी प्रजु यामाक संनिवेश प्रत्ये गया. त्यां जद्यानमां बिजेलक नामना यक्ते महिमा कर्यो. त्यांची शाक्षिशीर्ष नामे गाममां जद्यानने विषे प्रतिमाए रहेल प्रजुने माघ मासमां त्रिपृष्ठना जवमां अपमान पामेली स्त्री के जे मरीने व्यंतरी थइ हती, ते तापसीनुं रूप करीने जलधी जरेखी जटा वडे सहन थइ शके नहीं एवा शीत उप-सगों करवा खागी, पण प्रजुने निश्चल जोइने शांत थइ थकी ते प्रजुनी स्तृति करवा खागी. उद्यना तप वर्डे ते उपसर्गने सहन करता श्रने विद्युद्ध यता प्रजुने ते वखते खोकावधि ज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वार पठी प्रञ्ज जिल्ला नगरीमां ठठा चोमासामां चोमासी तप श्रने विविध प्रकारना श्रजि- कल्पण

॥ ७६ ॥

ब्रहो करता हवा. त्यां फरीने उ मासने श्रंते पाठो गोशाखानो मेखाप थयो. त्यां प्रजु बहारना जागमां पारणुं करीने क्तुबंध एवी मगधनूमिमां उपसर्गोए करीने रहित थया थका विहार करवा खाग्या. खांची आखंजिकामां सातमा चोमासामां चतुर्मासक्तपणची रहीने बहारना जागमां पारणुं करीने कुंडग नामना सन्निवेशमां वासुदेवना चैत्यमां प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशाखो पण वासुदेवनी प्रतिमाथी पराङ्मुख थइने मुख प्रत्ये अधिष्ठान करी रह्यो, तेथी क्षोकोए तेने मार मार्थो. त्यांथी प्रजु मईन नामे गाममां बलदेवना चैलमां प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो बलदेवना मुखने विषे मेहन राखीने रह्यो. त्यां पण खोकोए तेने मार्थों. एवी रीते बन्ने जगोए तेने मुनि जाणीने लोकोए होडी मेहयो त्यांथी प्रज अनुक्रमे उन्नाग नामे सन्निवेशमां गया. त्यां मार्गमां सन्मुख आवता एवा दंतुर वहु वरनी गोशासे हांसी करी ''के विधिराज कुशस हे के दूरदेशमां पण जे माणस ज्यां वसे हे तेमां जेने जे योग्य होय तेने खोलीने जोमी मेलवे हे." तेथी तेर्डए तेने मारीने वांसनी जालीमां नाख्यो, पण प्रजु पर छत्र धरनार होवाथी तेने छोडी मेख्यो त्यांथी प्रजु गोत्रूमि प्रत्ये गया.त्यांची प्रजुए राजग्रहीमां खारमुं चोमासुं कर्युं तथा चतुर्मासी तप पण कर्यो, खने बहारना जागमां पारणुं करीने त्यांथी वज्रजूमिने विषे घणा उपसर्ग हे एम कहीने नवमुं चोमासुं त्यां (वज्रजूमिने विषे) कखुं, तथा चतुर्मासी तप पण कस्त्रो तेम बीजा बे मास पण त्यांज प्रजुए विहार कर्यों. वसति एटक्षे स्थानकना श्रजावथी नवमुं चोमासुं श्रनियत कर्युं त्यांथी कूर्मयाम प्रत्ये जतां मार्गमां एक तलना होमने जोइने गोशासे जगवानने पूक्युं के आ होम निपजरो के नहीं ? त्यारे प्रसुए कह्युं के आमां रहेला तलनां पुष्पोना साते जीवो मरीने एक शंबा(शिंग)मां तलरूप थरो ते सांजली प्रजुतुं वचन जुतुं पामवा माटे ते बोमने उखेमीने तेणे एकांत जगामां मेख्यो. ते वखते नजदीकमां रहेता व्यंतरोए विचार्युं के प्रजुतुं वचन जूतुं पड़ो नहीं, एम विचारी त्यां वृष्टि करी. तथा ते जीनी जमीनमां गायनी खरीथी ते छोम स्थिर थयो. त्यांथी प्रजु कूर्म नामे प्राममां गया. त्यां

सुबोष

11 38 11



पा ७३.

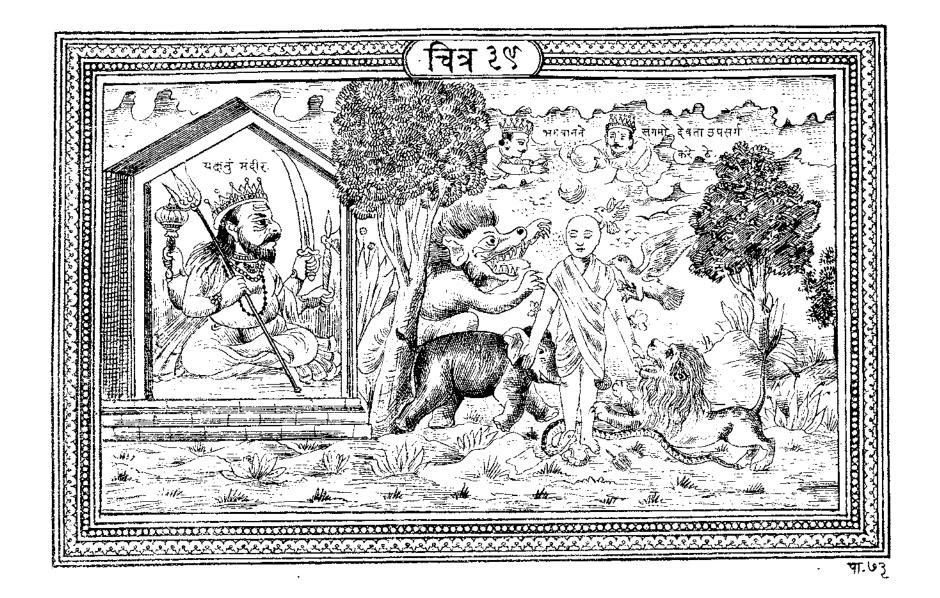
वैश्यायन तापसे व्यातापना यहण करवा माटे जटा ब्रुटी मूकी हती,तेनी मांहे घणी जुंउने जोइ गोशाक्षे तेने "यूकाशय्यातर" एम वारंवार कहीने तेनी हांसी करी. तेथी ते तापसे क्रोधायमान यह तेना पर तेजोक्षेश्या मूकी, पण द्यारसना सागर एवा प्रजुए शीतक्षेश्या वने तेनुं निवारण करीने गोशाखानुं रक्षण कर्युं.

पठी ते मंखिलना पुत्र गोशासे ते तापसनी तेजोसेश्याने जोइने जगवानने पूळ्युं के है जगवन् ते तेजोसेश्या केम प्राप्त थाय? ते सांजली प्रजुए श्रवश्य जावी जावना जोगथी सर्पने प्रध पावानी पेठे तेवा छानर्थ करनारी एवी पण तेजोक्षेश्यानी विधि तेने शिखवी के हमेशां छातापनापूर्वक बहनो तप करी, एक मुठी श्रमदना वाकुलाथी तथा एक जना पाणीनी श्रंजलिथी पारणुं करवुं, श्रने एवी रीते करनारने व मासने अंते तेजोबेरया प्राप्त थाय हे. त्यांथी सिद्धार्थ नामे नगर प्रत्ये जतां गोशाबे कह्यं के ते तलनो ठोम निपज्यो नथी, पण प्रजुए कह्युं के ते ठोम तो निपज्यो ठे. गोशा हो ते वचन पर श्रद्धा नहीं राखता ते तखनी शिंग फोमीने जोइ, तो छंदर सात तखने जोइने तेज शरीरमां तेज प्राणी छो फरीने परावर्तन करीने उपजे हे, एम मति अने नियतिने हढ करी. लांधी ते प्रजुशी जूदो पड्या; श्रावस्ती नगरीमां जइ कुंजारनी शाखामां रहीने प्रजुए बतावेखा जपायथी तेजोक्षेक्यो साधीने अने श्रीपार्श्वनाथ प्रजुना तजीदीधेला बतवाला शिष्य पासेथी अष्टांग निमित्त जणीने छहंकारे करीने लोकोने जणाववा लाग्यों के हुं तो सर्वज्ञ हुं. अहीं किरणावसी टीकाकारे कह्युं हे के तेजोसेस्यानो जपाय सिद्धार्थे शिखव्यो हे,ते विचारवा जेवुं हे, केमके आवश्यक वृति तथा हैमचंडाचार्यजीए करेखा श्रीवीरचरित्र आदिक अनेक प्रंथोमां प्रजुए ते विधि कह्यो एम कह्युं हे. त्यांथी प्रजुए दशमुं चोमासुं श्रा-वस्तीमां कर्युं तथा त्यां तेणे विचित्र प्रकारनो तप पण कर्यो. एवी रीते ब्यनुक्रमे प्रजु बहु म्खेष्ठोवाली एवी हढ जुमिमां गया.त्यां पेढाल यामनी बहार पोलास चैत्यमां अष्टमजक्तपूर्वक प्रजु एक रात्रिनी प्रतिमाधी रह्या. ते वखते सन्नामां श्रावेला इंद्रे कह्युं के वीर प्रजुना चित्तने चलाववामां त्रणे लोकोना रहेवासी उं

11 88 11

समक्त प्रतिक्षा करवा लाग्यों के एक क्षणवारमां हुं तेमने चलायमान करीश एम कही तुरत प्रज पासे आवीने पहेलां तो तेणे धूलनी वृष्टि करी के जेथी प्रजनां आंख, कान आदिक विवशे के कि श्रास लेवाने श्रास लेवाने श्रास विवास प्रती वृष्टि करी विवास प्रती वृष्टि करी के जेथी प्रजनां आंख, कान आदिक विवशे के कि श्रास लेवाने श्रास व्या, ते वार प्रती वृष्टि करी के लेथी प्रजनां आंख, कान आदिक विवशे के लिया कि श्रास लेवाने श्रास व्या, ते वार प्रती वृष्टि करी के लेथी प्रजनां आंख, कान आदिक विवशे के लिया कि श्री काम करी है कि लिया कि पण असमर्थ हे, एम प्रजुनी प्रशंसा करी. ते सांजली संगम नामनो सामानिक देव ईर्ष्या लावीने इंड 🏌 लणी सरखुं कर्युं. ते की की उं एक बाजुषी प्रवेश करी ने बीजी बाजुषी नीकखवा खागी. ते वार पठी वज्र सरखा मुखवाखा मांसो,ते वार पढ़ी तीहण मुखवाखी घी मेलो,ते वार पढ़ी वींढी ढं,ते वार पढ़ी नोलीयां,ते वार पठी सपों,ते वार पठी उंदरो-ए सर्वेना जक्षण छादिकथी,ते वार पठी हाथी तथा हाथणी उंनी छुंढ-ना छाघातोथी तथा पगोए करीने कचरवाथी,ते वार पढी पिशाचना छद्दहास छादिकथी, ते वार पढी वाघना दाढ तथा नखना विदारण श्रादिकथी,ते वार पठी सिद्धार्थ श्रने त्रिशलाना करुणाजनक विखाप छादिकथी तेणे उपसर्ग कर्या. पठी स्कंधावार (खरकर) विकुर्वीने के ज्यां खोकोए प्रजुना चरणोनी मध्ये अग्नि सलगावीने अने वासण मूकीने रसोइ करी हती.ते वार पठी चंनालोए प्रजुना कान अने जुजानां मूल छा दिने विषे ती इण चांचोवालां पक्षी उनां पांजरां खटकाव्यां छने ते उं चांचथी जक्षण करवा ला-ग्यां.ते वार पठी प्रचंम पवनथी के जे पवन पर्वतोने पण कंपावतो थको प्रञुने उठाखी उठाखीने नीचे पा-मतो हतो. ते वार पठी वंटोखी आधी के जे प्रजुने चक्रनी पेठे जमावतो हतो.ते वार पठी हजार जारना प्रमाणवाला चऋषी के जेथी मेरु पर्वतनुं शिखर पण चूर्ण थह जाय खने प्रज पण जेथी हेक घुंटण सुधी जमीनमां खुंची गया हता. ते वार पठी प्रजात करीने तेले कह्युं के हे देवार्य! हजु सुधी केम जजा ठो? पण प्रजु तो ज्ञानथी रात्रि हे एम जाणे हे. त्यार पही देवनी क्रिक्क करीने कह्युं के हे महर्षे ! तमारे खर्ग श्रिथवा मोक्त जे कंइ जोइए ते मागी लो; तेथी पण प्रजुने निश्चल जोइ तेणे देवांगनाना हावजावथी 🎉 प्रजुने जपसर्ग कर्या. एवी रीते तेणे एक रात्रिमां वीश जपसर्गों कर्या, पण तेथी प्रजु जरा पण चला-यमान थया नहीं. श्रहीं कविए कहां वे के हे प्रजु! तमारुं बल जगतनो नाश करवाने श्रने रक्तण कर-

11 99 11



वाने समर्थ हे, छने छपराधी एवा संगमक छपर करेखी दया पण तेवीज हे, एवं विचारीनेज होय नहीं जेम तेम रोषणी कोध तो तमारा मनने तजीने जतो रह्यों हे. ते वार पढ़ी ह मास सुधी छनेषणीय कहेतां कहंपे नहीं एवा छाहार करवा छादिकना तेना करेखा नाना प्रकारना छपसगोंने सहन करता थका प्रज छाहार रहित थया थका ह मास ह्यतीत थये हते ते संगम गयो हशे एम धारीने वज्र धामना गोकुखमां गोचरी माटे गया. त्यां पण तेणे छाहारने छनेषणीय करेखो जाणीने प्रजु ते खीधा विना गाम बहार छावी प्रतिमाणी रह्या. पही ते नीच देव प्रजुने छवधिकानणी कोइ रीते पण स्वितत नहीं थयेखा तथा विद्युद्ध परिणामवाला जोइने विख्लो थइने शक्ति बीकणी प्रजुने वांदीने सौधर्म देवलोक प्रत्ये गयो. पही तेज गोकुखमां जता प्रजुने एक घरमी गोवालणीए छुधपाकणी प्रति-खाज्या, तथा त्यां वसुधारा पण थइ.

छहीं प्रजुने उपसर्ग कर्या तेटलो काल सुधी सौधर्म देवलोकमां रहेनारा सवला देव तथा देवी उं छानंद रहित छने उत्साह रहित रहाा, छने इंड पण गीत, नाटक छादिकने तजीने "छा उपसर्गोनो हुंज हेतु थयो तुं,केमके में करेली प्रजुनी प्रशंसाथी छा छष्ट संगमके प्रजुने उपसर्गों कर्या ते" एम विचारी छत्यंत छु: खित चित्तवालो थयो थको हाथ पर मुख राखी दीन दृष्टियुक्त थयो थको दिलगी-रीमां रह्यो. पत्री छुष्ट थयेल ते प्रतिक्रा जेनी तथा खाम मुखवाला एवा ते नीच संगमक देवने त्यां छावतो जोइने इंडे पराङ्मुख थइने देवोने कह्युं के छरे देवो! छा छुष्ट कर्मचंनाल पापी छावे ते, माटे तेतुं दर्शन पण महापापने छापनारुं थाय ते; वली एणे छापणनो मोटो छपराध करेलो ते, केमके तेणे छापणा खामीने कदर्थना करी ते. जेम ए पापी छापणाथी क्यों नथी, तेम पापथी पण क्यों नथी; माटे छुष्ट छने छपवित्र एवा देवने खर्गमांथी तुरत काढी मूको.एवी रीते इंडे छाज्ञा करेला सुजटोथी निर्दय रीते लाककी, मुष्टि विगेरेथी ताकना करायेलो, छांगली मोनवाना करेला देवोना छाकोशने सहन करतो, चोरनी पेते शंकित थइने छामतेम जोतो, तरी गयेला छंगारानी पेते निर्देज थयेलो छने परिवार

कृह्पण

॥ ५७ ॥

学を大きまる

るかろかろから

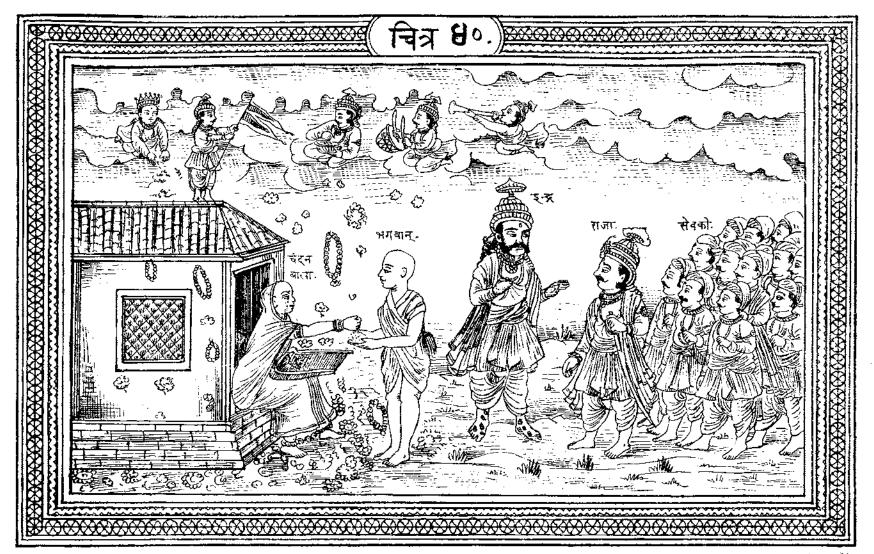
やるものもろ

विनानो एकलो हमकाया कुतरानी पेठे देवलोकमांथी काढी मूकायेलो ते देवता मंदराचलना शिखर जपर पोतानुं बाकी रहे खुं एक सागरोपमनुं आयुष्य संपूर्ण करहो. तेनी अप्रमहिषी जंपण इंझनी आङ्गाची दीन मुखवाली यह यकी पोताना जरतारनी पाठल गइ. पठी आलंजिका नगरीमां हरि-कांत तथा श्वेतंबिका नगरीमां हरिसह नामे बे विद्युत्कुमारना इंड प्रजुने कुशब पूठवा माटे आव्या. लारपढी श्रावस्ती नगरीमां इंद्र स्कंद्रनी प्रतिमामां अवतरीने (पेसीने) प्रजुने नमतो हवो,श्रने तेथी प्रजुनो मोटो महिमा प्रवर्त्यो. लांथी कोशांबी नगरीमां प्रजुने वांदवा माटे सूर्व चंद्र छाट्या. त्यारपडी वाणारसीमां इंझे,राजगृहीमां ईशानेंझे तथा मिथिला नगरीमां जनक राजाए अने धरणेंझे प्रजुने कुश-ल पूट्युं. ते वार पठी वैशाली नगरीमां प्रजुनुं ऋग्यारमुं चोमासुं थयुं.त्यां जूते प्रजुने कुशल पूज्युं.त्यांथी प्रजु सुसुमार नामे नगर प्रत्ये गया, त्यां चमरेंद्रनो उत्पात थयो. त्यांथी श्रमुक्रमे कौशांबी नगरीए प्रजु गया. त्यां शतानीक नामे राजा हतो,तेनी मृगावती नामे राणी हती,तथा विजया नामे प्रतिहारी हती, वादी नामनो धर्मपाठक हतो, सुगुप्त नामे छमात्य हतो, तेनी नंदा नामनी स्त्री हती, ते श्राविका हती तथा मृगावतीनी बहेनपणी हती.त्यां प्रजुए पोष सुदि पमवाने दिवसे श्रजियह लीघो. डब्पथी सुप-माना खुणामां रहेला वाकुला होय,केत्रथी एक पग उंबरानी अंदर तथा एक पग उंबरायी बहार राखीने रहेब्री होय, कालयी सघला जिकाचरो निवृत्त ययेला होय, जावयी राजानी पुत्री के जे दासपणाने प्राप्त थयेखी होय तथा जेणीनुं मस्तक मुंकित थयेखुं होय, पगमां बेकी होय, रुदन करती होय, तथा जेणीने अठम होय एवी कोइ स्त्री जो जिक्का आपरो तो हुं प्रहण करीरा; एवो अजिपह लइने प्रजु हमेशां जिक्ता मादे जमवा लाग्या. श्रमात्य श्रादिक घणा जपायो करवा लाग्या, तोपण ते अजियह संपूर्ण थतो नथी.

ते वखते शतानीक रोजाए चंपा नगरीने जांगी श्राने त्यांना दिधवाहन राजानी राणी धारिणी तथा है तेनी पुत्री वसुमती ए बंनेने कोइ सुजटे केंद्र पक्की. त्यां धारिणीने तेणे पोतानी स्त्री करवानुं कह्याथी

सबीव

11 96 11



या. ७५्

तिणी तो जीज करडीने मृत्यु पामी, पण वसुमतीने पुत्री तरीके करवानुं समजावीने तेणीने तेणे को-शांबीमां लावीने चौटामां वेचवाने राखी. त्यां धनावह नामना शेवे तेणीने वेचाती लइ चंदना एवं नाम आपीने पुत्री तरीके राखी अने ते घणी त्रिय थइ एक दहानों ते शेवना पग धोवरावती हती ते वखते तेणीनो चोटला पृथ्वी पर लटकतो हतो,ते होते पोते उंचो कर्यों,ते जोइने ते होतनी मुला नामनी स्त्रीए विचार्युं के स्त्रा युवान बालिका खरेखर रोठनी स्त्री थरों स्त्रने हुं निर्माख्य प्राय यइश एम धारीने खेद युक्त चित्तवाली तेणीए चंदनानुं मस्तक मुंगावी तेणीने बेमी पहेरावी तालामां घालीने क्यांक चाली गइ. होठने पण महा मुहकेलीए चोथे दहाडे ते खबर पमवाथी तालुं उघाडीने तथा तेवीज रीते तेणीने जंबरामां मूकीने तथा सुपनाना खुणामां अनद्ना वाकुला आपीने ते वेनी जांगवा माटे खुहारने ज्यारे बोलाववा गयो, त्यारे चंदनाए विचार्युं के जो कोइ पण जिक्क छा वस्तते छावे तो तेने छा बाकु-लामांथी आपीने पत्नी हुं पण लाउं. एम विचार करे वे एटलामां त्यां श्री वीर प्रज पधार्या. त्यारे तेणीए पण हर्षित थइने कह्युं के हे प्रजु! आ तमे ख्यो, पण प्रजु पोताना श्रजियहपूर्वक तेणीने रमती नहीं जोइने पाठा वखा. त्यारे चंदनाए विचार्यं के छहो ! प्रज्ञ छा वसते छावीने कंइ पण घहण कर्या विना पाठा चाह्या जाय हे, एम विचारी खेदपूर्वक ते रमवा खागी. पढी प्रजुए पण पोतानो खिन-यह संपूर्ण थयेलो जाणी ते वाकुला लीधा. छहीं किव कहे हे के पंगित लोकोए चंदनाने वाला केम कहेली हे ? (छार्थात् तेणीने तो महा हुशियार समजवी;) केमके तेणीए तो वीर प्रजुने वाकुला वडे वेतरीने मोक्त खह खीधुं!!! ते वखते त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां, इंड पण आव्यो, देवो नाचवा खाग्या, तेणीना मुंनित मस्तक पर केश यह गया, बेमी डं जांजररूपे यह. त्यां मृगावती मासीनुं मलवुं ययुं तथा संबंधथी वसुधारामां पडेे खुं धन शतानीक क्षेवा खाग्यो,तेने निवारीने चंदनानी आज्ञाश्री धनावहने ते धन दहने तथा आवीर प्रजनी प्रथम साध्वी थहो, एम कहीने इंड अंतर्धान थहगयो. पृत्री अनुक्रमे जुंजिका नामे गाममां इंडे नाट्यविधि देखामीने कह्युं के छाटले दिवसे ज्ञाननी उत्पत्ति थरो. लाखाद

कल्पण

भा अल् ॥

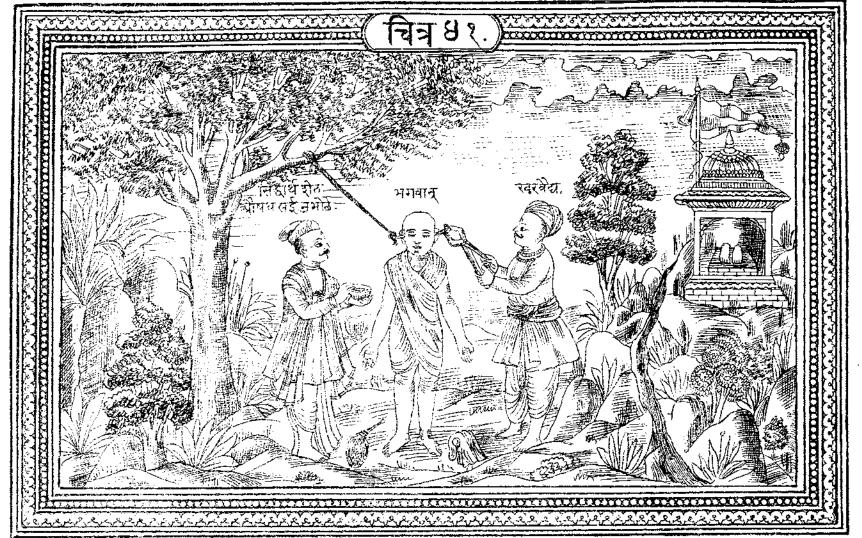
मिंढिक नामे गाममां चमरेंडे प्रजुने कुशख पूंच्युं. त्यांथी पएमानि नामे गाममां प्रजु बहारना जागमां प्रतिमाधी रह्या हता, तेमनी पासे एक गोवाली पोताना बेलो मूकीने गाममां गयो. पढी आवीने तेणे प्रञ्जने पूळ्युं के हे देवार्थ ! मारा वेक्षो क्यां गया ? पण प्रजु मौन रहेवाथी तेणे गुस्से यड्ने प्रजुना कानमां एवी रीते वांसना खीखा ठोक्या के जेमना अप्र जाग अंदर एक बीजाने अनक्या अने बहारना श्रय जाग कापी नाखीने ते न देखाय एवा करी दीधा प्रजुए त्रिपृष्ठना जवमां राय्यापासकना कानमां जे तपावेद्धं सीसुं रेमाव्युं इतुं,ते जपार्जन करेद्धं कर्म छावी रीते वीरजवने विषे जदयमां छाव्युं.ते शय्यापा-लक जब जमीने छाज गोवाली अयो हतो. त्यांथी प्रजु मध्यमश्रपापामां गया.त्यां सिद्धार्थ नामे विण-कने घेर प्रजुने जिक्ता माटे आवेला जोइने खरक नामना वैधे प्रजुने शख्य सहित जाएया पढी ते विषके वैद्यनी साथे उद्यानमां जड्ने ते खीलाउने साण्सीयी प्रजुना कानमांथी खेंची कढाव्या. ते काढती वखते वीर प्रञुए एवो श्ररेराट शब्द कर्यों के जेथी सघक्षं ज्यान महा प्रयंकर थयुं. त्यां लोकोए एक देवालय पण बंधाब्युं. पढ़ी प्रजु संरोहिणी नामनी ख्रोषधियी नीरोगी यया, तथा ते वैद्य श्रने विषक बन्ने स्वर्गमां गया तथा ते गोवाली उसातमी नरके गयो. एवी रीते उपसर्गो गोवाली श्राषी शरु थया श्रने गोवाली आशीज पूर्ण थया.

हवे ते जपसर्गोमां जघन्य, मध्यमे अने जत्कृष्ट ए विजाग हे. ते आ प्रमाणे—कटपूतनानो शीतोप-सर्ग जघन्यमां जत्कृष्ट जाणवो, कालचक्रनो मध्यममां जत्कृष्ट जाणवो, तथा कानमांथी खीला खेंच-वानो जत्कृष्टमां जत्कृष्ट जाणवो. ते सघला जपसर्गो वीर प्रजुए सम्यक् प्रकारे सहन कर्या.

त्यारपठी श्रमण जगवान् श्रीमहाबीर प्रज श्रणगार थया. केवा श्रणगार थया ते कहे है. कि किया सिमित एटखे हानचलनमां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा जाषासिमिति एटखे वोलवा करवामां किया प्रवृत्तिवाला थया, तथा एषणासिमिति एटखे वेंतालीश दोषोए करीने रहित एवी जिक्ता प्रहण करवामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा श्रादानजंगमति केपणासिमिति एटखे श्रादान कहेतां

सुबोव

11 90 11



पा.७५.

उपकरण श्रादिक यहण करवामां तथा जांकमात्रा कहेतां वस्त्र प्रमुख उपकरणनी जातने श्रथवा जांन कहेतां वस्त्र छादि तेमज माटीनां वासणने छने मात्र कहेतां पात्रां विगेरेने मुकवामां पण समितियुक्त थया, श्रर्थात् तेमने बरोबर जोइ प्रमार्जीने जपाडवा तथा मूकवा खाग्या. तथा पारिष्ठाय-निकासमिति एटखे विष्ठा, मूत्र, थुंक, श्लेष्म, देइनो मेल इत्यादिक नाखवा करवामां पण सावधान थया, अर्थात् तेमने गुद्ध जगो पर नाखवा खाग्या अहीं वे ह्वी वे समिति जो के प्रजुने जांड तथा श्लेष्म छादि नहीं होवाथी संजवतीज नथी, तोपण तेर्जनां नामना छखं मितपणा वास्ते एम कहां हे. वली एवी रीते मन, वचन व्यने कायानी उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा श्रद्धांत्र परिणामधी पाठ फरनारा होवाथी मन, वचन अने कायानी गुप्तिवाला थया अने तेथी गुप्त तथा गुप्त इंद्रियोवाला, तथा वसर्ती खादि नव वाडोथी शोजता ब्रह्मचर्यने खाचरे हे माटे ग्रप्त ब्रह्मचारी थया, तथा क्रोधरहित मानरहित, मायारहित छने लोजरहित तथा छंतर्वृत्तियी शांत, बहिर्वृत्तियी प्रशांत छने बंने वृत्तियी जपशांत तथा सर्वे प्रकारना संतापथी रहित थया, तथा हिंसा आदिक आश्रवद्वारनी विरतिथी पाप-कर्मनां बंधनोथी रहित थया, तथा ममताए करीने रहित थया, तथा डब्य छादिकथी पण रहित थया, तथा विन्नयंथ एटसे हिरएय (सुवर्ष) छादिकनी यंथियी रहित थया, तथा डब्य जावरूप मलना निर्गमनथी निरुपक्षेप थया, तेमां इट्य मल एटले शरीरथी जलन्न थतो मल तथा जाव मल एटसे कर्मथी उत्पन्न थतो मल,ते बन्नेथी रहित थया. (ऋहीं निरुपसेपपणुं दृष्टांते करीने दृढ करे हे. कां-सानुं पात्र जेम पाणीथी मुक्त होय हे तेम स्नेहथी मुक्त अर्थात् जेम कांसानुं पात्र पाणीथी खेपातुं नथी, तेम जगवान् पण सेहथी सेपाता नथी ए छार्थ जाणवो).तथा शंखनी पेठे राग छादिकने विषे नहीं रंगा-वाथी निरंजन थया,तथा जीवनी पेठे सर्व जगोए स्खलनारहित गमन करनारा, तथा श्राकाशनी पेठे कोइना पण आधारनी ऋषेका नहीं करनारा होवाथी निरालंबन, तथा वायुनी पेठे एकज जगोए नहीं रहेनारा होवाषी अप्रतिबद्ध, तथा शरद ऋतुना पाणीनी पेठे काह्युष्ये करीने अकलंकित होवाथी शुद्ध

कृह्प□

॥ ७० ॥

🖔 हृदयवाला थया,तथा कमखपत्रनी पेठे निर्लेप थया,एटक्षे जेम कमलपत्र पर खेप लागतो नथी,तेम प्रजुने पण कर्मोंनो क्षेप लागतो नथी, तथा काचबानी पेठे ग्रप्त इंडियोवाला, तथा गेंमाना शिंगमानी पेठे ए काकी अर्थात् गेंमाने जेम एकज शिंगडुं होय हे,तेम जगवान् पण राग आदिकनी सहाय विनाना, तथा पक्तीनी पेठे परिवारनुं मूकवापणुं होवाथी अने अनियत निवास होवाथी विश्रमुक्त थया, तथा जारंम पक्तीनी पेते प्रमाद विनाना थया, जारंक पक्तीना जोडलानुं एकज शरीर होय हे;कह्युं हे के जारंक पक्ती-र्ज एक पेटवालां, पृथम् बीवावालां,त्रण पगवालां तथा मर्त्यनी जाषा बोलनारां होय हे स्रने तेर्जनं मृत्य जिन्न फलनी इहाथी याय हे, वली तेर्ड अत्यंत श्रप्रमादी यया यका जीवे हे ए उपमा जाणवी. वली हाथीनी पेठे कर्मोरूपी शत्रुर्जने हणवाने शूरा, तथा दृषजनी पेठेपोते श्रंगीकार करेला व्रतजारने उपामवाने समर्थ होवाधी जातपराक्रम, तथा सिंहनी पेठे परिषहादिकरूप श्वापदथी नहीं जीताय तेवा होवाथी दुर्फर्ष, तथा मेरुनी पेठे उपसगींरूपी पवनथी चलायमान नहीं थवाथी अप्रकंप, तथा हर्ष तेमज शोकनुं कारण होय तेने विषे पण विकार रहित खजावने लीधे समुझनी पेठे गंजीर, तथा शांतपणाने लीधे चंद्रनी पेठे सौम्य होस्यावाला, तथा सूर्यनी पेठे देदीप्यमान तेजवाला, श्रर्थात् इव्यथी शरीरनी कांतिथी छने जावथी ज्ञाने करी कांतिवाला यया,तथा उत्तम सुवर्णनी पेठे ययेलुं वे स्वरूप जेमनुं एवा थया, अर्थात् जेम निश्चे मेल बली जवाथी सोनुं कांतिवालुं थाय हे,तेम जगवाननुं स्व-रूप पण कर्मरूपी मेखनो नाश थवाथी अत्यंत दी ितवाखुं थयेखुं हतुं ए जाव जाणवो तथा पृथ्वीनी पेठे सर्व स्पर्शने सहन करनारा थया, अर्थात् जेम पृथ्वी टाढ तमको विगरे समताथी सहन करे हे,तेम जग-वान् पण सघतुं सहन करता हवा,तथा सारी रीते घी छादिकथी सिंचायेलो जे छिन्न,तेनी पेठे तेजथी-जाज्वस्यमान थया वली ते प्रजुने एवो पक्त नथी के कोइ पण जगोए तेमने प्रतिबंध थाय एटक्षे तेम-ने कोइ पण जगोए प्रतिबंध नहोतो ए जाव जाणवो ते प्रतिबंध चार प्रकारनो कहेलो है. ते आ प्रमाणे-ड्रव्यथी, केत्रथी, काखर्थी छने नावथी तेमां ड्रव्यथी सचित्त, छचित्त छने मिश्र ए त्रण प्रकारे

सुबोध

II OO II

जाणवो. सचित्त द्रव्य एटक्षे स्त्री छादिक, छचित्त द्रव्य एटक्षे छात्रूषण छादिक,तथा मिश्र द्रव्य एटले शणगारेली स्त्री छादिक तेने विषे. क्षेत्रथी एटले कोइ गाममां, नगरमां, छरएयमां, धान्य जेमां जलक थाय एवा केत्रमां, खल कहेतां धान्यने फोतरांथी जूदा करवाना स्थानकमां, घरमां, अथवा घरना छांगणामां छ्रथवा छाकाशमां. कालची एटले समय जेवा छति सुद्धा कालमां के जे काल सेंकडो कमलपत्र विंधवाना खयवा जीर्ण सामी फाडवा खादिना दृष्टांतथी जणाइ खावे हे, तथा खाविल एटसे असंख्याता समयवाला कालमां, तथा श्वासोश्वासना प्रमाणवाला कालमां, तथा स्तोक एटबे सात उह्यासना प्रमाणवाला कालमां, तथा क्षण एटले घमीना **उठा जागना प्रमाणवाला कालमां, तथा** लव एटखे सात स्तोकना मानवाला कालमां, तथा मुहूर्त कहेतां सत्तोतेर लवना मानवाला कालमां, एवी रीते रात्रि दिवस, पक्त, मास,क्तु,श्रयन श्रथवा वर्ष पर्यंतना कालमां,तथा बीजा पण युगपूर्व,श्रंगपूर्व छादिक खांबा कालमां. हवे जावंथी एटले कोधमां,मानमां,मायामां,लोजमां,जयमां, हास्यमां,प्रेममां, हेषमां, कलहमां, मिथ्या कलंक देवामां, चामीमां, परना अपवादमां, मोहनीयना उद्यथी थती रति श्चरतिमां, कपट सहित मृषावादमां, तथा मिथ्यात्वरूपी श्चनेक छःखना हेतुरूप एवा शब्यमां. एवी रीते पूर्वोक्त खरूपवालां इब्य, क्रेत्र, काल ध्यने जावने विषे कोइ पण जगोए प्रजुने प्रतिबंध नहोतो. हवे ते श्री,वीर प्रजु वर्षाकालना चार मास वर्जीने वाकीना ग्रीष्म श्रने हेमंत क्रुत संबंधी श्राठ मा-समां गाममां एक रात्रि तथा नगरमां पांच रात्रि सुधी रहेता.वली ते प्रजु केवा ? तो के वासी कहेतां सुतारनुं लाकमां ठोलवानुं हथियार तथा चंदन, ते बन्नेने विषे तुख्य अध्यवसायवाला, वली ते प्रजु केवा ? तो के तृण,मिण,पापाण श्रने कांचनमां पण तुह्य दृष्टिवाला,तथा सुख दुःखमां पण तुख्य खना-ववाखा,तथा श्रालोक श्रने परलोकमां पण प्रतिबंध विनाना, श्रने तथी करीनेज जीवित श्रने मरणमां 🖔 वांडा रहित एवा, तथा संसाररूपी समुद्रना पार प्रत्ये पहोंचेला तथा कर्मोरूपी शत्रुश्रोने मारवा माटे 🥳

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.

उद्यमवंत थयेला एवा प्रजु आ कम प्रमाणे विचरवा लाग्या.

कहपण

गाउँ ॥

एवी रीते प्रजुने विचरतां थका अनुपम एवा ज्ञानथी,अनुपम एवा दर्शनथी,अनुपम एवा चारित्रथी, अनुपम एवा आलयथी एटले स्त्री,नपुंसक विगेरेथी रहित घरमां रहेवाथी, अनुपम एवा विहारे करीने, अनुपम एवा पराक्रमथी, अनुपम एवा सरखपणाथी, अनुपम एवा निरिजमानथी, अनुपम एवा बाघवपणाची, एटखे इञ्यची ऋख्पोपिधपणाची,तचा जावची गौरवत्रयना त्यागची, ऋनुपम एवी क्तमा-थी, ऋनुपम एवा निर्लोजपणाथी, ऋनुपम एवी मनोग्रित श्रादिकथी, ऋनुपम एवा संतोषथी तेमज सत्य, संयम तथा बार प्रकारनो तप,ते ऋोनुं जे सदाचरण,तेणे करीने पुष्ट थयेखुं हे मुक्तरूपी फल जेनुं,एवी री-तनो रत्नत्रयरूप जे अनुपम एवो मोक्सार्ग तेले करीने-एवी रीते उपर वर्णवेला सर्व गुणोना समूहथी आत्माने जावतां थका बार वर्ष बीती गयां.ते आ प्रमाणे-तेमां एक उमासी करी. बीजी उमासी पांच दिवस उंडानी करी. नव चोमासी करी. वे त्रणमासी करी. वे ऋढीमासी करी. व बेमासी करी. वे दोढ-मासी करी.वार मासक्तपण कर्यां. वहोंतेर पक्तकपण कर्यां. वे दिवसना प्रमाणनी जडप्रतिमा करी. चार दिवसना प्रमाणनी महाजद्रप्रतिमाकरी. दश दिवसना प्रमाणनी सर्वतोजद्रप्रतिमा करी. बसें ने जंगणत्रीश ढठ कर्या. बार श्रष्ठम कर्या. त्रणसं ने श्रोगणपचास पारणां कर्या. एक दीकानो दिवस

कर्यों. तेम नित्य तक्त के चतुर्थ तक्त कोइ दहामो पण कर्युं नहीं.
एवी रीते तेरमा वर्षनी छांदर वर्तता एवा प्रजुने जे आ प्रीष्मकालनो बीजो मास, चोथो पक्त एटले वैशालनो शुक्क पक्त, ते वैशालना शुक्क पक्तनी दशमीने दहाडे पूर्व दिशा तरफ ठाया जाते ठते,पाश्चाल्य पौरुषी संपूर्ण होते ठते,केवी रीते ? तो के प्रमाण प्राप्त अर्थात् पौरुषी न्यूनाधिक न होते ठते, सुत्रत नाम-ना दिवसे,विजय नामना मुहूचें, जुंजिकप्राम नामना नगरनी वहार, रुजुवालुका नामनी नदीने कांठे, व्यावृत्त नामे जुना एवा एक ठयंतरना देवलनी नहीं श्रति दूरे,तेम नहीं श्रति नजदीके, स्थामाक नामे की दुंविकनां केत्रमां, साल नामना वृक्षनी नीचे, गोदोहिक नामना जत्किटक श्रासने बेठा थका, श्रा-

थयो. आ प्रमाणे वार वरस अने सामा ठ मासनो ठद्मस्थ पर्याय थयो. आ सघलो तप प्रजुए जलरहित

सुबोव

॥ जर ॥

तापना वहे आतापना खेतां यका, जलरहित उठनो तप होते उते, तथा उत्तराफाहणुनी नक्तरने विषे चंद्रनो योग प्राप्त थये उते, ध्यानना मध्य जागमां वर्तते उते, अर्थात् ग्रुक्त ध्यानना चार जेदो छे, पहेलुं पृथवत्ववितर्कवालुं सविचार, वीजुं एकत्व वितर्कवालुं अविचार, त्रीजुं स्काकिय अप्रतिपाति तथा चोथुं उद्यित्रकिय अनिवार्त्तः; तेओमांथी पहेला वे जेदोवालुं ध्यान धरत उते, अनंत एटले अनंत वस्तुनुं जाणपणुं ठे जेमां एवां, अनुपम, वाधा रहित, आवरण रहित, संपूर्ण तथा सर्व अवयवे युक्त एवां केवलङ्गान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां.

एवी रीते केवलकान उपन्या बाद श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रज " श्रहेन् " यथा, अर्थात् अशोक वृक्त आदिक प्रातिहार्यथी पूजाने योग्य थया वली केवा ? तो के जिन कहेतां रागद्वेषने जीतनारा थया, तथा केवली, सर्वक् अने सर्वदर्शी थया. तथा देव, मनुष्य अने असुर सहित लोकना पर्यायोने जाणनारा तथा जोनारा थया. त्यारे द्युं फक्त देव, मनुष्य अने असुरोनाज पर्यायोने जाणनारा थया ? तो के एम नहीं, सर्व लोकने विषे रहेला सर्वे जीवोनी जवांतरथी श्चागति, जवांतरमां गति, स्थिति एटले तज्ञव संबंधी छायुष्य छाथवा कायस्थिति, च्यवन एटले देवलोकथी तिर्यंच अने मनुष्यने विषे अवतार, जपपात एटले देवलोकमां अथवा नरकमां जल्पत्ति, तथा सर्व जीव संबंधी (जीवोनां) मन, मनमां चिंतन करेख़ुं, जोजन फलादि, चोरी श्रा-दिक कार्य, मैथुन छादि प्रतिसेववुं, प्रगट कार्य तथा ठानुं कार्य, ते संघक्षुं सर्व जीवोनुं जगवान् जाण-नारा थया.वली ते प्रञु केवा ? तो के त्रणे जुवनने करामलकनी पेठे जोनार होवाथी नथी रहेल कंइ पण गुप्त जेने एवा, तथा जघन्यपणाथी क्रोम देवो तेमनी सेवा करनारा होवाथी एकांतने नहीं जजनारा एवा ते प्रजु ते ते कालने विषे मन, वचन श्रने कायाना योगोमां यथायोग्यपणे वर्तता एवा सर्व लो-कने विषे सर्व जीवो, तेर्रुना सर्व जावोने जाणता श्रने जोता थका विचरवा लाग्या. वली ''सवजी- कट्य

॥ ७२ ॥

वाणं" ए पदमां श्रकारनो प्रश्लेष होवाश्री सर्व अजीव एटक्षे धर्मास्तिकाय आदिकना पण सर्व पर्यायोने जाणता श्रने जोता थका प्रजु विचरवा लाग्या एवो पण श्रर्थ जाणवो.

हवे ते अवसरने विषे एकठा मखेला देव असुर प्रत्ये पत्थरवाली जमीन पर पडेला वरसादनी पेठे क्रणवार निष्फल एवी देशना दइने प्रजु अपापापुरीमां महसेन नामे वनमां गया त्यां यज्ञ करावता एवा सोमिल नामे ब्राह्मणना घरमां घणा ब्राह्मणो एकठा थया हता तेर्रमां इंड्रजूति,ख्रिश्चित तथा वायजूति नामे त्रण सगा जाइडं हता. तेर्ड चौदे विद्यामां प्रवीण हता.श्रनुक्रमे तेर्डमां पहेलाने जीवनो, बीजाने कर्मनो तथा त्रीजाने तेज जीव ने तेज शरीरनो संदेह इतो.तथा ते दरेकने पांचसो पांचसो शिष्योनो परिवार इतो. तेवीज रीते व्यक्त श्रमे सुधर्मा नामना वे बाह्मणो तेटलाज परिवारवाला तथा तेवाज विद्वानों हता. श्रमुक्रमे तेर्नमांथी पहेलाने पंच जूतो हे के नहीं ? एवो संदेह हतो, तथा बीजाने ''जे जेवो ते तेवोज" एवो संदेह हतो.वली तेवाज विद्वान् मंग्ति श्रने मौर्यपुत्र नामे वे जाइड हता. ते दरेकने सामा त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो. छनुक्रमे तेर्नमांत्री पहेलाने वंध मोक्तनो, तथा बीजाने देवना संबंधमां संदेह हतो. तथा श्रकंपित, श्रचलचाता,मेतार्य श्रने प्रजास नामे चार ब्राह्मणो हता. ते दरेकने त्रणसो त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो; तथा श्रवुकमे तेर्डमांथी पहेलाने नारकीनो, बीजाने पुष्यनो, त्रीजाने परलोकनो तथा चोथाने मोक्तनो संदेह हतो. एवी रीते ते ख्रग्यारे विद्वानोने एक एक संदेह हतो, पण पोताना सर्वज्ञपणाना श्विनमाननी क्तिना जयथी तेर्ड मांहोमांहे कोइने पण पोतपोताना संदेह विषे पूछता नहोता. एवी रीते तेउंना परिवारना चुमाखीसें बाह्मणो, तथा बीजा पण जपाध्याय, शंकर, ईश्वर, शिवजी, जानी, गंगाधर, महीधर, जूधर, बद्मीधर, पंड्या, विष्णु, मुकुंद,गोविंद, पुरुषोत्तम,नारायण,छुवे,श्रीपति,छमापति, गणपति, जयदेव,द्यास,महादेव, शिवदेव, र्द्धवन्न, सुखद्व, गगापात, गारापात, त्रिवामी,श्रीकंठ,नीलकंठ,हरिहर, रामजी,वालकृष्ण,यङ्गाम, हिं राम, रामाचार्य, राउल, मधुसूद्व,नरसिंह, कमलाकर, सोमेश्वर, हरिशंकर, त्रिकम, जोशी, पूनो, मूखदेव, सुखदेव, गंगापति, गौरीपति, त्रिवामी,श्रीकंठ,नीलकंठ,हरिहर, रामजी,बालकृष्ण,यप्डराम,

सुबो०

।। उद्र (ह

रामजी, शिवराम, देवराम, गोबिन्दराम,रघुराम,उदिराम विगेरे घणा ब्राह्मणो त्यां एकठा घया हता. श्रावखते प्रजुने वांदवा माटे श्रावता सुर श्रने श्रसुरोने जोइने ते ब्राह्मणो विचारवा लाग्या के श्रहो! श्रा यज्ञनो महिमा केवो हे!! के श्रहीं श्रा देवो साक्षात् पधार्या हे,पण पही तो तेहने ते यज्ञमं-मप तजीने प्रजुनी पासे जता जाणीने तेर्र खेद पामवा लाग्या.पठी माणसोनां मुख्यी तेर्रने सर्वे प्र-जुने वांदवा जता सांजलीने इंडजूति कोधवालो ययो थको विचारवा लाग्यो के छरे!! हं सर्वे हाते ठते पण बीजो कोइ वली पोताने शुं सर्वे छेखावे हे !!! अरे! कानने नहीं सांजली शकाय एवं आ कमवुं वचन माराथी केम संजलाय!!! अरे!वली कदाचित् कोइ पण मूर्व तो कोइ धूर्तथी वगाय, पण आणे तो देवोने पण ठग्या है; केमके आवी रीते आ देवो यक्तमं मपने अने मने सर्वक्रने तजीने तेनी पासे जाय हे. श्रहो ! ए देवतार्ड केम त्रांति पाम्या ? के जेर्ड तीर्थजलने तजी देनारा कागमानी पेठे, (कमलाकर) तलावने तेजी देनारा देनकानी पेठे, चंदनने तजी देनारी मालीनी पेठे, सारां जा-मने तजी देनारा जंटनी पेठे, क्षीरान्नने तजी देनारा जुंमनी पेठे श्रने सूर्यना प्रकाशने तजी देनारा घुवमनी पेठे यक्तने तजीने चाखा जाय है ? श्रयवा जेवो श्रा सर्वक्त हे तेवाज श्रा देवो पण हे, माटे सरखे सरखो जोग मख्यो हे!!! कह्युं हे के सरखापणुं तो जुठ,के जमरो श्रांबाना महोर उपर गुंजारव करे हे अने वली कागमानो समृह लींबमाना महोर उपर आकुल थयो थको मले हे, तोपण हुं तेना सर्वज्ञपणाना छाटोपने सहन करी शकीश नहीं; केमके छाकाशमां शुं बे सूर्य होइ शके ? ष्रयवा एक गुफामां शुं वे सिंह रही शके ? अथवा एक म्यानमां शुं वे तलवार होइ शके ? तेवी रीते हुं अने आ वंने सर्वक्ष शी रीते थइ शकीए?

हवे प्रजुने वांदीने पाठा वलता लोकोने तेणे हांसीपूर्वक पूट्युं के अरे! लोको!! तमोए ते सर्व-इने जोयो? ते केवा रूपवालो ठे? तेनुं द्युं स्वरूप ठे? त्यारे लोकोए कह्युं के जो त्रणे लोक (त्रणे लोकमां रहेला जीवो) गणवाने तत्पर थाय, तेमना आयुष्यनी समाप्ति न होय अने जो परार्थथी उपर ग-

णित होय तो गणवालायक वे समस्त गुणो जेना एवा ते थाय (अर्थात् तेना समस्त गुणो गणी शकाय). लोकोए एम कहो उते इंड्यूति विचारवा लाग्यों के निश्चे आ कोइ महा धूर्त है तथा मायाने रहेवानुं खास घर हे, केमके नहींतर ते समस्त खोकोने विज्ञममां केम पामी शके? माटे ते सर्वज्ञने हुं कदि क्षणवार पण सहन करी शकीश नहीं; केमके श्रंधकारना समूहने दूर करवाने सर्व कंइ वाट जोतो नथी. वली अग्नि हाथना स्पर्शने, सिंह पोतानी केशवालीना खेंचवाने तथा कत्रिय पोताना शत्रुषी थता अपमानने कदि सहन करी शकतो नथी; कारण के में वादीना इंडोने पण बो-लता बंध करी दीधा है तो पही पोताना घरने विषेज शुरवीर एवो आ सर्वेझ मारी पासे कोण है? जे अग्निए मोटा पर्वतोने बाली नाख्या हे तेनी आगल हको कोण मात्र हे? जेणे हाथी हैने उनामी मुक्या है एवा वायुनी आगल रुनी पुणीनुं द्युं जोर चाले ? वली मारा जयथी गौर देशमां जन्मेला पंभितो तो दूर देशमां चाखा गया हे, तथा गुर्जर पंभितो तो मारा जयथी जर्जरित थइने त्रास पाम्या हे, तथा मालवाना पंभितो मरी गया हे, तथा तिलंग देशमां जन्मेला पंडितो तो मारा जयथी कृश शरीरवाला थया हे. अरे!वली लाट देशमां जन्मेला पंगितो तो माराथी मरीने क्यांए जागी गया हे, तथा इविन देशना चतुर पंभितो खङ्जातुर थया हे. श्वरे ! ज्यारे हुं वादी ईनो इहातुर थयो हुं, त्यारे ज-गतमां वादी उनो पण मोटो छकाल पड्यो है; तो मारी आगल वली आ कोण वादी है के जे पोताना सर्वज्ञपणाना मानने धारण करे हे ? एम धारीने ज्यारे त्यां प्रञ्ज पासे जवाने ते उत्कंठित चयो, लारे श्रिज्ञितिए तेने श्रा प्रमाणे कह्युं के हे वंधु! ते एक वादीकीट (दम विनाना वादी) पासे जवाने तमारे प्रयास सेवानी शी जरुर है ? हुं त्यां जाउं हुं, केमके एक कमलने उखेमी नाखवा माटे हुं ऐरावणने खइ जवाय खरो ? त्यारे इंडजूतिए कह्युं के जो के ते तो मारा शिष्यथी पण जीती शकाय तेवो हे,पण ते अवादीनुं नाम सांजलीने माराधी श्रहीं रही शकातुं नथी. जेम(तल)पीलतां कोइ तलनो 💃 दाणो रही जाय, जेम दलतां श्रनाजनो दाणो रही जाय,जेम उखेमतां कोइ तणखडुं रही जाय, जेम

सुबोष

॥ ७३ ॥

अगस्तिने (समुद्र) पीतां सरोवर रही जाय तथा खांडतां कोइ पण फोतहं रही जाय तेनी पेठे आ मने थयो हे.तोपण हुं फोकट सर्वज्ञवादीने सहन करी शकतो नथी ए एक न जीताय तो सर्व पण न जीतायं थाय. सती स्त्री एक बार पण शीलवतथी ब्रष्ट थाय तोपण ते हमेशां ख्रसतीज कहेवाय. आश्चर्य हे के त्रण जगतमां हजारो वादी उने में वाद वडे जीत्या हे,पण खीचमीनी हांमखीमां जेम कोइ कांगड़ं मग रही जाय तेम छा वादी रही गयो हे.वली आ वादीने जीत्या विना मारो जगतने जीतवाथी उत्पन्न थयेलो यश पण नाश पामशे,केमके शरीरमां रहेक्षं ऋष्प शख्य पण प्राणने तजावे हे.कह्यं हे के वहाणमां एक श्रहप विद्र पनवाथी पण शुं ते समुद्रमां डुवी जतुं नथी? तथा एक इंट खसेनवाथी पण समस्त किल्लो पनी जाय हे. इत्यादि विचार करीने करेल हे बार तिलको जेणे एवो, तथा सोनानी जनोइथी विज्र-षित घयेलो, तथा उत्तम रीते करेल हे पीलां वस्त्रोनो आमंबर जेणे एवो, तथा हाथमां धारण करेल है पुस्तको जेर्रए एवा केटलाक शिष्योथी वींटायेलो,तथा हाथमां पकडेलां हे कमंम्ख्रुर्र जेर्रए एवा केटलाक शिष्योधी वींटायेलो, तथा हाथमां राखेल वे दर्ज जेउए एवा केटलाक शिष्योधी वींटायेलो. तथा है सरखती जेना कंठनुं आजूषण है एवा! है वादी नी विजयलक्षीने शरण सरखा ! हे वादी उना मदने जतारनारा! हे वादी उनां मुखने जांगनारा! हे वादी उरूपी हाथी प्रत्ये सिंह सरखा! हे वादी-जना ईश्वरनो नाश करनार! हे वादीरूपी सिंह प्रत्ये श्रष्टापद सरखा! हे वादीने जीतवाथी निर्मक्ष थयेखा! हे वादी र्राता समूहना राजा! हे वादी र्रीना शिर प्रत्ये काख सारखा! हे वादी रूपी केख प्रत्ये तखवार सरखा! हे वादीरूपी श्रंधकार प्रत्ये सूर्य सरखा! हे वादीरूपी घउंने पीसवाने घंटी सरखा! हे वादीना मद्नुं-मरम्नुं मईन करनार! हे वादीरूपी घमाने तोमवाने मुफर(मोघर)सरखा!हे वादीरूपी घुवमने सूर्य सरखा! हे वादी रूपी समुद्र प्रत्ये अगस्ति ऋषि सरखा ! हे वादी रूपी वृक्तने उखेमी नाख-वामां हाथी सरखा! हे वादी रूपी देवोना इंड सरखा! हे वादी रूपी गरुड प्रत्ये गोविंद सरखा! हे वादी-रूपी माणसोना राजा! हे वादीरूपी कंसने मारवामां कृष्ण सरखा! हे वादीरूपी इरिण प्रत्ये सिंह कहपण

11 69 11

सरखा! हे वादी रूपी ज्वर प्रत्ये धन्वंतरि वैद्य सरखा! हे वादी रूपी टोखाना मल्ल सरखा! हे वादी छो-नां हृदय प्रत्ये शख सरखा ! हे वादी छोना समूहने जीतनारा ! हे वादी छोरूपी पतंगी छांछो प्रत्ये दी-पक सरखा ! हे वादी श्रोना समूहना मुगट सरखा ! हे पंगितोमां शिरोमणि सरखा ! हे जीतेल हे श्र-नेक वादो जेणे एवा! हे सरखतीथी मलेख वे प्रसाद जेने एवा! एवी रीते विरुदावलीथी गजावी दीधेल हे दिशाश्चोनो समूह जेणे एवा पांचसो शिष्योथी वींटायेलो इंडजूति वीर प्रजु पासे जतो धको विचारवा लाग्यों के अरे! आ हुष्टे आ हुं कर्युं के मने सर्वज्ञपणाना आटोपथी तेणे गुस्से कर्यों!!!केमके देमको काला सर्पने लातो मारवा तैयार घयो छे! अधवा तो जंदर पोताना दांतथी बिलामीना दांत पानवा तैयार थयो हे ! ऋथवा बलद पोतानां शिगमां वहें इंडना हाथीने जस्दीथी मारवानी इहा करे हे ! अथवा हाथी पोताना दांतथी तुरत पर्वतने पामी नाखवानो यस्न करे हे ! अथवा शशलो केसरी सिं-हना स्कन्ध उपरनी केशवालीने खेंचवाने इन्ने हे ! के जे मारी दृष्टि आगल लोकमां ए पोतानुं सर्वज्ञपणुं प्रसिद्ध करे हे ? शेषनागना मस्तक उपर रहेखा मणिने खेवा माटे तेणे पोतानो हाथ खांबो कर्यों हे; केमके सर्वज्ञना श्रजिमानश्री तेणे मने कोपायमान कर्यों हे. पवननी सन्मुख थइने तेणे दावानख सलगाव्यो हे, ख्रथवा पोताना शरीरनां सुख माटे तेणे कवचनी वेलकी साथे निश्चे ख्रालिंगन कर्युं हे; एम हो, पण तेथी शुं! हमणांज हुं तेने निरुत्तर करी दइश, केमके ज्यांसुधी सूर्य उगतो नथी त्यांसु-धीज पतंगी छं तथा चंड्र गाजे हे(पोताना जोरमां रहे हे),पण सूर्य छग्या बाद तो तेओ हता नहता थइ जाय है वसी है हरिण, हाथी, घोना विगेरेना समूहो! तमें जब्दी आ वन थकी दूर जाओ, केमके आटोप सहित कोपथी स्फुरायमान थयेल हे केशवालीनी शोजा जेनी एवो केसरी सिंह अत्रे आ-वे हे. वली मारा जाग्यना समूहचीज खा वादी खहीं खावी पहोंच्यो हे, माटे खरेखर खाजे तेनी जीजनी खरज हुं दूर करीश. वली लक्तणशास्त्रमां तो मारुं दक्तपणुं हे,साहित्यशास्त्रमां मारी बुद्धि एकत्र ययेली है, तर्कशास्त्रमां पण मारुं अत्यंत किणपणुं(निपुणपणुं)हे, माटे कया शास्त्रमां में श्रम कर्यो नथी?

सुबो०

N 69 N

वली यमने मालव देश शुं हर हे? तथा पंक्तिने निश्चे अपोषित रस कयो हे? तथा चक्रीने अजेय शुं हे? तथा वज्रने अजेय कह वस्तु हे? तथा महास्माओने शुं असाध्य हे? तथा प्र्याने शुं खाय नथी? तथा खलने कहेवा योग्य शुं नथी? तथा कह्ष्पवृक्तने न आपवा योग्य शुं हे? तथा वैरागीने न त्यजाय ए शुं हुं हे तो पही हुं तेनी पासे जाउं अने तेनुं पराक्रम जोउं विश्वी शो खोकने जीतनार तथा महा पराक्रमी एवा मने पण अहीं शुं अजेय हे? माटे हवे त्यां जह तेने हुं जीती खउं हत्यादि विचार करतो थको प्रजुने जोइ पगथी आं पर रह्यो थको विचारवा लाग्यो के आते शुं ब्रह्मा, विष्णु, के सदाशिव शंकर हे? वली शुं आ चंड हे? ना, तेम पण नहीं, केमके चंड तो कलंक शुक्त हे त्यारे शुं सूर्य हे? ना, तेम पण नहीं, केमके सूर्य तो तीव्र कांतिवालो हे त्यारे शुं मेर हे? ना, तेम पण नहीं, केमके मेरु तो घणोज किन हे त्यारे शुं विष्णु हे? ना, तेम पण नहीं, केमके विष्णु तो श्याम रंगना हे. त्यारे शुं ब्रह्मा हे? ना, तेम पण नहीं, केमके ब्रह्मा तो घरका हे त्यारे शुं ते कामदेव हे? ना, तेम पण नहीं, केमके ते तो शरीर विनाने हें, हेवे माह्यम पञ्चं के आ तो दोषरहित तथा सर्वगुणसंपन्न एवा हेह्ना तीर्थंकर हे.

एवी रीते सुवर्णना सिंहासन पर बेठेला, इंडोधी सेवाता अने जगतने पण पूजनीक एवा श्री वीर प्रजुने जोइने ते इंड जूति मनमां विचारवा लाग्यों के अरे! हवे हुं पहेलां जपार्जन करेलुं महत्त्व केम राखी
शकीश ? वली एक खीलाने माटे आखो महेल जांगवानी कोण इन्ना करें ? वली एकने नहीं जीत्याधी
मारी मानहानि शी खवानी हें ? वली जगतने जीतनारों हुं एवं नाम हवे केम करीश ?वली अरे! में वगर
विचार्युं काम कर्युं हे, केमके मंद छुर्वु छ एवो जे हुं ते आ जगदीशना अवतारने जीतवा माटे आव्यो हुं.
वली हुं तेनी पासे शी रीते बोली शकीश ? तथा तेनी पासे पण शी रीते जह शकीश ? माटे हवे तो संकटमां पड्यो हुं, तेथी शिव मारा यशनुं रक्षण करो. वली कदाच मारा जाग्योदयथी अहीं मारो जय थाय,
त्यारे तो हुं त्रेणे जगतमां पंकितशिरोमणि थाडं. एवी रीते विचार करता इंड जूतिने जिनेश्वर प्रजुए
तेनां नाम अने गोत्र कहेवापूर्वक अमृत सरखी मीठी वाणीथी बोलाव्यो. हे गौतम इंड जूति!

कल्पण

तुं श्रत्रे प्रक्षे श्राव्योः एवं तेनुं वचन सांजलीने इंडजूति विचारवा लाग्यो के श्ररे ! श्रा हुं मारुं नाम पण जाणे हे!!! अथवा त्रणे जगतमां विख्यात एवं मारुं नाम कोण जाणतो नथी? केमके सूर्य द्युं वालगोपाल पर्यंत लोकने ठानो होय खरो ? माटे इवे जो मारा मनमां ग्रप्त रहेला संदेहने ते कही श्रापे तो हुं तेमने सर्वज्ञ मानुं, न कही श्रापे तो कांइ पण न मानुं एवी रीते विचार करता इंड्रजूतिने श्रीमहावीर प्रजुए कह्युं के तारा मनमां जीवनो शो संशय है? तुं वेदनां पदना अर्थने जाएती नथी. हवे ते वेदपदो सांजल पठी वीर प्रजुए करेलो वेदनो ध्वनि मथन कराता समुद्र सरखो, अथवा गंगाना पूर सरखो, अथवा आदि ब्रह्मना ध्वनि सरखो होय तेम शोजतो हतो.

ते वेदनां पदो नीचे प्रमाणे जाणवां.

"विज्ञानघन एवैतेज्यो जूतेज्यः समुत्याय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीति"

प्रथम तो तुं तेपदोनो एवो अर्थ करे वे के "विज्ञानघन" एट से गमन आगमननी चेष्टावालो आत्मा

"एतेज्यो जूतेज्यः" एट से पृथ्वी, अपू, तेज, वायु अने आकाश ए पांच जूतथी मद्यांगमां मदशक्तिनी

पेवे जत्पन्न थहने ते जूतोनी साथे नाश पामे वे एट से तेर्जमांज पाणीमां परपोटानी पेवे लय पामे वे; माटे एवी रीते पंच जूतथी जूदो छात्मा नहीं होवाथी प्रेत्यसंज्ञा नथी एटक्षे मरी गया बाद तेनो पुनर्जन्म नथी,पण ते अर्थ अयुक्त हे ते पदोनो (खरो) अर्थ हवे तुं सांजल 'विज्ञानघन"ए पदनो द्युं अर्थ है ? तो के "विज्ञान" एटसे ज्ञान, दर्शनना उपयोगात्मक विज्ञान; वसी आत्मा पण तन्मय हो-वाथी ते पण "विज्ञानघन" कहेवाय; केमके आत्माना दरेक प्रदेश प्रत्ये ज्ञानना अनंत पर्यायो वे वली ते विज्ञानघन उपयोगात्मक आत्मा कथंचित् जूतो यकी ख्रयवा ते जूतोना विकाररूप एवा घटादिकथी उत्पन्न याय हे. घटादिकना ज्ञानथी परिएत एवो जे जीव ते हेतुजूत घटादिकथीज थाय हे, केमके घटादिक ज्ञानना परिणामने घटादिक वस्तु हुं सापेक्पणुं रहेे हुं वे. एवी रीते ए जूतरूप घटादिक वस्तुवंथी तेना उपयोगपणाने क्षीधे जीव उत्पन्न थइने तेमांज

लय पामे हे; एटक्षे ते घटादिक वस्तुर्ड नाश पाम्ये हते श्रथवा व्यवहित होते हते तेना उपयो-गपणाए करीने जीव पण नाश पामे हे, अने बीजा उपयोगपणाए करीने पाहो उत्पन्न याय हे, अथवा सामान्यरूपपणाए करीने ते रहे हे, अने तेथी करीने प्रेत्यसंज्ञा नथी, एटखे तेने पहेलांनी घटादिकना उपयोगरूप संज्ञा रहेती नथीं; केमके वर्तमान उपयोगपणाधी तेनी घटादिक संज्ञा नाश पामेली हे. वसी आ आत्मा झानमय हे, अने जे दम, दान अने दया ए त्रणे दकार जाणे ते जीव. वली विद्यमान हे जोक्ता जेनो एवं आ शरीर चावल आदिकनी पेठे जोग्यपणाए करीने हे एटले चावल जेम जोग्य हे तो तेनो जोक्ता पण हे, तेम शरीर जोग्य हे अने तेनो जोक्ता विद्य-मान हे इत्यादि श्रानुमाने करीने पण जीव हे. तेमज वली घूधमां जेम घी, तलमां तेल, काष्टमां अग्नि, पुष्पमां सुगंध तथा चंडकांतमां अमृत रहे हे, तेम आ आत्मा पण शरीरमां रहे हे, अने ते शरीरथी जूदों हे. एवी रीतनां प्रजुनां वचनथी नाश थयेल हे संदेह जेमनो एवा इंड्रजूतिए पांचसो शिष्योना परिवार सहित प्रजु पासे दीका खीधी, अने तेज वखते "उपने इवा, विगमे इवा अने धुवे इ वा" ए त्रिपदी प्रजुना मुखयी पामीने तेणे द्वादशांगीनी रचना करी॥ इति प्रथम गणधर ॥ इवे तेना बीजा नाइ अग्निजूतिए पोताना नाइने दी कित यथेखो सांनलीने विचार्यं के अरे ! कदापि पर्वत पीगक्षे, बरफनो समूह सलगी उठे, अग्नि शीतल थाय अने वायु स्थिर याय ए सर्व संज्ञवे, पण मारो जाइ हारे ए संज्ञवे नहीं, तेटला माटे घणी अश्रद्धावाला तेणे लोकोने पूट्युं. त्यार पठी तेणे निश्चय जाएये ठते मनमां विचार कर्यों के त्यां जइने ते धूर्तने जीतीने हुं मारा जाइने पाठो वाली श्रावुं; एम विचारी ते पण जतावलो प्रजुनी सन्मुख श्राव्यो; त्यारे प्रजुए तेने पण तेनां गोत्र विगेरे सहित एवा नामधी वोलाव्यो, तथा तेना मनमां रहेला संदेहने प्रगट करीने प्रजुए कह्युं के हे गौतमगोत्री अग्निजूति ! तारा मनमां कर्मनो शो संदेह हे ? अथवा वेदना तस्वार्थने तुं प्रगट रीते जाणतो नथी ? ते व्या प्रमाणे हे. " पुरुष एवेदं मि सर्वं यसूतं यच जाव्यं इत्यादि"

ain Education International

करूपण

॥ इंग

छा पदनो तारा मनमां एवो छार्च जासे हे के (अहीं " प्रिं " ए वाक्यना छालंकार माटे हे.) 🔻 जि छातीत कालमां थयेलुं हे, तथा जे छागामी कालमां थवानुं हे, ते सथलुं "पुरुष एव" छात्माज हे. अहीं एवकार ए कर्म,ईश्वर आदिकना निषेध माटे हे. आ वचनथी जे मनुष्य, देव, तिर्थंच, पर्वत, पृथ्वी श्रादिक वस्तुओं देखाय हे, ते सघ हुं आत्माज हे, श्रने तेथी कर्मनो निषेध प्रगटज हे. वसी श्रमते एवा आत्माने मूर्त एवां कर्म वडे अनुग्रह अने उपघात शी रीते संजवे ? जेम आकाशने चंदन आदि-कथी शोजित करी शकातुं नथी, अथवा तेने तलवार आदिकथी कापी शकातुं पण नथी, माटे कर्म ठेज नहीं, ए प्रमाणे तारा मनमां हे, पण हे श्रक्षित्रति! ए अर्थ युक्त नथी,कारण के वेदनां ते पदो तो परु-षनी स्तुतिनां हे, केमके वेदनां पदो त्रण प्रकारनां हे; तेमां केटलांक विधि प्रतिपादन करनारां हे, जेमके स्वर्गनी इञ्चा करनार प्राणीए अग्निहोत्र करवुं इत्यादि,वसी केटलांक पदो अनुवाद सूचवनारां हे, जेमके बार मासनो एक संवत्सर कहेवाय इलादि अने केटलांक पदो स्तुतिरूप हे,जेमके आ उपरनुंज तारा संदेहवाह्यं पद इत्यादि,माटे ए जपर कहेला पदथी पुरुषनो महिमा देखामी आप्यो हे, परंतु कर्मादिनो श्रजाव कर्यों नथी. जेमके ''जले विष्णुः स्थले विष्णुः, विष्णुः पर्वतमस्तके ॥ सर्वजूतमयो विष्णु,-स्तस्माद्विष्णुमयं जगत्॥१॥ एटखे जलमां विष्णु, स्थलमां विष्णु अने पर्वतना शिखर उपर पण विष्णु हे, विष्णु सर्वे जूतमय हे, माटे छा जगतज विष्णुमय हे. छा वाक्यथी विष्णुनो महिमा कहेलो हे, पण अन्य वस्तुर्जनो अजाव कह्यो नथी.वली अमूर्त एवा आत्माने मूर्तिवंत एवां कर्म वडे अनुप्रह अने उप-घात केम थाय? ते कहे वुं पण अयुक्त हे,कारण के मूर्तिवंत एवा मधादिकथी अमूर्त एवा झाननो पण उ-पघात थाय हे, खने ब्राह्मी ख्रादिक औषधिथी खनुयह देखायज हे.वली जो कर्म न होय,तो एक सुखी, बीजो डु:खी, एक होठ, बीजो चाकर इलादि जगतनी प्रलक्त विचित्रता केम संजवे ? प्रजुनां ते वचनो सांजलीने अग्निजूतिनो संशय पण दूर थयो, अने तेणे पण दीका लीधी ॥ इति दितीय गणधर ॥ हवे वायुज्जतिए तेर्ड बन्नेने दी कित थयेखा सांजलीने विचार्यं के जे प्रजुना इंडजूति अने अप्ति-

सुबो०

॥ ७६॥

जूति पण शिष्यो घया, ते प्रजुतो मारे पण पूजनीकज हे; माटे तेमनी पासे हुं पण जाउं छने मारो संशय पूहुं. एम विचारी ते पण प्रजु पासे छाव्यो, छने एवी रीते सघलाउं पण छाव्या, छने प्रजुए पण सर्वेने प्रतिबोध पमाड्यो. तेनो कम छा प्रमाणे हे.

हवे "तक्कीव तहरीर" एटले तेज जीव श्रने तेज शरीर, तेने विषे संदेहवाला वायुजूतिने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना श्रर्थ जाणतो नश्री ? केमके "विकानघन एवेतेज्यो जूतेज्यः" इलादि वेदपदोए करीने पंच जूतश्री जीव पृथक् नश्री एम प्रतीति थाय हे. तथा "सत्येन लज्यस्तपसा होष ब्रह्मचर्येण निलं ज्योतिर्मयो हि शुद्धो यं पश्यंति धीरा यतयः संयतात्मान इलादि" हवे ते पदोनो श्रर्थ श्रा प्रमाणे हे. श्रा ज्योतिमय शुद्ध श्रात्मा सत्य, तप श्रने ब्रह्मचर्य वहे मेलवाय हे एटले जणाय हे. श्रा वेदपदोशी जूतो थकी पृथक् एवा श्रात्मानी प्रतीति थाय हे; मादे तने संदेद हे के जे श्रा शरीर हे तेज श्रात्मा हे, के कोइ बीजो हे ?पण ते श्रयोग्य हे, केमके "विकानघन" इत्यादि पदोशी श्रमे कहेला प्रकारे करीने श्रात्मानी सत्ता एटले होवापणुं प्रगटज हे ॥ इति तृतीय गणधर ॥

हवे पंच जूतमां संदेहवाला एवा व्यक्त नामना पंिमतने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी ? "येन स्त्रोपमं वे सकतं, इत्येष ब्रह्मविधिरंजसा विक्षेयः" आ पदनो तारा मनमां एवो अर्थ जासे वे के खरेखर पृथ्वी आदिक आ सघतुं स्त्र सरखुं एटले असत् वे, अने आ वेदवचनथी पहेलां तो पंच जूतोनो अजाव देखाइ आवे वे; वली "पृथ्वी देवता आपो देवता" इत्यादि पदथी जूतसत्ता एटले जूतोनुं होवापणुं जणाइ आवे वे; माटे ते बाबतनो तारा मनमां संदेह वे, पण ते अयुक्त वे; केमके "स्वप्तोपमं वे सकतं" इत्यादि पदो अध्यात्म संबंधी चिंत-वनमां कनक, कामिनी आदिना संयोगने अनित्यपणुं सूचवनारां वे, पण कंइ ते पंच जूतोनो निषेध सूचवनारां नथी ॥ इति चतुर्थ गणधर ॥

पठी ''जे जेवो ते तेवो" एवी रीतना संदेहवाला सुधर्म नामना पंगितने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं

lain Education International

क्रह्पण

II 69 II

कि हुं के तुं पण वेदना श्रर्थने जाणतो नथी ? कारण के "पुरुषो वे पुरुषत्वमश्तुते, पश्चवः पशुत्वं" हत्यादि पदो जवांतरनुं साहश्यपणुं सूचवनारां हे, तथा "शृगालो वे एप जायते यः सपुरीषो दिश्वाते" इत्यादि पदो तो वली जवांतरनुं वेसहश्यपणुं देखामनारां हे. ए तारा मनमां संदेह हे, पण ते सुंदर विचार नथी; केमके "पुरुषो वे पुरुषत्वमश्तुते" इत्यादि जे पदो हे, तेनो श्रर्थ तो एवो हे के कोइक मनुष्य पण माईव श्रादिक गुणोए करीने युक्त थयो थको मनुष्य संवंधी श्रायुकर्भने बांधीने पाहो पण मनुष्यपणाने पामे एवो श्रर्थ निरूपण करनारां ते पदो हे, पण मनुष्य ते मनुष्यज्ञ थाय एवो निश्चय बतावनारां ते पदो नथी. वली तारा मनमां एक एवी युक्ति पण हसेली हे के मनुष्य केवी रीते पशु यह शके ? केमके चावलना दाणा वाव्याथी कंइ घडं पेदा नथी, पण ते तारी युक्ति वरोबर नथी; केमके हाण श्रादिशी वीही श्रादिनी उत्पत्ति देखाय हे, तेथी कार्यनुं वैसहश्यपणुं पण संजवे हे ॥ इति पंचम गणधर ॥

हवे बंध मोक्तना विषयने विषे संदेहवाला मंित नामना पंडितने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना श्रर्थने जाणतो नथी ? कारण के "स एष विग्रणो विज्ञनं बद्धाते संसरित वा मुच्यते मोचयित वा." श्रा पदोनो श्रर्थ तुं प्रथम एवो करे वे के ते श्रा कहेवा मांड्यो जीव एटले कोइ जगद्धर्ती जीव वे, ते केवो वे ? तो के विग्रण एटले सत्वादि रहित वे श्रने विज्ञ एटले सर्वव्यापक वे. ते बंधातो नथी एटले पुरुष पापथी जोमातो नथी, संसारमां परित्रमण करतो नथी, बंधनो श्रजाव होवाथी ते कमें वहे मूकातो नथी तेमज श्रकर्तापणुं होवाथी बीजाने (कमेंथी) मूकावतो पण नथी, पण श्रा श्रय योग्य नथी; परंतु (तेनो श्रर्थ एवो वे के) ते ए श्रात्मा केवो वे ? तो के विग्रण एटले विद्यास्थ गुण रहित वे. वली केवो वे ? तो के विज्ञ एटले केवलक्षानखरूपे करी विश्वव्यापकपणुं होवाथी केवलक्षानवालो वे श्रावा प्रकारनो श्रात्मा पुएय पापथी जोमातो नथी ए वख्रुं॥ इति षष्ट गणधर ॥ हवे देवविषयमां संदेहवाला एवा मौर्यपुत्र नामना पंकितने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण

सुबोण

11 69 11

वेदना अर्थने जाणतो नथी? कारण के "को जानाति मायोपमान् गीर्वाणान् इंड्यमवरुणकुवेरादीन्" ए पदोशी देवोनो निषेध प्रत्यक्त देखाय हे, अने "स एव यङ्गायुधी यजमानोंऽजसा खर्गेलोके ग- इति" ए पदथी देवसत्ता एटले देवोनुं होवापणुं सिद्ध थाय हे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह हे, पण ते अयुक्त हे; केमके आ पर्षदामां वेहेला देवोने तो हुं अने तुं बन्ने प्रत्यक्त रीते जोइए हीए. वली वेदमां जे "मायोपमान्" एवं देवोनुं विशेषण कह्यं हे, ते तो तेषनुं पण अनित्यपणुं सूचवनारुं हे ॥ इति सप्तम गणधर ॥

हवे नारकीना संबंधमां संदेहवाला एवा पंक्तिने विषे श्रेष्ठ श्रकंपित नामना पंक्तिने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना श्रर्थने जाणतो नथी ? केमके "नह वे प्रेत्य नरके नारकाः संति" इत्यादि पदोधी नारकीनो श्रजाव जणाय हे अने "नारको वे एष जायते यः शुष्ठान्नम-श्राति" इत्यादि पदोधी नारकसत्ता एटले नारकीनुं होवापणुं सिद्ध थाय हे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह हे, पण "नह वे प्रेत्य नरके नारका सन्ति" ए पदनो शो श्रर्थ हे ? तो के परलोकने विषे केटलाएक नारकी मेरु पर्वत श्रादिनी पेहे शाश्वता नथी, पण जे कोइ पाप श्राचरे हे ते नारकी थाय हे, श्रथवा नारकी मरीने फरी नारकीपणे उत्पन्न थता नथी एम "प्रेत्य नारका न सन्ति" ए पद कहें हुं हे ॥ इति अष्टम गणधर ॥

हवे पुण्यना संबंधमां संदेहवाला एवा पंिनतने विषे श्रेष्ठ अचलचात नामना पंिनतने प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदनो अर्थ जाणतो नथी ?तारा संदेहनुं कारण प्रथम 'पुरुष एवेदं किं सवं' इत्यादि पद अग्निज्ञतिए कहेलुं हे ते हे, माटे तेने जे उत्तर त्यां कह्यों हे ते तारे ते प्रमाणेज जाणवो. तथा 'पुण्यः पुण्येन कर्मणा, पापः पापेन कर्मणा' एटले पुण्य कर्मथी पुण्य थाय हे अने पाप कर्मथी पाप थाय हे. इत्यादि वेदपदोथी पुण्य पापनी सिद्धि थाय हे ॥ इति नवम गण्धर ॥

इवे परजवमां संदेहवाला एवा पंभितप्रवर मेतार्थ नामना पंभितने प्रचुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं

कल्पण

ii oo i

के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी? तने पण इंडज़्तिए कहेलां 'विज्ञानघन एवैतेच्यो जूतेच्यः' इत्यादि पदो वडे परलोकने विषे संदेह हे, परंतु ए पदोनो अर्थे में कह्यो हे ते प्रमाणे विचार के जेथी तारो संदेह इर थाय ॥ इति दशम गणधर ॥

पढ़ी मोक्तना विषयमां संदेहवाला प्रजास नामना पंक्तिने पण प्रजुए जेवुं हतुं तेवुं कह्यं के तुं पण वेदना श्रर्थने जाणतो नथी ? कारण के ''जरामर्यं वा यदिशहोत्रं" आ पद्धी करीने मोक्तनो अजाव जणाय हे, केमके जे अभिहोत्र हे, ते "जरामर्यं" कहेतां हमेशां करतुं, एम कहां हे, अने तिथी करीने अग्निहोत्रनुं प्रतिपादन कर्युं; अने ते अग्निहोत्रनी किया तो मोक्तनं कारण शकती नथी, केमके दोषवाली होवाथी केटलाकने वधनुं कारण थाय हे अने केटलाकने छप-कारनुं कारण थाय हे; तेथी मोक्तसाधक एवां श्रनुष्टाननी किया करवानो काल कहेलो नथी, माटे मोक्त ठेज नहीं, ए कारणथी मोक्तनो अनाव प्रतीत याय हे; तेम वसी कहां छे के "दे ब्रह्मणी वेदितव्ये, परमपरं च, तत्र परं सत्यज्ञानं, अनंतरं ब्रह्मेति" पदची मोक्समतानी प्रतीति थाय हे. एवी रीतनो तारा मनमां संदेह हे, पण ते संदेह अयुक्त है; केमके "जरामर्थं वा यदिव्यहोत्रं" ए पदमां "वा" शब्द "अपिना" अर्थमां हे अने ते जिन्न कमवालो हे. तेमज "जरामर्यं यावत् अभिहोत्रं अपि कुर्यात्" एटले जे कोइ खर्गादिकनो अर्थी होय तेणे तो जावजीव सुधी श्रमिहोत्र करवुं, अने जे कोइ निर्वाणनो अर्थी होय तेणे तो अग्निहोत्र होमीने निर्वाणसाधक एवं अनुष्टान करवुं; पण नियमयी "अग्निहोत्रज करवुं" नहीं एवो अपि शब्दनो अर्थ हे, तेथी करीने निर्वाण संबंधी अनुष्ठाननो पण काल जणाव्यो, माटे निर्वाण तो वेज ॥ इति एकादश गणधर ॥

एवी रीते चार हजार अने चारसें ब्राह्मणोए प्रजु पासे दीक्ता खीधी. तेर्नमांना मुख्य अगीया-रने त्रिपदीना ब्रह्मणुर्वक अगीयार छंग तथा चौद पूर्वनी रचना अने गण्धरपदनी स्थापना घइ. **सुबो**ठ

11 00 11

त्यां द्वादशांगीनी रचना बाद प्रज्ञ तेर्डने तेनी अनुक्षा करता हवा अने इंड वज्रमय दिव्य स्थाल दिव्य चूणोंनो जरी प्रज्ञनी पासे त्राव्योः पढ़ी प्रज्ञए रक्षमय सिंहासनथी उठीने ते चूर्णनी संपूर्ण मुठी जरीः पढ़ी गौतम प्रमुख अगीयारे गणधरो अनुक्रमे जरा नमीने उत्ता रह्याः ते वखते देवो पण वाजित्रना ध्वनि तथा गीत आदिने निवारीने सांजलवा लाग्याः ते वखते पहेलां प्रज्ञ कहेवा लाग्या के "गौतमने डव्य, गुण तथा पर्यायथी तीर्थ प्रत्ये आक्षा आपुं तुं", एम कही तेना मस्तक पर चूर्ण नाखता हवाः पठी देवो पण तेमना पर चूर्ण, पुष्प अने सुगंधनी दृष्टि करता हवाः अने सुधर्माखामीने धुरिपदे स्थापीने प्रज्ञ गण प्रत्ये अनुक्षा करता हवाः एवी रीते गणधरवाद जाणवोः स्थापनी के क्षापनी के क्षापनी विश्वाप

हवे ते काल अने ते समयने विषे अमण जगवान् श्री महावीर प्रज अस्थिक यामनी निश्राए पहें खोमासुं करता हवा, त्यारपढ़ी चंपा अने पृष्टचंपानी निश्राए त्रण चोमासां करता हवा, वली एवीज रीते वैशाली नगरी अने वाणिज्ययामनी निश्राए बार चोमासां करता हवा,राजग्रह नगरनी अने नालंदा पानानी निश्राए चौद चोमासां करता हवा,अर्थात् त्यां राजग्रह नगरनी उत्तर दिशामां नालंदा नामे पानो एटले शालापुर हे त्यां चौद चोमासां करता हवा,ह मिथिला नगरीमां करता हवा, वे जिल्ला नगरीमां करता हवा, एक चोमासुं आवस्ती नगरीमां करता हवा,एक चोमासुं अवस्ती नगरीमां करता हवा,एक चोमासुं वज्रजूमि नामे अनार्य देशमां करता हवा, अने एक हेल्लं चोमासुं मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुनोनी जीर्ण एवी एक शालामां करता हवा. पहेलां ते नगरीनुं 'अपापा' एवं नाम हतुं,पण प्रज त्यां कालधर्म पाम्या,तेथी देवोए तेनुं ''पापा नगरी' एवं नाम आप्युं.

हवे जे बेह्वा चोमासामां प्रज मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुनोनी शालामां आव्या, ते चोमासामां आवर्षाकालनो चोथो महिनो, सातमो पक्त, ते कार्तिक मासनो कृष्ण-पक्त, ते कार्तिकना कृष्णपक्तना पंदरमां दिवसे जे बेह्वी रात्रि हती, ते रात्रिए श्रमण जगवान्

१ गुजराती आसो मासनी अमासे.

कह्पः

११ ७७ ११

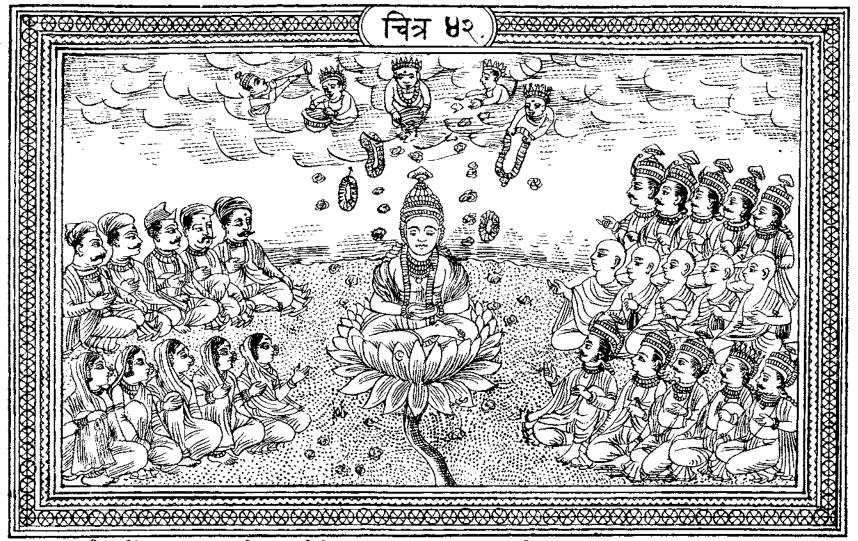
श्री महावीर प्रज्ञ कालधर्मने पाम्या. कायि स्थिति स्थने जवस्थिति यकी कालधर्मने पाम्या. संसारघी पार उतरी गया. रुडे प्रकारे संसारमध्ये फरीने पाढ़ा न स्थाववे करीने ऊर्ध्व प्रदेशमां प्रज्ञ गया. ते प्रज्ञ केवा ? तो के ठेदेलां ठे जन्म, जरा स्थने मरणनां बंधनो एटले जन्म, जरा स्थने मरणनां कारणरूप कर्मो जेणे एवा,तथा साधित कर्यों ठे स्थ जेमणे एवा,तथा तत्त्वना स्थाना जाणकार, तथा ज्वोपप्राही कर्मों थी मुक्त ययेला, तथा सर्व छःखोनो स्रंत करनारा, सर्व संतापोना स्थजावधी परिनिर्वत ययेला, तथा नाश ययेल ठे शरीर स्थने मन संबंधी सर्व छःखो जेमनां एवा ते प्रज्ञ स्था। हवे जगवंतना निर्वाणवर्ष स्थादिनां सिद्धातनां नामो कहे ठे. जे वर्षमां प्रज्ञ निर्वाणपदने

हव जगवतना निर्वाणविष श्रादिना सिद्धातना नीमा कह ठ ज वर्षमा प्रजु निर्वाणपदने पाम्या, ते चंद्र नामे बीजो संवत्सर हतो, ते कार्तिक मासनुं प्रीतिवर्धन एवुं नाम हतुं, ते पक्तनुं निरिवर्धन एवुं नाम हतुं, ते दिवसनुं श्रक्षिवेश्य एवुं नाम हतुं, तथा तेनुं उपशम एवुं बीजुं नाम पण हतुं, देवानंदा नामे ते श्रमावास्थानी रात्रिनुं नाम हतुं, श्रथवा तेनुं बीजुं निरित एवुं नाम पण कहेकुं ठे. ते वखते श्रर्च नामे खब हतो, मुहूर्त्त नामे प्राण हतो, सिद्ध नामे स्तोक हतो, नाग नामे करण हतुं, श्रा शकुनि श्रादि चार स्थिर करणोमांनुं त्रीजुं करण हतुं, केमके श्रमासना उत्त-रार्धमां तेज करण होय ठे सर्वार्थसिद्ध नामे मुहूर्त्त हतुं तथा ते वखते खाति नामना नक्तन्ननी साथे चंद्धनो जोग प्राप्त थये ठते प्रजु काखधमेने पाम्या यावत् सर्वे छःखयी मुक्त थया.

हुवे ते संवत्सर, भास, दिवस, रात्रि तथा मुहूर्त्तनां नाम सूर्यप्रक्षितमां नीचे प्रमाणे श्राप्यां हे. हि एक युगमां पांच संवत्सर होय हे; तेर्ननां नाम चंड्र, चंड्र, श्रजिवर्द्धित, चंड्र श्रने श्रजिवर्द्धित. हि तथा श्रजिनंदन, सुप्रतिष्ठ, विजय, प्रीतिवर्द्धन, श्रेयान् , शिशिर, शोजन, हैमवान् , वसंत, कुसुम- संजव, निदाध श्राने वनविरोधी, ए श्रावणादि बार मासनां नाम जाणवां. तथा पूर्वांगसिद्ध, मनो- रम, मनोहर, यशोजङ, यशोधर, सर्वकामसमृद्ध, इंड्र, मूर्द्धाजिषिक्त, सौमनस, धनंजय, श्रथिसिद्ध, श्रिजिजित, रत्याशन, शतंजय तथा श्रियवेश्य, ए पंदर दिवसनां नाम जाणवां. तथा उत्तमा, सुन- दि

सुबो0

11 90 11



भगवान् सुवर्ण कमर्ते बेठा घएा भव्य जीवो ने धर्मी पदेश देता थका निर्वाण पाप्या समाधिस्थ थया.

पा. ८४.

क्त्रा, इलापत्या, यशोधरा, सौमनसी, श्रीसंजूता, विजया, विजयंती, वैजयंती, श्रपराजिता, इन्ना, समाहारा, तेजा, श्रजितेजा तथा देवानंदा, ए पंदर रात्रिनं नाम जाणवां. तथा रुद्ध, श्रेयान् , मित्र, वायु, सुप्रतीत, श्रजिचंद्ध, माहेंद्ध, बलवान् , ब्रह्मा, बहुसत्य, ऐशान, स्त्वष्टा, जावितात्मा, वैश्रवण, वारुण, श्रानंद, विजय, विजयसेन, प्राजापत्य, उपशम, गंधर्व, श्रिवंदय, शतवृषज, श्रानंत्रान् तपवान् , श्रर्थवान् , क्रणवान् , जौम, वृषज, सर्वार्थसिक तथा राक्तस, ए त्रीश मुहूर्त्तनां नाम जाणवां.

जे रात्रिए श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज कालधर्म पाम्या यावत् सर्व डःख्यी मुक्त यया ते रात्रि खर्गथी श्रावता श्रने जता एवा बहु देव श्रने देवी छए करीने प्रकाशवाली थइ.

जे रात्रिए श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज कालधर्म पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया ते रात्रि श्रावता श्रने जता एवा बहु देव श्रने देवीडिए करीने जाणे श्रत्यंत व्याकुल यह होय तेम श्रम्पष्ट शब्दथी कोलाहलमयी थइ.

जे रात्रिए श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज कालधर्म पाम्या यावत् सर्वे द्वःखयी मुक्त यया ते रात्रिए इंडजूति नामना मोटा श्रने गोत्रयी गौतम श्रनगार शिष्यने ज्ञातकुलमां जन्मेला श्री महावीर प्रज उपरयी प्रेमवंधन तुटी गये उते श्रनंत श्रने श्रनुपम एवां यावत् उत्तम केवलज्ञान श्रने केवलद्शीन उत्पन्न थयां तेनो वृतांत नीचे प्रमाणे जाणवोः

प्रजिए पोताना निर्वाण वखते गौतमने कोइक गाममां देवशमीने प्रतिबोधवा वास्ते मोकछा हता. तेने प्रतिबोधीने पाठा वखतां श्री गौतमखामी वीर प्रजुतुं निर्वाण सांजलीने जाणे वज्रयी हणाया होय तेम क्रणवार सुधी मौनपणाने धारण करीने रह्या, तथा पठी बोखवा खाग्या के स्राजे मिथ्यात्वरूपी श्रंधकार फेखावा मांड्यो हे, तथा कुतीर्थिन्हूपी घुवमो गर्जना करवा खाग्या हे, तथा छुकाख, युद्ध, वेर श्रादिक राक्सोनो फेखावो यशे. वखी हे प्रजु! तमारा विना त्राजे श्रा परतकेत्र, राहुयी यस्त थयेखो हे चंद्ध जेमां एवा श्राकाश सरखुं, तथा दीपक विनाना जवन

कङ्प

11 @ 1

सरखुं शोजा रहित थयुं हे. हवे हुं कोना चरणोने नमीने वारंवार परोना अर्थो पूठीश ? तथा हे जगवंत ! एम हवे हुं कोने कहीश ? तथा मने पण हे गौतम ! एम आप्त वाणोधी कही कोण बोखावशे ? हा ! हा ! वीर ! आ तमे ग्रुं कर्युं ? के आवा अवसरे तमे मने इर कर्यों !!! ग्रुं आको मांकीने वालकनी पेठे हुं तमारे हेडे वलगत? ग्रुं हुं केवलज्ञानमांथी तमारी पासेथी जाग मागत ? अथवा मोक्तमां ग्रुं संककाश थइ जात ? अथवा ग्रुं आपने कांइ जार पन्नो जात ? के मने आम तजीने तमे चाळा गया !!! ए प्रमाणे वीर ! वीर ! एम करतां वीर नाम गौतमना मुखे लागी रह्यं. हा, हवे में जाएयुं के वीतरागो तो निःक्षेही होय हे; आ तो मारोज अपराध हे, केमके में ते वखते श्रुतनो लपयोग दीधो नहीं; आ एक पक्तना क्षेहने धिकार हे ! माटे हवे क्षेहची सर्थं; हुंतो एकलोज हुं; मारो कोइ नथी; एवी रीते सम्यक् प्रकारे सम परिणाम जावतां थका तमने केवलज्ञान लरपन्न थयुं.

मुक्तमग्गपविषाणं, सिणेहो वर्जासेंखद्धा ॥ वीरे जीवंतए जार्ड, गोधमो जं न केवद्धी ॥ १ ॥
मोक्तमार्गमां प्रवर्तेद्धाने स्नेह ए वज्रनी सांकद्ध हे,कारण के वीर प्रञ्ज जीवता हता त्यांसुधी गौतम केवद्धी न थया.

पठी प्रजातकाक्षे इंड श्रादिके महोत्सव कर्यों. छहीं कि कहे हे के श्री गौतम प्रजुने तो सघक्षुं छाश्चर्यकारीज थयुं हे. तेमनो अहंकार तो जलटो बोधने माटे थयो, राग पण गुरुनी जिस्त माटे थयो तथा विषाद केवलज्ञानने माटे थयो !!!

हवे ते श्री गौतमस्वामी बार वर्ष सुधी केवलिपर्याय पालीने श्रने सुधर्मास्वामीने दीर्घायुष्य-वाला जाणी गण सोंपीने मोक्ते गया पाठलथी सुधर्मास्वामीने पण केवलकान ययुं, श्रने ते पण त्यार वाद श्राठ वर्ष सुधी विहार करी पठी श्रार्य जंबूस्वामीने पोतानो गण सोंपीने मोक्ते गया. हवे जे रात्रिए श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामी मोक्ते गया यावत् सर्व छःखयी मुक्त थया, सुबो०

॥ एव ॥

ते रात्रिए नव मह्नकी जातिना काशी देशना राजार्छ तथा नव लेहकी जातिना कोशल देशना राजार्छ, के जेख्यो कार्य पड़्यांथी गणनो मेलावो करता हता, खने जेर्छ खढारे ते चेटक राजाना सामंतो कहेवाता हता,तेर्छ ते खमावास्थाने दिवसे संसाररूपी समुद्रने पार पहोंचामनार एवो पौषध- उपवास करता हवा एटले चार प्रकारना खाहारना लाग वडे पौषधरूप उपवास करता हवा नहींतर दीपक करवानो संजव होइ शकतो नथी खने ते वलते जावज्योत गयो हतो,तेथी हवे खमे इव्यज्योत करीशुं, एम विचारी तेर्छए दीपको कर्या; खने लारखी मांकीने दीवालीनो महोत्सव पण चालु खयो हे, खने कार्त्तिक सुदि एकमने दहाडे देवोए श्री गौतमस्वामीना केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यों, तेथी ते दिवसे पण माणसोने हर्ष थयो. हवे नंदिवर्धन राजा प्रजुनुं निवार्ण थयेशुं जाणीने शोकश्री पीकित थयो, तेथी तेने सुदर्शना नामनी बहेने समजावीने खादर सहित बीजने दहाडे पोताने घेर जमाड्यो. लारखी जाइबीजनो तेहेवार पण चालु थयों.

हवे जे रात्रिए श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज निर्वाणपद ने पाम्या यावत् सर्व प्रःखयी मुक्त थया ते रात्रिए कूर खजाववालो जस्मराशि नामे त्रीशमो मोटो यह जगवानना जन्मनक्तत्रमां (उत्तरा-फाल्यनी नक्तत्रमां) संकांत थयो हतो. हवे ते यह केवो हतो ? तो के वे हजार वर्षनी स्थिति-वालो हतो, केमके एक नक्तत्रमां ते एटला काल सुधी रहे हे हवे ते यहो श्रट्याशी हे, तेमनां नाम नीचे प्रमाणे जाणवां श्रंगारक, विकालक, लोहिताक्त, शनैश्वर, श्राधुनिक, प्राधुनिक, कण, कणक, कणकणक, कणवितानक, कणसंतानक, सोम, सिहत, आश्वासन, कार्योपग, कर्नुरक, श्रजकरक, इंडजक, शंख, शंखनाज, शंखवणीज, कंस, कंसनाज, कंसवणीज, नील, नीलावजास, श्रजकरक, इंडजक, रांख, शंखनाज, शंखवणीज, कंस, कंसनाज, कंसवणीज, नील, नीलावजास, क्रिंग, रूपी, रूपावजास, जस्म, जस्मराशि, तिल, तिल्युष्पवर्ण, दक, दकवर्ण, कार्य, वंष्य, इंडािक, धूम-केतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, श्रगस्ति, माणवक, कामस्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसंधिकल्प, प्रकल्प, जटाल, श्ररुण, श्रक्त, काल, महाकाल, खितक, सौवस्तिक, वर्धमान,

प्रबंब, नित्याक्षोक, नित्योद्योत, स्वयंप्रज, अवजास, श्रेयस्कर, क्षेमंकर, आजंकर, प्रजंकर, अरजा, विरजा, अशोक, वीतशोक, वितत, विवस्न, विशास, शास, सुन्नत, श्रनिवृत्ति, एकजटी,द्विजटी, कर, करक, राजा, श्र्योस, पुष्प, जाव तथा केतु ए अठ्याशी प्रहोनां नाम जाणवां.

इवे ज्यारथी कूर एवो बे हजार वर्षनी स्थितिवालो ते जस्मराशि नामनो यह श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रजुना जन्मनकत्रमां संक्रांत थयो, त्यारथी तपस्वी एवा साधु अने साध्वीर्जना उत्त-रोत्तर वृद्धि पामता पूजा एटले वंदनादिक तथा सत्कार एटले वस्त्रदान आदिनुं बहुमान नहीं याय, छने तेथीज इंडे प्रजुने विनंति करी के हे स्वामिन् ! एक क्लावार आपनुं आयुष्य वधारो, के जेथी छाप जीवता होवाथी छापना जन्मनक्त्रमां संक्रांत थयेखो छा। जसराशि यह छापना शासनने पीना करी शके नहीं. त्यारे प्रजुए कह्युं के हे इंड ! एवुं निश्चे पूर्वे कदापि चयुं नथी, के क्तीण थयेंद्धं खायुष्य जिनेंद्रो पण वधारी शके, माटे तीर्थने थनारी बाधा तो खबस्य थरोज, पण ज्याशी वर्षना श्रायुष्यवाला कहिकन् नामे छुष्ट राजाने ज्यारे तुं मारीश, श्रने ते वखते वे हजार वर्ष पूर्ण थये ठते मारा जन्मनकत्रथी जस्मग्रह पण उतरी जहाँ, श्रने तारा स्थापेका एवा क िकपुत्र धर्मदत्तना राज्यथी मांकीने साधु साध्वी उंनो उत्तरोत्तर पूजासत्कार थवा मांक्शे. सूत्र-कारोए पण तेमज कहे हुं हे के ज्यारे ते कूर एवो वे हजार वर्षनी स्थितिवालो जस्मराशि नामनो महाग्रह जेटलामां जगवानना जन्मनकत्रथी उतरी जरो त्यारे तपस्वी एवा साध अने साध्वीवनो उत्तरोत्तर पूजासत्कार यहो.

हवे जे रात्रिए श्रमण जगवंत श्री महावीरस्वामी निर्वाण पाम्या यावत् सर्वे डुःखग्री मुक्त यया ते रात्रिए नहीं उपमी शके एवा कंथुछाउं उत्पन्न थया श्रने तेउं स्थिर रह्या हता, तेथी करीने ते श्रणचालता थका उद्मस्थ एवा साधु साध्वीउंने जहदीथी नजरे नहीं देखाता हता, श्रने जेउं श्रस्थिर रह्या हता, तेथी करीने चालता हता तेने तुरत उद्मस्थ एवा साधु साध्वीउं जोइ सुबोण

11 02 11

शकता हता. नहीं उपाभी शकाय एवा कंशु आउंने जोइने घणा साधु साध्वी उप ते वखते जातपाणीनां पच्चलाण कर्यां एट हो अनशन कर्यं, ए अर्थ जाणवो. ते जोइ कोइ शिष्ये गुरुने पूट्यं के हे जगवंत ! आ जातपाणीनां पच्चलाण करवानुं शुं कारण हे ? त्यारे गुरुए कह्यं के आजधी मांडीने संयम पाल वं बहु इष्कर थशे, केमके पृथ्वी जीवाकुल थशे, संयमने लायक केत्र मली शकशे नहीं तथा पालंडी उनो जमाव थशे.

ते कालने विषे अने ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने इंडजूति आदि चौद हजार साधुरीनी जत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, चंदनवाखा आदि बत्रीश हजार साध्वीरीनी जत्कृष्ट साध्वी-संपदा थइ, शंख, शतक आदि एक लाख उंगणसाठ इजार आवकोनी उत्कष्ट आवकसंपदा थइ। तथा सुलसा रेवती आदि त्रण लाख अढार हजार श्राविकानी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ. (श्रहीं जे सुलसा श्राविका हे ते बत्रीश पुत्रनी माता एवी नागजार्या जाणवी अने रेवतीने प्रजुने श्रोषध देनारी जाणवी.) तथा सर्वज्ञ नहीं पण सर्वज्ञनी जेवा, जेउंने क्रेयतावडे सर्व अक्ररसंयोग जणायेखा हे एवा छने प्रज्ञापनामां केवसी छने श्रुतकेवसीनुं तुस्यपणुं कहेसुं होवाथी जिननी जेम सत्यने कहेनारा एवा त्रणसो चौदपूर्वीर्जनी जत्कृष्ट संपदा यइ, अतिराय एटखे आमर्प औषधी श्चादि खब्धिने प्राप्त थयेखा एवा तेरसो श्चवधिक्वानीउनी उत्कृष्ट संपदा थइ, संपूर्ण एवां जे श्रेष्ठ ज्ञान ष्ट्राने दर्शन, तेने धारण करनारा सातसो केवलज्ञानीर्डनी उत्कृष्ट संपदा यइ, देवो नहीं छतां पण देवनी क्रिक्षने विकुर्ववाने समर्थ एवा सातसो वैक्रियल बिववालानी उस्कृष्ट संपदा यह तथा श्राही हीप श्राने वे समुद्रने विषे पर्याप्ता संज्ञी पंचें द्वियोना मनोगत जावने जाणनारा पांचसो विपुलमतिर्जनी जत्कृष्ट संपदा घइ. त्यां विपुलमति एने जाणवा के आणे घमो चिंतव्यो, ते सोनानो हे, पाटिखपुत्रमां बनेखो हे, शरद्र क्तुमां करेखो हे, नीख वर्णनो हे, इत्या-दि सर्व नेद सहित चारे बाजुए श्रदी श्रांगल वधारे एवा मनुष्यकेत्रमां रहेला संझी पंचें दियोना कह्पण

॥ एर ॥

मनोगत पदार्थने जेर्ड जाणे वे अने क्तुमितर्ड तो चारे बाजुए संपूर्ण एवा मनुष्यक्तेत्रमां रहेला संज्ञी पंचें दियोना मनोगत घट आदि पदार्थ मात्रने सामान्यपणे जाणे वे. एवो ते बन्नेमां तफा- वत जाणवो. तथा देव, मनुष्य अने असुरोनी सजामां बादने विषे पराज्ञव नहीं पामता एवा चारसो बादीर्डनी उत्कृष्ट बादिसंपदा यह. अमण जगवंत श्री महावीरना सातसो शिष्य मुक्ति पाम्या यावत् सर्व छःख्यी मुक्त थया तथा चौदसो साध्वीर्ड मुक्ति पामी. अमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने गित एटले आगामी मनुष्यगितमां मोक्तप्राप्ति एवा लखाण वे जेर्डने एवा, स्थिति एटले देवजवमां पण प्राये वीतरागपणुं होवाथी कह्याण वे जेर्डने एवा तथा आगामी जवमां सिद्ध थवाना होवाथी जेर्डने कह्याण वे एवा आगतमां अनुक्तर विमानमां उत्पन्न थनारा मुनिर्डनी उत्कृष्ट संपदा थह. हवे अमण जगवंत श्री महावीर प्रजुनी वे प्रकारनी अंतकृद्गूमि थह. अंतकृत् एटले मोक्त-

हवे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रज्ञनी वे प्रकारनी श्रंतक्रद्रूमि थरः अंतक्रत् एटले मोक्गामी, श्रने तेर्रंनी जूमि एटले काल ते श्रंतक्रद्रूमि. तेना वे प्रकार हे ते देखाडे हे.ते श्रा प्रमाणे:— पहेली युगांतक्रद्रूमि श्रने बीजी पर्यायांतक्रद्रूमि. तेमां युग एटले श्रनुक्रममां वर्तनारा कालमान विशेष, श्रने तेना साधम्य श्रादिकमां क्रममां वर्तनारा ग्रह, शिष्य, प्रशिष्य श्रादिह्म जे पुरुषो ते पण युगोज कहेवाय, श्रने तेर्रंची परिमाण युक्त श्रयेली जे श्रंतक्रङ्गूमि ते युगांतक्रद्रूमि कहेवाय, श्रने पर्याय एटले प्रज्ञना केवलीपणाना कालने श्राश्रित श्रवने रहेली जे श्रंतक्रङ्गूमि ते पर्यायांतक्रद्रूमि कहेवाय. तेमां पहेली त्रीजा पुरुषयुग जंबूस्वामी सुधीनी युगांतक्रद्रूमि जाणवी, श्रने ज्ञानप्रातिनी श्रपेक्षाए प्रज्ञने केवलज्ञान श्रया बाद चार वर्ष पठी कोइक केवली मोक्ने गया ते बीजी पर्यायांतक्रङ्गूमि जाणवी. प्रज्ञने केवलङ्गान उत्पन्न श्रया बाद चार वर्षे मोक्तमार्ग चालु श्रयो हतो श्रने ते हेक जंबूस्वामी सुधी चालु रह्यो हतो ए जाव जाणवो.

ते कालने विषे श्रने ते समयने विषे श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज त्रीश वर्ष ग्रहस्थावस्थामां रहीने, बार वर्षश्री कांइक श्रधिक वखत सुधी ठद्मस्थपर्याय पासीने तथा त्रीश वर्षश्री कांइक उंठा

सुबो०

11 02 11

🏄 वखत सुधी केविखपर्याय पालीने, तथा एवी रीते एकंदर वेंतालीश वर्ष चारित्रपर्याय पालीने छाने बहोंतर वर्ष पोतानुं सर्वे आयुष्य पालीने जवोष्याही एवां वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र ए चार कर्म क्वय यये वते अने आ अवसर्धिणीमां डुषमसुषम नामे चोथो आरो बहु गये वते एटखे के ते आरानां त्रण वर्ष श्रने सामा आठ मास बाकी रह्ये ठते मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल 🖔 राजाना कारकुनोनी शालामां सहाय न होवाथी एक, श्रिष्ठितीय एटले एकलाज पण क्रपत्र आदिनी पेठे दश हजार आदि परिवार सहित नहीं एवा (अहीं कवि कहे ठे के बीजा जिनो साथे जेम मुनिर्ज मोक्ते गया तेम तमारी साथे कोइ पण मुनि मुक्तिने पाम्या नहीं, तेणे करीने छुषम आरामां श्रनारा साधुर्वनी गुरुने विषे बेदरकारी जणावी है) जल रहित हरनो तप करीने खाति नक-त्रनी साथे चंदनो योग प्राप्त थये छते चार घनी रात्रि वाकी रही हती ते श्रवसरे पद्मासने बेठा थका पंचावन अध्ययन कछ्याणफलना विषाकवालां, पंचावन अध्ययन पापफलना छने बत्रीश श्रपृष्ट व्याकरण एटले उत्तरोने कहीने एक प्रधान नामनुं मरुदेवानुं श्रध्ययन जावता 🥻 जावता कालधर्म पाम्या, संसारथी विराम पाम्या, रुडे प्रकारे उपर सिद्ध लोकमां गया, जनम जरा अने मरणनां बंधन हेदी नाख्यां हे जेणे एवा थया, सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, सर्व कर्मनो नाश करनारा थया, सर्व संताप रहित थया अने सर्व छःखो क्रय थयां हे जेमनां एवा थया. हवे जगवंतना निर्वाणकाल अने पुस्तक लखवा विगेरेना काखनुं अंतर कड़े हे.

श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज मोहो गया तेने नवसें वर्ष व्यतीत थयां अने दशमा सैकानो श्रा एंशीमो संवत्सर काल जाय हे. जो के श्रा सूत्रनो बरावर व्यक्त जावार्थ समजातो नथी, तोपण जेम पूर्वटीकाकारोए तेनी व्याख्या करी हे तेम अमे पण करीए हीए. ते श्रा प्रमाणे— श्रहीं केटलाक कहे हे के कहपसूत्रनो पुस्तकमां लखावानो काल जणाववाने माटे श्रा सूत्र श्रीदे-वर्छिंगणि इमाश्रमणे लखेल हे. तेथी श्रा श्रर्थ थाय हे के 'जेम श्रीवीर निर्वाणशी नवसें एंशी

क हप ।

वर्ष व्यतीत यये वर्ते सिद्धांत पुस्तकारूढ ययां त्यारे कल्पसूत्र पण पुस्तकारूढ ययुं.' तेमज कह्युं वे के 'श्री वीर जगवानयी नवसें एंशी वर्षे वहाजीपुर नगरने विषे देवार्क्षगणि प्रमुख सकल संघे पुस्त-कमां आगम लख्यां.' बीजार्ज कहे वे के 'नवसें एंशी वर्षे आनंदपुरमां वीरसेन नामना पुत्रने अर्थे संघ समक्त महोत्सवपूर्वक पंकितोए वांचवानुं शरु कर्युं । इत्यादि अंतर्वाच्यना वचनथी श्री वीरिनर्वा-णथी नवसें एंशी वर्ष व्यतीत थये वते सना समक्त कल्पसूत्रनी वाचना थइ ते जणाववाने मादे श्रा सूत्र मृक्युं हे, पण तत्त्व तो केवली जाणे. वाचनांतरमां श्रा नवसें त्राणुंमं वर्ष जाय हे एम देखाय है. अहीं केटलाक कहे है के 'वाचनान्तरे' तेनो शुं अर्थ है ? तो के बीजी अतमां 'तेए छए' एटले त्राणुं देखाय हे, तेथी कल्पसूत्रनुं पुस्तकमां लखावुं ख्रथवा पर्पदामां वंचावुं ए नवसें एंशी वर्ष ह्यतीत थये वते थयुं एम कोइ पुस्तकमां लखेल वे,तेम बीजा पुस्तकमां नवसें त्राणुं वर्ष व्यतीत थये वते थयुं एम देखाय हे, ए प्रमाणे जाव जाणवो. बीजा बली कहे हे के 'श्रयं श्रशीतितमे संवत्सरे' तेनो अर्थ ग्रुं हे ? तो के पुस्तकमां कल्पसूत्र लखावाना हेतुत्रूत श्रीवीरथी दशमा सेंकमाना एंशीमा वर्षरूप आ काल जाय है. 'वायणंतरे' एनो शुं अर्थ है ? तो के एक पुस्तक लखावारूप वाचनानुं, वीजुं सजामां वंचावारूप जे वाचनांतर, तेना हेतुजूत दशमा सेंकमानुं त्र्य त्राणुंमुं वर्ष हे. तेम वली त्र्या पण अर्थ थाय हे के नवसें एंशीमे वर्षे कल्पसूत्रनुं पुस्तकमां लखावुं थयुं श्रने नवसे त्राणुंमे वर्षे कल्पसूत्रनी पर्षदामां वाचना यइ.तेज प्रमाणे श्री मुनिसुंदर सूरिए पोते बनावेला स्तोत्ररतकोशमां पण कहेलुं ने के 'श्रीवीरघी एए३मे वर्षे चैत्यघी पवित्र एवा जे छानंदपुरमां ध्रुवसेन राजाए महोत्सवपूर्वक संजामां कहप-सूत्रनी पहेली वाचना करी ते आनंदपुरनी स्तुति कोण नथी करतुं ? 'वल्लहीपुरंमि नयरे'इसादि वचन-थी पुस्तक लखवानो काल तो उपर जे कह्यों है ते प्रसिद्धज है,पण तत्त्व केवली जाणे. इति श्रीवीरचरित्रं. हैं एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिए रचेली हैं एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती जाषांतरमां ठठो क्तण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

॥ ए३ ॥

। श्री जिनाय नमः। ॥ ख्रथ सप्तमं व्याख्यानं प्रारच्यते॥

हवे जधन्य, मध्यम श्रवे उत्कृष्ट वाचनाए करीने श्री पार्श्व प्रजुनुं चरित्र कहे हे.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान अईन् श्री पार्श्वनाय प्रजुनां पांचे कल्याणको विशाखा नामना नक्तत्रमां थयां ठे. ते आ प्रमाणे—प्रजु विशाखा नक्तत्रमां देवलोकथी च्यव्या श्रने च्यवीने माताना गर्नमां उत्पन्न थया. विशाखा नक्तत्रमांज प्रजुनो जन्म थयो. तथा विशाखा नक्तत्रमांज प्रजु मुंग थइने घरथी नीकली साधुपणाने प्राप्त थया श्रयात् दीक्ता प्रहण करी. तथा विशाखा नक्तत्रमांज प्रजु श्रनंत, श्रनुपम, निव्योघात, श्रावरण रहित, समय श्रने परिपूर्ण एवां केवलक्षान श्रने केवलदर्शनने पाम्या. तथा विशाखा नक्तत्रमांज प्रजु मोके गया.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान छाईन् श्री पार्श्वनाथ प्रज्ञ छा छनालानो पहेलो मास, पहेलो पक्त, ते चैत्रनो छुष्णपक्त, ते चैत्र छुष्णपक्तनी चोर्थने दिवसे, वीश सागरोपम्नी स्थितवाला प्राणत नामना दशमा देवलोकथी अंतररिहत च्यवीने छाज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे जरतकेत्रमां वाणारसी नगरीमां छश्वसेन नामे राजानी वामादेवी नामनी राणीनी कुक्तिने विषे देव संबंधी छाहार, देव संबंधी जव श्रने देव संबंधी शरीरनो त्याग करीने मध्य रात्रिए विशाला नक्त्रमां चंडनो योग प्राप्त थये छते गर्नपणे छावीने छपन्या. हवे ते पुरुषप्रधान छाईन् श्रीपार्श्वनाथ प्रज्ञ गर्नमांज त्रण ज्ञानयुक्त हता. ते छा प्रमाणे:—"हुं स्वर्गथी च्यवीश एम प्रज्ञ जाणे, च्यवता न जाणे छाने च्यव्या पछी हुं च्यव्यो एम जाणे, ते पूर्वे श्री महावीर प्रज्ञना च्यवन वलते कहेला पाठ प्रमाणे स्वप्तदर्शन, स्वप्तक प्रश्न विगेरे सवक्षं ज्यांसुधी वामादेवी पोताना घर प्रत्ये श्रावी श्रने यावत् सुखे ते गर्जने पालन करे हे त्यांसुधी कहेतुं.

१ गुजराती फागण वदि चोथने दिवसे.

कख्प०

॥ एष्ठ ॥

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाय प्रज आ शीयालानो बीजो महीनो, त्रीजुं पलवामीयुं, ते पोष मासनो कृष्णपक्त, ते पोष मासना कृष्णपक्तनी दर्शमने दिवसे नव मास बराबर परिपूर्ण थये बते अने सामा सात दिवस गये बते मध्य रात्रिने विषे विशाखा नक्त्रमां चंड्रयोग प्राप्त थये बते आरोग्य एवा बामादेवीनी कुक्तिए रोगरहित पुत्रपणे ज्ञान थया.

जे रात्रिने विषे पुरुषप्रधान छाईन् श्रीपार्श्वनाथ प्रज जन्म्या ते रात्रि घणा देव, देवी उए करीने यावत् घणी आकुल थइ होय तेम छाव्यक्त शब्दथी कोलाहलमयी थइ.

बाकीनो प्रजनो जन्ममहोत्सव विगेरेनो वृत्तांत श्री वीर प्रजनी पेठे जाणी लेवो, पण ते जन्मोत्सव विगेरेमां श्रीपार्श्वनाथनुं नाम कहेवुं,ते श्रा कुमारनुं पार्श्व एवुं नाम थाउँ त्यांसुधी कहेवुं प्रज ज्यारे गर्जमां हता,त्यारे शय्यामां रहेली माताए पोतानी पमखेथी जता कृष्ण सर्पने जोयो हतो, तेथी तेमनुं "पार्श्व" एवुं नाम पाड्युं, श्राने कमे करी ते योवनने प्राप्त थया ते श्रा प्रमाणे—इंडे श्रादिष्ट करेली धात्रीउंथी लालन कराता एवा ते प्रज नव हाथ प्रमाणना श्रंगवाला थया थका कमे योवन श्रवस्थाने पाम्या

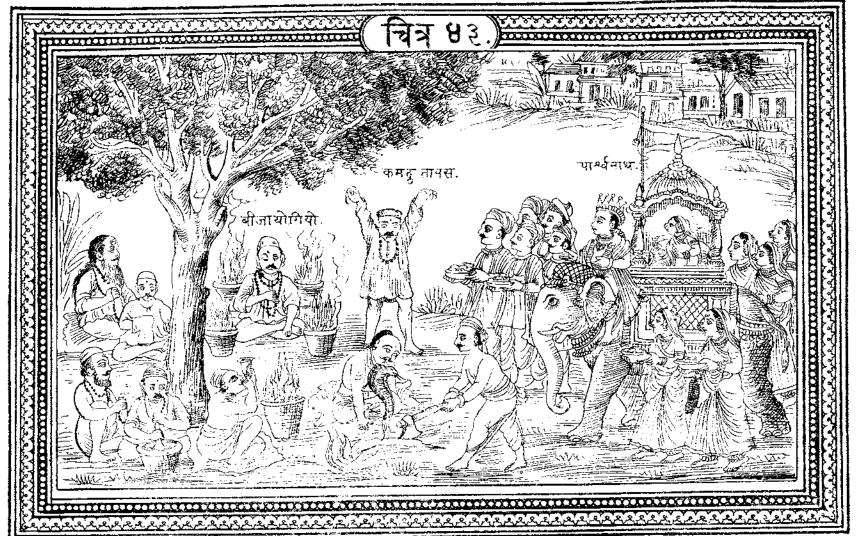
पठी कुशस्थलना राजा प्रसेनजितनी प्रजावती नामनी कन्या साथे मातापिताए आप्रहथी प्रजुनो विवाह कर्यो

हवे एक दहानो प्रमु जरुखामां बेठेखा है, ते वखते एक दिशा तरफ पुष्प छादिक पूजानां उपकरणो सिहत जता नगरजनोने जोइने तेमणे कोइने पुट्युं के छा खोको क्यां जाय है ? त्यारे ते माणसे प्रमुने कह्युं के हे खामिन्! कोइक गामनामां रहेनारो, तथा जेनां मावाप पण मरी गयेखां हे एवो एक कमठ नामनो दरिझी ब्राह्मणपुत्र हतो छने खोको दया खावी कंइक तेने छापीने तेनी छाजीविका चलावता हता. एक दहानो तेणे रलाजरणथी जूषित थयेखा नगरना खोकोने जोइने छहो! छा सघली इद्धि पूर्व जन्मना तपनुं फल हेएम विचारी ते पंचािस छादि

सुबो०

॥ एध ॥

१ गुजराती मागसर वदि दशमने दिवसे.



पा. ८८.

महा कष्टनो अर्थी एवो तपस्ती थयो. ते कमठ तापस अहीं नगरीनी बहार आव्यो हे, तेने पूजवा माटे लोको जाय है. ते सांजली प्रञ्ज पण परिवार सिहत तेने जोवा माटे गया. त्यां काष्ट्रनी श्रंदर बलता एवा एक मोटा सर्पने करुणाना समुद्र एवा प्रजुए पोताना ज्ञानथी जाणीने कहेवा लाग्या के हे मूढ तपस्ती! दया विना फोकट आकष्ट तुं शामाटे करे हे ? केमके दयारूपी नदीना मोटा कांठा पर उगेला तृणना श्रंकुरा सरखा सर्वे धर्मों हे, माटे जो ते नदी सुकाइ जाय तो ते तृणांकुरो केटली वार सुधी टकी शके ? ते सांजलीने कोधायमान थयेलो कमठ तापस कहेवा लाग्यों के राजपुत्रों तो हाथी, घोमा छादिकनी कीमा करवानुंज जाणी शके, पण धर्मने तो छमे तपोधनज जाणी शकीए बीए.पबी प्रजुए तो अग्निकुंममांथी वलतुं लाकडुं काढीने अने कुहामाथी तेना बे कटका करीने तेमांथी तावथी व्याकुल थयेला सर्पने बहार काढ्यो, श्रने ते सर्प प्रजुना सेवकना मुखथी नवकार मंत्र तथा प्रलाख्यान सांजलीने तुरतज मृत्यु पामी धरणेंद्र थयो. त्यारे लोकोए प्रजुने "ज्ञानी" एम कहीने स्तुति करी. पठी प्रजु पोताने स्थानके गया, अने कमठ पण तप तपीने मेघकुमारोमां मेघमाली देव घयो.

दक्त (माह्या), दक्त प्रतिक्षावाला, रूपवाला, ग्रणवाला, सरल परिणामवाला अने विनयवाला एवा पुरुषप्रधान स्त्रईन् श्रीपार्श्वनाथ प्रजुत्रीश वर्ष सुधी ग्रहस्थावस्थामां रह्याः एवामां वली जीत-किएक एवा लोकांतिक देवोए ते इष्ट एवी वाणी वडे यावत् आ प्रमाणे कह्युं:-हे समृद्धिमन् ! तमे जयवंता वर्तोः यावत् तेर्रं जय जय शब्द कर्योः.

प्रथम पण पुरुषप्रधान ऋईन् श्री पार्श्वनाथ प्रज्ञने मनुष्यने योग्य एवा ग्रहस्थधमेथी अनुपम एवं उपयोगरूप अवधिझान हतुं, ते पूर्वे कहेब्रुं (वीर प्रज्ञनी पेठे) सर्व कहेबुं, यावत् गोत्रीउने धन वहेंची आपीने आ शीयालानो बीजो मास,त्रीजो पक्त,ते पोष मासनो कृष्णपक्त,ते पोष मासना कृष्णपक्तनी कृद्धपण

ા હ્યા

श्रगीयाँरसने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे विशाला नामनी पालखीमां बेसीने, देव, मनुष्य श्रने श्रमुरोनी सजा जेनी श्रागल चाली रही हे एवा प्रजु इत्यादि सर्व पूर्वनी पेठे (वीर प्रजुनी पेठे) कहें चुं, परंतु एटलुं विशेष हे के वाणारसी नगरीना मध्य जागयी नीकल्या, श्रने नीकलीने ज्यां श्राश्रमपद नामनुं ह्यान हे श्रने ज्यां श्रशोक नामनुं वृक्त हे त्यां श्राव्या श्रने श्रावीने श्रशोक वृक्तनी नीचे पालखीने स्थापन करावी श्रने स्थापन करावीने पालखीथी नीचे उतर्या श्रने नीचे उतरीने पोतानी मेलेज श्राजरण माला विगेरे श्रतंकारो उतारी नाल्या श्रने उतारी नालीने पोतानी मेलेज पंचमुष्टि लोच कर्यो श्रने लोच करीने जल रहित श्रष्टमनो तप करीने विशाखा नक्तनमां चंड्रयोग प्राप्त श्रये हते एक देवडूष्य वस्र लइने त्रणसो पुरुषोनी साथे मुंग श्रइने घरधी नीकली साधुपणाने प्राप्त श्रया श्रर्थातु दीक्ता ग्रहण करी.

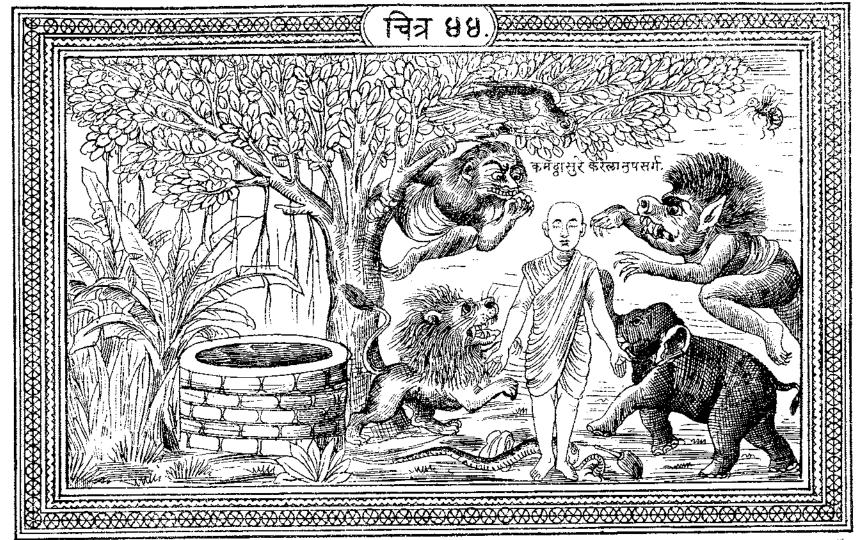
पुरुषप्रधान ऋईन् श्रीपार्श्वनाथ प्रजुए त्याशी दिवस सुधी निरंतर कायाने वोसरावीने श्रने शरीर उपरथी ममता तजी दइने जे कोइ उपसर्गों उत्पन्न थया, ते जेवा के देव, मनुष्य श्रने ति-यैचे करेखा तेमज श्रनुकूल श्रयवा प्रतिकूल ते उत्पन्न थयेखा उपसर्गोने रुमी रीते सहन कर्या, वेठ्या, खम्या श्रने जोगव्या तेमां देवे करेख उपसर्ग कमठ संबंधी है. ते श्रा प्रमाणे है:-

प्रज दीक्षा लड़ने विचरता थका एक दहां नो तापसना आश्रममां एक कुवानी नजदीक एक वक्ता वृक्षनी नीचे रात्रिए प्रतिमाधी रह्या हता ते वखते ते मेघमाली नामनो छुष्ट देव प्रजुने उपडव करवा आव्यो, अने कोधधी अंध थयेला तेणे पोते विकुर्वेलां वाघ, वींडी विगेरेनां रूपोधी प्रजुने जयरिहत जोइने, ते आकाशमां घोर अंधकार सरखां वादलां विकुर्वीने कहपांत-कालना मेघनी पेठे मुसलधाराधी वरसवा लाग्यो, अने अति जयंकर एवी वीजली सघली दिशार्टमां फेलावी तथा ब्रह्मांक पण फुटी जाय एवी गर्जनाई पण ते वखते करी. क्षणवारमां जल

१ गुजराती मागसर वदि अगीयारसने दिवसे.

सुबोव

ા હત ા



पा.८८



पा. ८८.

हेक प्रज्ञनी नासिकाना श्रम्र जाग सुधी श्रावी पहोंच्युं त्यारे धरणेंडनुं श्रासन कंपवाधी ते पोतानी पहराणी सिहत त्यां श्राव्यो श्रमे पोतानी फणाउंधी प्रज्ञ पर हम धर्युं. पही धरणेंडे श्रव- धिक्षानधी मेघमालीने श्रमपेथी वरसतो जाणीने तेने धमकाव्यो, त्यारे ते मेघमाली पण प्रजुनुं श्राणं लड़ने पोताने स्थानके गयो. धरणेंड पण नाटक श्रादिकथी प्रजुनी पूजा करीने पोताने स्थानके गयो. एवी रीते प्रज्ञ देवादिके करेला उपसर्गोंने रुडे प्रकारे सहन करता हवा.

त्यार पठी पार्श्वनाथ प्रज अएगार थया अने जवा आववामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थइने यावत् आत्मानी जावना जावता त्र्याशी दिवस वीती गया अने चोराशीमा दिवसने विषे वर्तता, आ उना-लानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडीयुं, ते चैत्र मासनो कृष्णपक्त, ते चैत्र मासना कृष्णपक्तनी चोर्थने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे धातकी नामना वृक्तनी नीचे जल रहित ठठनो तप करीने विशाखा नक्त्रमां चंड्रयोग प्राप्त थये ठते शुक्कध्यानना प्रथम वे जेद ध्याते ठते प्रजुने अनंत, अनुपम यावत् श्रेष्ठ केवलकान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां,यावत् सर्व जावोने जाणता अने जोता थका विचरवा लाग्या

पुरुषप्रधान श्राह्म श्री पार्श्वनाय प्रजुने श्राठ गण अने श्राठ गणधरो हता. तेमां एक वाच-नावाला यतिसमूह ते गण श्राने ते गणना नायक एटखे सूरि ते गणधरो जाणवा. ते श्री पार्श्व-नायने श्राठ हता, पण श्रावस्थकमां दश गण श्राने दश गणधर कहेला हे, श्राने स्थानांगमां वे श्राह्मायुषी होवाना कारणे ते वे कहेला नथी एम टिप्पणमां जणाव्युं हे. ते श्राठनां नाम श्रा प्रमाणे:-शुज, श्रार्थघोष, वशिष्ठ, ब्रह्मचारी, सोम, श्रीधर, वीरजड तथा यशस्वी.

पुरुषप्रधान श्रर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रजुने श्रार्वदिन्न श्रादि सोल हजार साधुर्वनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, पुष्पचूला प्रमुख श्रामत्रीश हजार साध्वीर्वनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, सुत्रत प्रमुख एक लाख ने चोसठ हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ, सुनंदा प्रमुख त्रण

१ गुजराती फागण वदि चोथने दिवसे.

लाख छने सत्तावीश हजार श्राविकार्त्रनी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा यह, केवली नहीं उतां पण केवली सरखा सामा त्रणसो चौदपूर्वीर्जनी उत्कृष्ट संपदा यह तथा चौदसो अवधिकानीर्जनी, एक हजार केवलक्वानीर्जनी,अगीयारसो वैकियलब्धिवाला मुनिर्जनी अने उसो मनःपर्यवक्वानीर्जनी संपदा यह तेमज एक हजार साधुर्व मोक्ते गया श्रने वे हजार साध्वीर्व मोक्ते गइ. वली श्रावसो विपलम-

हजार केवलक्षानी जैनी, अगीयारसा वीक यला हुंघवाला मुनिजना अन बसा मनः प्यवक्षान जिना सपरा यह तेमज एक हजार साधु जे मोक्ते गया अने वे हजार साध्वी जे मोक्ते गरः वली आठसो वियुत्तम- तिजनी, बसो वादी जेनी तथा वारसो अनुत्तरिवमानमां जत्पन्न थनारा मुनिजनी संपदा थरः ते आ पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रजुनी वे प्रकारनी मुक्तिमां जनारानी मर्यादा थरः ते आ प्रमाणे:—पहेली युगांतकृद्ग्रिम अने बीजी पर्यायांतकृष्ठ्मिः तेमां श्री पार्श्वनाथ प्रजुरी आरंजीने वार पाट सुधी मोक्तमार्ग चासु रह्यो ते युगांतकृष्ठ्मिः तथा प्रजुने केवलकान थया पठी त्रण वर्षे कोइक मुनि मोक्ते गया, तेथी त्रण वर्षेथीज मोक्तमार्ग चासु थयो ते पर्यायांतकृष्ठ्मि जाणवी. हवे ते कालने विषे अने ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रजु त्रीश वर्ष सुधी यहस्था- वस्थामां रहीने, त्रयाशी दिवस सुधी वद्मस्थपर्याय पालीने अने कांद्रक ऊणा एटले त्रयाशी दिवस जेवा सीतेर वर्ष सुधी केवलिपर्याय पालीने अने एवी रीते एकंदर परिपूर्ण सीतेर वर्ष चारित्रपर्याय पालीने तथा एकसो वर्षनुं सर्व आयुष्य पूर्ण करीने वेदनी, श्रायु, नाम अने गोत्र कर्मनो क्त्रय यये वते आज अवसर्विण्यामां पुक्तममुष्म नामनो चोथो आरो घणो वीती गये वते आ चोमासानो पहेलो मास, हि- तीय पक्त, ते आवण मासनो शुक्तपक्त, ते आवण मासना शुक्तपक्तनी आठमने दिवसे समेत नामना पर्वतना शिखर जपर तेत्रीश साधु उनी। साथे जल रहित मासक्तपणनो तप करीने विशाखा नक्त्रमां पर्वतना शिखर उपर तेत्रीश साधुउनी साथे जखरहित मासक्तपणनो तप करीने विशाखा नक्तत्रमां चंड्रयोग प्राप्त थये वते पहेला प्रहरने विषे बन्ने हाथ लांबा करी कायोत्सर्गध्यानमां रह्या थका मोके गया, निर्दृति पाम्या यावत् सर्वे छ खश्री मुक्त थया.

पुरुषप्रधान छाईन् श्री पार्श्वनाय प्रजुने निर्वाण पाम्याने वारसो वर्ष यह गयां श्रने तेरसोमां सैकानुं ह्या त्रीशमुं वर्ष जाय हे. तेमां श्री पार्श्वनाथ प्रजुना निर्वाणक्षी स्रदीसो वर्षे श्री वीर

॥ ए६ ॥



पा. ८५

प्रजुनुं निर्वाण थयुं श्रने त्यारपढ़ी नवसो एंशी वर्ष व्यतीत थये ढते पुस्तकवाचना थइ, तेथी तेरसोमा सैकानुं श्रा त्रीशमुं वर्ष जाय वे ए युक्त कहें छुं हे. ए प्रमाणे श्री पार्श्वनाथ प्रजुनुं चरित्र समाप्त थयुं. इवे श्री नेमिनाथजीनुं चरित्र जघन्य श्रादि वाचनाथी कहे हे.

ते कां अने ते समये अईन् श्री नेमिनाथ प्रजुनां पांचे के खाणक चित्रा नक्त्रमां थयां है. ते आवी रीते: प्रजु चित्रा नक्त्रमां देवलोकथी च्यव्या अने च्यवीने गर्जमां उत्पन्न थया, चित्रा नक्त्रमां तेमनो जन्म थयो, चित्रा नक्त्रमां दीका लीधी, चित्रा नक्त्रमां केवलक्षान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां तथा चित्रा नक्त्रमां प्रजु मोके गया.

ते काले श्रने ते समये श्रईन् श्री नेमिनाथ प्रज श्रा चोमासोनो चोथो मास, सातमो एक, ते कार्त्तिकनो कृष्णपक्ष, ते कार्त्तिकना कृष्णपक्षनी बारसँने दिवसे बत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाला श्रपराजित नामना महा विमानथी श्रंतररहित च्यत्रीने श्राज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे जरतक्त्रमां सौर्यपुर नामे नगरमां समुद्रविजय नामना राजानी शिवादेवी नामनी राणीनी कुक्तिए मध्य रात्रिने विषे चित्रा नक्षत्र साथे चंद्रनो योग प्राप्त थये ठते गर्जपणे उपन्या.

अहीं माताने ययेल समदर्शन तथा व्यंतर देवोए आणेल निधानो आदि ए सर्वेनुं (वीर प्रजुनी पेठे) वर्णन करवुं.

पठी ते काल श्रने ते समयने विषे श्रईन् श्री नेमिनाथ प्रज्ज श्रा वर्षाकालनो पहेलो महिनो, बीजं पखवामीयं, ते श्रावणनो शुक्कपक्त, ते श्रावणना शुक्कपक्तनी पंचमीने दिवसे नव मास बराबर पूर्ण थये ठते यावत् चित्रा नक्तत्रमां चंडयोग प्राप्त थये ठते श्रारोग्य एवा शिवादेवीए श्रारोग्य एवा पुत्रने जन्म श्राप्यों श्रहीं जन्मोत्सव समुद्रविजय राजाए कर्यों एम जाणवुं श्रने ते त्यांसुधी कहे वुं के श्रा श्रमारा कुमारनुं नाम श्रिरष्टनेमि थार्ज.

१ गुजराती श्रासो वदि बारसने दिवसे.

कृह्प़□

११ एव ११

प्रज्ञ ज्यारे गर्जमां इता, त्यारे माताए स्वप्नमां श्रारिष्टरत्वमय एवी नेमि एटक्षे चक्रनी धारा जोइ हती, तेथी प्रसुनुं श्ररिष्टनेमि एवं नाम पाड्यं, श्रने श्ररिष्टमां श्र हे ते श्रमंगदने त्याग करवा माटे कह्यों हे तेथी अरिष्टनेमि एवं नाम पाड्युं हे, कारण के रिष्ट शब्द अमंगलवाची हे.

श्चरिष्टनेमि नहीं परएया होवाथी कुमार कहेवाय है. ते नहीं परएया ते श्चा प्रमाणे हे. एक दहामो शिवादेवी माताए प्रजुने युवावावस्थामां आवेला जाणीने कह्युं के हे वत्स ! तुं विवाह करवानुं मान अने अमारा मनोरथो संपूर्ण कर. त्यारे प्रजुए कह्युं के ज्यारे मने योग्य कन्या मलशे त्यारे हुं परणीश.

त्यारपठी वली एक दहामो कौतुकरहित एवा पण ते नेमिकुमार मित्रोथी प्रेराया थका कीमा करता कृष्ण वासुदेवनी श्रायुधशालामां गया. त्यां कौतुकना उत्सुकी एवा मित्रोनी विनंतिथी तेणे वासुदेवनुं चक्र छांगलीना अय जाग उपर कुंजारना चक्रनी पेठे फेरव्युं, तेनुं शार्क्न धनुष्य पण तेणे कमलनालनी पेठे नमाव्युं, कौमुदकी नामनी गदाने एक लाकमीनी पेठे उपामी तथा तेनो पांचजन्य नामनो शंख मुख पर राखीने पूर्यो-वगाड्यो.

ते वस्तते श्री नेमिनाथना मुखकमलथी प्रगट थयेल पवन वडे पांचजन्य शंख पूराये ठते हाथी उनो समूह पोताना बंधनस्तंत्रोने उखेरी घरनी पंक्तिने जांगतो थको जवा खाग्यो, तथा वासुदेवना घोमार्ज पण तुरत पोतानां बंधनो तोमीने अश्वशाखामांथी नाठा थका दोमवा खाग्या, तथा ते वखते समस्त शहेर ते शंखनादथी श्रद्धेत श्रने घणी व्याकुलतानी साथे बधिर बनी गयुं. एवी रीतना ते शब्दने सांत्रक्षीने 'कोइ शत्रु जत्पन्न थयो हे' एवा विचारथी व्याकुल चित्त-वाला श्री कृष्ण तुरत श्रायुधशालामां श्राव्या. त्यां नेमिनाथ श्रुतने जोइने मनमां श्राश्चर्य पाम्या श्रक्ता पोतानी जुजाना बलनी तुलना माटे तेणे श्रुतने कह्युं के श्रापणे बन्ने श्रापणा बलनी परीक्ता करीए, एम कहेतां ते श्रुतनी साथे मल्लना श्राखाडामां श्राव्या. पढी त्यां श्रुत् श्री कृष्णने कह्युं कि श्रापणा वलनी परीक्ता



पा. ૯-७



नेनी श्वर मगवान् वसंतक्रीडा करवागया तेनुं चित्र.

पा. ७०

के हे बांधव ! श्रहीं तुरत पृथ्वं। उपर श्राखाटवा श्रादिक युद्ध श्राप्य कर तता अनुग माटे बलनी परीका करवा माटे एक बीजानी जुजाई वालवानुं युद्ध करो, केमके वी उ उक्त तो निश्चे घटित नथी. बंनेए ते वात कबुल करी. पठी कृष्णे पोतानो हाथ आगल धर्यो, त्यारे प्रजुए तो तेने नेतरनी खतानी पेठे अथवा कमलना नाखनी पेठे तुरत खीला मात्रमां वाली नाख्यो. पठी प्रजुए पोतानो हाथ खंबाव्यो, त्यारे कृष्ण तो वृक्षनी शाखा जेवा प्रजुना हाथने विषे वांदरानी पेवे लटकवा लाग्या, तेथी उत्पन्न थता खेदने लीधे बमणुं काखुं थयुं हे मुख जेनुं एवा इरिए पोतानुं नाम (हिर एटसे वांदरों) यथार्थ कर्युं. पठी कृष्णे बहु बस वापर्युं, तोपण प्रजुनो हाथ वस्यो नहीं, त्यारे विषाद पाम्युं हे चित्त जेनुं एवा कृष्ण छा नेमिकुमार सुखेथी मारुं राज्य केइ केशे, एम चिंतातुर थया थका पोताना मनमां विचारवा खाग्या के स्थूखबुद्धिवाखा (मूर्ख) केवल क्लेशना जागी थाय हे छने फल बुद्धिमान् मेलवे हे, जुर्च, शंकरे समुद्ध मथन कयों छने रत्नो देवोने महयां अथवा स्थू खबु किवाला केवल क्केशना जागी थाय हे अने फल बु किमान् मेलवे हे, जुई, दांत मुश्केसीयी चूर्ण करे वे अने जिह्ना क्रणवारमां गली जाय वे.

पठी तो श्री कृष्ण बलजड़नी साथे विचार करवा लाग्या के "हवे आपणे शुं करवुं? राज्यनी इहावाला नेमिकुमार तो बलवान् हे." एम तेर्ड विचार करे हे एटलामां आकाशवाणी यह के हे हरे! पूर्वे निमनाथ प्रजुए कहे हुं हे के बावीशमा तीर्थंकर नेमि नामे कुमार थकाज दीका खेशे. ते वाणी सांजलीने श्री कृष्ण निश्चित थया, तोपण निश्चय माटे नेमिनाथ प्रजुनी साथे जलकीना करवा माटे ते पोतानी राणी सहित तलावमां गया, अने त्यां प्रेमथी नेमिकुमारने हाथे जालीने कृष्ण तुरत तलावमां दाखल थया. पढ़ी त्यां तेणे नेमिनाथ प्रजुने केसरना रंगवालां सुवर्णनी पिचकारी मां जरेलां पाणीथी सिंच्या. तथा रुक्मिणी आदि गोपी उने पण श्री कृष्णे कही राष्ट्यं हतुं के आ नेमि-कुमारने निःशंकपणे की माए करीने विवाह करवानी इक्षावाला करवा. त्यारपढ़ी ते गोपी उनांथी

कहपण

११ एउ ॥

केटलीक प्रजुने केसरना जत्तम पाणीना समूह वर्डे ढंटकाव करवा लागी, केटलीक सुंद्र पुष्पोना दडाना समूहची प्रजुने वक्तःस्थलमां मारवा लागो,केटलीक तीक्षण कटाक्तरूप लाखो बाण मारवा लागी,तथा कामकलाना विलासने विषे कुशल एवी केटलोक मश्करी वर्डे विस्मय पमामवा लागी.पठी तो ते सघली सुवर्णनी पिचकारी उंने सुगंधी पाणीयी खूब जरीने तेनी मोटो डालको बडे प्रजुने व्याकुल करवा लागी छाने की नाथी उल्लिसित थयेलां हे मन जेणीनां एवी ते स्त्रीतं सतत परस्पर इसवा लागी एटलामां आकाशमां देववाणी घइ ते सर्वए सांजली ते आ प्रमाणे:-हे स्त्रीउं! तमे मुग्ध हो, केमके ह्या प्रजुने तो बालपणामां पण चोसह इंडोए योजन प्रमाण पहोला मुखवाला हजारो मोटा कलशोथी मेरु पर श्रजिषेक कर्यों हतो तोपण ते प्रजु जरा पण व्याकुल न श्रया तो तमा-राधी सारो यत्न इतां पण ते केम व्याकुल यह शकरो ? पढी नेमिनाथ प्रतु श्री कृष्ण अने गोपी छंने पाणी छांटवा खाग्या, तथा कमलपुष्पना दमा मारवा खाग्या, एवी रीते विस्तारपूर्वक जलकीमा करीने सघला तलावने कीनारे प्राव्या घ्यने त्यां नेमिकुमारने सुवर्णना सिंहासन पर बेसाड्या, तथा सर्वे गोपी पण तेमने वींटीने उत्ती रही। पठी त्यां रुक्मिणीए कह्यं के हे नेमि-कुमार ! तमे आजीविका चलाववाना जयश्री मरीने परणता नथी ते अयुक्त हे, केमके तमारा जाइ हे ते अत्यंत समर्थ है अने बत्रीश हजार (प्रमाण) स्त्री साथे परणेबा प्रसिद्ध है. पठी सत्यज्ञामाए पण कह्युं के क्रषजदेव छादिक तीर्थंकरोए पण विवाह कर्यों हे, राज्य जोगव्युं हे, विषय जोगव्या हे तथा तेमने बहु पुत्र पण थया हे, अने हेवटे मोक्ते पण गया हे; परंतु तमे तो आज कोइ नवा मोक्तगामी यया हो ! माटे हे अरिष्टनेमि! तमे खूब विचार करो. हे देवर ! तमे सुंदर ग्रहस्थपणाने जाणो अने बंधुर्जनां मनने शांत करो. पठी जांबुवतीए पण जतावलथी कद्युं के हे नेमिकुमार ! सांजलो पहेलां पण हरिवंशमां विजूषण समान एवा मुनिसुवत तीर्थं-करें छहीं एहस्थावासमां रही पुत्र थया पठी मोद्दे गया हे. पठी पद्मावतीए कद्युं के निश्चे स्त्री विना

सुबोध

II एउ II

आ संसारमां पुरुषनी कांइ शोजा नथी तेम स्त्री विनाना पुरुषनो कोइ पण विश्वास करतुं नथी केमके स्त्री विनानो पुरुष विट कहेवाय पठी गांधारीए कहाँ के सज्जनयात्रा एटखे घेर सार माणसो आवे तेनी परोणागत, संघ काढवो ते, पर्वनो उत्सव, घेर विवाहनां काम, उजाणी, पोंखणुं श्वने पर्वदा ए स्त्री विना शोजतां नथी. पत्नी गौरीए कह्युं के श्वज्ञानी एवां पद्मी तं पत्र श्राखो दिवस पृथ्वीने विषे जमीने सांजरे पोताना मालामां जइ सुखेथी पोतानी स्त्री साथे रहे हे, माटे हे देवर ! तेवां पक्तीर्जथी पण द्युं तमे मूढ दृष्टिवाला हो ? पही लक्ष्मणाए पण कह्यं के स्नान छादि सर्वे अंगनी शोतामां विचक्तण, प्रीतिरसे करीने सुंदर,विश्वासनुं पात्र श्रने छःखने विषे सहाय करनार एवं स्त्री विना निश्चे बीजुं कोण थाय है ? पही सुसीमा पण कद्देवा लागी केस्रो विना घेर आवेला परोणा तथा मुनिराजोनी पण सेवाजिक बीजुं कोण करे ? अने पुरुष शोजा पण शी रीते पामे ? एवी रीतनी बीजी पण गोपी उनी वाणी उनी युक्तिथी तथा यङ् उना आप्रहथी मौन रहेक्षा एवा प्रजुने पण जरा इसता मुखवाला जोइने 'निषेध कर्यों नथी माटे मान्युं हे एवा न्यायशी' ने मिकुमारे तो विवाह करवानुं कबुल कर्युं हे ए प्रमाणे ते गोपी उंए उंचे खरे उद्घोषणा करी. ते प्रमाणे (जादव) जन बोख्या के मान्यं.

पठी नेमिकुमार माटे श्री कृष्णे उपसेन राजानी पुत्री राजीमतीनी मागणी करी, श्रने कोष्टिक नामना निमित्तिश्राने लग्ननो दिवस पूठ्यो त्यारे तेणे कह्युं के श्रा वर्षाकालमां वीजां पण शुज कार्यों कोइ करता नथी त्यारे गृहस्थी ठेनुं मुख्य कार्य जे विवाह हे तेनी तो वातज शी करवी ? पठी समुद्रविजय राजाए निमित्तिश्राने कह्युं के श्रा वखते कालकेपनी जरुर नथी, केमके श्री कृष्णे घणी महेनते नेमिकुमारने विवाह माटे हा पनावी है; माटे विवाहमां विग्न न याय एवो जे नजदीकनो दिवस होय ते तुं कहे. त्यारे निमित्तिए पण श्रावण सुदि ठठनो दिवस कह्यों उत्तम शृंगार युक्त, प्रजाने हर्ष पमामनारा, रथमां बेठेला, उत्तम ठत्र धारण कर्यु हे एवा तथा

Jain Education International

कस्पव

॥ एए ॥

समुद्धविजय स्थादि दश दशाई छाने केशव, बलजद स्थादि विशिष्ट परिवारवाला तथा शिवादेवी प्रमुख स्त्रीर्डियी गवातो ने धवल मंगलनां गीतोनो विस्तार जेनो एवा नेमिकुमार परणवा माटे चाल्या.

श्रागल चालतां तेमणे सारिष तरफ जोइने तेने पूट्युं के श्रा मंगलना समूहे जरेलुं धवल मंदिर कोनुं हे ? त्यारे सारिष पण श्रांगलीना श्रम जागणी बतावतो कहेवा लाग्यो के श्रा तमारा ससरा उपसेन राजानो महेल हे, श्रने तमारी स्त्री राजीमतीनी श्रा चंड्रानना तथा मृगलोचना नामनी सखीठ मांहोमांहे वातो करे हे. ते वखते नेमिनाथ प्रजुने जोइ मृगलोचना चंड्राननाने कहेवा लागी के हे चंड्रानना ! स्त्रीवर्गमां एक राजीमतीज वर्णववा लायक हे के जेणीनो हाथ श्रा श्रावो जर्तार प्रहण करहो; त्यारे चंड्रानना पण मृगलोचनाने कहेवा लागी के जो विज्ञानने विषे चतुर एवो विधाता पण श्रावा श्रम्जत रूपथी मनोहर राजीमतीने बनावीने श्रावा उत्तम वरनी साथे तेनो मेलाप न करावे तो ते शी प्रतिष्ठा पामे ?

पठी वाजित्रनो शब्द सांजलीने राजीमती पण माताना घरमांथी नीकलीने सली उनी बचे आवी अने कहेवा लागी के हे सली उं! आमंबर सिंहत आवता एवा वरराजाने पण तमे एक लीज जुउं ठो अने हुं तो जोवा पामती नथी, एम कही बल्यी एकदम तेउंनी वच्चे उनी रहीने नेमिकुमारने जोइने आश्चर्यपूर्वक विचारवा लागी के शुं आ पातालकुमार ठे? अथवा काम-देव पोतेज ठे? अथवा इंद्र ठे? अथवा मारां पुण्योनो समूह आ मूर्तिमान थइने आव्यो हे ? जे विधाताण आ सौजाग्य प्रमुख गुण्राशिवाला वरने बनाव्यो हे, ते विधाताना हाथनुं लुंहणुं हर्षथी हुं कहं हुं.

एटलामां मृगलोचनाए राजीमतीनो श्वित्राय समस्त प्रकारे जाणी लइने प्रीतिपूर्वक हास्यथी चंडाननाने कह्युं के हे सिल ! चंडानना ! श्रा वर समस्त गुणोए करी जो के संपन्न हे,तोपण तेमां एक इषण तो हेज, पण वरनी श्रर्थी एवी राजीमतीना सांजलतां ते कही शकाय नहीं त्यारे चंडा- सुबोण

॥ एए ॥



नेमीश्वर भगवाननी जानः

पढ़ी राजीमती पण खजाए करीने पोतानुं मध्यस्थपणुं देखामती कहेवा बागी के हे सखी है! जूवनमां अद्युत जाग्ये करीने धन्य एवी गमे ते कोइ कन्यानो आ जर्तार हो, पण सर्व गुणे करीने सुंदर एवा आ वरमां जे दूषण काढवुं ते तो दूधमांथी पूरा काढवा जेवुं आसंजवितज है.

ननाए पण कद्युं के हे सिल ! मृगलोचना ! मने पण तेनी खबर हे, पण हमणां तो मौनज रहें वुं पही राजीमती पण बजाए करीने पोतानुं मध्यस्थपणुं देखामती कहेवा लागी के हे सखीछ ! जूवनमां अद्जुत जाग्ये करीने धन्य एवी गमें ते कोइ कन्यानो आ जतिर हो, पण सर्व गुणे करीने सुंदर एवा आ वरमां जे इषण काढवुं ते तो इषमांथी पूरा काढवा जेवुं असंजवितज हे पही ते बन्ने सखीठंए विनोद सहित कह्युं के हे राजीमिति! पहेलां तो वर गौर वर्णवालो जोवाय, अने बीजा गुण तो परिचय थया बाद जणाय, अने ते गौरपणुं तो आ वरमां काजल सरखुं देखाय हे. ते सांजली ईष्यां सहित राजीमिती सखीठंने कहेवा लागी के आज दिन सुधी तमे बन्ने चतुर हो एम मने ज्रम हतो, परंतु हवे ते ज्रम जांगी गयो; केमके सवें गुणोनुं कारणरूप एवं ज्याम-पणुं जूषण हतां तमोए इषणरूपे कह्युं हे, पण हवे तमे सावधान थहने सांजलो. ज्यामपणामां अने क्याम वस्तुह्यों आश्रय करवामां गुण रहेला हे, तथा केवल गौरपणामां तो दोष रहेला हे; केमके एथ्वी, चित्रावेली, अगर, कस्तुरी, मेघ, आंखनी कीकी, केश, कसोटी, मसी तथा रात्रि ए सवें वस्तु क्याम रंगनी पण महा फलवाली हे. ए क्यामपणामां गुण कहा। हे. वली कपूर्ण संगारों, चंडमां चिह्न, आंखमां कीकी, जोजनमां मरी तथा चित्रमां रेला ए वस्तु क्याम रंगनी विल्ला होत्रत हो. ए क्यामपणामां गुण कहा। हे तथा हो होत्रत हो. ए क्यामपणामां गुण कहा। रंगनी हे तोपण (सफेड वस्तु ने) गणनी होत्रत हो. ए क्याम वस्तुनी ह्याक्यमां गण कहा। रंगनी हे तोपण (सफेड वस्तु ने) गणनी होत्रत हो. ए क्याम वस्तुनी ह्याक्यमां गण कहा। पणुं जूषण वतां तमोए इपणरूपे कह्युं वे, पण हवे तमे सावधान थइने सांजलो. स्यामपणामां अने स्याम वस्तुर्जनो आश्रय करवामां गुण रहेला हे, तथा केवल गौरपणामां तो दोष रहेला रात्रि ए सर्वे वस्तु स्थाम रंगनी पण महा फलवाली हे. ए स्थामपणामां गुण कह्या हे. वली कपूर रमां खंगारो, चंडमां चिह्न, खांखमां कीकी, जोजनमां मरी तथा चित्रमां रेखा ए वस्तु स्थाम रंगनी वे तोपण (सफेद वस्तुने) गुणनी हेतुन्नूत हे. ए श्याम वस्तुर्चना आश्रयमां गुण कह्या है. तथा खवण खारुं है, बरफ दहन करनारों है, श्राति सफेद शरीरवालो रोगी होय है तथा चुनो परवश गुणवालो हे, एवी रीते केवल गौरवर्णमां अवगुण कह्या हे.

एवी रीते तेर्ड परस्पर वातो करते उते श्रीमान् नेमिनाथ प्रज्ञ पशुर्वनो श्रार्च खर सांजलीने तिरस्कार सिहत बोख्या के हे सारिष ! आ शो दारुण खर संज्ञाय हे ? खारे सारिषण कह्युं के तमारा विवाहमां जोजन वास्ते एकशं करेखां पशुर्वनो स्था खर हे. ए प्रमाणे सारिष्यए कह्ये हते प्रजु विचारवा लाग्या के आ विवाहना उत्सवने धिकार है! केमके आ पशुर्वने तो ते अनुत्सव (शोक) हे.

कस्पण

[[aa]]

एटलामां हे सखीर्ज ! मारी जमणी आंख आ वखते केम फरके हे ? एम बोलती राजीमतीने सखीर्जए कहां के 'तारुं विघ्न नाश पाम्युं हे', एम कहीने शुशुकार करवा लागी.

ते वलते नेमिनाथ प्रजुए सारथिने कहां के हे सारथि ! तुं रथ श्रहीं थीज पाठो वाल. श्रा वखते नेमिनाथ प्रजुने जोइने एक हरिए पोतानी गरदनथी हरिएीनी गरदनने ढांकीने उन्नो रह्यो. श्रहीं किव घटना करे वे के प्रजुने जोइने इरिण कहेवा लाग्यों के श्रा मारा हृदयने हरण कर-नारी हरिणीने मारता नहीं,मारता नहीं. हे स्वामिन ! मारा मरण करतां पण मारी ते प्रियतमानो विरह फु:सह हे. हरिणी नेमिनाथनुं मुख जोइने हरिणने कहेवा लागी के आ तो प्रसन्न वदन-वाला त्रण जुवनना स्वामी हे, छकारण बंधु हे, तेटला माटे हे वल्लन ! सर्व जीवोतुं रक्षण कर-वाने विक्वित करो. त्यारे पत्नीए प्रेरेलो हरिण पण नेमिनाथने कहेवा लाग्यो के निजरणानुं पाणी पीनार, श्चरएयना तृण्तुं जक्कण करनार श्चने वनने विषे वास करनार एवा श्चमारा निरपराधीना जीवि-तनुं हे प्रजु! रक्षण करो! रक्षण करो! एवी रीते सर्व पशुर्जंए पण स्वामी प्रत्ये विक्रिति करी, त्यारे प्रजुए कहुं के हे पशुरक्तको ! आ पशुर्ठने ठोमी आपो,ठोमी आपो. हुं विवाह करीश नहीं.त्यारे ते पशु-रक्तकोए पण श्री नेमिनाथ प्रजुना वचनथी पशुर्जने होनी दीधां श्रमें सारिथए पण रथ पाहो फेरव्यो यहीं किव कहे है के जे कुरंग (हरिए) चंडमाना कलंकने विषे, राम अने सीताना विरहने

छहीं किव कहे है के जे कुरंग (हिरण) चंडमाना कलंकने विषे, राम छने सीताना विरहने विषे तथा नेमिनाथ प्रज़ुश्री राजीमतीना त्यागने विषे हेतुजूत हे, ते कुरंग कहेतां खोटो रंग करनार ए सत्यज हे.

हवे श्रा वखते समुद्धविजय तथा शिवादेत्री प्रमुख स्वजनोए तुरत रथने जतो श्रटकाव्यो, तथा शिवादेवी माता त्यांखोमां श्रांसु खावी कहेवा खाग्या के हे जननीवल्लज वत्स! हुं प्रथम प्रार्थ-नानी विनंति करुं हुं के तुं कोइ रीते विवाह करीने मने वहुनुं मुख देखाम. त्यारे नेमिकुमारे कह्युं के हे माता ! तमे ए श्राग्रह मूकी दो, मारुं मन हवे मनुष्य संबंधी स्त्रीने विवे नथी, पण मुक्तिरूपी सुबोव

1120011



भोजन व्यापना माटे एकढा करेला चतुष्पद जीवो तथा गंजरामां रहेला पही व्यो तेमने भगवान् बूटा करी मूके हे.

पा. ए२

स्त्रीना संगमने विषे उत्कंठावाद्यं श्रमे श्रासक्त थयेद्धं हे,केमके जे स्त्रीर्ट रागीने विषे पण राग रहित हे, ते स्त्री जैने कोण सेवे ? माटे मुक्तिरूपी स्त्री के जे विरागीने विषे रागवासी है, तेनी हुं इहा करुं हुं. ते वखते राजीमती "हा दैव ! श्रा शुं शयुं ?" एम कही मूर्जा पामी. पठी सखीउ वडे चंदन-रसधी आश्वासन करायेखी ते सुरकेखीथी शुद्धिमां आवी, लारे मोटे खरेथी रमवा खागी के है जादवकुलमां सूर्य समान ! तथा हे निरुपमङ्गानवाला ! तथा हे जगतना शरणरूप, तथा हे करु-णाकर खामिन् ! मने ठोमीने छाप क्यां चाखा ? पठी पोताना हृदयने कहेवा लागी के छरे ! धृष्ट, निष्टुर, निर्क्षक्क हृदय ! ज्यारे छापणा खामी छन्यत्र रागवाखा थया हे त्यारे हजुपण तुं जीवितने शुं धारण करे हे ? वली निःश्वास नाखीने पोताना खामीने उपालंज सहित कहेवा लागी के हे धूर्त ! जो तमें सर्व सिद्धोए जोगवेली गणिकामां रक्त थया हता, तो आवी रीतना विवाहना आरंजिथी तमे मने शामाटे विमंबना करी ? लारे सखीउंए तेणीने रोषथी कह्युं के है सिख लोकप्रसिद्ध एक वार्ता सांजल, के जे स्थाम होय ते जाग्येज सरल होय हे ने कदापि होय तो विधिए जूली जइने तेम कर्युं होवुं जोइए. आवा प्रीतिरिहतने विषे हे प्रिय सखी! शुं प्रीति-जाव करे हे ? प्रीतिने विषे तत्पर एवो कोइ बीजो जर्तार तारा माटे शोधी काढी छुं. ते सांजली राजी-मती पोताना बन्ने कानने ढांकीने कहेवा खागी के हे सखी छ ! तमे मने नहीं संजलाववा खायक एवुं वचन केम संजलावो हो ? जो सूर्य कदाच पश्चिम दिशामां हुगे, तोपण हुं श्री नेमिकुमारने मूकीने वीजो जर्तार नहीं करुं. वली पण नेमिनाथने कहेवा लागी के हे जगतना अधीश ! वतनी इहाबाला तमे घेर छावेला एवा याचकोने तेर्न्ती इहा उपरांत छापो हो, पण मागणी करती एवी जे हुं, तेणीए तो हाथ जपर छापनो हाथ पण मेलब्यो नहीं. हवे विरक्त राजीमती कहेवा लागी के हे विद्य ! जो के आपनो आ हाय आ लग्नमहोत्सवमां तो मारा हाय पर नहीं आव्यो, तोपण मारा दीकासमयना महोत्सवमां ते हाथ मारा शिर पर होजो.

कह्प 🏻

1130311

जिनेश्वरो पण विवाह करीने मोके गया है, माटे है कुमार ! तमारुं ब्रह्मचारीनुं पद तेनाथी पण जंचुं यशे ?

हवे श्री नेमिक्रमारने परिवार सहित समुद्रविजय राजा कहेवा लाग्या के रूपजदेव श्रादिक तेनेश्वरो पण विवाह करीने मोक्ते गया हे, माटे हे कुमार ! तमारुं ब्रह्मचारीनुं पद तेनाथी ए हंचुं यशे ?

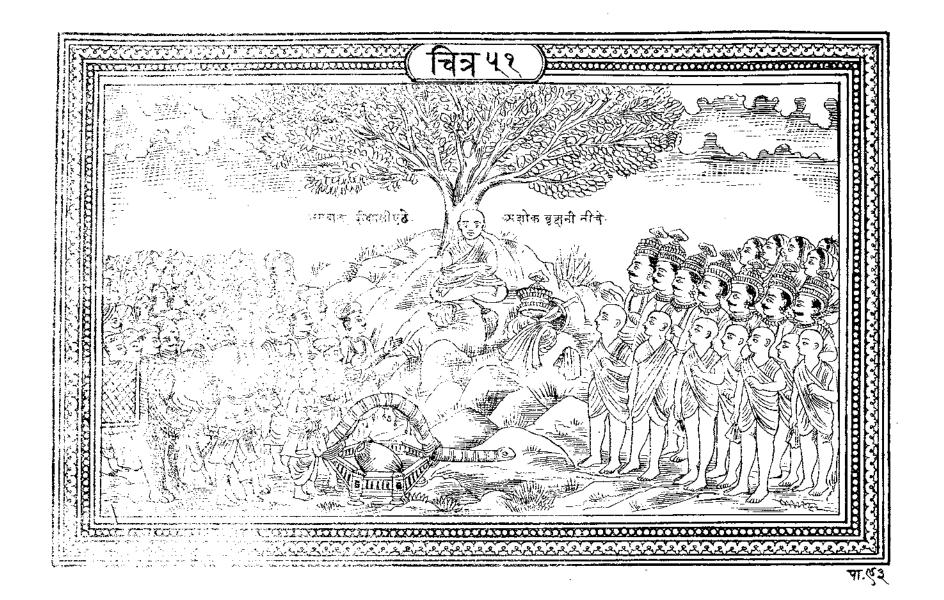
ते सांजली नेमिनाथे कह्युं के हे तात ! मारां जोगावली कर्मो कीण थयां हे, वली जेमां एक तेनों संग्रह थाय हे, जेमां श्रमंता जंतुसमृहनो संहार थाय हे तथा जे संसारने छःखरूप करार हे एवा विवाह माटे श्रापनो श्रा शुं श्रापह हे ?

श्रहीं कि हत्येक्त करे हे के "हुं एम मानुं हुं के स्त्रीनंथी विरक्त एवा श्री नेमिनाथ प्रज स्त्रा मिन्नाथ प्रज करारा स्वार्थ श्री सेमिनाथ प्रज करारा स्वार्थ श्री सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ सेमिनाथ प्रज करारा सेमिनाथ स्त्रीनो संग्रह थाय हे, जेमां श्रनंता जंतुसमूहनो संहार थाय हे तथा जे संसारने छःखरूप कर-नार हे एवा विवाह माटे छापनो छा शुं छायह हे ?

परणवाना मिषथी श्रही श्रावीने पूर्वना प्रेमश्री राजीमतीने मोक्त माटेनो संकेत करी गया."

दक्त (नाह्या) एवा श्रीनेमिनाथ प्रज त्रणसो वर्ष सुधी कुमारपणे गृहस्थावस्थामां रह्या एटलामां वसी पण लोकांतिक देवोए इत्यादि सर्व प्रथम कहेलुं ते प्रमाणे कहेतुं. लोकांतिक देवो छा प्रमाणे कहेवा लाग्या के हे कामदेवने जीतनारा तथा समस्त जंतु उने श्रजयदान देनारा प्रजु! जयवंता वर्तो अने हमेशांना महोत्सवने माटे आप तीर्थने प्रवर्तावो. एवी रीते प्रजुने कह्युं अने वार्षिक दान दीधा वाद प्रजु त्रणे जुवनोने आनंद पमाडशे ए रीते (कहीने) समुद्रविजय प्रमुखने उत्साह पमानता हवा. खारपढी सघलाउँ संतुष्ट चया, पढी ज्यांसुधी गोत्री उने धन वहेंची आप्युं खांसुधी कहे वुं. श्रहीं संवत्सरी दानविधि श्री वीर प्रजुनी पेठेज जाणी खेवो.

आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवामीयुं, श्रावण मासनो शुक्कपक्त, ते श्रावणना शुक्क-पक्तनी ठठने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे उत्तरकुरा नामनी पालखीमां बेठेला खने देव, मनुष्य तथा असरोनी पर्षदा जेनी आगल चाली रही हे एवा प्रज यावत् द्वारवती (द्वारिका) नगरीना मध्य जागमांथी नीकख्या अने नीकखीने ज्यां रैवतक नामनुं जद्यान हे त्यां आद्या अने आवीने अशोक नामना वृक्तनी नीचे पालखी स्थापन करावी अने स्थापन करावीने



उतर्या अने नीचे उतरीने पोतानी मेक्षेज आजरण, माक्षा अने अलंकारोने उतारी नाख्यां, पोतानी मेक्षे पंचमुष्टि लोच कर्यो अने लोच करीने जलपान रहित एवो उठनो तप करीने चित्रा नक्ष्म त्रमां चंड्रयोग प्राप्त अये उते एक देवडूष्य वस्त्र लड़ने एक हजार पुरुषनी साथे मुंग थड़ने घरश्री नीकली साधुपणाने प्राप्त थया अर्थात् दी का ग्रहण करी.

श्रहिन् श्री नेमिनाथ प्रज चोपन श्रहोरात्र सुधी निरंतर कायाने वोसरावीने रह्या हता. श्रहीं पूर्वे कहें सुंघ कहें ते ज्यांसुधीमां पंचावनमा श्रहोरात्रनी मध्ये वर्तता एवा तथा श्रा वर्षाकालनो त्रीजो महीनो, पांचमुं पखवानीयुं, ते श्राश्विन मासनो कृष्णपक्त, ते श्राश्विन मासनी श्रक्तर पर, वेतस नामना मासनी श्रमासने दिवसे, दिवसना पाठला पोहोरे, गिरनार पर्वतना शिखर पर, वेतस नामना वृक्तनी नीचे जलरहित श्रष्टमनो तप होते ठते, तथा चित्रा नक्त्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये ठते श्रुक्षध्यानना प्रथम वे जेदनुं ध्यान धरता एवा प्रजने केवलकान श्रने केवलदर्शन उत्पन्न थयां, यावत् सर्व जावोने जाणता श्रमे जोता थका प्रज विचरवा लाग्या.

एवी रीते प्रजुने रैवताचल पर्वत पर सहस्राम्रवनमां केवलज्ञान उत्पन्न ययुं, ते वलते उद्यान-पालके श्री कृष्ण पासे जइने तेने वधामणी श्रापी. त्यारे श्री कृष्ण पण मोटा श्रामंबरथी प्रजुने वांदवा श्राव्या; ते वलते राजीमती पण त्यां श्राव्या. पठी प्रजुनी देशना सांजलीने वरदत्त राजाए वे हजार राजार्जनी साथे वत लीधुं (दीका लीधी). पठी त्यां श्री कृष्णे राजीमतीना स्नेहनुं कारण पूठ्याथी प्रजुए धनवतीना जवधी मांमीने तेनी साथेना पोतानो नव जवनो संबंध कही संजलाव्यो. ते श्रा प्रमाणे—पहेला जवने विषे हुं धन नामे राजपुत्र हतो त्यारे ते धनवती नामे मारी पत्नी हती १, त्यारपठी बीजा जवने विषे श्रमे बंने पहेला देवलोकने विषे देव देवीपणे उत्पन्न श्रया हतां १, त्यार-पठी त्रीजा जवने विषे हुं चित्रगति नामे विद्याधर हतो त्यारे ते रत्नवती नामे मारी स्त्री हती ३,

र गुजराती जाइपद मासनी श्रमासने दिवसे.

।।२०२॥

व्यारपठी चोथा जबने विषे श्रमे बंने चोथा देखोकमां देव थया हता ४, पांचमा जबने विषे हुं श्रपराजित राजा हतो श्रने ते मारी प्रियतमा राणी हती ५, ठठा जबमां श्रमे बंने श्रमी- यारमां देव बोकमां देव थया हता ६, सातमा जबमां हुं शंख नामे राजा हतो श्रमे ते यशोमती नामे मारी राणी हती ७, श्राठमा जबने विषे श्रमे बंने श्रपराजित देवलोकमां देव थया हता ७ श्रमे नवमा जवमां हुं नेमिनाथ हुं श्रमे ए राजीमती हे. पठी त्यांथी प्रज्ञ बीजी जगोए विहार करीने श्रमुक्रमे पाठा रेवताचल पर समवस्त्राः ते वखते श्रमेक राजकन्यार्थ सहित राजीमतीए तथा रथनेमिए प्रज्ञ पासे दीक्ता लीधीः हवे एक दहाको राजीमती प्रज्ञने वांदवा माटे जती हती तेटलामां मार्गमां वरसादने लीधे बाधा थवाथी ते एक एफामां राखल थइ श्रमे ते एफामां पहेलेथी दाखल थयेला रथनेमिने नहीं जाणती तेणीए पोतानां जीजायेलां वस्रो सुकववाने चारे तरफ नाख्यां. त्यारपठी हांसी करेल हे देवांगनार्थनुं एण रमणीकपणुं जेणीए एवी तथा साक्तात् कामदेवनीज स्त्रीनी जेम रमणीय एवी राजीमतीने वस्त्रस्तित जोडने जाणे जाड परना वैरथीज होय तेम काम-त्यारपढी चोथा जवने विषे श्रमे बंने चोथा देवलोकमां देव थया हता ४, पांचमा जवने विषे

स्त्रीनी जेम रमणीय एवी राजीमतीने वस्त्ररहित जोइने जाणे जाइ परना वैरथीज होय तेम काम-देवथी मर्मने विषे हणायो थको रथनेमि कुललुक्षा तजीने तथा धैर्य पकनीने राजीमतीने कहेवा लाग्यों के हे सुंदरि! सर्व अंगना जोगसंयोगने योग्य अने सौजाग्यना खजानारूप तारा देहने तुं तप करीने शामाटे शोषावे हे ? माटे हे जड़े !तारी इहाशी तुं छहीं छाव ! छने छापणे बन्ने श्रापणो जन्म सफल करीए, श्रने पठी हेवटे आपणे तपना विधिने श्राचरीशुं.

पठी महासती राजीमती ते सांजलीने अने तेने जोइने अझूत प्रकारनुं धेर्य धरीने तेने कहेवा लागी के हे महावुनाव ! नर्कना मार्गरूप एवो तुं केम श्रनिलाष करे हे ? सवलुं सावय कार्य डोमीने पाडी तेनी इन्ना करतां थका शुं तने खज्जा थती नथी ? श्रगंधन कुलमां उत्पन्न थयेला तिर्यंच जे सर्पों हे ते पण ज्यारे वमेला पदार्थने इन्नता नथी त्यारे तेर्रथी पण छुं तुं वधारे

॥रण्या



गिरनार पर्वत उपर एक गुफामां रहने मी साधु काउस्सग करे हे. अने तेज गुफामां राजी मतीजी न मन भई ने पोताना बरल सुकाने हे-

पा. ७४

नीच हे ? एवी रीतनां राजीमतीनां वाक्योथी प्रतिबोध पामेख रथने मि मुनि पण श्री नेमिनाथ प्रज हैं पासे पोताना श्रितचारनी श्राखोयणा खद्द तप तपीने मोके गया. राजीमती पण दीका श्राराधीने श्रंते मोक्तर्या पर चड्या, तथा घणा काखयी प्रार्थित एवा श्री नेमि प्रजुना शाश्वता संयोगने पाम्या. कह्युं हे के केवली राजीमती चारसो वर्ष पर्यंत एहावासमां रह्या, एक वर्ष हद्मस्थपणामां रह्या श्रने पांचसो वर्ष केवलिपर्याय पालीने मोके गया.

अईन् श्री नेमिनाथ प्रजुने खढार गण अने खढार गणधरो थया, वरदत्त प्रमुख खढार हजार साधुर्वनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, खार्ययिक्तणी प्रमुख चाढीश हजार साध्वीर्वनी उत्कृष्ट साध्वीर्यनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, नंद प्रमुख एक लाख उंगणोतेर हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावक-संपदा थइ, महासुवत प्रमुख त्रण खाख उत्रीश हजार श्राविकानी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ, केवली नहीं पण केवली तुख्य एवा चारसो चौदपूर्वधारीर्वनी, पंदरसो खवधिक्वानीर्वनी, पंदरसो वेकियलिधवालानी, एक हजार विपुलमतिर्वनी, स्नाउसो वादी- उंनी अने सोलसो अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थनारा साधुर्वनी संपदा थइ, तथा पंदरसो साधु अने त्रण हजार साध्वीर्व मोके गयां.

श्चर्त् श्री नेमिनाथ प्रजुने वे प्रकारनी श्चंतकृद्जूमि थइ, ते श्चा प्रमाणे-एक युगांतकृद्जूमि श्चने बीजी पर्यायांतकृद्जूमि. प्रजुनी पढ़ी श्चाठ पुरुषयुग एटक्षे पष्टधर सुधी मोक्तमार्ग चाह्यो ते युगांतकृद्जूमि श्चने प्रजुने केवलक्कान उपन्या पढ़ी वे वर्षे कोइ पण साधु मोक्ते गया ते पर्या-यांतकृद्जूमि जाणवी.

ते काल छने ते समयने विषे छाईन् श्री नेमिनाथ प्रज त्रणसो वर्ष कुमारावस्थामां रहीने छने चोपन दिवस बद्मस्थ पर्याय पाद्यीने, कांइक (चोपन दिवस) उंडा एवां सातसो वर्ष केव-बिपर्याय पालीने, एकंदर परिपूर्ण एवां सातसो वर्ष चारित्रपर्याय पालीने छने एवी रीते एक हजार कल्प०

11303(1

वर्षनुं सर्वे आयुष्य पालीने वेदनीय, आयु,नाम अने गोत्रकर्म क्य थये उते आज अवसर्षिणीमां जिषमसुषमा नामनो चोथो आरो बहु गये उते आ उष्णकालनो चोथो मास, आउमो पक्त, ते आषाढ शुक्कपक्त, ते आषाढ शुक्कपक्तनी आउमने दिवसे गिरनार पर्वतना शिखर उपर पांचसो उत्रीश साधुउं सिहत जलरहित एक महीनानुं अनशन करीने चित्रा नक्तत्रमां चंडयोग प्राप्त थये उते मध्यरात्रिने विषे (पद्मासने) बेठा थका निर्वाण पाम्या यावत् सर्वे जुःख्यी मुक्त थया।

हवे नेमिनिर्वाण्यी केटला वखते पुस्तक लखवा विगेरे ययुं ते कहे हे.

अईन् श्री अरिष्टनेमि निर्वाण पाम्या यावत् सर्वे जुःखश्री मुक्त थया तेने चोराशी हजार वर्ष गयां अने पंच्याशीमा हजारनां पण नवसो वर्ष गयां वे अने दशमा सेंकमानुं आ एंशीमुं वर्ष जाय वे अर्थात् श्री नेमिनाथना निर्वाण पठी चोराशी हजार वर्षे वीर प्रजुनुं निर्वाण थयुं अने ज्याशी हजार सातसो पचास वर्षे श्री पार्श्वनाथनुं निर्वाण थयुं ए पोतानी बुद्धिश्री जाणवुं. आ प्रमाणे श्री नेमिचरित्र संपूर्ण थयुं.

हवे शंथितस्तारना जयथी पढ़ीना श्रानुक्रमे निमधी शरु करीने श्राजित सुधीना जिनेश्वरोना श्रंतर कालनुं प्रमाण कह्युं हे.

श्चर्तन् श्री निमनाथ निर्वाण पाम्या यावत् सर्वे डुःखथी मुक्त थया तेने पांच खाख, चोराशी हजार श्रने नवसो वर्ष गयां श्रने दशमा सेंकनानुं श्रा एंशीमुं वर्ष जाय वे श्रर्थात् श्री निमनाथना निर्वाण पत्नी पांच खाख वर्षे श्री नेमिनाथ निर्वाण पाम्या श्रने त्यार पत्नी चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ ११

स्रर्हन् श्री मुनिसुत्रतना निर्वाणयी व लाख वर्षे श्री निमनाय निर्वाण पाम्या स्रने त्यारपढी पांच लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना यह. २० सुबोव

॥१७**३॥**

अर्हन् श्री मिल्लिनाथना निर्वाणयी चोपन लाख वर्षे श्री मुनिसुव्रत निर्वाण पाम्या अने त्यारपढी अग्यार लाख चोराशी इजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १ए

श्चर्हन् श्री श्चरनाथना निर्वाणथी कोटिसहस्र वर्षे श्री मिल्लिनाथ निर्वाण पाम्या श्चने त्यारपठी पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १०

अर्हन् श्री कुंशुनाथना निर्वाणथी कोटिसहस्र वर्षे न्यून पढ्योपमने चोथे जागे श्री श्ररनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपठी सहस्र कोटि पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १७

अर्हन् श्री शांतिनाथना निर्वाणधी अर्ध पह्योपमे श्री कुंधुनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपठी पह्योपमनो चोथो जाग तथा पांसठ खाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १६

छाईन् श्री धर्मनाथना निर्वाणथी पोणा पछ्योपमे न्यून त्रण सागरोपमे श्री शांतिनाथ निर्वाण पाम्या छाने त्यारपढी पोणुं पढ्योपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो पंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १५

छाईन् श्री छानंतनाथना निर्वाणथी चार सागरोपमे श्री धर्मनाथ निर्वाण पाम्या छाने त्यार-पठी त्रण सागरोपम पांसठ खाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १४

श्चर्हन् श्री विमलनाथना निर्वाणथी नव सागरोपमे श्री श्चनंतनाथ निर्वाण पाम्या श्वने त्यारपढी सात सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १३

अर्हन् श्री वासुपूज्यना निर्वाणयी त्रीश सागरोपमे श्री विमलनाथ निर्वाण पाम्या श्रने त्यार-पढी सोल सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ११

अर्हन् श्री श्रेयांसनाथना निर्वाणधी चोपन सागरोपमे श्री वासुपूज्य निर्वाण पाम्या श्रने त्यार-पत्नी ठेंतालीश सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ११ श्रर्हन् श्री शीतलनाथना निर्वाणधी एकसो सागरोपम ठासठ लाख ठवीश हजार वर्षे न्यून करूपण

11Ko211

एक कोटि सागरोपमे श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपठी त्रण वर्ष साका श्राठ मास श्रने वेंतालीश हजार वर्षे न्यून एवा ठासठ लाख ठवीश हजार वर्षे श्रिधिक एकसो सागरोपमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या श्रने त्यारपठी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ १०

अर्हन् श्री सुविधिनाथना निर्वाणधी नव कोटि सागरोपमे श्री शीतलनाथ निर्वाण पाम्या, त्यार-पढ़ी त्रण वर्ष सामा खाठ मास ने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोटि सागरोपमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या खने त्यारपढ़ी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ए

अईन् श्री चंद्रप्रजना निर्वाणधी नेवुं कोटि सागरोपमे श्री सुविधिनाथ निर्वाण पाम्या, त्यार-पूजी त्रण वर्ष सामा स्थान मास स्थने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोटि सागरोपमे श्री वीर प्रगवान् निर्वाण पाम्या स्थने त्यारपत्नी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना स्थह. ए

अर्हन् श्री सुपार्श्वना निर्वाणश्री नवसो कोटि सागरोपमे श्री चंड्रप्रज निर्वाण पाम्या, त्यारपढी त्रण वर्ष सामा आठ मास ने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एकसो कोटि सागरोपमे श्री वीर जग-वान् निर्वाण पाम्या श्रमे त्यारपढी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ७

अईन् श्री पद्मप्रजना निर्वाणयी हजार कोटि सागरोपमे श्री सुपार्श्व निर्वाण पाम्या, त्यार-पठी त्रण वर्ष सामा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक हजार कोटि सागरोपमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपठी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ६

श्चर्हन् श्री सुमितनाथना निर्वाणथी नेवुं हजार कोटि सागरोपमे पद्मप्रज निर्वाण पाम्या, त्यारपठी त्रण वर्ष सामा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून दश हजार कोटि सागरो- पमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या श्रने त्यारपठी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ५

अईन् श्री अजिनंदनना निर्वाणश्री नव लाल कोटि सागरोपमे श्री सुमतिनाथ निर्वाण पाम्या,

सुबोव

11**30811**

त्यारपठी त्रण वर्ष सामा खाठ मास खने बेंताबीश हजार वर्षे न्यून एक खाख कोटि सागरोपमे

अर्हन् श्री संजवनाथना निर्वाणधी दश लाख कोटि सागरोपमें श्री अजिनंदन निर्वाण पाम्या, त्यारपठी त्रण वर्ष सामा आठ मास अने वेंतालीश हजार वर्षे न्यून दश लाख कोटि सागरोपमें श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपठी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ ३

छाईन् श्री छाजितनाथना निर्वाणथी त्रीश खाख सागरोपमे श्री संजवनाथ निर्वाण पाम्या, खारपढी त्रण वर्ष सामा छाठ मास छाने बेंताखीश हजार वर्षे न्यून वीश खाख कोटि सागरोपमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या छाने खारपढी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १

श्चर्हन् श्री क्रवजदेवना निर्वाणधी पचास लाख कोटि सागरोपमे श्री श्वजितनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपठी त्रण वर्ष सामा श्राठ मास श्रने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून पचास लाख कोटि सागरोपमे श्री वीर जगवान् निर्वाण पाम्या श्रने त्यारपठी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ र

हवे आ अवसर्पिणीमां (धर्मना) प्रथम प्रवर्तकपणाश्री परम उपगारीपणाने लीधे श्री रूपज-देव प्रजुनुं चरित्र कांइक विस्तारथी कहे हे.

ते काल श्रने ते समयने विषे श्रयोध्यामां जन्मेला श्रईन् श्री रूपजदेव प्रजुनां चार कल्याएक उत्तराषाढा नक्षत्रमां श्रयेलां हे श्रने पांचमुं कह्याएक श्रिजित् नक्षत्रमां श्रयेलुं हे.ते श्रा प्रमाऐ- उत्तराषाढामां च्यव्या श्रने च्यवीने गर्जमां उत्पन्न श्रया, उत्तराषाढामां जन्म श्रयो, उत्तराषाढामां दीका लीधी, उत्तराषाढामां केवलक्षान उपन्युं श्रने श्रजित् नक्षत्रमां निर्वाण पाम्या.

ते कास खने ते समयने विषे अईन् कौशिंक श्री क्षत्रदेव प्रज छा उनासानो चोथो मास, सातमुं पखवाकीयुं, ते छाषाढ मासनो कृष्णपक्त, ते छाषाढ मासना कृष्णपक्तनी चोथने दिवसे

१ कोशला ते ऋयोध्या, त्यां जन्म होवाश्री कौशलिक. २ गुजराती जेठ वदि ध.

कृष्टप

गरन्या

तित्रीश सागरोपमनी स्थितिवाला सर्वार्थिसिद्ध नामना महाविमानथी श्रंतर रहित च्यवन करीने श्राज जम्बूद्धीप नामना द्वीपने विषे जरतकेत्रमां इक्षाकु जूमिमां नाजि नामना कुलकरनी मरु-देवा नामनी स्त्रीनी कुक्तिने विषे मध्य रात्रिने विषे दिव्य श्राहारनो त्याग करीने यावर्त् गर्जपणे जत्पन्न थया.

अईन कौशिलक श्री रुषप्तरेव प्रमु (गर्जमां पण) त्रण झाने करी सिहत हता, तेथी हुं च्यवीश एम जाणे यांथी (मरुदेवी माताए) स्वम जोयां ते जेमके 'गयवसह' इत्यादि गाया छहीं कहेवी विगेरे सर्व वृत्तांत श्री वीर प्रमुनी पेठे (तेमना चिरत्रमांथी) जाणी खेवो, परंतु छहीं एटखुं विशेष हे के मरुदेवा माताए प्रथम वृषप्तने मुखमां प्रवेश करतो जोयो छने बीजा जिननी माताईए प्रथम हाथीने जोयो हे तथा वीर प्रमुनी माताए सिंहने जोयो है; छने मरुदेवाए स्वप्तनी हकी-कत नाजि कुलकरने कही त्यारे स्वप्तपाहको नहोता, तेथी नाजि कुलकरे पोतेज स्वप्तनुं फल कहां है.

ते काल छने समयने विषे छाईन् कौशालिक श्री क्षत्रदेव प्रज् छा छनालानो पहेलो मास, पहेलुं पखवाफीयुं, ते चैत्र मासनो कृष्णपक्ष, ते चैत्र मासना कृष्णपक्षनी श्राठमने दिवसे नव मास बरोबर परिपूर्ण थये छते यावत् छत्तराषाढा नक्षत्रमां चंड्रयोग प्राप्त थये छते छारोग्य माताए छारोग्य पुत्रने जन्म छाप्यो.

त्यारपढ़ीनो सघलो वृत्तांत देव श्रने देवीचेए वसुधारानी वृष्टि करी त्यांसुधी, तेमां बंदि-जनने ढोमी मूकवानी, मानोन्मानना वर्द्धननी श्रने दाण मूकी देवा प्रमुख कुलमर्यादानी हकीकत ढोमी दइने बाकीनो सर्व पूर्वोक्त प्रकारे श्री महावीर प्रजुना जन्म वलते कह्यो ढे ते प्रमाणे कहेवो.

हवे देवलोकथी च्यवेला, अद्जुत रूपवाला, अनेक देव देवी उंथी परिवृत ययेला, सकल गुणे

सुबोव

॥रज्य॥

१ ऋहीं यावत् शब्दे देवजवनो त्याग करीने, दिव्य शरीरनो त्याग करीने. २ च्यवता न जाऐ, च्यव्या पठी हुं च्यव्यो एम जाऐ. ३ गुजराती फागए वदि ए. मे ४ केदखानुं नथी ऋने व्यापारप्रवृति नथी, तेथी ऋा त्रए बाबत ते वखते करवानी नथी.



(क्षभ देवजीने इन्द्र महाराज शेवडी त्रायेंडे सुकुट कुंडस न्यापेंडे.)

(नाभिराजा सभामां बेठा है.)

पा ५४

करीने ते युगिलक मनुष्योधी छित उत्कृष्ट छने छनुक्रमे वृद्धि पामता एवा श्री रूपजदेव प्रजु छाहारनी इहा वलते देवताउंए सिंचन करेल छमृतरसे करीने रसवाली छांगली (अंगुष्ट) मुखमां नाखता हता. एवीज रीते बीजा तीर्थंकरोने माटे पण बाल्य छवस्थामां जाणवुं. बीजा तीर्थंकरोनी बाल्य छवस्था व्यतीत थये उते छित्रधी पकावेला छाहारनुं जोजन करता हता, परंतु श्री क्षपजदेवे तो दीक्ता लीधी लांसुधी देवोए छाणेलां उत्तरकुरुकेत्रनां कल्पवृक्षनां फलोनुंज जोजन कर्युं हे.

हवे प्रजनी उमर एक वर्षथी कांइक उंडी हती त्यारे "प्रथम जिनना वंशनी स्थापना करवी ए इंडनो श्राचार हे" एम विचारीने छने "खाली हाथे प्रज पासे केम जाउं" एम विचारीने इंड एक मोटो शेरमीनो सांठो लइने नाजि कुलकरना खोलामां बेठेला प्रजनी पासे श्राची उना रहा। श्रा वखते शेरमीना सांठाने जोइने हर्षित मुखवाला प्रजुए हाथ लांबो कर्ये ढते "श्राप शेरमी खाशो ?" एम कहीने ते सांठो श्रापीने "इक्जना श्रजिलापथी प्रजनो वंश इहवाकु थाउं, श्रने तेमना पूर्वजो पण इक्जना अजिलापवाला हता, तेथी तेमनुं गोत्र काश्यप थाउं." एम कही इंडे प्रजना वंशनी स्थापना करी.

हवे कोइ युगलने तेमनां मातापिताए तालवृक्तनी नीचे मूक्युं हतुं ते वखते तालनुं फल पक्त वाची पुरुष मृत्यु पाम्योः एवी रीते आ पहेलुं श्रकाल मृत्यु थयुं. हवे बाकी रहेली ते कन्यानां मातापिता मरण पाम्या बाद ते एकलीज वनमां जटकवा लागीः ते सुंदर स्त्रीने जोइने युगलिया तेने नाजि कुलकर पासे लइ गया. त्यारे नाजि कुलकरे पण शिष्ट एवी आ सुनंदा नामे रूप- जदेवनी पत्नी थरो एम लोकने कहीने तेणीने पोतानी पासे राखी. पत्नी सुनंदा अने सुमंगलांनी साथे वृद्धि पामता प्रजु योवनावस्था पाम्या एटले इंडे पण 'प्रथम जिननो विवाह करवानो

१ प्रजु जन्म्या त्यांसुधी युगिलक प्रवृत्ति होवाथी आ सुमंगलानो जन्म पण प्रजुनी साथेज थयो हतो.

करूप्ण

11१०६॥

अमारो आचार हे" एम विचारीने कोमोगमे देव देवी सहित त्यां आवीने प्रजुनुं वर संबंधी कार्य पोते कर्युं अने बंने कन्यानुं वधू संबंधी कार्य इंडाणीर्जए अने देवीर्जए कर्युं. त्यारपठी

कार्य पोते कर्युं अने बंने कन्यानुं वध्न संबंधी कार्य इंडाणीर्जण अने देवीर्जण कर्युं. त्यारपठी ते बंने खीर्ज सोग जोगवता जगवानने उ लाख पूर्व गयं उते सुमंगलाए जरत अने ब्राह्मी-रूप युगलने जन्म आप्यो तथा सुनंदाए बाहुबिल अने सुंदरीरूप युगलने जन्म आप्यो तथा सुनंदाए बाहुबिल अने सुंदरीरूप युगलने जन्म आप्यो तथा सुनंदाए बाहुबिल अने सुदरीरूप युगलने जन्म आप्यो तथा सुनंदाए बाहुबिल अने सुनंदालक अने क्षणपवास पुत्रयुगलने जन्म आप्यो आर्मणे कहेवाय हे. र क्षज, र प्रमणे अर्हन् कौशिलक श्री क्षणपवास पुत्रयुगलने जन्म आप्यो आप्रमणे कहेवाय हे. र क्षज, र प्रमणे अर्हन् कौशिलक श्री क्षणपवास पुत्रयुगलने जिन्म श्री अर्हन् कौशिलक श्री क्षणपवास पुत्रयुगलने जिन्म श्री अर्हन् व्यापी परस्पर विवाद करता युगलियाने माटे आ प्रमाणे दंकनीति स्थापेली हती. विमल्या अर्हे व्याप्या सांचे व्याप्या सांचे व्याप्या सांचे व्याप्या सांचे व्याप्या सांचे व्याप्या अर्हे व्याप्या सांचे सकाररूप अपराध माटे स्वाप्या अर्हे व्याप्या सांचे सकाररूप इंकनीति हती. पदी स्थापेली अर्हे अपराध माटे अर्हे अपराध माटे अर्हे अर्हे को नाजि कुलकरना वलतमां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट अपराध माटे अर्हे अर्हे को सहित व्याप्य करनार हे राजा सर्व वियार्य प्रमुने ते वात निवेदन कर्षे वते प्रजण कर्ह्म के "नीति उत्नंघन करनारने राजा सर्व वियार्य प्रमुने ते वात निवेदन कर्षे वते प्रजण कर्ह्म के "नीति उत्नंघन करनारने राजा सर्व लियार्जंए प्रजुने ते वात निवेदन कर्ये हते प्रजुए कह्युं के "नीति उल्लंघन करनारने राजा सर्व प्रकारनो दंग करे अने ते राजानो अजिषेक थवो जोइए तथा ते प्रधान आदिकथी परिवृत होवो जोइए." प्रजुए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे युगलियाउं ए कह्युं के "अमारे पण एवो राजा घाउं." त्यारे प्रजुए कह्युं के "तेवा राजा माटेनी मागणी नाजि कुलकर पासे करो." युगलियाउंए नाजि कुलकर पासे मागणी करवाथी नाजि कुलकरे कह्युं के "तमारा राजा क्षत्रज यार्ड." यही ते युग-खिया राज्या जिषेकने माटे पाणी खेवा सारु तखावे गया. ते वखते जेनुं आसन कंप्युं हे

इंद्रे पोतानो श्राचार जाणी त्यां श्रावीने मुकुट, कुंमल, श्रावरण श्रादिनी शोजा करवापूर्वक प्रज्ञने राज्याजिषेक कर्यों श्रावलते निलनीना पिनयामां पाणी लइ श्रावेला युगलियां प्रजुने श्रलंकृत श्रयेला जोइने विस्मय पाम्या श्रने क्रणवार विचार करीने प्रज्ञना पग उपर पाणी नांक्युं ते जो-इने तुष्टमान श्रयेल इंद्र विचारवा लाग्या के "श्रहों ! श्रा पुरुषो विनीत हे" एम धारीने तेणे वैश्रमणने श्राक्ता करी के "श्रहीं वार योजन विस्तारवाली श्रने नव योजन लांबी विनीता नामनी नगरी बनावों." ए प्रमाणे श्राक्ता सांजलीने तेणे रल श्रने सुवर्णमय घरोनी पंक्तिवाली श्रने फरता किल्लाशी शोजिती एवी नगरी बनावी. त्यारपढी प्रजुए पोताना राज्यमां हाशी, घोमा, गाय श्रादिनो संग्रह करवापूर्वक उप, जोग, राजन्य श्रने क्रित्रयक्ष्य चार कुलो स्थाप्यां तेमां उप दंम करवाने लीधे उप कुलवाला ते श्रारक्ष्यानीया जाणवा, जोगना योग्यपणाधी जोग कुलवाला ते (वृद्धो) गुरुस्थानीया जाणवा, समान वयवाला होवाशी राजन्य कुलवाला ते मित्र-स्थानीया जाणवा श्रने बाकीना प्रधान श्रादिक ते क्रित्रय कुलवाला जाणवा.

हवे कालनी उत्तरोत्तर हानिथी रूपज कुलकरना वलतमां कल्पवृक्षनां फलो नहीं मली शक-वाथी जेर्ड इहवाकु वंशना हता तेर्ड शेरमी खाता अने बीजार्ड प्राचे अन्य बृक्षोनां पत्र, पुष्प अने फल आदिक खाता तेमज अभिना अजावथी काचा चोखा विगेरे औषधीर्ड (धान्य) खाता; परंतु कालना प्रजावथी ते नहीं पचवाने लीधे तेर्ड थोडुं थोडुं खावा खाग्या, ते पण नहीं पचवाथी प्रजुना कहेवा प्रमाणे चोखा आदिकने हाथथी मसलीने तेनां फोतरां उतारीने खावा खाग्या. ते पण नहीं पचवाथी प्रजुना उपदेशथी पांदमाना पिनयामां पाणीथी जींजावीने चोखा आदिक खावा खाग्या. ए प्रमाणे पण नहीं पचवाथी केटलोक वखत पाणीमां जींजावीने पठी हथेलीमां राखीने इत्यादि बहु प्रकारे तेर्ड तंडुलादि अन्न खावा खाग्या. एम करतां एक दिवस वृक्षोना

१ पोखीस जेवा.

करूपण

1120911

🖔 घसावाथी नवीन उत्पन्न थयेखा, पूर्ण बखती ज्वाखावाखा अने तृणना समूहने यास करी जता अभिने जोइने "आ कोइ नवीन रत्न हे" एवी बुद्धिथी खांबा हाथ करीने युगलियान लेवा लाग्या त्यारे हाथे दाउचा एटले जयजीत घइने प्रजुने ते वात जणावी. त्यारे प्रजुए खन्निनी जलित जाणीने कहुं के "हे युगलिको ! ए अग्नि जत्पन्न थयो हे, माटे हवे तेमां चोला आदिक औष-धीर्च नाखीने खाउं के जेथी करीने ते सुखेथी पचशे." आ प्रमाणे प्रजुए उपाय कह्यों तोपण (पकाववानो) ऋप्यास नहीं होवाथी उपायने बरोबर रीते नहीं जाणता एवा ते युगक्षिया-उंए औषधीउने अग्निमां नाखीने कढपवृद्ध पासेथी फल मागता इता तेम तेनी पासेथी ते मागवा लाग्या, पण अग्निथी तेने तहन बली गयेल जोइने ''अरे! आ पापी तो वेतालनी पेठे श्रतृप्त थइने पोतेज सर्व प्रक्षण करी जाय हे, श्रमने कांइ पण पाहुं श्रापतो नथी माटे तेनो श्रप-राध प्रजुने कहीने तेने शिक्ता करावीछुं," एवी बुद्धिथी तेर्ज प्रजु पासे जता हता एटलामां मार्गमां प्रजुने हाथी उपर बेसीने सामा आवता जोइने तेउंए यथास्थित वात प्रजुने कही, त्यारे प्रजुए कह्युं के वासण श्रादिना व्यवधानथी तमारे धान्य विगेरे तेमां नाखवानुं करवुं. एम कहीने तेर्जनी पासेज माटीनो पिंड मगावी तेने हाथीना कुंत्रस्थल उपर मूकावी मावत पासे तेनुं ठाम बनाव-रावीने प्रजुए पहेली कुंजारनी कला प्रकट करी श्रने कह्युं के "त्रावी जातनां वासणो बनावीने तेमां धान्य पकावो." प्रजुए कहेल कलाने बरोबर ध्यानमां लइने ते युगलियाउं ते प्रमाणे करवा लाग्या. एवी रीते पहेली कुंजारनी कला प्रवर्ती. त्यारपठी खुहारनी, चितारानी, वणकरनी श्रने नापितनी कलारूप चार कला प्रकट करी. आ पांच मूल शिल्पना प्रत्येके वीश जेंद थवाथी एकसो प्रकारना शिह्प थया. ते सर्वे आचार्यना उपदेशथी थयेखा जाणवा.

दक्त (माह्या), दक्त (सत्य) प्रतिक्षावाखा, सुंदर रूपवाखा, सर्व गुणे करीने शुक्त, सरख परिणामवाखा श्रने विनयवंत एवा अर्हन् कौशाखिक श्री क्रवजदेव प्रजु वीश खाख पूर्व सुधी कुमार श्रव- सुबोव

1120311



क्षभदेवजी हाथी उपर बेसीने माटीना बासए। बनावीने युगसी याने आपेबे. तथा युगसीयामाटीना पिंड सई त्र्यावी भगवानने आपे के.

पा.एट

餐 स्थामां रह्या पठी त्रेसठ खाख पूर्व सुधी राज्यावस्थामां रहेतां ठतां खेखन ठे खादिमां एवी तथा 🦃 गिणित हे मुख्य जेमां एवी तथा पद्मी उनो शब्द जाणवानी कला हे खंते जेमां एवी पुरुषनी बहोंतेर कलारीनो उपदेश कर्यो अर्थात् शीखवी. खेखन आदि बहोतेर कला आ प्रमाणे जाणवी. खेखन र, गणित २, गीत ३, नृत्य ४, वाद्य ४, पठन ६, शिक्षा ७, ज्योतिष् ७, ढंद ए, खलंकार १०, ट्याकरण ११, निरुक्ति १२, काट्य १३, काल्यायन १४, निघंडु १५, गजारोहण १६, तुरगारोहण १७, ते बंनेनी शिक्ता १७, शस्त्राच्यास १७, रस २०, मंत्र २१, यंत्र २२, विष २३, खन्य २४, गंधवाद १५, प्राकृत १६, संस्कृत १९, पैशाचिका १०, अपचंश १७, स्मृति ३०, पुराण ३१, तेनो विधि ३१, सिद्धांत ३३, तर्क ३४, वैदक ३५, वेद ३६, आगम ३७, संहिता ३०, इतिहास ३७, सामुद्रिक ४०, विज्ञान ४१, श्राचार्यक विद्या ४२, रसायन ४३, कपट ४४, विद्यानुवादना दर्शन श्रने संस्कार ४५–४६, धूर्तसंबलक ४७, मणिकर्म ४०, तरुचिकिरसौ ४ए, खेचरीकला **५०, श्रमरीकला ५**१, इंडजाल ५२, पातालसिक्टि ५३, यंत्रक ५४, रसवती ५५, सर्वकरणी ५६, प्रासादलक्तणै ५७, पण ५७, चित्रो-पल ५ए, क्षेप ६०, चर्मकर्म ६१, पत्रहेद ६१, नखहेद ६३, पत्रपरी का ६४, वशीकरण ६४, काष्ट्रघटन ६६, देशन्नाषा ६७, गारुम ६०, योगांग ६७, धातुकर्म ७०, केवलिविधि ७१ अने शकुनरुत ७२. ए प्रमाणे पुरुषनी बहोंतेर कखाउं जाणवी.

श्रामां क्षेत्रन—िलिकित ते हंस लिपि श्रादि श्रहार जातनी लिपि समजवी तेनुं विधान प्रजुए जमणे हाथे ब्राह्मीने शीलव्युं तथा एक, दश, सो, हजार, श्रयुत (दश हजार), लाख, प्रयुत (दश लाख) कोटि, श्रर्बुद (दश कोटि) श्रज्ज, लर्ब, निलर्व, महापद्म, शंकु, जलिंध, श्रंत्य, मध्य श्रने परार्ध—एवी रीते श्रमुक्रमे दश दश गणी संख्यावालुं गणित माबे हाथे सुंदरीने शीलव्युं. वली जरतने काष्ठकर्मादि कर्म श्राने बाहुबलिने पुरुष श्रादिनां लक्षण शीलव्यां.

१ पृथ्वीमां रहेख पदार्थ जाएवानी कदा. २ वृक्षोने यता व्याधिनुं श्रीषध जाएवानी कदा. ३ एन्जीनीयर खातानी कदा.

कहप

गरण्या

हवे स्त्रीर्जनी चोसठ कला या प्रमाणे-नृत्य १, श्रोचित्य १, चित्र ३, वादित्र ४, मंत्र ५, तंत्र ६ घनवृष्टि ७, फलाकृष्टि ७, संस्कृत वाणी ए, क्रियाकढ्प १०, ज्ञान ११, विज्ञान ११, दंज १३, श्रंबु-स्तंत्र १४, गीतमान १५, तालमान १६, श्राकारगोपन १७, श्रारामरोपण १७, काव्यशक्ति वक्रोक्ति २०, नरलक्तण २१, गजपरीका २२, हयपरीका २३, वास्तुग्रुद्धि लघुबुद्धि २४, शकुन-विचार १५, धर्माचार १६, श्रंजनयोग १७, चूर्णयोग १७, यहि धर्म १९, सुप्रसादनकर्म ३०, कनकसिक्ति ३१, वर्णिकावृद्धि ३१, वाक्र्पाटव ३३, करलाघव ३४, ललितचरण ३५, तैलसुर-जिताकरण ३६, भृत्योपचार ३७, गेहाचार ३०, व्याकरण ३७, परनिराकरण ४०, वीणावाद ४२, वितंमावाद् ४२, श्रंकस्थिति ४३, जनाचार ४४, कुंजन्रम ४५, सारिश्रमं ४६, रत्नमणिजेद ४७, खिपिपरिक्वेद धठ, वैद्यक्रिया धए, कामाविष्करण ५०, रंधन (रसोइ) ५१, चिक्कर(केश)बंध ५२, शाबिखंगन ५३, मुखमंगन ५४, कथाकथन ५५, कुसुमग्रथन ५६, वरवेष ५७, सर्वे जाषा विशेष ५७, वाणिज्य ५७, जोज्य ६०, श्रजिधानपरिक्वान ६१, यथास्थान श्राजूषण धारण ६२, श्रंत्याक्तरिका ६३ श्रने प्रश्नप्रहेलिका ६४. ए प्रमाणे स्त्रीनी चोसठ कला जाएवी.

शिह्प अने कर्म तेमां कर्म एटले खेती, वाणिज्य आदि, अने कुंनार आदिकना प्रथम कहेल सो शिह्प, ते शिह्पोनो प्रजुए उपदेश कर्यों, तेथी आचार्यें नहीं उपदेश करेल ते कर्म अने आचार्यें उपदेश करेल ते शिह्प समजवा. ते बेनो तफावत कहे हे के कर्म हे ते अनुक्रमें पोतानी मेलेज उत्पन्न थाय हे (आवडे हे). शिह्प शीखववा पर्ने हे. तेथी पुरुषनी बहोंतर कला, स्त्रीनी चोसह कला अने सो शिह्प ए त्रण वस्तुनो प्रजाना हितने माटे प्रजुए उपदेश कर्यों, अने उपदेश करीने सो पुत्रने सो देशनां राज्य उपर स्थापन कर्यों. तेमां जरतने विनीतानुं मुख्य राज्य आप्युं

नुबोण

() देवद्र)।

१ सारी पासे रमवुं ते-

तथा बाहुबलिने बहली देशने विषे तक्तशिलानुं राज्य आप्युं अने बाकीना अठाणुं पुत्रोने जूदा जुदा देशो वहेंची आप्या.

श्री क्रपजदेव प्रजुना सो पुत्रोनां नाम श्रा प्रमाणे जाणवां-जरत १, बाहुबिल १, शंख ३, विश्वकर्मा ४, विमल ५, सुलक्तण ६, अमल ७, चित्रांग ७, ख्यातकीर्ति ए, वरदत्त १०, सागर ११, यशोधर १२, अमर १३, रथवर १४, कामदेव १५, ध्रुव १६, वत्स १७, नंद १७, सूर १७, सुनंद २०, कुरु २१, छंग २२, वंग २३, कोशल २४, वीर २५, कलिंग २६, मागध २७, विदेह २०, संगम १ए, दशार्ण ३०, गंजीर ३१, वसुवर्मा ३१, सुवर्मा ३३, राष्ट्र ३४, सुराष्ट्र ३५, बुद्धिकर ३६, विविधकर ३७, सुयशा ३०, यशःकीर्त्ति ३७, यशस्कर ४०, कीर्त्तिकर ४१, सूरणे ४२, ब्रह्मसेन ४३, विकान्त ४४, नरोत्तम ४५, पुरुषोत्तम ४६, चंड्सेन ४७, महासेन ४७, ननःसेन ४ए, जानु ५०, सुकान्त ५१, पुष्पयुत ५२, श्रीधर ५३, फुर्छर्ष ५४, सुसुमार ५५, छुर्जय ५६, अजेयमान ५७, सुधर्मा एठ, धर्मसेन एए, श्रानंदन ६०, श्रानंद ६१, नंद ६१, श्रपराजित ६३, विश्वसेन ६४, हरि-षेण ६५, जय ६६, विजय ६७, विजयन्त ६७, प्रजाकर ६ए, अरिदमन ७०, मान ७१, महावाहु 92, दीर्घबाहु 9३, मेघ 9४, सुघोष ९५, विश्व ७६, वराह ७९, सुसेन ७७, सेनापति ७ए, कपिल ए०, शैलविचारी ७१, ऋरिंजय ७२, कुंजरबल ७३, जयदेव ७४, नागद ७५, काश्यप ७६, बल ७७, वीर oo, ग्रुजमति oe, सुमति eo, पद्मनाज et, सिंह ev, सुजाति e३, संजय e७, सुनाज eu, नर-देव ए६, चित्तहर ए७, सुस्वर ए७, दृढरथ एए छने प्रजंजन १००.

हुवे राज्य ख्रेथवा देशोनां नाम ख्रा प्रमाणे जाणवां-छंग १, वंग २, किंविंग ३, गौम ४, चौम ५, कर्णाट ६, लाट ७, सौराष्ट्र ७, काश्मीर ए, सौवीर १०, ख्राफीर ११, चीण १२, महा-चीण १३, गूर्जर १४, बंगाल १५, श्रीमाल १६, नेपाल १७, जहाल १०, कौशल १ए, मालव २०, सिंह्ल २१, मरुखला २२ विगेरे (बहोले जागे पुत्रनां नाम प्रमाणे देशोनां पण नामो समजवां) क्रह्पण

11१०ए।

सो पुत्रोने राज्यने विषे प्रजुए स्थापन कर्या त्यारपढी जीतक टिपक एवा लोकांतिक देवोए इष्ट एवी वाणी वडे प्रजुने कहो उते (दीकाश्यवसर जणाव्ये उते) बाकीनुं धन गोत्री उने वहेंची ब्राप्युं त्यांसधी सघलुं पूर्वनी माफक (वीरचरित्रवत्) कहेवुं. पठी व्या उनालानो पहेलो मास, पहें बुं पखवामीयं, ते चैत्रनो कृष्णपक्त, ते चैत्रना कृष्णपक्तनी आठमने दिवसे दिवसना पाउसे पहोरें सुद्र्शना नामनी शिबिका (पालखी)मां बेठेला अने देव, मनुष्य तथा असुरोनी पर्षदा जेनी आगल चाली रही हे एवा प्रजु विनीता नगरीना मध्य जागथी नीकट्या अने नीक-लीने ज्यां सिद्धार्थवन नामे जवान हे अने ज्यां अशोक नामे श्रेष्ठ वृक्त हे त्यां आव्या. आवीने श्रेष्ठ अशोकवृक्तनी नीचे पोतानी मेखे चार मुधि लोच कर्यो. आ प्रमाणे चार मुष्टि लोच कर्या पढी बाकी रहेली एक मुष्टि जे सुवर्ण सरखी कांतिवाखा खजा उपर खटकती हती ते जाणे सुवर्णना कखश उपर शोजती नील कमलनी माला होय तेवी (सुंदर) जोइने हर्षित चित्तवाला अयेला इंद्रना आग्रहथी प्रजुए ते राखी. लोच कर्या पठी जलरहित एवो ठठनो तप करीने उत्तरा-षाढ़ा नक्तत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये ढते उग्र, जोग, राजन्य अने कत्रिय कुलना कह, महाकह आदि चार हजार पुरुषों के जेर्डए ''जेम प्रज करशे तेम श्रमे पण करीशुं" ए प्रमाणे निर्णय कर्यों हतो तेर्जनी साथे एक देवरूष्य वस्त्र लइने मुंग थइने घरषी नीकली साधुपणाने प्राप्त थया, अर्थात् दीक्ता ग्रहण करी.

अर्हन् कौशि बिक श्री क्षत्रदेव प्रज एक हजार वर्ष सुधी नित्य कायाने वोसरावीने श्रने तेनो ममत्व बोकीने विचर्या (तेनो विस्तार कहे हे) दीका लग्दने प्रज घोर श्रित्रमह धारण करीने गामोगाम विहार करवा लाग्या. ते वखते लोको पासे श्रत्यंत समृद्धि होवाथी जिक्ता शुं ? श्रने जिक्ताचरो केवा होय ? ते हकीकत कोइ पण जाणतुं नहोतुं, तेथी जेउंए प्रजनी साथे दीका लीधी हती सुबो०

112001

१ प्रजुने दीकानो समय जणाववाना ऋाचारवाला. २ गुजराती फागण वदि ० मे.

तेर्ड क्या छादिथी पीिनत यया यका प्रजुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या, पण मौन धारण करनारा प्रजुए कांइ उत्तर आप्यो नहीं, तेथी तेर्डए कह अने महाकहने विक्षित करी। तेर्डए पण कह्युं के "श्रमे पण श्राहारना विधिने जाणता नथी तेमज पहेलां पण प्रजुने ते विधि पूछ्यो नथी श्रमे हवे श्राहार विना रही शकाय तेम नश्री तेमज जरतनी लक्काथी घर पण जवुं श्रयुक्त वे तेथी विचार करतां वनवासज श्रेष्ठ वे एम लागे वे." श्रा प्रमाणे विचार करीने प्रजुनुंज ध्यान धरता तेर्ड गंगाने कांठे खरी गयेल पत्र विगेरेने लानारा श्रमे साफ नहीं करेला केशना ग्रहा-वाला जटाधारी तापसो थया।

इवे छहीं कछ छने महाकछना निम छने विनमि नामना पुत्रों के जेउंने प्रजुए पुत्र तरीके राख्या इता तेर्च देशांतरथी आव्या त्यारे जरत राजाए देवा मांडेखा राज्यजागनी अवगणना करीने तेर्ड पितानां वचनथी प्रञु पासे आव्या अने प्रतिमा धारीने गहेला प्रजुनी आगल कम-लपत्र वडे पाणी लावीने चारे बाजु जूमिने सिंचन करी तथा ढींचण सुधी पुष्प बीठावीने पंचांग वर्डे नमस्कार करवापूर्वक "राज्यजाग आपो" ए प्रमाणे हमेशां विक्रिति करता बता तेर्ड प्रजुनी जिक्त करवा लाग्या. एक दहाडो प्रजुने वंदन करवा आवेला धरणेंड तेमने आवी रीते जोइने तेउनी प्रजुपरनी जिक्कियी संतुष्ट यह कहेवा लाग्या के "खरे! प्रजुतो निःसंग हे माटे तेमनी पासे तमे मागो नहीं, प्रजुनी जिक्तिथी हुंज तमने आपीश." एम कहीने तेर्डने अमतालीश हजार विद्यार्ड थापी तेमां गौरी, गांधारी, रोहिणी श्रने प्रकृतिरूप चार महाविद्या पाठसिक स्थापी. (श्रहीं किरणावली टीकाकारे अकतालीश विद्यार्च कही हे ते अयुक्त हे, कारण के आवश्यकवृत्तिमां अमतालीश हजार विचार्च कहेली है.) विचा आपीने कह्युं के आ विचार्च वहे विचाधरनी क्रिकेने प्राप्त थया थका तमे तमारा खजन कुटुंबने लइने वैताट्य पर्वत उपर जाउं त्यां दिक्तण-

१ कायोत्सर्ग करीने

कस्पर

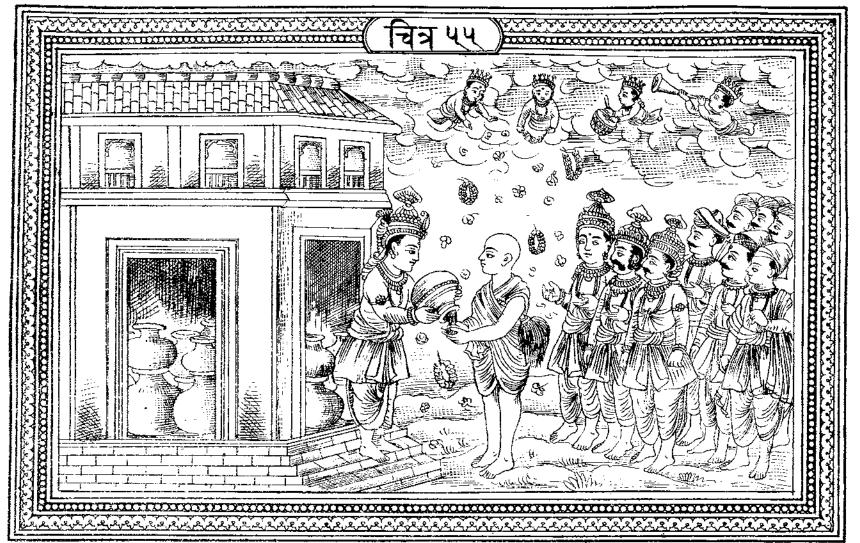
1105511

श्रेणिमां गौरेय, गांधार प्रमुख श्राठ निकायोने तथा रथनूपुरचक्रवाल प्रमुख पचास नगरोने श्रने उत्तरश्रेणिमां पंकक वंशालय प्रमुख श्राठ निकायोने तथा गगनवल्लन प्रमुख साठ नगरोने वसा-वीने रहो. पठी कृतार्थ थयेला ते बंने पोतानां मातापिताने तथा जरतने पोतानो वृत्तांत कहीने दिक्त प्रशेणिमां निम अने उत्तरश्रेणिमां विनमि जइने रह्याः

हवे अन्नपान आदि देवामां अकुशल एवा समृद्धिवाला लोको प्रजुने वस्त्र, आनरण, कन्या विगेरे आपवा लाग्या, पण योग्य जिका नहीं मलवा वतां क्षेत्ररहित मनवाला प्रज करदेशमां हस्तिनागपुर नगर तरफ गया, अने त्यां (आवश्यकवृत्तिने अनुसारे) बाह्बिलना पुत्र सोम-प्रजीनो पुत्र श्रेयांस युवराज हतो. ते श्रेयांसे ते रात्रिए एवं स्वप्त दीवुं के "में स्थाम वर्णना मेरुने अमृतना कलशोधी सिंचन कयों तेथी ते अत्यंत शोजावालने थयो." त्यांना सुबुद्धि नामना नगरशें एवं सप्त जोयं के सूर्यमंग्सवी खरी पडें खां हजार किरणोंने फरीथी श्रेयांसे त्यां जोगी दीधां तेथी ते सूर्य घणोज शोजवा खाग्यो." त्यांना राजाए (सोमप्रजे) स्वप्तमां एम जोयुं के "एक महा पुरुष शत्रुना लश्करनी साथे लमतो हतो ते श्रेयांसनी सहायथी विजयी थयो." ते त्रणे जणाए सवारमां सनामां एकठा थइने पोतपोतानां स्वप्त परस्पर निवेदन कथाँ. तेथी ''श्रेयांसने कोइ पण मोटो लाज थवानो हे" एम राजाए निर्णय करीने सजाने विसर्ज्जन करी श्रेयांस पण पोताने घेर जइने फरुखामां बेठो ठे तेवामां "प्रज कांइ पण होता नथी" एवो खोकोनो कोलाहल सांजलीने अने प्रजुने जोइने "में कोइ पण जगोए पूर्वे आवो वेश जोयो हे" एम इहा पोह करतां श्रेयांसने जातिस्मरणङ्गान जलक्त थयुं. तेथी तेणे जाएयुं के "श्रहो ! हुं तो पूर्व जवमां प्रजुनो सारिय हतो छने प्रजुनी साथे में दी हा लीधी हती छने ते वखते वजसेन प्रजुए कह्युं हतुं के आ वज्रनान नरतक्तेत्रमां पहेला तीर्थंकर थशे, तेज आ प्रजु हे." हवे तेज वसते सुबो0

1123011

१ सोमयशाः



श्रेथांस कुमर भगवानने सेलडीनो रस बहोरावे हे.

पा.१००

कोइ एक माण्स जत्तम होरडीना रसना घमा श्रेयांस कुमारने नेट तरीके छापवा श्राव्यो, तेमां-थी एक घमो लइने तेणे प्रजुने कह्युं के ''आ योग्य जिह्ना आप ग्रहण करो." लारे प्रजुए पण पोताना हाथ पसार्या (खांबा कर्या) एटले श्रेयांसे सर्व घनानो रस रेनी दीधो, परंत एक पण विंघु नीचे पड्युं नहीं, रसनी शिखा उपर उपर वधवा लागी. कह्युं वे के-''जेना हाथनी अंदर हजारो घमा समाइ जाय श्रयवा सर्वे समुद्र समाइ जाय एवी जेने लब्धि प्राप्त थाय तेज पाणिप्रति-यही (इस्तपात्री) थाय." अहीं कवि घटना करे वे के-प्रजुए पोताना जमणा हाथने कहां के ''अरे ! तुं जिक्का केम लतो नथी ?" त्यारे तेले कह्युं के ''हे प्रजु ! हुं आपनारना हाथनी नीचे शी रीते याउं ? कारण के पूजा, जोजन, दान, शांतिकर्म, कला, पाणियहण, स्थापना, ग्रुक्ता, प्रेक्तर्ण, इस्तकश्चर्पणे विगेरे कार्योमां हुं तो वपरातो हुं"एम कहीने जमणो हाथ स्थित थयो लारे (प्रजुए माबा हाथने जिक्का क्षेवा कह्युं तेना जवाबमां) माबा हाथे कह्युं के "हुं रणसंप्राममां सन्मुख थनारो हुं, अंक गणवामां तत्पर हुं अने नाबा पनखे सूवा विगेरेमां सहाय करनारो हुं अने आ जमणो हाथ तो जुगार आदि व्यसनवालो हे." त्यारे जमणा हाथे कहां के "हुं पवित्र हुं, तुं पिचत्र नथी." लारपटी (प्रजुए बंने हाथने समजाव्या के) "तमे राज्यलक्मी उपार्जन करी बे श्रने श्रर्थीना समूहने दान देवावडे कृतार्थ करेख हे, वली निरंतर संतुष्ट हो तोपण दान देनारा उपर द्या लावीने हवे दान ग्रहण करो." एवी रीते प्रजुए एक वर्ष सुधी बंने हाथने समजावीने श्रेयांस कुमार पासेथी मलेला ताजा शेरमीना रसे करीने तेने पूर्ण कर्या. एवा श्री रूपजदेव प्रभु तमारुं रक्षण करो.

श्रेयांस कुमारना दानने वखते नेत्रमां हर्षाश्रुनी धारा, वाणीरूपी छुधनी धारा स्रने शेरमीना रसनी धारा स्पर्धा वडे वधवा लागी स्रने तेज खाशये (तेनाची सिंचायेझं)धर्मरूपी वृद्ध वधवा

१ इसरेखा बताववी ते प्रेक्ष. २ हाथो देवो, कोख आपवो, वचन आपवुं, ए सर्व हस्तकअर्पण समजवुं.

कल्पव 1133311

लाग्युं. पढ़ी ते रसथी प्रजुए सांवत्सरिक तपनुं पारणुं कर्युं. ते वखते त्यां वसुधारानी वृष्टि, चेलो-रकेपे, आकाशमां देवंडुङ्जि, गंधोदक पुष्पष्टि अने अहो दान अहो दान एवी आकाशमां उद्घोषणा एवी रीतनां पांच दिव्य प्रगट थयां. पढ़ी सर्वे खोको त्यां एकता थया. श्रेयांस क्रमारे तेमने जणाव्युं के 'हे खोको ! सद्गति मेखववानी इन्नाथी आ प्रमाणे साधुर्जने एषणीयँ आहारनी जिक्का अपाय है." एवी रीते आ अवसर्षिणीमां श्रेयांस कुमारे बतावेखुं दान प्रथम जाणवुं. "तमे छा बाबत केवी रीते जाणी ?"ए प्रमाणे श्रेयांसने लोकोए पूज्युं एटले तेणे प्रजुनी साथेनो पोतानो आठ जवनो संबंध कही संजलाव्यो के 'ज्यारे प्रजुईशान देवलोकमां ललितांग नामे देव हता लारे हुं पूर्व जवनी निर्नामिका तेमनी खयंप्रजा नामे देवी थइ हती १, त्यारपठी पूर्वविदेहमां पुष्कला-वती विजयने विषे खोहार्गेख नामना नगरमां प्रज वज्जजंघ राजा हता त्यारे हुं श्रीमती नामे तेमनी राणी इती २, त्यांथी उत्तरकुरुमां जगवान् युगलिक इता खने हुं तेमनी युगलिनी इती ३, त्यांची सौधर्म देवलोकमां श्रमे बंने मित्रदेव चया हता ४, त्यारपठी प्रजु श्रपरविदेहमां वैद्यपुत्र इता त्यारे हुं जीर्ण रोठनो पुत्र केशव नामे तेमनो मित्र हतो ५, त्यांथी अच्युत देवलोकमां अमे बंने देव थया हता ६, त्यांथी पुंकरीकिणी नगरीमां प्रज्ञ वज्जनाज चक्री हता ते वखते हुं तेमनो सारिथ हतो ७, त्यांथी सर्वार्थिसिद्ध विमानमां श्रमे बंने देव थया हता ए श्रने श्रहीं हुँ प्रजुनो प्रपौत्र थयो हुं. आ प्रमाणेनी इकीकत सांजलीने सर्वे लोको ''क्रवजदेव समान पात्र, शेरमीना रस समान निरवद्य दान छाने श्रेयांसना जेवो जाव जो पूर्वनुं जाग्यें होय तोज प्राप्त थाय." इत्यादि स्तुति करता पोतपोताने स्थानके गया. एवी रीते दीक्षाना दिवसथी मांगीने एक हजार वर्ष सुधी प्रजुना उद्मस्थपणानो काल जाणवो. तेमां सघलो मली प्रमादकाल एक श्रहोरात्रनो जाणवो. एवी रीते आत्माने जावता छता एक हजार वर्ष पूर्ण थयां, त्यारपठी आ शियां खानो चोयो मास,

गररसा

१ घव्यनी. २ वस्त्रनी वृष्टि. ३ दोषरहित. ध मग्गीऋं=मार्गितं=मागणुं (जाग्य).



AL 608

सातमुं पखवामीयुं, ते फागण मासनो कृष्णपक्त, ते फागण मासना कृष्णपक्तनी एकादशीना दिवसे सवारना वखते पुरिमताल नामना विनीता नगरीना शाखानगरेनी बहार शकटमुख नामना उद्यानमां न्ययोध नामना वृक्तनी नीचे जलरहित श्रष्ठमनो तप करीने उत्तराषाढा नक्तत्रमां चंड्योग प्राप्त थये उते ध्यानांतर दशामां वर्ततौ प्रजुने श्रनंत केवलक्षान उत्पन्न थयुं यावत् (सर्वे प्राणीर्जना जावने) जाणता, जोता उता विचरवा लाग्या.

ए प्रमाणे एक हजार वर्ष गया बाद विनीता नगरीना पुरिमताल नामना शाखानगरमां प्रजुने केवलङ्गान जत्पन्न थयुं तेज वखते जरत राजाने चऋरत पण जत्पन्न थयुं. ते वखते विषयतृष्णाना विषमपणाने लीधे हुं 'प्रथम पितानी पूजा करुं के चक्रीनी करुं?' एम क्षण वार विचारीने आ लोक श्चने परलोकमां सुख श्चापनारा पितानी पूजा कर्याथी मात्र श्चा लोकमां सुख श्चापनार चक्रनी पूजा तो थइज चुकी, ए प्रमाणे बराबर विचारीने हमेशां ठपको देता एवा मरुदेवा माताने हाथी उपर बेसामी आगल करीने सर्व कृष्टि सहित जरत राजा प्रजुने वांदवा चाल्याः ज्यारे समवसरणनी नजीक छाव्या त्यारे 'हे माता! तमारा पुत्रनी कृष्कि जुर्ज.' ए प्रमाणे जरत राजाए कहां, तेथी हर्षथी रोमांचित खंगवाला ययेला खने खानंदनां खश्च जरावाने लीधे निर्मल नेत्रवाला ययेलाँ मरुदेवा माता प्रजुनी बन्न, चामर छादिक प्रातिहार्यनी बङ्गी जोइने विचारवा खाग्या के "श्रहो! मोहर्यी विह्वल थथेला सर्वे प्राणी ने धिकार है ! तेर्न स्वार्थने लीधेज स्नेह करे हे, कारण के क्रपजनां डु:खर्थी रुद्दन करती एवी जे हुं तेनां तो नेत्र पण हीन तेजवालां थयां, परंतु रूपन तो आवी रीते सुर अने असुरथी सेवातो यको अने आवी जातनी समृद्धि जोगवतो वतो पण मने सुखवार्तानो

१ गुजराती माध विदे ११. २ परुं. ३ शुक्कध्यानना प्रथमना वे जेदनुं ध्यान करी रह्या पढीनी दशा ते ध्यानांतर दशा जाणवी. ते वखते ध्यान होतुं नथी. वाकीना वे पाया जवने ख्रंते ध्यावामां ख्रावे छे. ४ प्रजुना विरहे रुदन करतां ख्रांखमां पम्रुख ख्रावेखां ते ख्रा वखतनां हर्षाश्रुधी धोवाइ गयां तेथी नेत्र निर्मेख थयां.

कह्य ॥१११॥ संदेशो पण मोकलतो नथी, माटे या स्नेहने धिकार है" ! एम जावना जावतां मरुदेवाने केवल-इतन उत्पन्न थयुं खने तेज क्षणे खायुष्यनो क्षय थवाथी ते (खंतकृत्केवली थइने) मुक्ति पाम्याः

श्रहीं किव घटना करे है के—'जगतमां युगादीश एट से क्षत्र देव समान पुत्र नथीं, कारण के जेमणे एक हजार वर्ष सुधी पृथ्वी छपर जमी जमीने जे केवल कानरूपी छत्तम रत्न छपार्जन कर्युं ते स्नेह थी तुरतज पोतानी माताने श्रापी दी धुं, तेमज मरुदेवा समान माता पण जगतमां नथी के जे पोताना पुत्रने माटे मुक्तिरूपी कन्याने श्राने प्रगटपणे शिवमार्गने पण जोवाने माटे प्रथमश्री मोक्ते गया.' प्रञुए पण समवसरणमां बेसीने धर्मदेशना श्रापी. ते वलते त्यां जरतना क्षत्र सेन श्रादि पांचसो पुत्रोए तथा सातसो पौत्रोए दी का ली थी. ते छंमांथी प्रञुए क्षत्र सेन श्रादि चोराशी गणधर स्थाप्या. ब्राह्मीए पण दी का ली धी (ते मुख्य साध्वी थइ) श्राने जरते राजा श्रावक थया (श्रावक धर्मने श्रांगीकार कर्यों). 'श्रा स्त्रीरत्न थशों एम धारीने जरते दी का लेतां श्राटकावेली सुंदरी श्राविका थइ. एवी रीते चतुर्विध संघनी स्थापना थइ. पठी कहा श्राने महाकहा सिवायना सघला तापसोए प्रजुनी पासे श्रावी दी का प्रहण करी. पठी इंडना प्रतिबोध्यी मरुदेवा मातानो शोक निवारीने जरत राजा पोताने स्थानके गया.

पढ़ी जरत राजा चकरतनी पूजा करीने ग्रुज दिवसे प्रयाण करी साठ हजार वर्षे जरतके जना ठ खंग साधीने पोताने घेर आव्या, परंतु चकरत तो आयुधशाखानी बहारज रह्युं. ते वखते जरते पोताना अठाणुं जाइउंने "मारी आज्ञा मानो" एम इतना मुख्यी कहेवराव्युं. तेथी ते सर्वे एकठा यहने "अमारे जरतनी आज्ञा मानवी के तेनी साथे युद्ध करवुं" ए पूठवा माटे प्रजुनी पासे गया. प्रजुए पण वैताखीय अध्ययननी प्ररुपणा वहें तेमने प्रतिबोध पमामीने दीका आपी. त्यारपठी जरते बाहुबि उपर इत मोकह्यों. ते पण कोधथी अंध अने अहंकारथी उद्धर थया यका पोताना सैन्य सहित सामा आवीने जरत राजानी साथे बार वर्ष सुधी खड्या, पण हार्या

सुबो•

ાલ્ડરમા

नहीं. त्यारे माणसोनो जबरो संहार थतो जाणीने इंडे खावीने दृष्टि, वागू, मुष्टि छने दंगरूप हैं। चार जातनां युद्ध ठरावी छाप्यां. तेमां पण जरत चकीनो पराजय थयो. त्यारे कोधथी छांधला यइने जरते बाहुबिती उपर चक्र मूक्युं, पण एक गोत्रीयपणाने लीधे ते चके तेनो कांश्र पण परा-प्रव कयों नहीं. ते वखते कोधना वशयी जरतने हणवानी इहावाला मुठी छपामीने दोमता बाहुब लिए "अरे ! पिता तुख्य मोटा जाइने हणवो ए मने अनुचित है अने उपाडेली मुठी पण निष्फल केम थाय" एम विचारीने ते मुठीने पोताना मस्तक उपर मूकी केशनो लोच करीने अने सर्वनो त्याग करीने काउस्सग्ग कर्यों. ते जोइने जरत चक्री तेमने नमीने पोतानो अपराध खमावी पोताने स्थानके गया. बाहुबिल पण "दीक्तापर्यायश्री मोटा एवा नाना जाइउँने केवी रीते नमुं ? तेथी ज्यारे केवलकान जलक थही त्यारेज हुं प्रजुनी पासे जहरा" एम विचारीने एक वर्ष सुधी काउस्सग्गमांज उत्रा रह्या. वर्ष पढी प्रजुए मोकसेली पोतानी बहेनोए "हे जाइ! गजश्री उतरो" एम कहीने बाहुबिलने प्रतिबोध पमाख्यो. पठी बाहुबिलए जेवा पग उपाड्या के तरतज तेने केवलकान उत्पन्न थयुं. त्यारपढी प्रजुपासे जहने लांबो वलत विहार करी प्रजुनी साथेज ते मोक्ते गया. जरत चक्री पण खांबा वखत सुधी चक्रवर्तीनी खदमीने जोगवीने एक दिवस आरीसाजवनमां वींटी विनानी पोतानी आंगसीने जोइ अनित्यपणानी जावना जावता केवस-क्वान मेलवीने दश हजार राजार्जनी साथे देवताए आपेक्षा मुनिवेशने यहण करी लांबो वखत विहार करी मोक्ते गया.

श्रहिन् कौशालिक श्री क्षत्रदेव प्रञ्जने चोराशी गण श्रने चोराशी गणधर थया, क्षत्रसेन प्रमुख कोराशी हजार साधुर्वनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, ब्राह्मी, सुंदरी प्रमुख त्रण लाख साध्वीर्वनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, श्रेयांस प्रमुख त्रण लाख ने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ, केवसी श्रू

कस्पव

॥११३॥

नहीं पण केवली तुख्य एवा चार हजार सातसो ने पचास चौदपूर्वधरनी उत्कृष्ट संपदा थइ; नव हजार अवधिकानी र्रनी, वीश हजार केवलकानी र्रनी, वीश हजार ने उसी वैकियल विध-नव हजार अवधिकानी उनी, वीश हजार केवलकानी उनी, वीश हजार ने उसी वैकियल विध-वालानी, अढी द्वीप अने वे समुद्रने विषे पूर्याप्त संक्षी पंचें द्विय जीवोना मनोगत जावने जाण-नारा एवा बार इजार बसो ने पचास विपुलमति री अने बार हजार बसो ने पचास वादी र्रनी उत्कृष्टी संपदा यइ. अईन् कौशलिक श्री क्षत्रदेव प्रजना वीश हजार शिष्यो (साधुर्व) अने चालीश हजार साध्वी मोक्ते गयां. अईन् कौशलिक श्री क्षप्तदेव प्रजुने श्रनुत्तर विमानमां जलन्न श्रनारा श्चने श्चागामी मनुष्यगतिमां मोद्दे जनारा वीश हजार श्चने नवसो मुनिर्जनी जस्कृष्टी संपदा थइ.

श्चर्हन् कौशक्षिक श्रीक्रपत्रदेव प्रजुनी वे प्रकारनी श्रंतकृद्जूमि यह ते श्रा प्रमाणे-एक युगांत-कृद्जूमि छने बीजी पर्यायांतकृद्जूमि. जगवान् पठी छनुक्रमे छसंख्याता पुरुषयुग मोके गया ते युगांतकृद्जूमि जाणवी श्रने जगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थया पठी श्रंतर्मुहर्ते मरुदेवा माता अंतकुद्केवली थइने मोद्दे गया ते पर्यायांतकुद्जूमि जाएवी.

ते काल यने ते समयने विषे यईन् कौशिक श्री क्षत्रदेव प्रज वीश लाख पूर्व कुमारावस्थामां रहीने अने त्रेसठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रहीने एकंदर ज्याशी लाख पूर्व ग्रहस्थावस्थामां रहीने, एक हजार वर्ष बद्मस्थपर्याय पालीने अने एक हजार वर्ष वंबां एक लाख पूर्व सुधी केवलिपर्याय पालीने, एकंदर संपूर्ण एक खाख पूर्व चारित्रपर्याय पालीने-चोराशी लाख पूर्व सुधी सर्व श्रायुष्य पालीने वेदनीय, श्रायुः, नाम श्रने गोत्र ए चार कर्म क्य थये उते श्रा श्रवसर्पिणीमां सुषमञ्जूषम नामनो त्रीजो छारो बहु गये उते एटखे त्रण वर्ष छने सामा छाउ मास बाकी रह्ये उते अर्थात् त्रीजा आरानां नेट्याशी पखवामीयां वाकी रह्ये उते आ शियाखानो त्रीजो मास, 🐒 ॥११३॥ पांचमो पक्त, ते माघ मासनो कृष्णपक्त, ते माघ मासना कृष्णपक्तनी तेरसने दिवसे अष्टापद

१ गुजराती पोस वदि १३.



मा १०२

पर्वतना शिखर जपर दश हजार साधुर्जनी साथे जखरिहत चौदजक एटखे व जपवासनो तप करीने स्रजिजित् नामना नक्षत्रने विषे चंड्योग प्राप्त थये व्यते सवारने वखते पख्यंकासने बेवा थका निर्वाण पाम्या यावत् सर्वे डुःखथी मुक्त थया.

जे वखते श्री क्षपत्रदेव मोक पाम्या ते वखते जेनुं श्रासन चित ययुं हे एवो इंड श्रविध-ज्ञानथी प्रजुना निर्वाणने जाणीने ज्यां प्रजुनुं शरीर हतुं त्यां श्रयमहिषी, लोकपाल श्रादि सर्व परिवार सहित छावीने त्रण प्रदक्तिणा दइ छानंदरहित छने छश्रुषी जराइ गयेखां नेत्रवाखो थयो उतो नहीं श्रति नजदीक तेम नहीं श्रति हर एम हाथ जोमीने पर्युपासना करवा खाग्यो अर्थात उनो रह्यो. एवी रीते जेउनां आसन कम्पित थयां हे अने जेउए प्रजुनुं निर्वाण जाएयं हे एवा ईशानेंद्र आदि सर्वें इंद्रो पोतपोताना परिवार सहित अष्टापद पर्वत उपर ज्यां प्रजुतं शरीर हतुं त्यां ख्रावीने विधिवूर्वक पर्युपासना करता जना रह्या. त्यारपठी इंद्रे जवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो पासे नंदनवनश्री गोशीर्ष चंदननां काष्ट मंगावीने त्रण चिता करावी. एक तीर्शंकरना शरीर माटे, एक गणधरोनां शरीर माटे अने एक बाकीना मुनिर्जनां शरीर माटे. पठी छाजियोगिक देवो पासे कीर समुद्रथी पाणी मंगाव्युं. सारपठी इंदे कीर समुंद्रना पाणीथी तीर्थंकरना शरीरने न्हवडाव्युं, ताजा गोशिषचंदननुं विक्षेपन कर्युं, हंस खक्तणवालुं वस्र उंढाड्युं अने सर्व असंकारोधी विजूषित कर्युं. एवी रीते बीजा देवोए गणधरो अने मुनिर्जनां शरीरोने न्हवराठ्यां, चंदननुं विखेपन कर्युं श्राने सर्व श्राखंकारथी विजूषित कर्यां. पठी इंडे विचित्र प्रकारनां चित्रोधी शोजिती त्रण शिविका करावी अने आनंदरहित, दीन मनवाला अने अश्रुधी मिश्रित थयेला नेत्रवाला इंद्रे तीर्थंकरना शरीरने शिविकामां पंधराव्युं स्रने बीजा देवोए गणधरो स्रने मुनिर्ननां शरीरोने शिविकामां पधराव्यां. त्यारपठी इंद्रे तीर्थंकरना शरीरने शिविकामांषी जता-

१ हंसना चित्रवाखुं.

कहपा

((४१४))

रीने चितामां स्थापन कर्युं छने बीजा देवोए गणधरो छने मुनिर्ननां शरीरोने चितामां स्थापन कर्यां. त्यारपढी इंद्रना हुकमधी आनंदरहित तथा उत्साहरहित एवा अग्निकुमारोए चितामां अग्नि प्रदीप्त कर्यों, वायुकुमारोए वायु विकुट्यों अने बाकीना देवोए ते।चतार्टमां कालागुरु, चंदन आदि उत्तम काष्टो नांख्यां तथा मध अने घीना घनाथी ते चिताउंने सिंचन करी अने ज्यारे तेर्जनां शरीरनां श्रस्थि मात्र वाकी रह्यां लारे इंडना हुकमथी मेघकुमार देवोए ते चितार्जने (जल वडें) ठारी. पठी सौधर्म इंदे प्रजुनी जपरनी जमणी दाढा ग्रहण करी, ईशानेंद्रे जपरनी नाबी दाढा ग्रहण करी. चमरेंडे नीचेनी जमणी दाढा अने बलींडे नीचेनी माबी दाढा ग्रहण करी अने बीजा देवोए केटलाके जिनजक्तिथी, केटलाके पोतानो आचार समजीने अने केटलाके धर्म समजीने वाकी रहेेेेेेे बंगोपांगनां श्रस्थि प्रहण कर्यां. पठी इंडे एक जिनेश्वर जगवाननो,एक गणधरोनो श्रमे एक बाकीना मुनिर्सनो एम त्रण रत्नमय स्तूर्प कराव्या श्रमे तेम करीने शक श्रादि देवो नंदीश्वर श्रादि द्वीपे जइ श्रष्ठाइ महोत्सव करीने पोतपोतानां विमानमां जइपोतपोतानी संजामां वज्रमय मावलामां जिनदाढाने मूकीने गंध, माख्य श्रादि वडे तेनी पूजा करवा लाग्या.

सर्व पुःखयी मुक्त थयेला छाईन कौशिलक श्री क्षानदेव प्रजाना मुक्त थया पठी त्रण वर्ष अने सामा आठ मास ठ्यतीत थया. त्यारे वेंतालीश हजार वर्ष तथा त्रण वर्ष अने सामा आठ मास छिषक एटलो काल ठी एवी एक सागरोपम कोटाकोटी गई ते समये श्रमण जगवान श्री महावीर खामी निर्वाण पाम्या. त्यारपठी नवसो वर्ष गयां छाने दशमा सेंकमानुं आ एंशीमुं वर्ष जाय है. (ते समये पुस्तकवाचनाथई) श्रा प्रमाणे श्री क्षानदेव प्रजानुं चित्र जाणवुं.

एवी रीते जगद्गुरु जहारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत महोपाध्याय श्रीकीर्त्तिविजय हैं गिषाना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गिषाए रचेली श्रीकहपसूत्र सुबोधिका नामनी टीकामां सातमुं व्याख्यान समाप्त थयुं तेमज जिनचरितहरूप प्रथम वाच्य व्याख्यान पूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

१ देरी छ अने पगलां.

सुबोव

1133811

॥ अथ अष्टमं व्याख्यानं प्रारज्यते ॥

हवे गणधरादि स्थविरावलीरूप बीजी वाचनामां स्थविरावली कहे हे.

ते काल छने ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण छने छगीयार गणधरो थया. हवे शिष्य पूछे हे के हे जगवन् !ते कया हेतुर्था था प्रमाणे कहो हो के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण अने अगीयार गणधरो थया ? केमके बीजा जिनेश्वरोने तो ''जेने जेटला गण तेने तेटला गणधर" ए सूत्रथी गण अने गणधरोनी संख्या सरखी हे. आ प्रमाणे शिष्ये पूट्ये हते आचार्य कहे हे (उत्तर आपे हे) के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुना गौतम गोत्रवाला मोटा इंडजूति नामे अणगार पांचसो साधुर्वने वाचना श्रापता हर्ता, गौतम गोत्रवाखा वचला श्रप्निजूति नामे अणगार पांचसो साधुरीने वाचना आपता हता, गौतम गोत्रवाक्षा नाना वायुत्रृति नामे अण-गार पांचसो साधुर्तने वाचना आपता हता, जारहाज गोत्रवाला आर्यव्यक्त नामे स्थविर पांचसो साधुर्जने वाचना आपता हता, ऋग्निवैरंगायन गोत्रवाखा स्थविर आर्यसुधर्मा पांचसो साधुर्जने वाचना छापता हता, वासिष्ठ गोत्रवाला स्थविर मंगितपुत्र सामा त्रणसो साधुर्वने वाचना श्चापता इता, काञ्चप गोत्रवाला स्थविर मौर्यपुत्र सामा त्रणसो साधुर्डने वाचना श्चापता हता, गौतम गोत्रवाला स्थविर श्रकम्पित श्रने हारितायन गोत्रवाला स्थविर श्रचलत्राता ए वंने स्थविर त्रणसो त्रणसो साधुर्जने वाचना आपता हता तथा को निन्य गोत्रवाला स्थविर मेतार्थ श्रने स्थविर प्रजास ए वंने स्थविर त्रणसो त्रणसो साधुर्वने वाचना श्रापता हता. ते हेतुयी हे छार्थ ! ते एम कहेवाय हे के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण छने श्रमीयार गण-धरो हता, केमके श्रकम्पित श्रने श्रचलचातानी एकज वाचना हती तथा मेतार्थ श्रने प्रजासनी

१ तेटला तेना मुख्य शिष्यो हता एम बधे समजदुं.

कल्प

शररपा

एकज वाचना हती तेथी नव गण अने अगीयार गणधरो हता ए युक्तज कहेल है. जे कारण माटे एक वाचनावालो यतिसमुदाय तेने गण कहे है. अहीं मंकित अने मौर्यपुत्रनी माता एक हती, पण ते बंने जाइनेनां गोत्र जूदा जूदा बापनी अपेक्षाए जिल्ल जिल्ल कहेलां है. तेमां मंकि-तनो पिता धनदेव हतो अने मौर्यपुत्रनो पिता मौर्य हतो. ते देशमां एक पति मरी गया बाद बीजो पति करवानो निषेध नहोतो एम वृद्ध आचार्योनो मत है.

इंडजूति आदि आ सर्वे अमण जगवंत श्री महावीर प्रजुना अगीयारे गणधरो हता ते केवा हता ? तो के द्वादशांगी एटसे आचारांगथी मांनीने दृष्टिवाद पर्यंत बारे अंगने जाणनारा हता; केमके पोतेज तेना रचनार हता. चौद पूर्वना पण जाणनारा हता. द्वादशांगीना ज्ञाता कहेवाथी चौदपूर्विपणुं तेमां श्रावीज जाय हे तोपण ते श्रंगोमां चौद पूर्वतुं प्रधानपणुं जणाववा माटे तेने पृथक बहुए करेल है. ते प्रधानपणुं प्रथम रचवाने लीधे, अनेक विद्या, मंत्र आदिना अर्थमय होवाने लीधे तेमज तेतुं मोटुं प्रमाण होवाने लीधे हे. द्वादशांगिपणुं अने चौदपूर्विपणुं तो मात्र सूत्र-ना ज्ञाता कहेवाथी पण श्रावी जाय ते दूर करवाने माटे कह्युं हे के समस्त गणिपिटकने धारण करनारा इता एटखे जेने गण होय ते गणी एटखे जावाचार्य, तेनी जाणे पिटक कहेतां पेटीज होय ते गणिपिटक एटले द्वादशांगी, ते द्वादशांगीने पण स्थुलिनद्रनी पेठे देशथी नहीं, परंतु सर्व अक्तरना संयोग जाणवाने लीधे तेने सूत्रथी अने अर्थथी धारण करनारा हता. ते अगीयारे गणधरो राजग्रह नगरमां जलरहित मासजकना तपथी एटले एक मास सुधी जोजननुं प्रत्या-ख्यान करीने पादपोपगमन अनशन वने मोक्षे गया है यावत सर्व डु:खर्थी मुक्त थया है. श्री महावीर प्रजु मोक्त पाम्या पठी स्थविर इंडजूति अने स्थविर आर्यसुधर्मा ए बंने स्थविर मोक्त प्राम्या है, एटले ए श्रगीयार गणधरोमांथी नव गणधरो तो जगवंतना जीवतांज मोक्त पाम्या है 🏂 अने इंद्रजूति तथा आर्यसुधर्मा जगवंत निर्वाण पाम्या पठी निर्वाण पाम्या हे. हमणां वर्त्तता जे आ

सुबो०

॥११५॥

निर्धंय साधुर्ड विद्वार करे हे ते सर्वे आर्यसुधर्मा आणगारना शिष्यसंतान जाणवा. बाकीना गणधरो शिष्यसंतान रहित हे, केमके पोतपोताना मरणकाले पोतपोताना गण सुधर्मास्त्रामीने सोंपीने तेर्ड मोक्ते गया हे. कह्यं हे के-"सर्वे (गणधरो) समस्त लब्धिर्ड्या संपन्न, वज्रक्षज्ञ संघयणवाला अने समचतुरस्र संस्थानवाला एक मासना पादोपगमने मोक्त पाम्या हे."

श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रज्ञ काश्यप गोत्रवाला हता. ते काश्यप गोत्रवाला श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रज्ञने श्रियेश्यायन गोत्रवाला श्रार्यसुधर्मा स्थिवर शिष्य हता. श्री वीर प्रजुनी पाटे श्री सुधर्मालामी पांचमा गणधर हता. तेनुं खरूप श्रा प्रमाणे जाणवुं. कुल्लाग सिन्नवेशमां धिम्मल नामे ब्राह्मणने जिह्नला नामे स्त्री हती. तेमना पुत्रे (सुधर्मालामीए) चौद विद्याना पारंगामी श्रश्ने पचास वर्षने श्रंते दीक्ता लीधी श्रने त्रीश वर्ष सुधी वीर प्रजुनी सेवा करी. वीर प्रजुना निर्वाण पढी बार वर्षने श्रंते एटले जन्मश्री बाणुं वर्षने श्रंते तेमने केवलज्ञान उत्पन्न श्रंते. त्यारपढी श्राष्ठ वर्ष सुधी केवलीपणुं पालीने सो वर्षनुं श्रायुष्य पूर्ण करी पोतानी पाटे जंबुखामीने स्थापीने मोक्ते गया.

श्रिवेश्यायन गोत्रवाला स्थिविर आर्यसुधर्माने काश्यप गोत्रवाला आर्यजम्बू नामे स्थिविर शिष्य थया ते श्री जंबूस्वामीनुं स्वरूप (चिरत्र) आ प्रमाणे जाणवुं राजग्रह नगरमां रूपज अने धारिणीना पुत्र पांचमा देवलोकथी च्यवेला जंबू नामे श्री सुधर्मास्वामी पासे धर्म सांज- खवापूर्वक शील अने सम्यक्तव पाम्या वतां पण माता पिताना हृढ आग्रहने वश थइने आव कन्या परण्या, पण तेर्चनी स्नेह युक्त वाणीथी ते मोह पाम्या नहीं, कारण के ''सम्यक्तव अने शिलरूप वे तुंबमांचे के जेना वमे जवरूपी समुद्ध (सुखे) तराय हे, ते वे तुंबमांने धारण कर-नार जंबू मुनि स्त्रीरूपी नदीमां केवी रीते बूमे ?" लग्ननीज रात्रिए ते स्त्रीचने प्रतिबोध देतां

१ सर्वथी ब्रह्मचर्य जचर्या स्तां.

कस्प**०** ॥११६॥ कारी करवाने आवेला चारसो ने नवाणुं चोरना परिवारवाला प्रजवने पण प्रतिबोध पमाड्यो. प्रजाते पांचसो चोर, आठ स्त्री, ते स्त्रीउनां माबाप अने पोतानां माबापनी साथे पोते पांचसो सतावीशमा एवा श्री जंबूस्वामीए नवाणुं करोम सोनैया तजीने दीक्ता स्त्रीधी, अनुक्रमे केवली यया अने सोल वर्ष ग्रह्स्थपणामां, वीश वर्ष उद्यस्थपणामां अने चुमाज़ीश वर्ष केवलीपणामां एवी रिते सर्व आयु एंशी वर्षनुं पालीने श्री प्रजवस्थामीने पोतानी पाटे स्थापीने मोक्ते गया. अहीं कि विघटना करे हे के "जंबूसामी समान कोइ कोटवाल थयो नथी अने थशे पण नहीं के जेणे चोरीथी धनने हरतां अमूख, चोरीथी हराय नहीं एवं अने अद्गुत एवं रह्मित्रत्यं मेलव्यं."

श्री वीर प्रजना निर्वाण पठी श्राठ वर्षे गौतमस्वामी, वीश वर्षे सुधमीस्वामी श्रने चोसठ वर्षे जंबूस्वामी मोद्दे गया। त्यारपठी दश वस्तुर्ज विद्येद गइ. मनःपर्यवज्ञान १, परमावधि के जेना जत्यन्न यया पठी एक श्रंतर्मुहूर्त्तनी श्रंदर केवलज्ञाननी जत्यत्ति थाय हे १, पुलाकलिध के जेथी चक्रवर्तीना सैन्यने पण चूर्ण करवाने शिक्तमान थाय ३, श्राहारक शरीरलिध ४, क्षपक-श्रेणि ५, जनकह्य ७, संजमित्रक (परिहारविश्विक्ति, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्र) ७, केवलज्ञान ए अने मोक्तमार्ग १०. श्रदी पण किव कहे हे के "महामुनि जंबूस्वामीनुं सौजाग्य लोकोत्तर हे के जे पतिने पामीने मुक्तिरूपी स्त्री (जरतकेत्रमांथी) इज पण बीजा स्वामीने शहती नथी."

काइयप गोत्रवाला स्थविर आर्यजंबूने कालायन गोत्रवाला स्थविर आर्यप्रजव शिष्य थया. कालायन गोत्रवाला स्थविर आर्यप्रजवने वह गोत्रवाला मनकपिता स्थविर आर्यशय्यंजव शिष्य थया. एक दिवसे प्रजव प्रजुए पोतानी पाटे स्थापवाने माटे पोताना गणमां अने संघमां उपयोग सुबोव

॥११६॥

र ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयी.

दीधो, पण तेवो योग्य कोइ पुरुष नहीं जोवाधी परतीर्थमां उपयोग दीधे उते राजएहमां यझ करता शब्यंत्रव जह जोवामां छाव्या. पठी (तेमनी प्रेरणाथी गयेका) वे साधुउंद त्यां जइने " छहो कष्टमहो कष्टं तत्वं न ज्ञायते परं" एटक्षे छहो छा तो कष्टज ठे, कष्टज ठे, श्रेष्ठ तत्व तो जणातुंज नथी. ए प्रमाणे वचन संजक्षाव्युं. पठी खड़्नथी बीवमावेका तेना बाह्मण गुरुए देखामेक्षी यझस्तंजनी नीचे रहेकी श्री शांतिनाथनी प्रतिमाना दर्शनथी ते प्रतिबोध पाम्या छने (प्रजव खामी पासे) दीका बीधी. पठी प्रजव प्रज्ञ श्री शब्यंजवने पोतानी पाटे स्थापीने खगें गया. ए प्रमाणे प्रजव प्रदुनुं चरित्र जाण्तुं.

त्यारपठी श्री शब्यंत्रवे पण गर्ज सिहत तजी दीघेसी पोतानी स्नीए जन्म आपेस मनक नामना पुत्रना हितने माटे श्री दशवैकासिक रच्युं अने अनुक्रमे श्री यशोजक्रने पोतानी पाटे स्थापीने श्री वीर प्रजुषी अठाणुं वर्षे ते खर्गे गया.

वश्च गोत्रवासा मनकिपता स्थविर आर्थशय्यं जवने तुंगिकायन गोत्रवासा स्थविर आर्थयशोज आ शिष्य हता. श्री यशोज आसूरि पण श्री जडाबाहु अने संजूतिविजय नामे वे शिष्यने पोतानी पाटे स्थापीने स्वर्गक्षोके गया.

हवे श्रही प्रथम संकित वाचना वहे स्थिवरावली कहे हे. संकित वाचना वने श्रार्थयशोज इधी श्रागल श्रा प्रमाणे स्थिवरावली कही हे. तुंगिकायन गोत्रवाला स्थिवर श्रार्थयशोज इने बे स्थिवर शिष्य हता. एक माढर गोत्रवाला स्थिवर संजूतिविजय अने बीजा प्राचीन गोत्रवाला स्थिवर श्रार्थज इवाहु. श्री यशोज इनी पाटे श्री संजूतिविजय अने श्री जडवाहु नामे वे पह- धर थया. तेमां श्री जडवाहुनो संबंध श्रा प्रमाणे हे—प्रतिष्ठानपुरमां वराह मिहिर अने जडवाहुने मामे वे ब्राह्मणोए दीका लीधी. तेमां जडवाहुने श्राचार्थपद श्राप्वाथी ग्रस्ते थयो थको वराह ब्राह्मणनो वेष ग्रहण करीने वाराहीसंहिता बनावीने निमित्त जोवा वमे श्राजीविका चलाववा

कहप

1125311

🎇 साग्यो श्रने लोकमां कहेवा लाग्यो के ''श्ररएयमां कोइक जगोए शिलानी उपर में सिंहलग्न चितखुं इतुं, सूती वखते ते जूंसी नाख्युं नथी एम याद आव्याथी खन्ननी जिक्तथी त्यां जतां सिंहने तेनी उपर बेठेक्षो जोइने पण तेनी नीचे हाथ नाखीने सप्त जूंसी नाख्युं, तेथी संतुष्ट थयेको सिंहसग्रनो श्रिधिपति सूर्य प्रस्क शर्ने मने पोताना मंगसमां सर्व गयो श्रेने प्रहनो सर्व चार (चास) मने देखाड्यो." एक दिवसे वराहे राजानी आगस कह्युं के "आ करेस कुंमासाना मध्य जागमां बावन पखना प्रमाणवाखो मत्स्य (श्राकाशमांथी) पक्शे." त्यारे जडवाहु स्वामीए कधुं के ''मार्गमां ऋर्ध पक्ष शोषाइ जवायी सामी एकावन पक्षना प्रमाणनो ऋने कुंमालाने हेमे पढशे." ते प्रमाणे वात मली. वली एक दिवसे राजाने पुत्र आवतां वराहे तेनुं एकसो वर्षनुं आयुष्य कह्यं अने ''आ (जडबाहु) व्यवहारने जाणनारा नथी के राजाना पुत्रने जोवा पण आव्या नहीं" प्रमाणे जैनोनी तेणे निंदा करी लारे (जडबाहु स्वामीए) सातमे दिवसे बिखानीथी तेनुं मृत्यु यशे एम कह्युं. (ऋहीं किरणावलीकारे ''सप्ति जिदिनैः" ने बद्से सप्तदिनैः ए प्रमाणे आलो प्रयोग मुक्यो हे ते संख्याए करीने समाहार द्विष्ठ थवाथी वैयाकरणीहंए विचारवा लायक हे.) राजाए शहे-रमांथी सर्व बिलामी उने काढी मूकावी तोपण सातमे दिवसे धावता बालकनी उपर बिलामीना आकारना मुखवासो आगली एकवाथी ते बालक मरण पाम्युं. तेथी गुरुनी प्रशंसा थइ अने वराइमिहिरनी सर्वत्र निंदा यइ. त्यारपठी कोधथी मरीने ते व्यंतर थयो. मरकी आदिकथी संघने जपद्भव करता ते व्यंतरने जपसर्गहर स्तोत्र करीने गुरुष घूर कर्यों. कह्युं वे के ''करुणाने विषे तत्पर एवा जेणे उपसर्गहर स्तोत्र करीने संघनुं कखाण कर्युं ते पडवाह गुरु जयवंता वर्तो."

माहर गोत्रवाला स्थविर छार्यसंजूतिविजयने गौतम गोत्रवाला स्थविर छार्यस्यूलजङ र् शिष्य हता. स्यूलजङ्गो संबंध छा प्रमाणे हे-पाटलीपुरमां शकटाल मंत्रीना पुत्र श्री स्यूल-जु बार वर्ष कोशा नामे वेश्याने घेर रह्या हता. वरहिच ब्राह्मणना प्रयोगधी तेना पितानुं मृत्यु 🕻

सुबोण

1125311

थया बाद नंद राजाए तेने बोलावीने मंत्रीपदवी आपवा माटे कह्युं त्यारे पोताना चित्तमां पोताना बापना मरणतुं चिंतवन करीने तेणे दीका यहण करी अने पठी व्रत खद्दने गुरुनी आङ्घापुर्वक कोशाना घरमां चोमासुं रह्या. चोमासाने श्रंते बहु हावजाव करनारी एवी वेज्याने पण प्रतिबोध पमानीने गुरुनी पासे आव्या त्यारे तेर्जए "इष्करङ्ख्करकारक" ए प्रमाणे संघ समक्त कड्यं. ते वचनथी सिंहगुफा पासे, सर्पना दर पासे श्रने क्रवाना काष्ट उपर चोमांसुं रहेनार त्रणे मुनिर्ड खेद पाम्या. तेर्डमांथी सिंहगुफा पासे रहेनार मुनि गुरुए ना पाड्या वतां पेण बीजे चोमासे कोशाने घेर गया. दिव्य रूपवाली ते वेश्याने जोइने ते तरत चलायमान चित्तवाला थया त्यार-पठी तेणीए नेपाल देशथी मंगावेल रत्नकंबल खालमां फेंकी दइने तेने प्रतिबोध पमाड्यो लारे ते ग्रुरु पासे आवीने कहेवा लाग्या के तमाम साधुर्डमां स्यूखनड ते स्यूखनड एकज हे, तेने गुरुए डुष्करडुष्करकारक कदेख वे ते युक्त वे. "पुष्प, फल, दारु, मांस अने महिलाना रसने जाएतां वतां जे तेनाथी विरक्त थया वे ते इष्करकारकने हुं वां इं बुं." कोशा पण स्यूखजड्यी प्रतिबोध पामी हती. तेने त्यां राजानी आङ्गायी आवेला अने बाणना मूलना जागमां बीजुं बाण नाखीने, तेना मूखमां त्रीजुं बाण नाखीने, एम केटलांक बाणो वडे दूर रहेल आंबानी क्षुंबने तोमी आणवाथी गर्वित थयेला पोताना कामी रथकारने सर्पवना ढगला उपर राखेल सोयना अप्र जाग उपर रहेल पुष्पना उपर नाच करती उती कहेवा खागी के ''आंबानी छुंब तोमवी ते कांइ डुब्कर नथी तेम सर्षव उपर नाचवुं ते पण डुब्कर नथी, पण तेज डुब्कर है के जे ते महानुजाव मुनिए प्रमदारूपी वनमां मूर्जित न थइने करी बताव्युं हे." अहीं कविर्ड पण कहे हे के "पर्वतमां, ग्रफामां अने मनुष्य विनाना वनमां वास करता इजारो मुनिन्न इंडियोने वश करनारा थया हे, पण छति मनोहर महेलमां स्त्री पासे रहीने इंडियोने वश करनार तो एक शकटालनंदन (स्थूलजड़) ज हे, के जेणे छिप्तमां प्रवेश कर्यों तोपण

कल्पण ॥११७॥ दाज्या नहीं, तरवारनी धारा छपर चाख्या पण छेद पाम्या नहीं, काला सर्पना दरमां रह्या पण हैं डंखाया नहीं तथा काजलनी कोटकीमां रह्या तोपण काध लाग्यो नहीं वेश्या रागवाली हती, इमेशां तेना कहेवा प्रमाणे चालनारी हती,षडूरस जोजन मलतुं इतुं, सुंदर चित्रशाली हती, मनोहर शरीर हतुं, नव्य वयनो संगम हतो (योवन वय हती) छने काल पण वादलांथी श्याम मनोहर शरीर हतुं, नव्य वयनो संगम हतो (योवन वय हती) श्रने काख पण वादलांथी स्याम (वर्षा क्रुतनो) हतो तोपण जेणे श्रादरपूर्वक कामने जीत्यो एवा युवतीने प्रतिबोध पमामवामां कुशल स्थूलजड मुनिने हुं वंदन करुं हुं. है कामदेव ! मनोहर नेत्रवाली स्त्री तो तारुं मुख्य श्रस्त्र हे, वसंत क्तु, कोयक्ष, पंचम स्वर तथा चंड ए तारा मुख्य योद्धार्च हे खने विष्णु, ब्रह्मा तथा शिव विगेरे तो तारा सेवको हे तोपण छारे हताश! तुं छा मुनियी केवी रीते हणायो ? हे मदन! तें नंदिषेण, रथनेमि अने मुनीश्वर आईकुमारनी बुद्धिथी आ मुनिने पण जोया ? तें एटखुं पण न जाएयं के रणसंघाममां मने मारीने छा मुनि तो नेमिनाथ, जंबूस्वामी छने सुदर्शन शेवनी पत्नी चोथा थशे ? श्रीनेमिनाथथी पण शकटाष्ट्रसुतनो विचार करतां श्रमे एने एकनेज वीर पुरुष मानीए ढीए, कारण के श्री नेमिनाथजीए तो पर्वत उपर जइने मोहने जीत्यो पण या मुनिए तो मोइना घरमां दाखल थइने मोइने वश कर्यों."

एक वस्तते बार वर्षना छुकासने श्रंते संघना श्राग्रहणी श्री जड़बाहु स्वामी पांचसो साधु-उने दृष्टिवादनी हमेशां सात वाचना श्रापता हता. सात वाचनाणी पण श्रतृप्त रहेता बीजा साधु उठिम थयाणी विहार करी गया. श्री स्थूलजड एकसा रह्या. ते वे वस्तुए उठां दश पूर्व जएया. एक वस्तत वंदनने माटे श्रावेल यहा साध्वी प्रमुख पोतानी बेनोने सिंहनुं रूप देखाम-वानी हकीकतथी खेद पामेला श्री जड़बाहु स्वामीए स्थूलजड़ने कह्युं के ''वाचना माटे तमे स्थोग्य ठो." पठी संघना श्राग्रहणी ''बीजाने तमारे वाचना श्रापवी नहीं" एम कहीने बाकीनां सुबोष

112 देवार

चार पूर्वनी सूत्रथी वाचना श्रापी. कह्युं वे के ''जंबूस्वामी वेद्वा केवली थया तथा प्रजव प्रजु शय्यंजव, यशोजड, संजूतिविजय, जडवाहु श्राने स्थूसजड ए व श्रुतकेवली थया."

गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्थस्यूखजडने वे स्थविर शिष्य हता. एक एखापत्य गोत्रवाला स्थविर आर्यमहागिरि अने बीजा वासिष्ट गोत्रवासा स्थविर आर्यसुहस्ति. तेमनो संबंध आ प्रमाणे हे-जिनकहप विश्वेद गये हते पण आर्यमहागिरिए जिनकहपनी तुलना करवा मांगी. "जिनकरूप विशेद गये ठते पण जे धीर पुरुषे जिनकरूपनी तुलना करी ते मुनिर्जने विषे क्रषज समान श्रने श्रेष्ट चारित्रने धारण करनार श्रार्यमहागिरिने हुं वंदन करुं हुं. जेणे जिनकरूपनी परिकर्मा (तुलना) करी छने जेनी स्तवना श्रेष्टीना घरमां छार्यसुइस्तिए करी ते छार्यमहा-गिरिने हुं वंदन करुं हुं. जेने सीधे संप्रति राजा सर्व प्रसिद्ध कृष्टि अने परम चारित्रने पाम्या ते मुनिप्रवर श्री आर्यसुहस्तिने हुं वंदन करुं हुं" जे आर्यसुहस्ति महाराजाए साधुर्वनी पासे जिक्स मागता जिक्कन दीका छापी हती ते जिक्क मरण पामीने श्रेणिकनो पुत्र कोणिक, तेनो पुत्र उदायी, तेनी पाटे नव नंद, तेनी पाटे चंड्रग्रप्त, तेनो पुत्र बिंडुसार, तेनो पुत्र श्रशोकश्री, तेनो पुत्र कुणाख अने तेनो पुत्र संप्रति नामे थयो. तेने जन्मतांज तेना दादाएँ राज्य आप्युं. पठी रथयात्रामां प्रवृत्त थयेल श्री ष्टार्यसुहस्तिने जोइने तेने जातिसरणकान उरपन्न थयुं. तेथी तेणे सवा साख जिनाखय, सवा कोम नवीन जिनविंव, छत्रीश हजार जीणोंद्धार, पंचाणुं हजार पीतसनी प्रतिमा तथा इजारोगमे दानशासाउंधी त्रण खंग पृथ्वीने पण विजूषित करी. (अहीं किरणावसीकारे सवा क्रोम जिनजवन एम कहें स हे ते विचारवा जेवुं हे, कारण के अंतर्वाच्य आदिमां 'सपादसक्त' एटसे सवा साख एम देखाय हे). अनार्य देशोंने पण करणी मुक्त करीने प्रथम साधुवेष धारण करनार सेवकोने मोकसी साधुउने विद्वार करवाने योग्य कर्या अने पोताना सेवक राजार्रने जैनधर्मने विषे रक्त कर्या. तथा वस्त्र, पात्र, श्रंत्र, द्धी श्रादि प्राप्तुक वस्तुर्र जेर्र

११४८४

र्र्थ∥वेचता हता तेर्रुने संप्रति राजाए कद्युं के ''तमे श्रावता जता साधुर्रुनी श्रागल पोतानी वस्तुर्रु मूकजो अने ते पूज्य जे वस्तु यहण करे ते तेउंने आपजो. श्रमारो खजानची ते वस्तुनुं तमाम मृख्य तथा तमारो इिंत खांच ग्रेप्त रीते आपशे." तेर्च राजानी आज्ञाथी तेम करवा खांग्या श्चने ते श्रशुक्त वतां पण शुक्त बुक्तिथी साधुर्व प्रहण करवा साग्या.

वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्थसुइस्तिने द्याघापत्य गोत्रवाला सुस्थित अने सुप्रतिबुद्ध नामना कोटिक छने काकंदिक एवा वे स्थविर शिष्य थया. एक क्रोमवार सूरिमंत्रनो जाप कर-वाथी सुस्थित मुनि कोटिक कहेवाता हता श्रने काकंदी नगरीमां जन्मेला होवाथी सुप्रतिबुद्ध मुनि काकंदिक कहेवाता इता. व्याघापत्य गोत्रवाला सुस्थित श्रने सुप्रतिबुद्ध एवा स्थविर कोटिक श्रने काकंदिकने कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यइंद्रिव शिष्य हता. कौशिक गोत्रवाला स्थविर द्यार्थइन्द्रदिन्नने गौतम गोत्रवाला स्थविर द्यार्थदिन्न शिष्य इता. गौतमत्रवाला स्थविर त्यार्थदिन्नने कौशिक गोत्रवाला अने जातिसारणङ्गानवाला स्थविर आर्थिसंहिगिरि शिष्य हता. कौशिक गोत्रवाला श्रने जातिसारणङ्गानवाला स्थविर श्रार्थिसंहगिरिने गौतम गोत्रवाला स्थविर श्रार्थ-वज्र शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर छार्यवज्रने उत्कौशिक गोत्रवाला स्थविर छार्यवज्रसेन शिष्य हता. ज्त्कोशिक गोत्रवाला स्थविर श्रार्यवज्रसेनने चार स्थविर शिष्य हता. स्थविर स्थार्यनागिल, स्थविर खार्यपौमिल, स्थविर खार्यजयन्त खने स्थविर खार्यतापसः स्थविर खार्य-नागिलची आर्यनागिला शाखा नीकसी,स्थविर आर्यपौमिलची आर्यपौमिला शाखा नीकली, स्थविर छार्यजयन्तथी छार्यजयन्ती शाखा नीकली छाने स्थविर छार्यतापसथी छार्यतापसी शाखा नीकली.

हवे विस्तारवासी वाचनाथी स्थविरावसी कहे हे. आ विस्तर वाचनामां आर्ययशोजङ्यी आ 🖔 ॥१२७॥ प्रमाणे स्थविरावली जाणवी. तेमां घणा जेदो तो खेलकदोषना हेतुजूत जाणवा. बाकी स्थवि- $\| \zeta \|$ रोनी शाखा अने कुलो प्राये करीने एक पण हाल जणातां नथी, ते बीजां नामथी तिरोहित

ययेख हशे एम तेना जाणनारनुं कहेतुं हे तेमां कुख एटखे एक आचार्यनो परिवार समजवो अने गण एटखे एक वाचना खेनार मुनिसमुदाय जाणवो कह्युं हे के ''एक आचार्यनी संतित ते कुल जाणवुं अने वे अथवा तेथी वधारे आचार्यना मुनिर्च एक बीजाथी सापेक वर्तता होय तो तेनो एक गण जाणवो." शाखा एटसे एक आचार्यनी संततिमांज उत्तम पुरुषोना जूदा जूदा छन्वय (वंश) छाथवा विविक्तित छाद्य पुरुषनी संतित जाणवी. जेम छामारी वहर नामना सूरिषी वहरी शाखा हे. शिष्यना जूदा जुदा ब्यन्वय ते कुल जाणवां.जेम चांडकुल, नागेंडकुल इत्यादि. तुंगिकायन गोत्रवाला स्थविर ऋार्ययशोजङ्ने छा बे स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. (जेना उत्पन्न थवाथी पूर्वजो द्वर्गतिमां अथवा अयशरूप कादवमां पमता नथी ते अपल-पुत्र श्चादिक श्चने तेनी सरखा ते यथापत्य-पुत्र समान कहेवाय.) ते श्चा प्रमाणे-एक प्राचीन गोत्रवासा स्थविर श्रार्यजङ्गबाहु श्रने बीजा माढर गोत्रवासा स्थविर श्रार्यसंज्रुतिविजयः प्राचीन गोत्रवाला स्थविर आर्यजडवाहुने या चार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते या प्रमाणे-स्थविर गोदास, स्थविर श्रग्निदत्त, स्थविर यज्ञदत्त श्राने स्थविर सोमदत्तः ते चारे काञ्चप गोत्रवाला हता. काझ्यप गोत्रवाला स्थविर गोदासथी गोदास नामनो गण नीकख्यो है. तेनी चार शाखार्च आवी रीते कहेवाय हे. तामलितिका १, कोटिवर्षिक १, पुंडूवर्धनिका ३ अने दासी खर्बटिका ४. माढर गोत्रवाला स्थविर श्रार्यसंजूतिविजयने बार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते ह्या प्रमाणे-नंदनजद्भ र, उपनंद २, तिष्यजद्भ ३, यशोजद्भ ४, सुमनोजद्भ ४, मणिजद्भ ६, पूर्णजङ ७, स्थूखनङ ७, इजुमति ए, जंबू १०, दीर्घनङ ११ अने पांकुनङ ११. माढर गोत्रवाला स्थविर स्थार्थसंजूतिविजयने सात शिष्या पुत्री समान प्रसिद्ध इती. ते आ प्रमाणे-यका १, यक्तदिक्रा १, जूता ३, जूतदिक्रा ४, सेणा ५,वेणा६ अने रेणा ७. ए साते स्थूलजड़नी बहेनो इती. गौतम गोत्रवासा स्थविर आर्थस्यूलजङ्गे वे स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता ते आ

कह्पव

गरश्ला

प्रमाणे-एखापत्य गोत्रवाखा स्थविर आर्यमहागिरि १ अने वासिष्ट गोत्रवाखा स्थविर आर्यसुह-स्ति १. एखापत्य गोत्रवाखा स्थविर आर्यमहागिरिने आठ स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते छा प्रमाणे-स्थविर उत्तर १, स्थविर बिह्मसह १, स्थविर धनाट्य ३, स्थविर श्रीजड ४, स्थविर कौिनन्य थ, स्थविर नाग ६, स्थविर नागिमत्र ७ छने कौशिक गोत्रवाखा स्थविर षरुखूक रोइग्रस 0. ड्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष छाने समवाय ए ढ पदार्थने प्ररूपवाथी षड्ड छाने उसूक गोत्रमां उत्पन्न थवाथी उल्लूक, ए पड़ अने उल्लुकनो कर्मधारय समास करवाथी पेंडुलुक. तेनो प्राकृत प्रयोग उडुलूए थाय वे तेथी सूत्रमां तेमने कौशिक गोत्री कहेल वे. उलुक अने कौशिक ए बंने शब्दनो अर्थ एकज होवाथी कहेल हे. कौशिक गोत्रवासा स्थविर हर्दु करोहगुप्तथी प बन शब्दना श्रथ एकज होवाय। कहल है. काशिक गांत्रवाला स्थावर हें हुलूक राहगुसय। के त्रेराशिक नीकस्या. जीव, छाजीव छाने नोजीव नामे त्रण राशिने प्ररूपनारा तेना शिष्य, प्रशिष्य ते त्रेराशिक कहेवाय है. तेनी छत्पत्ति छा प्रमाण है—श्री वीर प्रजुना निर्वाण पही पांचसो चुमासीशमें वर्षे छांतरंजिका नामे नगरीमां जूतपह जेवा व्यंतरना चैत्यमां रहेला श्रीगुप्त आचार्यने वांदवा माटे बीजा गामधी आवता तेना रोहगुप्त नामना शिष्ये वादीए वगमावेला पटहनो ध्विन सांजलीने ते पटहने स्पर्श कर्यों छाने आचार्यने ते वात निवेदन करी. पही वींही, सर्प, इंदर, मृगी, वराही, काकी छाने शकुनिका ए नामनी परिव्राजकनी विद्याने उपघात करनारी मुद्दरी, नकुली, बिकाली, व्याची, सिंही, हिल्की होने उपधी ए नामनी सात विद्याने तथा सर्व 🖔 उपडवने रामावनार रजोहरण गुरु पासेथी मेखवीने बसश्री नामे राजानी सजामां आवी पोष्ट-शास नामना परिव्राजकनी साथे वाद करवा मांड्यो. ते परिव्राजके जीव खजीव, सुख डुःख छादि बे राशिनुं स्थापन कर्युं. त्यारे त्रण देव, त्रण छिन्न, त्रण शक्ति, त्रण खर, त्रण खोक, त्रण पद, त्रण 🐒 पुष्कर, त्रण ब्रह्म, त्रण वर्ण, त्रण ग्रण, त्रण पुरुष, संध्या श्रादि त्रण काख, त्रण जातनी संध्या, र् त्रण वचन अने वली त्रण अर्थ कहेल है, ए प्रमाणे कहेता रोहगुते जीव, अजीव अने नोजीव

सुबोध

1142011

इलादि त्रण राशि स्थापी. लारपठी तेनी विद्याउने पोतानी विद्याउ वडे जीत्ये ठते तेणे मुकेखी रासजी विद्याने रजोहरणथी जीतीने महोत्सवपूर्वक ग्रह पासे खावी सर्व वृत्तांत कह्यो. त्यारे गुरुए कह्युं के ''हे वत्स ! तें तेने जीत्यों ते सारुं कर्छुं, पण जीव, श्रजीव श्रने नोजीव ए त्रण राशिनी स्थापना करी ते उत्सूत्र हे तेथी त्यां जइने मिथ्या भुष्कृत आप." पही "तेवी रीते सनामां पोतेज प्ररूपीने तेने केवी रीते हुं अप्रमाण करुं ?" ए प्रमाणे तेने अहंकार जलन थवाथी तेणे ते प्रमाणे न कर्युं. पठी ग्रहए ठ मास सुधी राजसन्नामां तेनी साथे वाद करीने छेवटे कुत्रिका-पर्णंथी नोजीवनी मागणी करी. त्यां ते नहीं मलवाथी चुमालीशसो प्रश्न वडे तेने परास्त कर्यों. ते उतां पण कोइ रीते पोतानो आयह न ठोमवाथी गुरुए कोधथी थुकवाना पात्रमांथी तेना मस्तक पर जस्म नाखवापूर्वक तेने संघ बहार कर्यो. त्यारपठी ते त्रेराशिक ठठा निह्नवे अनुक्रमे वैशेषिक दर्शन प्रकट कर्सुं. जो के सूत्रमां रोइग्रह्म आर्यमहागिरिनो शिष्य कहेल हे, परंतु उत्त-राध्ययन वृत्ति छने स्थानांगवृत्ति विगेरेमां श्री गुप्ताचार्यनो शिष्य कहेल होवाथी अमोए पण ते प्रमाणेज खखेल हे. तेमां तत्त्व द्युं हे ते बहुश्रुतो जाणे.

स्थिवर उत्तरवित्सतहथी उत्तरवित्सिह नामनो गण नीकह्यो हे. तेनी चार शाखार्ज आ प्रमाणे कहेवाय हे. कोशांविका १, सोरितिका १, कोटुंबीनी ३, चंदनागरी ४. वासिष्ट गोत्रवाखा स्थिवर आर्यसुहस्तीने बार स्थिवर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थिवर आर्य-रोहण १, जड़यश १, मेघ ३, कामर्कि ४, सुस्थित ५, सुप्रतिबुद्ध ६, रिक्ति ३, रोहगुप्त ७, रुषि-गुप्त ए, श्रीगुप्त १०, बह्मा ११ अने सोम ११. ए प्रमाणे सुहस्तीना गन्नने धारण करनारा आ बार शिष्यो हता. काश्यप गोत्रवाखा स्थिवर आर्यरोहणथी उदेह गण नामनो गण नीकह्यो. तेमांथी

र कृत्रिक एटले त्रण लोक, तेमांनी तमाम वस्तु मखे एवी आपण एटले डुकान ते कृत्रिकापण आ राजगृहीमां देवाधिष्ठित डुकान हती. त्यां नोजीव न मस्यो

कस्पण

गरबरा

द्वीचार शाखा अने उ कुछ नीकस्यां ते आवी रीते कहेवाय हे. ते कश्शाखार्ज शाखार्ज आप्रमाणे 👸 कहेवाय हे- डडंबरिका १, मासपूरिका १, मतिपत्रका ३, पूर्णपत्रिका ४. श्रा शाखार्ड हे. ते कुखो कयां ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय है. ते जेमके-पहें हुं नागजूत, बीजुं सोमजूत, त्रीजुं उल्लगह, चोथुं इस्तिलप्त, पांचमुं नंदिक्क स्थने बहुं पारिहासक. स्था उद्देह गणनां ब कुल जाणवां. हारित गोत्र-वाला स्थविर श्रीगुप्तथी चारण गण नामनो गण नीकछो है. तेनी चार शालाई श्रने सात कुल श्रा प्रमाणे कहेवाय हे. ते कइ शाखार्च ? तो के शाखार्च श्रा प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-हारित-मालागारी १, संकासीका २, गवेधुका ३ धने वज्रनागरी ते छा शाखार्ड हे ते कुलो कयां ? तो के कुलो या प्रमाणे कहेवाय हैं. ते जेमके-पहें खुं वत्स खिज्ज बीजुं प्रीतिधर्मिक, त्रीजुं हा खि-क्का, चोथुं पुष्यमित्रिक, पांचमुं माखिक्का, ठहुं आर्यवेडक अने सातमुं कृष्णसखः आ सात चारण गणनां कुलो हे. जारद्वाज गोत्रवाला स्थविर जडयशयी उद्यवाटिक गण नामनो गण नीक ख्यो हे. तेनी चार शाखार्ज अने त्रण कुख आ प्रमाणे कहेवाय है. ते कह शाखार्ज है ? तो के शाखार्ज या प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-चंपिक्तिया १, जिंदिक्तिया १, काकंदिका ३ अने मेघह बिक्जिया. ते या शालार्र हे. ते कुलो कयां हे ? तो के ते या प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-नद्रयशिक १, नद्रगुप्तिक १ छने यशोनद्र ३. ए त्रण उद्यवाटिक गणनां कुलो हे. स्थविर काम-र्किथी वेसवाटिक गण नामनो गण नीकख्यो है. तेनी चार शाखार्ड अने चार कुलो आ प्रमाणे कहेवाय हे. ते शाखाई कइ हे ? तो के शाखाई छा प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-श्रावस्तिका र, राज्यपालिका २, अंतरि जिया ३ स्रने केम लिजिया ४. ते स्रा शालाउं हे. ते कुलो कयां हे तो के कुलो थ्या प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-गणिक १, मेघिक २, कामर्द्धिक ३ पुरक ४. श्रा वेसवाटिक गणनां चार कुलो हे. वासिष्ट गोत्रवाला स्यविर क्रिषेग्रस काकंदिकथी माणव गण नामनो गण नीकस्यो हे. तेनी चार शाखाउं श्रने त्रण कुल श्रा प्रमाणे कहेवाय हे. 🖔

सुबो०

गरेंबरक

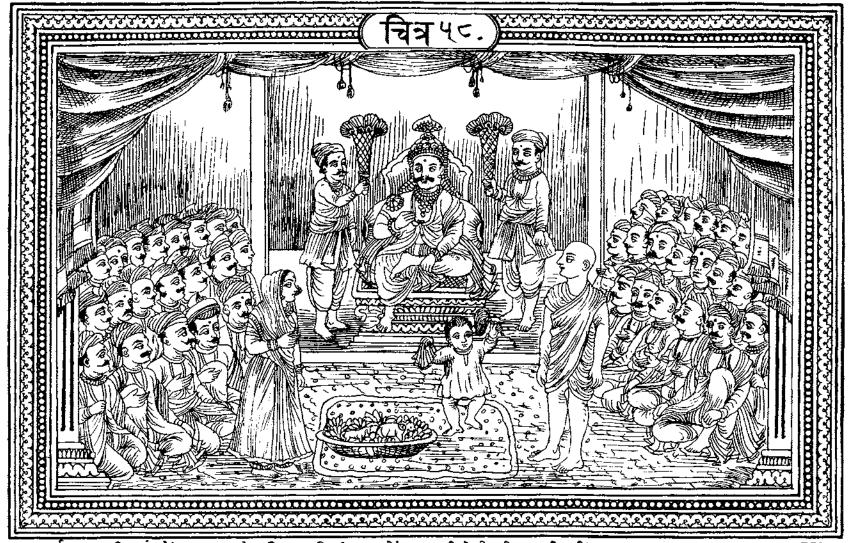
ते शाखार्र कह हे ? तो के शाखार्र था प्रमाणे कहेवाय हे. ते जेमके-कास्यपिका १, गौतमीका १ वाशिष्टिका ३ अने सौराष्ट्रिका. ते आ शाखार्ड हे ते कुलो कयां हे ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहे-वाय है. ते जेमके-पहेर्सु क्षिग्रितिक, बीजुं क्षिद्तिक अने त्रीजुं अनिजयंत. ए त्रण कुल माण्य गणनां जाण्यां. व्याघापत्य गोत्रवाला अने कौटिक तथा काकंदिक उपनामवाला स्थविर सुस्थित अने स्थविर सुप्रतिबुद्धधी कौटिक गण नामनो गण नीकस्यो हे. तेनी चार शाखाउँ अने चार कुलो आ प्रमाणे कहेवाय हे. ते शाखाउं कइ हे ? तो के ते शाखाउं आ प्रमाणे कहे-वाय हे. ते जेमके-डचनागरी रे, विद्याधरी २, वजी ३ खने मध्यमिका. ए चार कौटिक गणनी शाखार है. ते कुलो कयां है ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय है. ते जेमके-पहें खुं बंजि सिप्त, बीजुं वस्रविप्त, त्रीजुं वाणिज्य छाने चोथुं प्रश्नवाहनक. व्याघापत्य गोत्रवाला छाने कौटिक तथा काकं-दिक उपनामवाला स्यविर सुस्थित अने स्यविर सुप्रतिबुद्धना आ पांच स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते छा प्रमाणे-स्थविर छार्थइंद्रदिन्न १, स्थविर प्रिययंथ १, कास्यप गोत्रवाला स्थविर विद्याधरगोपाल ३, स्थविर क्षिद्त ४ अने स्थविर अईदत्त ५.

छहीं स्थिवर प्रियमंथनो संबंध कहे है. त्रणसो जिनजवन, चारसो लोकिक प्रासाद, श्रहा-रक्षो ब्राह्मणनां घर, हित्रीशसो विणकनां घर, नवसो बगीचा, सातसो वाव, बसो कूवा श्रने सातसो दानशालाथी विराजित श्रने श्रजमेरनी नजदीकमां श्रावेल एवा सुजटपाल राजाना हर्षपुर नामना नगरमां एक वलत श्री प्रियमंथ सूरि पधार्या. श्रन्यदा ब्राह्मणोए त्यां यक्षमां वक-राने होमवानो श्रारंज कर्यों. त्यारे प्रियमंथ सूरिए श्रावकना हाथमां वासकेप श्रापीने ते बकरा उपर नखाववा वने तेने श्रंविकाथी श्रधिष्ठित कर्यों. एटले ते बकरो श्राकाशमां रहीने बोलवा लाग्यों के "श्ररे ब्राह्मणो! तमे मने बांधीने लाव्या हो श्रने मारो होम करवा वने तमे मने मारी नाखवा धारो हो, परंतु जो तमारी पेहे हुं निर्दय थाहं तो हुं तमने बधाने क्रण वारमां मारी कब्पण **॥१**२२॥ नाखुं. कोप पामेला हनुमाने जेम राक्तसोने माटे लंकाना किल्लामां कर्युं हतुं तेम हुं उंचे रह्यो थको जो दया वचमां न आवती होत तो तमारे माटे पण करत. (कृष्णे कह्युं ठे के) "हे जारते! पशुनां शरीरने विषे जेटला रोमकूप ठे तेटला हजार वर्ष सुधी पशुना घात करनारा (नरकमां) पचे ठे. जो कोइ सोनानो मेरु तेमज आखी एथ्वी दानमां आपे अने बीजो कोइ एकने जीवित आपे तो हे सुधिष्ठर! ते बंने सरला यइ शकता नथी. अर्थात् जीवित आपनार वधे ठे. मोटां एवां दानोनुं फल पण काले करीने कीण याय ठे, परंतु जय पामेलाने अजय दान आपनारना पुन्यनो क्यज यतो नथी, विगेरे." पठी लोकोए तुं कोण ठो? तारा आत्माने प्रगट कर, एम कह्युं लारे तेणे कह्युं "हुं अपि तुं तमे मारा वाहनरूप आ पशुने फोगट शामाटे मारो ठो? अहीं श्री प्रिययंय सूरीं अ आवेला ठे तेमने शुद्ध धर्म पूठो अने मननी शुद्धपूर्वक तेने आवरो. जेम नरेन्डने विषे चकी अने धनुष्यधारी तेमां धनंजय (अर्जुन) ठे तेम सलवादी तेने विषे धोरी ते आचार्य एक ज ठे." पठी बाह्यणोए तेमना कह्या प्रमाणे कर्युं.

स्थिवर त्रियग्रंथथी छहीं मध्यमा शाखा नीकली है. काइयप गोत्रवाला स्थिवर विद्या-धरगोपालथी छहीं विद्याधरी शाखा नीकली है. काइयप गोत्रवाला स्थिवर आर्थइंडिद्रिन गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्थदित्र विद्यान है कि माहर गोत्रवाला स्थिवर आर्थदित्र वे स्थिवर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—माहर गोत्रवाला आर्थशांतिसेनिक अने जातिस-रणकानवाला तथा कौशिक गोत्रवाला आर्थिसंह गिरि. माहर गोत्रवाला स्थिवर आर्थशांतिसेनिकथी अहीं उच्चनागरी शाला नीकली हे. माहर गोत्रवाला स्थिवर आर्थशांतिसेनिकने चार स्थिवर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थिवर आर्थसेनिक १, स्थिवर आर्थतापस १, स्थिवर आर्थकोर ३ अने स्थिवर आर्थक्रियालित. स्थिवर आर्थसेनिकथी अहीं आर्थ- सुबो०

॥१२२॥

१ जारत संबोधन अर्जुन अथवा युधिष्ठिरने माटे हे.



त्रण वर्ष थया पढी सुनंदायं राजसभामां फरीयाद करी परंतु राजायें न्याय करी ते बोकरी ग्रापाव्यो नहीं.

पा.१०७

सेनिका शाला नीकली हे, स्थितर आर्यतापसथी अहीं आर्यतापसी शाला नीकली हे, स्थितर आर्यकुवेरथी अहीं आर्यकुवेरी शाला नीकली हे अने स्थितर आर्यक्षिपालितथी आर्यक्षि-पालिता शाला नीकली हे. जातिसारणङ्गानवाला अने कोशिक गोत्रवाला आर्थिसंहिगिरिने चार स्थिवर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थितर धनगिरि १, स्थिवर आर्थ-वज्र १, स्थिवर आर्थसमित ३ अने स्थिवर अर्हिदिन्न ४.

श्रहीं स्थिवर श्रार्थवज्रनो संबंध कहे हे. तुंबवन नामना गाममां सुनंदा नामनी पोतानी स्त्रीने वेधान सहित (गर्जवंती) मूकीने धनगिरिए दीका लीधी सुनंदाने पुत्र प्रसब्यो. ते पुत्रने पोताना जन्म वखतेज पितानी दीका सांजलीने जातिस्मरणकान उत्पन्न थयुं. पर्छ। माने उद्देग आपवा मादे हमेशां रमवा लाग्यो. तेथी तेनी माताए ते व मासनो ययो लारेज धनगिरिने आपी दीधो (वहोरावी दीधो.) तेणे गुरुना हाथमां आप्यो गुरुए बहु जार होवाने खीघे तेनुं वज्र नाम आप्युं ते पारणामां रह्यो थको सांजलीने अग्यार अंग जएयो. पठी ते ज्यारे त्रण वर्षनो थयो त्यारे तेनी माताए राजानी समक्त विवादमां अनेक सुखनी-रमकनां विगेरेथी तेने खल-चाव्यो तोपण तेणे ते न लीधुं अने धनगिरिए आपेक्षं रजोहरणज लीधुं. त्यारपढी माताए पण दीका लीधी. वजने गुरुए दीका छापी. पढी छाठ वर्षनी छाखरे एक वखत तेना पूर्व जवना मित्र जूंजक देवोए उज्जियिनीना मार्गमां वरसाद विराम पाम्ये उते कूष्मांमनी जिक्हा देवा मांमी ते वखते तेना श्रनिमिषपणौषी श्रा देवपिंड हे तेथी श्रकब्प्य हे एम धारीने ते ग्रहण नहीं कर-वाथी संतुष्ट ययेला देवोए तेने वैक्रियलब्धि आपी. तेवीज रीते बीजी वेलाए घेवर नहीं खेवाथी नजोगमन (आकाशगामिनी) विद्या आपी. ते वज्र मुनिए पाटलीपुरमां धन श्रेष्टीए करोक धन

र माता जदेग पामे तो तेना पर मोह न खावतां दीका खेवा दे ए हेतु हतो. २ साकरकोखानी. ३ ऋांख मटकुं मारती न होवाथी.

कृष्ट्प०

सर्यस्य

सिंहत आपवा मांनेखी अने साध्वी पासेथी वज्रना गुणोने सांजलीने 'हुं वज्रनेज वरीश' एवो अजियह जेणे लीधो हतो एवी रुक्तिमणी नामनी कन्याने प्रतिबोधीने दीका अपावी. अहीं कवि कहे हे के ''जे वज्र क्षिए बाख्यवयमांज खीखा मात्रमां मोहरूपी समुद्रने एक घुंटको करी नाख्यो, तेने स्त्रीरूपी नदीना स्नेहनुं पूर केवी रीते जींजावी शके ?" ते वज्र खामी एक वखत छकालमां संघने पर्ट जपर बेसामीने सुकालवाली नगरीमां लइ गया. त्यां बौद्ध राजाए जिनमंदिरोमां पुष्पनो निषेध कर्यो इतो. (अहीं पण किरणावली अने दीपिकामां 'बौद्धराङ्गा' एवो प्रयोग लखेलो हे ते विचारवा योग्य हे.) पही पर्शुषणामां श्रावकोए विक्वित करवाथी त्राकाशगामिनी विद्या वमे माहेश्वरी पुरीमां पिताना मित्र एक मालीने पुष्प एकठां करवा माटे कहीने पोते हिमवत् पर्वत उपर लक्की देवीने घेर गया. त्यांथी लक्की देवीए आपेक्षं महापद्म तथा हुताशन वनमांथी वीश लाख पुष्प सहित ज़ंजक देवोए विक्ववेंला विमानमां बेसी महोत्सवपूर्वक त्यां श्रावीने जिनशा-सननी प्रजावना करी छाने राजाने पण श्रावक कयों. एक दिवस ते वैज्र खामीए कफना उपक्रम माटे जोजन पठी खावा सारु कान उपर राखेखी झुंठनो प्रमादथी प्रतिक्रमण वखते पात थवार्थी पोतानुं मृत्यु नजदीक आवेह्यं जाणीने श्री वज्रसेन नामना पोताना शिष्यने कह्यं के "बार वर्षनो डुकाख पमरो अने जे दिवसे लक्ष मृहयवाला चावलमांथी तने जिक्षा मले ते दिवस पठीना दिवसनी सवारे सुकाल थरो एम जाएजे." एम कहीने तेने बीजी जगोए विहार कराव्यो अने पोते पोतानी साथे रहेखा साधुरीनी साथे रथावर्त पर्वत उपर जइ अनशन यहण करी देवलोके र्दू गया. ते वसते संघयण चतुष्क स्राने दशमुं पूर्व विश्वेद गयां. (स्रहीं किरणावलीकारे 'तुर्वं संहननं व्युब्रिन्नं' एटखे चोथुं संघयण विब्रेद गयुं एम कहे खुं वे ते विचारवा जेवुं वे,कारण के तें छल वैचा-रिक वृत्ति श्रने दीपालिका कल्प विगेरेमां चतुष्क ए प्रमाणे पाठ कहेली है.) त्यारपढी बार

सुबोष

1158211

१ पोताना वस्त्र उपर १ खावी जूली जवात्री.

वर्षी छुकाख पड्यो तेनी प्रांते सोपारक नगरमां जिनदत्त श्रावकना घरमां खद्द मूख्यवाखुं श्रव्न रांधीने तेनी ईश्वरा नामनी स्त्री तेमां विष नाखती हती तेने गुरुनुं वचन कहीने श्री वज्रसेने निवाखुं. बीजे दिवसे सवारमांज वहाण वके पुष्कख धान्य श्राववाथी सुकाख थयो, श्रने जिन-दत्ते पोतानी स्त्री तथा नागेंड, चंड, निर्दृति श्रने विद्याधर नामना चार पुत्र सहित दीका खीधी. तथारपठी ते चार शिष्योना नामथी चार शाखा प्रवृत्त थइ.

गौतम गोत्रवाला स्थविर द्यार्यसमितयी ब्रह्मद्रीपिका नामनी शाला नीकली हे. तेनो संबंध छा प्रमाणे हे- छात्रीर देशमां अचलपुरनी नजदीकमां अने कन्ना तथा बेन्ना नदीनी मध्यमां आवेला ब्रह्मद्वीपमां पांचसो तापस रहेता हता. तेर्डमांनो एक पगे खेप करीने जमीन उपरनी जेम जल पर चाली जलथी पग जींजाया सिवाय बेन्ना नदी उतरीने पारणाने माटे जतो हतो. ते जोइ 'श्रहो ! श्रानी तपनी शक्ति केवी हे ? जैनी उमां कोइ पण एवो प्रजावी नथी' ए प्रमाणे सांजलीने आवकोए श्री वज्र खामीना मामा आर्यसमित सूरिने बोलाव्या लारे तेणे कह्यं के 'आ तेनी मात्र अदप एवी पाद सेपशक्तिज हे.' पही श्रावकोए ते तापसने जमवानुं आमंत्रण आप्युं अने ते जमवा बेठा लारे तेना पग अने पाडुका (पावकी) धोइ नाखवापूर्वक पोताने घेर जमाड्या त्यारपठी तेर्जनी साथेज श्रावको पण नदीए गया श्रने ते तापस पण धृष्टतानुं श्राखं-बन करीने नदीमां प्रवेश करतांज बुमवा खाग्यो. ते वखते तापसोनी श्रपत्राजना थश्. तेज श्रव-सरे आर्यसमित सूरिए त्यां आवीने लोकोने प्रतिबोध आपवा माटे योगचूर्ण नालीने कह्युं के 'हे बेन्ना! मारे पेक्षे पार जवुं हे' एम कहेतांज बंने कांठा एकठा यह गया. लोकोने बहु आश्चर्य ययुं. पढ़ी सूरि महाराजे तापसोना आश्रममां जइने तेर्डने प्रतिबोधी दीका आपी. लारपढ़ी ते-र्रथी ब्रह्मद्वीपिका शाखा नीकली.

कख्प०

1188511

आर्यमहागिरि, आर्यसुहस्ती, श्री गुणसुंदर सूरि, श्यामार्य, स्कंदिलाचार्य, रेवतीमित्र सूरीश्वर,

श्रीधर्म, जड़गुप्त, श्रीगुप्त अने वज्र सूरीश्वर ए देश दशपूर्वीं अने श्रेष्ठ गुगप्रधानो यया. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रयी आर्यवज्री शाखा नीकली हे. गौतम गोत्रवाला स्थविर छार्यवज्रने त्रण स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते छा प्रमाणे-स्थविर छार्यवज्रसेन १, स्थविर ष्टार्यपद्म १ स्राने स्थविर स्थार्यरथ ३. स्थविर स्थार्यवज्रसेनथी स्थार्यनागिली शाला नीकली, स्थविर आर्यपद्मथी आर्यपद्मा शाला नीकली अने स्थविर आर्यरथथी आर्यजयंती शाखा नीकली. वह गोत्रवाला स्थविर आर्यरथने कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्थपुष्पगिरि शिष्य हता. कोशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यपुष्पगिरिने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यफब्एमित्र शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्थफब्युमित्रने वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्थधनगिरि शिष्य हता. वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यधनगिरिने कुछ गोत्रवाला स्थविर आर्यशिवजूति शिष्य हता. कुछ गोत्रवाला स्थविर आर्थशिवसूतिने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्थजङ शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यजङ्ने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यनक्तत्र शिष्य हता. का-रयप गोत्रवाला स्थविर आर्थनक्तत्रने कारयप गोत्रवाला स्थविर आर्थरक्ष शिष्य हता. (अहीं बहुश्रुतनी प्रसिद्धिने पामेला किरणावलीकारने पण श्रनाजोग विलसित थयुं जणाय हे, कार-ण के जे तोसलिपुत्र आचार्यना शिष्य, श्रीवज्र खामीनी पासे सामा नव पूर्व जणेला श्रने नामथी श्री आर्यरिक्तित हता ते जूदा हे अने आ श्रीवज्र खामीची शिष्य, प्रशिष्यनी गणनाथी नवमी पाटे थयेल आर्थरक नामे ते पण जूदा है. ए प्रमाणे आर्थरिकत अने आर्थरकाने स्फुट जेद जूली जइने आर्थरक्तने ठेकाणे आर्थरिकतनी हकीकत लखी दीधी है.) काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यरक्तने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यनाग शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्य-नागने वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यजेहिल शिष्य हता. वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्य-

जेहिलिने माढर गोत्रवाला स्थिवर छार्यविश्व शिष्य हता. माढर गोत्रवाला स्थिवर आर्यविश्वने गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यकालिक शिष्य हता. गैतिम गोत्रवाला छा वे स्थिवर शिष्य हता. स्थिवर आर्यसंपिलत छने स्थिवर आर्यजङ. गौतम गोत्रवाला छा वे स्थिवरोने गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृद्ध शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने स्थिवर आर्यसंिमल शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने स्थिवर आर्यसंिमल शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने स्थिवर आर्यसंिमल शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने स्थिवर आर्यसंिमल शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थिवर आर्यधर्मने स्थिवर आर्यसंिमल शिष्य हता.

(अहीं थी 'वंदािम फग्गुमित्तं' इलादि चौद गाथा छं हे. तेनो अर्थ घणो खरो छपर कहेवाइ गयो हे, पण तेज हकीकत फरीने पद्यमां संग्रहीत करेखी होवाथी तेनो अर्थ पण फरीने खख्यो हे तेथी पुनरुक्तिनी शंका करवी नहीं.) चौद गाथानो शब्दार्थ नीचे प्रमाणे हे.

गौतम गोत्रवाला फल्युमित्रने, वासिष्ट गोत्रवाला धनगिरिने, कुछ गोत्रवाला शिवज्ञितने तथा कौशिक गोत्रवाला छुजैय कृष्णने वांछुं हुं. रे. तेमने मस्तक वडे वांदीने काश्यप गोत्रवाला ज्ञजने, काश्यप गोत्रवाला नक्त्रने छने काश्यप गोत्रवाला रक्तने पण वांछुं हुं. रे. गौतम गोत्रवाला आर्यनागने, वासिष्ट गोत्रवाला जिहिलने, माहर गोत्रवाला विश्वने छने गौतम गोत्रवाला कालि-कने वांछुं हुं. रे. गौतम गोत्रवाला कुमार संपिलतने तथा आर्यज्ञ ने वांछुं हुं तेमज गौतम गोत्रवाला स्थिवर आर्यवृक्षने वांछुं हुं. रे. तेमने मस्तक वडे वांदीने स्थिर सत्त्व, चारित्र अने ज्ञानथी संपन्न एवा काश्यप गोत्रवाला स्थिवर संघपालितने वांछुं हुं. रे. कुमाना सागर, धीर अने जे

सुबोव

कख्प¤ ॥११५॥ 🖔 उनालानो प्रथम मास एटले फाल्युन, तेना शुक्कपक्तमां कालगत थया हे एवा काश्यप गोत्रवाला 🏄 आर्यहस्तीने हुं वां छुं छुं. ६. शीखल ब्धिथी संपन्न स्रने जेना दी हामहोत्सवमां देवोए जेमना उपर श्रेष्ठ उत्तम उत्र धारण कर्स्युं हतुं एवा सुत्रत गोत्रवाला आर्थधर्मने वांद्वं ढुं. ७. काश्यप गोत्र-वाला आर्यहस्तीने तथा मोक्ष साधक आर्यधर्मने वांडुं हुं तेमज काश्यप गोत्रवाला आर्यसिंहने तथा काश्यप गोत्रवाला आर्यधर्मने पण वांडुं हुं. ए. तेमने मस्तक वडे वांदीने स्थिर सत्त्व, चा-रित्र अने ज्ञानथी संपन्न एवा गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यजंबूने वांडं हुं. ए. मधुर एवा सरल-पणाए (मायाना लागे) करीने संपन्न तथा ज्ञान, दर्शन श्रने चारित्रे करीने युक्त एवा काश्यप गोत्र-वाला स्थविर नंदितने पण वांडुं हुं. १०.त्यारपठी स्थिर चारित्रवाला छाने उत्तम सम्यत्तव छाने सत्त्वथी युक्त एवा माढर गोत्रवाला देवर्किंगणि क्रमाश्रमणने वांकुं हुं. ११. त्यारपढी श्रवयोगना धारक, धीर, मतिना सागर छने महा सत्ववंत एवा वह गोत्रवाला स्थिरगुप्त क्रमाश्रमणने वांडुं हुं. १२. त्यारपढ़ी ज्ञान, दर्शन स्थने चारित्रने विषे सुस्थित, गुणश्री मोटा स्थने गुणवंत एवा स्थविर कुमार-धर्म गणिने वां छुं हुं. १३. सूत्रार्थरूप रत्नथी जरेला तथा क्षमा, दमें छने मार्दव गुणोए करीने संपन्न एवा कार्यप गोत्रवाला देवर्कि क्तमाश्रमणने वांडुं हुं. १४.

एवी रीते जगद्गुरु जहारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकामां त्रावमुं व्याख्यान समाप्त थयुं तेमज स्थिवरावली नामे श्रा बीजो श्रधिकार पण पूर्ण थयो. श्रीरस्तुः

॥ अथ नवमं व्याख्यानं प्रारप्यते ॥

हवे सामाचारीरूप त्रीजी वाचना कहेतां प्रथम पर्युषणा क्यारे करवी ते कहे हे.

र ते कालने विषे स्थने ते समयने विषे वर्षाकालना एक मास स्थने वीश दिवस गया बाद

''मिलमह्वसंपन्नं''एनो ऋर्घ टीकाकारे ''मृदुना मधुरेण मार्दवेन मायात्यागेन संपन्नम्''एवो कर्यो हे. २ इंद्रियोने दमवी ते.

॥रथपा

श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युषणापर्व कर्यु हे. १. हे पूज्य ! ते शा कारणथी एम कहेवाय हे के वर्षाकालना एक मास श्रने वीश दिवस गया बाद श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युषणापर्व कर्यु हे ? ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न कर्ये हते ग्रह उत्तर आपवाने सूत्र कहे है (उत्तर छापे है). जे कारणथी प्राये गृहस्थोनां घर सादमीथी ढांकेलां होय है, चूनाथी घोलेलां होय हे, घांस विगेरेथी आछादित करेलां होय हे, ठाण आदिथी लींपेलां होय हे, वृत्ति (वाम) करवा विगेरेथी ग्रप्त करेलां होय हे, विषम जूमिने खोदीने सरखां करेलां होय है, पाषाणना कटकाथी घसीने कोमल (सीसां) करेलां होये हे, सुगंधी माटे धूपथी वासित करेलां होय हे, परनालरूप पाणी जवाना मार्गवालां करेलां होय हे खने खालो खोदावी राखेलां होय हे: एवी रीते (गृहस्थोए) पोताना माटे घर अचित्त करेलां होय हे,ते कारणथी है शिष्य ! एम कहेवाय हे के वर्षाकालना एक मास छने वीश दिवस गया बाद श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युष-णापर्व केर्युं हे. २. तेबीज रीते गणधरोए पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद चोमा-सामां पर्युषणापर्व कर्युं हे. ३. जेवी रीते गणधरोए वर्षाकालना एक मास श्रने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं तेवी रीते गणधरना शिष्योए एक मास श्रने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं. ४. जेवी रीते गणधरना शिष्योए वर्षाकालना एक मास छने वीश दिवस गया बाद पर्श्वषणा-पर्व कर्युं तेवी रीते स्थविरोए पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणा-पर्व कर्युं. ए. जेवी रीते स्थविरोए वर्षाकालना एक मास स्थने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं तेवी राते आर्यपणाए करीने अथवा अतस्थिवरपणाए करीने वर्तता एवा जे आ (हम-णांना) श्रमण निर्यंथो विहार करे हे ते पण वर्षाकालना एक मास श्रने वीश दिवस गया वाद

१ एक मास ने वीश दिवस पढ़ी पर्युषणा करवी एटले त्यां चोमासानो बाकीनो काल स्थिति करवानुं कहेवुं, जेथी ते आरंजना निमित्त मुनि न थाया आ रहस्य हे।

कहप्र

गरश्हा।

पर्युषणापर्व करे हे. ६. जेवी रीते हालना समयमां जे आ श्रमण निर्प्रथो पण वर्षाकालना एक मास अने बीश दिवस गया बाद चोमासामां पर्युषणापर्व करे हे तेवी रीते स्रमारा पण आचार्यों स्रमे जपाध्यायो पर्युषणापर्व करे हे. ७. जेवी रीते स्रमारा आचार्यों स्रमे जपाध्यायो पर्युषणापर्व करे हे तेवी रीते स्रमे पण वर्षाकालना एक मास स्रमे वीश दिवस गया बाद चोमासामां पर्यु- षणापर्व करीए हीए. तेनी (जादरवा सुदि ५ नी) पहेलां पण पर्युषणापर्व करतुं कहपे हे, परंतु ते (जादरवा सुदि ५ नी) रात्रि स्रतिक्रमवी (जल्लंघवी) कहपे नहीं . ए.

त्यां परि-साम स्थेन एटक्षे सर्व प्रकारे अने उपणं-वसनं एटक्षे वसवुं ते पर्यपणा. ते वे प्रका-रनी हे. एक यहिकाता (यहस्थोए जाणेसी) अने बीजी यहाकाता (यहस्थोए नहीं जाणेसी) तेमां रह्यकाता ए हे के जेमां वर्षा (चोमासा)ने योग्य पीर्ट, फर्खेक आदि प्राप्त कर्ये हते कर्ष्यमां कहेल द्रव्य, क्रेत्र, काल यने जावरूप स्थापना करवामां यावे हे, यने ते यापाढ पूर्णिमानी अंदर करवामां आवे हे, परंतु योग्य देत्रना अजावे पांच पांच दिवसनी वृद्धिथी द्श पर्वतिथिना क्रमवडे श्रावण वदि श्रमास सुधीज करवामां श्रावे हे. यहि ज्ञाता पण प्रकारनी हे. एक सांवत्सरिक कृत्यविशिष्टा एटले सांवत्सरिक कृत्योए करीने युक्त अने बीजी गृहिक्चातमात्रा एटखे मात्र गृहस्थोए जाणेखी. तेमां सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, खोच श्रहमनो तप, सर्व जिनेश्वरोनी जित्तपूजा श्रने संघतुं श्ररस्परस खामवुं ए सांवत्सरिक कृत्यों हे अने ते कृत्योए करीने युक्त एवी पर्युषणा जादरवा सुदि पंचमीने दिवसेज अने कालिकाचार्यना आदेशथी चतुर्थीने दिवसे पण करवामां आवे हे. मात्र गृहस्थोए जाणेली ए हे के जे वर्षमां अधिक मास होय ते वर्षमां चोमासाना दिवसथी मांमीने वीश दिवसे मुनि 'अमे अहीं रह्या ठीए' एम प्रश्न करनार एहस्थोनी आगल कहे हे. ते पण जैन टीपणाने अनुसारे

* स्त्रा पर्युषणा वार्षिक पर्वरूप समजवी, १ पाटलो. २ पाट. ३ स्त्रहीं कहप शब्दे वृहत् कहपादि लेवुं.

सुबो०

॥रबहा।

है, कारण के तेमां युगनी मध्यमां पौष तथा युगनी श्रंते श्राषाह मासनी वृद्धि थाय हे, पण बीजा कोइ मासनी वृद्धि यती नथी. ते टीपणुं पण हमणां तहन जणातुं नथी. तेथी (छाषाढ पूर्णि-माथी) पचास दिवसेज पर्युषणा करवी युक्त है एम वृद्ध आचार्यों कहे है. अहीं कोइ कहे है (शंकां करे वे) के श्रावण मासनी वृद्धि होय त्यारे (बीजा) श्रावण सुदि चतुर्थींने दिवसेज पर्युपणा करवी युक्त हे, पण जादरवा सुदि चतुर्थीने दिवसे युक्त नथी, केमके तेथी एंशी दिवस थवाथी 'वासाणं सवीसइराए मासे विइकंते' एटखे वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद ए वचनने बाधा आवे हे. हे देवानुत्रिय ! जो तुं तेमज कहेतो हो तो ते तेम नथी, कारण के एवी रीते तो आश्विन मासनी वृद्धि थवाथी चोमासानुं कुल (बीजा) आश्विन मासनी शुक्क चतुर्दशीएज करवुं जोइए, केमके कार्त्तिक मासनी शुक्क चतुर्दशीए करवाथी सो दिवस थाय श्रने तेथी 'समणे जगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विश्कंते सित्तरि राइंदिएहिं सेसेहिं' एटसे 'श्रमण जगवान् श्री महावीरे वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद अने सित्तेर दिवस बाकी रह्ये उत्ते' (पर्युषणा करी) ए समवायांग सूत्रना वचनने बाधा श्रावे. वली एम पण कहेवुं नहीं के 'चोमासां तो आषाढ आदि मासथी प्रतिबद्ध हे, तेथी कार्त्तिक चोमा-सानुं कृत्य कार्त्तिक मासनी शुक्क चतुर्दशीएज करवुं युक्त हे खने दिवसनी गणत्रीने विषे छिषिक मास कालचूला तरीके होवाधी तेनी अविवक्ताने लड्ने सित्तेर दिवसोज थाय हे तो समवायांगना वचनने क्यांथी वाधा आवे ?' (उत्तर कहे हे.) जेम चोमासां आषाढ आदि मासथी प्रति-बक्क हे तेम पर्श्वपणा पण जादरवा मासधी प्रतिबक्क हे तेथी ते जादरवामांज करवी. दिवसनी गणत्रीने विषे अधिक मास कालचूला तरीके हे तेथी तेने गणत्रीमां सेवानो नहीं होवाथी पचा-सज दिवसो याय, तो पठी एंशीनी वात पण वयांथी आवे ? अने पर्युषणा जाद्रवा मासथी प्रतिबद्ध हे एम कहेवुं ते पण श्रयुक्त नथी, कारण के ते प्रमाणे घणा श्रागमने विषे प्रतिपादन

1132311

करेख़ुं हे. दाखला तरीके 'श्रन्यदा पर्युषणानो दिवस श्राव्ये हते श्रार्यकासक सूरिए ज्ञालि-वाहनने कहां के जादरवा सुदि पंचमीए पर्श्वषणा हे इत्यादि' पर्श्वषणाकहपनी चूर्णिमां हे. वही शालिवाहन राजा जे श्रावक हतो ते कालक सूरिने श्रावेला सांजलीने सन्मुख जवा नीकख्यो छाने श्रमण संघ पण नीकल्यों. महा विजूतिए कालक सूरिए प्रवेश कयों छाने प्रवेश करीने कह्युं के 'जादरवा सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी.' श्रमण संघे ते कबूल कर्युं. त्यारे राजाए कह्युं के 'ते दिवसे खोकानुवृतिए इंडमहोत्सव होवाथी पर्युषणा थइ शकरो नहीं, तो छन्ने दिवसे पर्यु-षणा करीए.' श्राचार्ये कह्युं के '(पंचमी) श्रतिक्रमवी न जोइए.' त्यारे राजाए कह्युं 'श्रागल चोथने दिवसे पर्युषणा करीए.' त्यारे श्राचार्ये कह्युं 'ए प्रमाणे हो.' पढी चोथे पर्युषणा करी. ए प्रमाणे युगप्रधाने कारणे चोथ प्रवर्तावी, श्रने ते सर्व साधुने मान्य हे. इत्यादि निशीय चूर्णिना दशमा उद्देशामां कह्युं हे. एवी रीते ज्यां कोइ जगोए पण पर्युषणानुं निरूपण आवे त्यां जाडपद संबंधीज जाणवुं, परंतु कोइ पण श्रागमने विषे 'जद्दवयसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्ञइत्ति' एटसे जादरवा सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी ए पाठनी माफक 'ऋजिवहिळवरिसे सावणसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्ञइत्ति' एटखे श्रजिवर्क्षित वर्षमां श्रावण सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी एवो पाठ उप-लब्ध थतो नथी. तेथी कार्त्तिक मासथी प्रतिबद्ध चतुर्मासक कृत्य करवामां जेम श्रिधिक मास प्रमाण नथी तेम जाद्रवा मासथी प्रतिबद्ध पर्युषणा करवामां श्रधिक मास प्रमाण नथी, माटे कदा-प्रहने होनी दे. वली श्रधिक मास शुं कागको जक्तण करी गयो हे ? अथवा शुं ते मासमां पाप लागतुं नची के त्रुख लागती नची ? इत्यादि उपहास्य करीने तारुं पोतानुं घेलापणुं प्रकट न कर, कारण के तुं पण अधिक मास होते ठते एटले तेर मास ठते सांवत्सरिक खामणामां 'वार-सएहं मासाएं' इत्यादि बोखतां श्रधिक मासनो श्रंगीकार करतो नथी. ए प्रमाणे चतुर्मासिक खामणामां ऋधिक मास होय तोपण 'चजएहं मासाणं' इत्यादि ऋने पाद्धिक खामणामां ऋधिक

तिथि होय तोपण 'पन्नरसएहं दिवसाणं' ए प्रमाणे तुं बोले हे. तेवीज रीते नव कब्प विहार आदि लोकोत्तर कार्यने विषे पण बोलाय हे. (दश कल्प कहेवाता नथी.)वली 'आसाढे मासे छुपया' इलादि, सूर्यचारने विषे पण तेमज कहेवाय हे. लोकमां पण दीवाली, श्रद्भयतृतीया श्रादि पर्वने विषे तेमज व्याज गणवी श्रादिने विषे श्रधिक मास गणातो नथी, ते पण तुं जाणे हे. वली सर्वे झुन कार्यों अधिक मास नपुंसक हे तेथी तेमां न करवां एम कहीने ज्योतिःशास्त्रमां तेनो निषेध करेलो हे. वली बीजो मास श्रिधिक होय तेनी वात तो बाजु पर रही, पण जो जादरवो मास श्रिधिक होय तोपण पहेलो जादरवो श्रप्रमाणज हे (एटले बीजा जाड्यपदमां संवत्सरीपर्व करवामां श्रावे हे). जेम चतुर्दशी अधिक होय तो पहेखी चतुर्दशीने खेखामां नहीं गणीने बीजी चतुर्दशीए पाक्तिक कृत्य करवामां आवे हे तेम अहीं पण जाणवुं. वसी जो एम होय तो 'अप्रमाण (अधि-क) मासमां देवपूजा, मुनिदान अने आवश्यक आदि कार्य पण न करवां जोइए' एम कहे-वाने तारा अधरोष्टने चपल न कर; कारण के दिनप्रतिबद्ध देवपूजा, मुनिदान विगेरे कृत्य हे ते तो हमेशां करवांज जोइए अने जे सन्ध्या आदि समयप्रतिवद्ध आवस्यक आदि कृत्य हे ते पण दरेक संध्यासमय पामीने करवांज जोइए अने जाड़पद आदि मासन्नी प्रतिबद्ध जे कृत्यो हे ते बे नाडपद होय तो कया नाडपदमां करवां ? तेना विचारमां प्रथम नाडपदने श्रवगणीने (नहीं गणीने) बीजा जाडपदमां ते करवां एम सम्यक् प्रकारे विचार कर. वक्षी जो, श्रवेत एवी वनस्पति उं पण श्रधिक मास श्रंगीकार करती नथी, जेथी श्रधिक मासने त्यजीने बीजा मासमां पुष्पित थाय हे. जे माटे श्रावश्यक निर्युक्तिमां कह्युं हे के-जइ फुल्ला किएयारा, चूल्रगणा श्रहि-मासयंमि घुठंमि । तुह न खमं फुल्लेचं, जइ पचंता करिंति ममराई ॥ १ ॥ जावार्थ-है आम्र वृक्त !

रै व्याज, जार्नु, पगार विगेरेमां हिंडु मासनी गणत्रीए हाखमां ऋधिक मासनुं वधारे लेवा देवामां ऋवि हे ते नवीन प्रवृत्ति हे तेथीज तेवो करार लखवो पर्ने हे.

सुबोट

कहप० ॥११७॥ श्रिषक मासनी उद्घोषणा थये उते किंद कणेरनां फूल तो फूले पण तने फूल वुं घटे नहीं, केमके तथी तुछ जातिनां वृक्षो तारी हांसी करहो. वली कोई 'श्रिजविष्ठश्रंमि वीसा इश्ररेसु सवीसई-मासे' ए वचनवल वहें मास श्रिषक होय लारे वीशा दिवसेज लोच श्रादि छल युक्त पर्युषणा करे ठे ते पण श्रयुक्त ठे, कारण के 'श्रिजविष्ठश्रंमि वीसा' ए वचन एहि इतात (पर्युषणा) मात्रनी श्रिपेक्ताए ठे. श्रन्यथा 'श्रासाहमासिए पद्धोसिवित एस उस्सग्गो, सेसकालं पद्धोसिविताणं श्रव-वाउत्ति' एटले श्राषाह मासमां पर्युषणा करवी ए उत्सर्ग ठे श्रने वाकीना कालमां पर्युषणा करवी ए श्रपवाद ठे. एवा श्री निशीध चूर्णिना दशमा उद्देशाना वचनथी श्राषाह पूर्णिमाएज लोच श्रादि छल युक्त पर्युषणा करवी जोइए. (पण ते चतुर्मास रहेवानी श्रपेक्तानुं वचन ठे, इल्लिविश्रष्ट पर्युषणा करवा माटे नश्री तेथीज तेम करवामां श्रावतुं नथी.) श्रा संबंधमां वधारे कहेवाथी सर्यु.

कहपने विषे कहे ली प्रव्य, केत्र, काल श्रने जावरूप स्थापना श्रा प्रमाणे हे. प्रव्य स्थापना—
तृण, मगल, हार, मल्लकं श्रादिनो परिजोग करवो श्रने सचित्त श्रादिनो लाग करवो. तेमां
सचित प्रव्य एटले श्रादि अद्धावाला राजा श्रने राजाना प्रधान सिवाय शिष्यने दीका श्रापवी
नहीं, श्रचित प्रव्य एटले वस्त्र श्रादि प्रहण करवां नहीं श्रने मिश्र प्रव्य एटले उपि सहित
शिष्य प्रहण करवो नहीं. केत्रस्थापना—एक योजन श्रने एक गाउ (पांच गाउ जवुं श्राववुं कल्पे)
श्राने ग्लानने माटे वैद्य, श्रोषध श्रादिना कारणे चार श्रयवा पांच योजन कल्पे. कालस्थापना—
चार मास रहेवुं ते श्रने जावस्थापना—कोध श्रादिनो विवेक (लाग) श्रने ईर्यासमिति
श्रादिने विषे उपयोगः ए.

१ चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीठेने चारे दिशा अने विदिशामां एक योजन अने एक गाठनो (एटक्षे पांच गाठनो) अवग्रह कस्पे. अवग्रह करीने 'अहालन्दमिव' कह्युं हे तेमां अथ

॥ १२७॥

१ कुंकी विगेरे. २ राजा के प्रधान दीहा खेवा इंग्रे तो तेने ऋापवी-

ए श्रव्यय वे श्रने लन्द शब्द वमे काल जाणवो. तेमां जेटला वलतमां जीनो हाथ सुकाइ जाय तेटला कालने जघन्य लन्द कहे वे, पांच श्रहोरात्रिने उत्कृष्ट लन्द कहे वे; श्रने तेनी वचेना कालने मध्यम लन्द कहे वे. लन्द काल सुधी पण एटले तेटलो वलत पण श्रवप्रहने विषे रहेवुं कहपे, पण श्रवप्रहणी बहार रहेवुं कहपे नहीं. श्रिप शब्दशी श्रलन्दमि एटले बहु काल सुधी व मास एक साथे श्रवप्रहमां रहेवुं कहपे, पण श्रवप्रहनी बहार रहेवुं कहपे नहीं. गजेन्द्रपद श्रादि पर्वतनी मेललानां प्रामोने विषे रहेला साधु साध्वी वेने उपाश्रयथी वए दिशामां (जवानो) श्रवी कोश श्रने जवा श्राववानो पांच कोशनो श्रवप्रह होय वे. श्रहीं "विदिशामां" एम कहेबुं वे ते व्यावहारिक विदिशानी श्रपेक्ताए वे, कारण के नेश्रयिक विदिशाविनुं एक प्रदेशपणुं होवाथी त्यां जवानो श्रसंजव वे. श्रटवी (जंगल), जल श्रादिथी व्याघात थये वते त्रण दिशानो, वे दिशानो श्रथवा एक दिशानो श्रवप्रह जाववो (समजवो) ए.

३ चोमासुं रहेला साधु श्रथवा साध्वीठिने चारे दिशा श्रने विदिशामां एक योजन श्रने एक गाछ जिक्काचर्याए जबुं श्रावबुं कहते. १०. ज्यां नदी नित्य पुष्कल पाणीवाली होय श्रने नित्य वहेती होय त्यां सर्व दिशा श्रने विदिशामां एक योजन श्रने एक गाछ जिक्काचर्याए जबुं श्रावबुं कहते नहीं. ११. कुणाला नामनी नगरीने विषे ऐरावती नामनी नदी हमेशां वे गाछ वहेती हैं, तेवी नदी थोकुं (उंडुं) पाणी होवाथी छल्लंघवी कहते हे के ज्यां श्रा प्रमाणे करी शकाय केवी रीते करी शकाय ? ते कहे हे—एक पग जलमां राखीने श्रने बीजो पग स्थल उपर राखीने एटले पाणीथी उपर श्रथर राखीने—श्रावी रीते जो जइ शकाय तो चारे दिशा श्रने विदिशामां एक योजन श्रने एक गाछ (जिक्का निमित्ते) जबुं श्रावबुं कहते. ११. ज्यां पूर्वोक्त रीति प्रमाणे न जइ शकाय त्यां साधुने चारे दिशा श्रने विदिशामां तेटलुं जबुं श्रावबुं कहते नहीं श्रने ज्यां ए

१ तेटला पहोला प्रवाहवाली हे.

क्रहप

१११ए१

प्रमाणे न करी शकाय श्रमे पाणी विलोमीने जबुं पमे त्यां जबुं कहपे नहीं, जंघार्ध सुधी पाणी होय ते क्षेप कहेवाय श्रमे नाजियी उपर होय तो क्षेपोपिर कहेवाय. त्यां शेष कालमां त्रण वार दकसंघट श्रये उते केत्र हणाय नहीं एटले त्यां जबुं कहपे ए जाव जाणवो. वर्षाकालमां सात वार दकसंघट श्राय तोपण केत्र हणाय नहीं. शेष कालमां चोशो श्रमे वर्षाकालमां श्राठमो दकसंघट श्रये उते केत्र हणाय हे. क्षेप तो एक पण होय तो केत्रने हणे हे तेथी नाजि सुधी जल होय तो जबुं कहपे नहीं तो पठी खेपोपिर एटले नाजिनी उपर जल होय तो तेनी तो वातज शी करवी ? १३.

४ चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए आ प्रमाणे प्रथमयी कही राखेलुं होय के 'हे शिष्य ! ग्लान साधुने अमुक वस्तु लावी आपजे.' त्यारे ते साधुने (ते वस्तु) लावी आपवी कहपे, पण तेने पोताने ते वापरवी कहपे नहीं. १४. चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए आ प्रमाणे प्रथमयी कहेलुं होय के 'हे शिष्य! (अमुक वस्तु) तुं पोते लेजे', त्यारे तेने लेबी कहपे, पण तेने (बीजाने) आपवी कहपे नहीं. अर्थात् एम कहेलुं होय के 'तुं पोतेज लेजे, ग्लानने बीजो आपरों'. त्यारे तेने पोताने लेखुं कहपे, पण आपतुं कहपे नहीं. १५. चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए प्रथमयी कही राखेलुं होय के 'हे शिष्य! तुं लावी आपजे अने तुं पोते पण लेजे.' त्यारे तेने लावी आपतुं पण कहपे अने लेखुं पण कहपे. अर्थात् तुं आपजे अने लेजे एम कही राखेलुं होय तो आपतुं अने लेखुं ए बंने पण कहपे है. १६.

ए चोमासुं रहेला (अमुक) साधु अने साध्वी उने (विगय लेवी) कहपे नहीं. ते साधु साध्वी केवा ? तो के हृष्ट एटले तरुण अवस्थाने लीधे समर्थ, (तरुण पण केटलाक रोगी अने निर्वल शरीरवाला होय ठे तेश्री कह्युं ठे के) आरोग्य अने बलवंत शरीरवाला साधु- उने आ हवे पठी कहेवामां आवशे एवी नव रसे करीने प्रधान विकृति (विगइ) वारंवार खावी कहपे नहीं. ते विकृति आप्रमाणे जाणवी— प्रध र, दहीं २, मालण ३, घी ४,

पुबो¤

गरश्या

तेख ए, गोल ६, मध ७, मद्य ० श्रने मांस ए. श्रजीहणना ग्रहण करवाथी कारणे कहिंपे हे एम समजवुं श्रने नवना ग्रहण करवाथी कोइ दिवस पक्वान्नं पण ग्रहण कराय हे. तेमां विक्रति है सांचियका श्रने श्रसांचियका ए वे प्रकारनी हे. तेमां छुध, दहीं, पकवान्न ए नामनी बहु काल सुधी राखी शकाय नहीं ते श्रसांचियका जाणवी. रोगना कारणे, ग्रह, बाल श्रादिने उपग्रह करवाने श्रथें श्रथवा श्रावकना निमंत्रणथी ते लेवी. घी, तेल श्रने गोल ए नामनी त्रण विक्रति सांचियका जाणवी. ते त्रण विक्रति प्रतिलाजता ग्रहस्थीने कहें हे 'हजु घणो वलत रहेवानुं हे तथी श्रमे ग्लान श्रादिने माटे लहुजुं.' लारे ते ग्रहस्थी कहें के 'हजु घणो वलत रहेवानुं हे तथी श्रमे ग्लान श्रादिने माटे लहुजुं.' लारे ते ग्रहस्थी कहें के 'चोमासा सुधी लेजो, ते घणी हे.' लारे ते लेवी श्रमे वाल श्रादिने देवी, पण तहणने श्रापवी नहीं. जो के मध, मांस श्रने मालणनो (मुनिने) जावजीव सुधी लाग होय हे तोपण श्रत्यंत श्रपवाददशामां बाह्य परिजोग विगेरेने माटे कोइ दिवस ग्रहण करवी, पण चोमासामां तो सर्वथा निषेध हे. १९.

६ चोमासुं रहेला साधुर्जने विषे वैयावच करनारा मुनिए ग्रहने प्रथमथी एम कही राखे दुं होय के 'हे जगवन् ! ग्लानने माटे कांइ वस्तुनो खप हे ?' ए प्रमाणे वैयावच करनार कोइ मुनिए पूक्ये हते ते ग्रह कहे के 'ग्लानने वस्तु जोइए हीए ? जोइती होय तो ग्लानने पूठों के छुध विगेरे केटली विगयनो तमने खप हे ?' ते ग्लाने पोताने जोइता प्रमाणमां कह्ये हते ते वैयावच करनारे ग्रहनी पासे आवीने कहे हुं के 'ग्लानने आटली वस्तुनो खप हे.' त्यारे ग्रह कहे के 'जेटलुं प्रमाण ते ग्लान कहे हे तेटला प्रमाणमां ते विगय तारे खेवी.' पही ते वैयावच करनार एहस्थ पासे मागे अने मागणी करतां वैयावच करनार छुध विगेरे ते वस्तु प्राप्त थाय तो पही ग्लाने कह्या प्रमाण जेटली मले एटले'राखो, थयुं' एम एहस्थने कहे. ग्रहस्थ एम कहे के 'हे जगवन्!'थयुं' एम कम कहो हो ?' त्यारे साधु कहे के 'ग्लानने एटलोज खप हो.' आ प्रमाणे कहेता साधुने कदाच ग्रहस्थ कहे के

१ ए नवश्री जूदी विगय हे.

कल्पण

॥४३०॥

'हे आर्य साधु ! तमे प्रहण करो ग्लाने जोजन कर्या बाद पश्तात्र आदिक जे कांइ वधे ते तमे खाजो, जिथ आदिक पीजो.' क्वचित् पाहिसित्तिने बदसे दाहिसित्ति जोवामां आवे हे. त्यारे एम अर्थ करवो के 'ग्लाने जोजन कर्या बाद जे कांइ वधे ते तमे खाजो अने बीजाने आपजो.' एम तेणे (एहस्थे) कह्ये हते अधिक क्षेत्रुं कह्ये; पण ग्लाननी निश्राण एकि श्री पोताने माटे क्षेत्रुं कह्ये नहीं. ग्लानने माटे मागी आणेल आहारादि मंग्नीमां आण्युं नहीं. १७.

9 चोमासुं रहेला साधुर्गने ते प्रकारनां छिनंदनीय घरो जेगां के तेर्गे छिया बीजार्गेर आवक करेलां होय, प्रख्यवंत अथवा प्रीति उपजावनारां होय, अयवादानने विवे स्थितावादां होय, निश्चे छहीं मने मलरो एवो ज्यां विश्वास होय, ज्यां सर्भ यितर्गनो प्रवेश संमत होय, जेते घणा साधुर्ग संमत (इष्ट) होय अथवा ज्यां घरनां घणां मनुष्योने साधुर्ग संमत होय तथा ज्यां दाननी छाङ्गा दइ राखी होय अथवा सर्भ साधुर्ग सरखा हे एम धारीने ज्यां लग्नु शिष्य पण इष्ट होय, परंतु मुख जोइने टीखुं करातुं न होय तेवां घरने विषे जोइती वस्तु अपदीने आ प्रमाणे कहेवुं कह्ये नहीं के 'हे आयुष्मन्! आवस्तु हे?' एम नहीं जोयेजी वस्तुने माटे पून्नं कह्ये नहीं ए अर्थ जाणवो. 'हे जगवन्! ते शामाटे ?'ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न करवाथी एक कहे ने के 'अद्धा-वान् गृहस्थ मूख्य वहे लावे अने जो मूख्य वहे न मन्ने तो घणी अद्धाने लीधे चोरी पण करे.'

उ चोमासुं रहेला हमेशां एकासणुं करनार साधुने सूत्र पैहिषी कीधा पढ़ी एक वार गोचरी ज्ञाना काले गृहस्थनुं घर कल्पे हे एटखे जात खने पाणीने खर्थे गृहस्थना घरमांथी नीकत्र वुं ख्रमे प्रवेश करवो कल्पे हे, पण बीजी वार कल्पे नहीं. ख्रम्पत्र कहेतां ख्राचार्य खादिनी वैया वृत्य करनाराजेने वर्जीने ए खर्थ हे; तेजे जो एक वार जोजन करवा वहे वैयावृत्य करनारा, ज्ञान तो बे वार पण जोजन करे, कारण के तपथी वैयावृत्य क्षेष्ठ हे. ख्राचार्यनी वैयावृत्य करनारा, ज्ञान

मुबो 🛚

॥४३०॥

ध्यायनी वैयाधृत्य करनारा, तपस्तीनी वैयादृत्य करनारा तेम ज ग्लाननी वैयादृत्य करनारा साधु-जैने वर्जीने बीजा साधु एक वार जोजन करे. ज्यां सुधी व्यंजन कहेतां मूछ, दाढी, बगल श्रादिना वाल न श्राव्या होय त्यां सुधी शिष्य श्राने शिष्याने पण वे वालत जोजन करवामां दोष नथी. श्रावा जे वैयादृत्य करनार होय ते वैयादृत्यकर जाणवो. (तेने पण वे वार कहते हे.) श्राचा-र्यश्र वैयादृत्यश्र श्राचार्यवैयादृत्यो. एवी रीते जपाध्याय श्रादिने विषे पण जाणवुं. तेथी श्राचार्य, जपाध्याय, तपस्ती, ग्लान श्राने खघु शिष्यनी वैयादृत्य करनाराने वे वखत जोजन करवामां पण दोष नथी ए श्रार्थ समजवो. २०.

चोमासुं रहेला एकांतरे जपवास करनार साधुने आ हवे पढ़ी कहीशुं एट सुं विशेष हे. ते सवारमां गोचरी जवा माटे (उपाश्रयथी) नीकलीने पहेलांज ग्रुद्ध प्रासुक व्याहार (श्राणी) खाइने, बाश आदिक पीइने, पातरांने निर्क्षेप करीने-बस्त्रथी खुही नाखीने अने प्रमार्जीने-धोइ नाखीने ते जो चलाबी शके तो तेटलाज जोजन वमे ते दिवसे रहेवुं कहपे हे. जो ते साधु आहार थोको थवाथी न चलावी शके तो तेने बीजी वार एइस्थने घेर जात पाणीने माटे नीक-लवुं छने पेसवुं कहपे हे. ११. चोमासुं रहेला निख हु करनार साधुने यहस्थने घर जात पाणीने अर्थे नीकलवा अने पेसवाने वे गोचरीना काल कब्पे हे एटले वे वखत गोचरीए जहुं कब्पे हे. ११. चोमासुं रहेला नित्य छात्रम करनार साधुने गृहस्थने घेर जात पाणीने अर्थे नीकलवा छने पेसवाने त्रण गोचरीना काल कहपे हे एटसे त्रण वार गोचरीए जबुं कहपे हे. १३. चोमासुं रहे ला नित्य श्रष्ठम उपरांत तप करनार साधुने गृहस्थने घेर जात पाणीने श्रर्थे नीकलवा श्रने पेसवाने सर्वे गोचरीना काल कहपे हे एटक्षे चार, पांच विगेरे वलत गोचरीए जवुं कहपे हे. ज्यारे इडा थाय लारे गोचरी लावे, पण सवारमां लावेली राखी शके नहीं, कारण के तेथी संयम, जीव-

शरहर॥

संसक्ति, सर्पाघाण श्रादि दोषोनो संजव श्राय हे. २४. ए प्रमाणे श्राहारविधि कहीने हवे पीवाना पदार्थोंनी विधि कहे हे.

ए चोमासुं रहेला नित्य एकासणुं करनार साधुने सर्व प्रकारनां पाणी कक्ष्पे हे. ते सर्व एटले श्राचारांगमां कहेलां एकवीश प्रकारनां श्रथवा श्रहीं जे कहेवामां श्रावशे ते नव प्रकारनां पाणी समजवां. तेमां श्राचारांगमां कहेलां पाणी श्रा प्रमाणे हे-उत्स्वेदिम १, संस्वेदिम १, तंसुलोदक ३, तुषोदक ४, तिसोदक ५, जवोदक ६, श्रायाम ७, सोवीर ७, शुद्धविकट ए, श्रंबय १०, श्रंबा-मक ११, कबिन्ठ (कपिथ्य) १२, मजिलांग (मातुलिंग) १३, दस्क (द्राक्त) १४, दामिम १५, खर्ज्जूर १६, नाबिकेर १७, कयर १७, बोरजब १७, श्रामबग २० श्रने चिंचानां पाणी ११ प्रथम अंग (आचारांग)ने विषे कहेलां हे. तेमांथी प्रथमनां नव तो अहीं पण कहेलां हे. चोमासुं रहेला एकांतरे उपवास करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कहेंपे ते आ प्रमाणे-उत्स्वे-दिम एटले आटा विगेरेथी खरमायेला हाथ आदिना धोणनुं पाणी १, संस्वेदिम एटले पांदमां छादि जकासीने ठंमा पाणी वमे जे पाणी सिंचन कराय ते २ स्राने चोखाना धोणनुं पाणी ३. चोमासुं रहेला नित्य ब्रष्ठ करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी क्षेत्रां कह्ये ते श्रा प्रमाणे-तलना धोणनुं पाणी १, ब्रीहि (मांगर) छादि तुषना धोणनुं पाणी २ छने जवना धोणनुं पाणी ३. चोमासुं रहेला नित्य श्रष्टम करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी क्षेत्रां कहपे ते श्रा प्रमाणे-श्रायामक एटले जैसामण १, सोवीर एटले कांजीनुं पाणी २ छाने शुद्धविकट एटले जनुंपाणी ३. चोमासुं रहेला अठम उपरांत तप करनार साधुने एक उनुं पाणी क्षेत्रंज कल्पे हे. ते पण सिक्थुं रहित होय तो कढ़पे, पण सिक्यु सहित होय तो न कढ़पे. चोमासुं रहेला अनशन करनार 🖔 ॥१३१॥ साधुने एक उनुं पाणी खेवुं कहपे हे, ते पण सिक्यु रहित पण सिक्यु सहित नहीं, ते पण गखेखुं

१ सर्प सुंधी जाय तेथी तेनुं विष संक्रमे. २ कोइ पण प्रकारनो दाणो.

कह्ये पण तृण छादि बागवाथी छण्गल न कह्ये, ते पण परिमित कह्ये पण छपरिमित नहीं, ते पण कांइक थोठुं बेंबुं, पण बहु थोडुं बेंबुं नहीं, केमके तेथी तृष्णा ज्यशम पामती नथी. १५. १० चोमामुं रहेला दिनी संख्या (अजियह) करनारा साधुने जोजननी पांच दित अने पाणीनी पांच दित, अथवा जोजननी चार दित छने पाणीनी पांच दित, अथवा चणुं जे एक वार छात्वामां छावे ठे ते दित कहेवाय ठे. तेमां व्यवणाखादनं प्रमाणमां पण जोजन छादि वार आपवामां छावे ठे ते दित कहेवाय ठे. तेमां व्यवणाखादनं प्रमाणमां पण जोजन छादि जात पाणी जो ते यहण करे तो ते पण दित गणाय ठे.पांच ए उपलक्षण ठे तेथी चार, त्रण, बे, एक, ठ छथवा सात-जेटलो छित्रमह कर्यो होय ते प्रमाणे कहेवी. छात्वा सूत्रनो छा जाव ठे के लेटली दित जात पाणीनी राखेली होय तेटलीज तेन कह्ये ठे, पण परस्पर समावेश करवो तेने कह्ये नहीं तेमज दिल्ली वधारे खेंचुं पण कह्ये नहीं. ते दिवसे तेटलाज जोजन वने रहेवानुं तेने कह्ये नहीं तेमज दिल्ली वधारे खेंचुं पण कह्ये नहीं. ते दिवसे तेटलाज जोजन वने रहेवानुं तेने कह्ये नहीं तेमज दिल्ली वधारे खेंचुं पण कह्ये नहीं. ते दिवसे तेटलाज जोजन वने रहेवानुं नहीं. एटले एक राज्यातरएह कहेतां उपाध्ययना मालेकनुं घर अने बीजां ठ घर तजवां जोहए, काने जबुं न कह्ये ? निषठ घरणी पाठा फरनारा साधुने न कह्ये. एटले निषठ करेलां घरणी तेने जीजी जगाए जवुं कह्ये ए जाव ठे. छहीं जिल्लाने माटे जवामां बहुवचनने बदले एक वचन वापरेल ठे, पण बहुपणुं छा प्रमाणे देखाने ठे. सात घरमां माणसोथी जरपुर जमणवार एटले संखनी होय लारे जवुं कह्ये नहीं. छहीं अर्थमां सूत्रकारना जूदा मतो ठे. एक वली र व्हणनी चपटी जेटलुं.

कस्प

गरइशा

श्रा प्रमाणे कहे हे. निषिद्ध करेलां घरषी बीजे जता साधु हैने जमणवारमां छपाश्रयथी श्रारंजीने सात घरने विषे जिक्काने माटे जबुं करूपे नहीं. एक वली श्रा प्रमाणे कहे हे के निषिद्ध करेलां घरणी बीजे जता साधु हैने जमणवारमां छपाश्रयथी श्रारंजीने श्रागलना सात घरने विषे जिक्काने माटे जबुं करूपे नहीं. श्रहीं बीजा मतमां छपाश्रय (श्रय्यातरएह) श्रने बीजां सात घर तजवां ए जाव हे, श्रने त्रीजा मतमां (श्रय्यातरएह) छपाश्रय, त्यार पढी हुं एक घर श्रने श्रागल सात घर तजवां ए जाव हे. १९.

१२ चोमासुं रहेला पाणिपात्री (हायज हे पात्र जेने एवा) जिनकहपी आदि साधुने उस धुंवरी एवी पण दृष्टिकाय (अपूकाय) पमते उते ग्रहस्थना घेर जात पाणी माटे नीकलवुं पेसवुं कह्पे नहीं. १७. चोमासुं रहेला करपात्री जिनकह्पी आदि साधुने अनान्नादित जग्याएँ निका ग्रहण करीने आहार करवो कल्पे नहीं. अनाहादित स्थाने तेने आहार करतां जो अकस्मात वर्षाद परे तो जिक्तानो योको जाग खाइने अने योको जाग हायमां खइने तेने (आहारना थोना जागवाला हाथने) बीजा हाथ वडे ढांकीने हृदयनी छागल ढांकी राखे छाथवा कांखमां ढांकी राखे छने ए प्रमाणे करीने गृहस्थोए पोताने निमित्ते छाष्ठादित करेखां घर प्रत्ये जाय अथवा जामनां मूल प्रत्ये जाय के जेवी रीते त्यां ते साधुना हाथ उपर पाणी, पाणीनां मोटां विंद्रु अथवा नानां विंद्रु विराधना करे नहीं एटखे पर्ने नहीं. जो के जिनकस्पी आदि देशोन द्श पूर्वधर होवाथी प्रथमथीज वर्षाद्नो उपयोग थाय हे (वर्षाद थरो के नहीं ते जाणे हे) छने तेथी छर्धुं खाधा बाद जर्दुं पने ए संजवतुं नथी तोपण बद्मस्थपणाने खद्दने कदाचित् छनु-पयोग पण थाय. १ए. कहेला अर्थनेज जणावतां कहे हे के चोमासुं रहेला पाणिपात्री साधुने कांइ पण पाणीना छांटा तेना उपर परेतो ते जिनकस्वी आदिने गृहस्थने घर जात पाणीने माटे नीकसवुं पेसवुं कहपे नहीं. ३०. पाणिपात्री उनी विधि ए प्रमाणे कही. हवे पात्र राखनारा साधुनी विधि कहे वे.

सुबोव

॥१३५॥

१३ चोमासुं रहेला पात्रधारी स्थिवरक हिंग श्रादि साधुने श्रविविन्न धारा वहें वरसाद पनतों होय लारे श्रथवा जेमां वर्षाक हिंग एटले वर्षाकालमां उद्यानुं कपडुं श्रथवा (व्यापरानुं) नेवुं पाणीथी टपकवा मांमे श्रथवा कह्य (कपमा)ने प्रेदीने श्रंदरना जागमां (पाणी) शरीरने जीं जावे लारे गृहस्थने घेर जात पाणीने माटे नीकल वुं पेस वुं न कहे थे से ते स्थिवरक हिंग श्रादिने श्रांतरे श्रांतरे श्रोडी वृष्टि श्रती होय लारे श्रथवा श्रंदर सुतरनुं कपडुं श्रमें विरक हिंग श्रादे श्रादे श्रादे श्री विष्ठ श्री विष्ठ श्री हिंग लागे वृष्टिमां ग्रहस्थने घेर जात पाणी माटे नीकल वुं पेस वुं कहे थे लां पण श्रपवादमां तपसी श्रमे जूस सहन नहीं करी शके एवा साधु विक्राने माटे दरेक श्रागली वस्तुना श्रजावे जनना, उंटना वालना, घासना श्रथवा सुतरना क्रियाने तेमज तालपत्र श्रथवा पलाशना वत्र वने विष्ठत श्रहने पण श्राहार लेवा जाय. ३१.

चोमासुं रहेल साधु साध्वीने ग्रहस्थने घेर जिक्तालाजनी प्रतिक्ताथी एटले अहीं मने मलरो एवी बुिक्क गोचरीए गयेल साधुने रही रहीने वरसाद परे तो ते साधुने आरामनी नीचे (बगीचा-दिमां), सांजोगिक एटले आपणा अगर बीजाना उपाश्रयनी नीचे, तेने अजावे विकटग्रह एटले मंग्य के ज्यां गाममानी पर्षदा बेसे हे तेनी नीचे अथवा जामना मूल अथवा निर्जल केरमा आदिना मूलनी नीचे जबुं कह्ये हे. ३१. तेमां विकटग्रह, ब्रक्तमूल आदिने विषे रहेला ते साधुने तेना आववा पहेलां रांधवा मांगेल जात विगेरे अने पाहलथी रांधवा मांगेल मसूरनी दाल, अम्दिनी दाल अथवा तेलवाली दाल होय त्यारे तेने जात विगेरे लेवुं कह्ये, पण मसूर आदि दाल लेवी कह्ये नहीं. तेनो आ अर्थ हे के साधुना आववा पहेलांज पोताना माटे ग्रहस्थोए जे रांधवा मांगेल होय ते तेने कह्ये हे, कारण के तेथी दोष लागतो नथी अने साधुना आववा पही जे रांधवा मांड्यं होय ते पश्चादायुक्त थाय हे अने तेथी उद्गमादि दोषनो संजव हे तेथी ते लेवुं कह्ये

१ कामली विगेरे.

सुबोव

कहप

गर३३॥

नहीं. ए प्रमाणे बाकीनी बंने हकीकत जाणवी. ३३. तेना घेर ते साधुना आववा पहेलां मसूर आदि दाल प्रथम रांधवा मांकी होय अने तंकुल आदि पाठलथी रांधवा मांकेल होय तो तेने अवि दाल प्रथम रांधवा मांम। होय अने तसुल आदि पाउलथी राधवा मामल हाय तो तन मसूर आदि दाल लेवी कल्पे, पण तंसुल आदि लेवुंकल्पे नहीं ३४. तेने घेर ते साधुना आववा पहें बां जो बंने वस्तु रांधवा मांमेल होय तो बंने खेवी कल्पे अने तेना आववा पठी जो बंने वस्तु रांधवा मांकी होय तो बंने वस्तु लेवी कल्पे नहीं जे चीज तेना आववा पहेलां रांधवा मांसी होय ते तेने खेवी कहपे छने जे चीज तेना छाववा पढ़ी रांधवा मांसी होय ते खेवी कहपे नहीं. ३५. चोमासुं रहेल साधु साध्वी ग्रहस्थने घेर जिक्ता खेवा दाखल थयेल होय तेने जो रही रहीने वरसाद परे तो आरामनी नीचे यावत् कामना मूखे जवुं कह्ये हे, पण पहें बां महण करेंब न्नात पाणी सहित जोजनवेला अतिक्रमवी कह्ये नहीं. त्यारे जो वरसाद बंध न रहे तो आराम आदिने विषे रहेल साधुने शुं करवुं ? ते कहे हे. प्रथम उद्गम आदिथी शुद्ध आहार खाइने, पीइने, पात्र निर्क्षेप करीने अने घोइ नाखीने एक बाजुए पात्रादि उपकरणने राखीने (शरीरनी साथे वींटा-क्षीने) वर्षता वरसादमां सूर्य अस्त थयां पहेलां ज्यां जपाश्रय होय त्यां जवुं कह्ये हे, पण ग्रहस्थने घेरज ते रात्री अतिक्रमवी (रहेवी) तेने कल्पे नहीं, कारण के एकला बहार वसता साधुने 'खपरसमुत्था' एटले पोता थकी अने पर थकी उत्पन्न थता घणा दोषोनो संजव हे तेमज उपाश्रयमां रहेला साधुर्व पण अधृति (चिंता) करे (ते पण कारण हे). ३६. चोमासुं रहेला साधु साध्वी गृहस्थने घर जिक्हा खेवा दाखल घयेल होय तेने जो रही रहीने वरसाद पडे तो छारामनी नीचे यावत् जामना मूखे जवुं कढ्ये हे. ३७. हवे रही रहीने वरसाद पडतो होय तो जो आराम आदिने विषे साधु जना रहे तो ते कइ विधिए (जना रहे) ते कहे हे. विकटएह, वृक्तमूल आदिने विषे रहेल साधु होय तेने अने एक साध्वीने साथे रहेवुं कर्ले नहीं, एक साधु अने 🖫 बे साध्वीर्टने साथे रहेवुं कल्पे नहीं, वे साधु अने एक साध्वीने साथे रहेवुं कल्पे नहीं, वे साधु 🕻

1143311

श्रने वे साध्वी उने साथे रहे वुं कल्पे नहीं; जो त्यां कोइ पांचमो क्तुब्लक (नानो चेखो) अथवा चेली होय अथवा ते स्थान बीजानो दृष्टिविषय होय एटले बीजा जोइ शके तेम होय अथवा बहु द्वार सहित ते स्थान होय तो साथे रहेवुं कब्पे. तेनो जावार्थ आ प्रमाणे हे-एक साधुने एक साध्वी साथे रहेवुं कहपे नहीं, एक साधुने बे साध्वी साथे रहेवुं कहपे नहीं, बे साधुने एक साध्वी साथे रहेवुं कहपे नहीं तेमज वे साधुने वे साध्वी साथे रहेवुं कहपे नहीं. जो छाहीं कोइ पण लघु चेलो श्रयवा चेली (पांचमुं) साही होय तो (रहेवुं) कल्पे हे. श्रयवा वरसाद पमते हते पोतानुं काम नहीं मूकनारा एवा छुहार आदिनी दृष्टिए अथवा ते घरना कोइ पण बारणे आ प्रमाणे पांचमा विना पण रहेवुं करूपे हे. ३०. चोमासुं रहेला साधुने ग्रहस्थने घर जिका लेवा माटे यावत् (हवे कहेशे ते रीते) रहेवुं कब्पे नहीं. त्यां एक साधु अने एक श्राविकाने साथे रहेवुं कख्पे नहीं. ए प्रमाणे चार जांगा है. जो खहीं कोइ पण पांचमो स्थविर खथवा स्थविरा साही होय तो रहेवुं कर्षे वे श्रथना बीजा जोइ शके तेवुं ते स्थान होय श्रथना बहु द्वार सहित ते स्थान होय तो साथे रहेवुं कब्पे हे. एवी रीते साध्वी छने ग्रहस्थनी पण चतुर्जंगी जाएवी. छहीं साधुनुं एकाकीपणुं कह्युं वे ते कारणसर साधुने एकला जवुं पडे तेने माटे समजवुं. सांघा-टिकने विषे, बीजा कोइ साधुने जपवास होय खबवा खसुख होवाथी कारणे तेम थाय है। नहीं तो उत्सर्ग मार्गे साधु पोताना सहित बीजो एटक्षे बे जणा छने साध्वी त्रण जणी विचरे एटखे साथे जाय एम समजवुं. ३ए.

१४ चोमासुं रहेला साधु साध्वीर्जने "मारा माटे तुं लावजे" ए प्रमाणे जेने नहीं कह्यं होय एवा साधुए "तारा योग्य हुं लावीश" एम जेने जणाव्युं नथी एवा साधुने निमित्ते छशन छादि छाहार लाववो कह्ये नहीं. ४०. "हे जगवन्! ते शामाटे?" एम शिष्ये प्रश्न कर्यें उते ग्ररु कहे ठे के "जेने

१ आ सूत्र पण वहोरवा गया होय छांने वरसादना कारणथी छन्ना रहेवुं पमे तेने माटे समजवुं.

कस्पव

1133811

जणावेबुं नहीं एवो साधु के जेने माटे छाहार बाववामां छाट्यो होय ते जो इहा होय तो छाहार करे छने जो इहा न होय तो छाहार न करे छने उबदुं छा प्रमाणे कहे के ''कोणे कह्युं हतुं के तुं छा बाट्यो?" वली जो इहा वगर दाहित्खताए ते खाय तो छजीर्ण छादिथी छु:ख थाय छने चोमासामां कदी परठवबुं पड़े तो स्थं मिखना छुर्ब जपणाने बीधे दोषापत्ति थाय तेटबामाटे पूठीने छाणुबुं. ४१.

१५ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने पाणीथी टपकता (नीतरता) शरीरे तथा थोमा पाणीथी जींजायेल शरीरे अशन आदिक (चार प्रकारनो) आहार करवो कहें नहीं. ४१. "हे पूज्य! ते शामाटे ?" एम शिष्ये प्रक्ष कयें उते ग्रुक्त कहें वे के—जेमां लांवे काले पाणी सुकाय एवां पाणी रहे-वानां सात स्थान जिनेश्वरोए कहेलां वे. ते आ प्रमाणे—वे हाथ १, हाथनी रेखा (आयुरेला आदि, कारण के तेमां लांवे काले पाणी सुकाय वे) १, (अखंक) नख ३, नखना अप जाग ४, जमर (आंखनी उपरना वाल) ५, दाढी ६ अने मूठ ५ हवे वली एम जाणे के मारुं शरीर पाणीरहित वे—तहन सुकाइ ग्युं वे त्यारे ते साधुने अशन आदिक (चार प्रकारना) आहार करवा कहें प्रइ.

रह चोमासुं रहेला साधु साध्वी सेन छहीं (जिनशासनने विषे) निश्चे छा(इवे कहेवाशे ते) छाठ सूदमो हे, जे हद्मस्थ साधु साध्वीए वारंवार ज्यां ज्यां ते स्थान करे त्यां त्यां सूत्रना उपदेश वहे जाणवा योग्य हे, छांखर्थी जोवानां हे छने जाणीने तथा जोइने प्रतिक्षेत्रवानां हे (परि-हरवाना होवाथी विचारवा योग्य हे). ते छाठ सूद्ध्यो छा प्रमाणे हे—सूद्ध्य प्राणो (जीवो) रे, सूद्ध्य पनक फुल्लि २, सूद्ध्य बीज ३, सूद्ध्य इरित ४, सूद्ध्य पुष्प ८, सूद्ध्य इंगां ६, सूद्ध्य बिल (दर) ९ छने सूद्ध्य स्नेह (अप्काय) ए. ते कया सूद्ध्य प्राणो ? एम शिष्ये पूठ्याथी एक कहे हे के तीर्थं कर छने गणधरोए पांच प्रकार (वर्ष)ना सूद्ध्य प्राण कह्या हे ते छा प्रमाणे—काला, नीला, राता, पीला छने घोला. एक वर्णमां हजारो जेदो छने बहु प्रकारना संयोगो हे ते सर्वे हुष्ण छादि पांचे वर्णमां छवतरे हे (समावेश थाय हे). छणुद्धरी नामे कुंशु छानी जाति हे जे स्थित रहेली

सुबोव

แสสุขแ

होय,हाखती चाखती न होय त्यारे ते बद्मस्थ साधु साध्वीउंना दृष्टिविषयमां(नजरे)तुरत श्रावती नघी अने जे अस्थिर होय, चालती होय त्यारे ते उद्मस्थ साधु साध्वीर्जना दृष्टिविषयमां (नजरे तुरत छावे हे, माटे हदास्थ एवा साधु साध्वीए ते सूक्ष प्राणोने वारंवार जाणवा, जोवा अने प्रतिलेखवाना हे, कारण के तेर्च (प्राणों) चालता होय त्यारेज जणाय हे, पण स्थानने विषे स्थिर) होय त्यारे जणाता नथी. ४४. बीजा सूक्ष्मे पनक ते कया ? एम शिष्ये पुठ्याथी ग्रह कहे ने के-सूक्ष पनक पांच प्रकारना कहेला ने. ते श्रा प्रमाणे-काला, नीला, राता, पीला श्रने धोला. सूक्ष पनक एक जाति ने के ज्यां ते जत्पन्न श्राय ने त्यां ते तेज प्रन्यना समान वर्णवाली होय हे. ते पनकनी जाति ह्यस्य साधु साध्वीए जाणवानी, जोवानी खने प्रतिखेखवानी हे. ते प्राये करीने शरद क्तुमां जमीन, काष्ट छादिने विषे उत्पन्न थाय हे छाने ज्यां उत्पन्न थाय हे त्यां ते इव्यना समान वर्णवाली होय हे. ते प्रसिद्ध हे. आ सूक्ष पनक जाणवा. हवे सूक्ष बीजो कयां हे? एम शिष्ये गुरुने पूठ्याथी गुरु कहे हे के-सूक्ष बीजो पांच प्रकारनां कह्यां हे. ते आ प्रमाणे-कालां, नीलां, रातां, पीलां अने घोलां. कणिका एटक्षे निलका-'नयुं' जे लोकने विषे प्रसिद्ध ने तेना समान वर्णवालां ते सूद्म बीजो कहेलां हे. जेबीजो हद्मस्थ साधु साध्वीए जाणवानां, जोवानां अने प्रतिक्षेखवानां हे. ते सूक्त बीजो जाणवां. इवे सूक्त हरित कह हे ? एम शिष्ये गुरुने पूह्याची गुरु कहे वे के-सूक्ष हरित पांच प्रकारनी कहेली वे. ते छा प्रमाणे-काली, नीली, राती, पीली छने धोली. सूक्स हरित ए हे के जे पृथिवी समान वर्णवाली प्रसिद्ध कहेली है. जे साधु साध्वीए जाण-वानी, जोवानी श्रने प्रतिक्षेखवानी हे. ते सूक्ष्म हरित जाणवी. ते नवीन उत्पन्न थयेल पृथ्वीना समान वर्णवाली होय है. ते छाट्प संघयण (शरीरशक्ति) वाली होवाथी थोना कालमांज नाश पामे हे. हवे ते सूक्ष पुष्पो कयां हे ? एम शिष्ये पूह्यायी गुरु कहे हे के सूक्ष पुष्पो पांच प्रका-

१ नखनी वे वाजुनी चामसी.

कल्प

ારરણા

रनां कहेलां हे. कालायी घोला वर्ण सुधी. बृक्तना समान वर्णवालां ते सूक्त पुष्पो प्रसिद्ध हे. जे उद्मस्य साधु साध्वीए जाणवानां, जोवानां अने प्रतिक्षेखवानां हे. ते सूक्ष्म पुष्पो जाणवां. हवे ते सूक्त ईनां कयां हे ? एम शिष्ये पूह्याथी ग्रुरु कहे हे के-सूक्त्र ईनां पांच प्रकारनां कह्यां हे. ते या प्रमाणे-मधमाखी, माकम विगेरनुं इंडुं ते उद्देशांन १, खूता जे लोकमां 'कुलातरां' ना नामे प्रसिद्ध वे तेनुं इंडुं ते जत्क लिकां म २, पिसीपिका एटले की मी, तेनुं इंडुं ते पिपी लिकां म ३, ह लिका एटले घरोबी अथवा ब्राह्मणी, तेनुं इंडुं ते हिलकांम ४ अने हल्लोहिलआ एटखे अहिलोमी, सरटी जे लोकमां 'काकिकी' कहेवाय है तेनुं इंडुं ते हल्लोह लिकांक ५. जे साधु साध्वीए जाएवानां, जोवानां अने प्रतिसेखवानां हे. ते सूक्त इंगां जाणवां. हवे लयन एटले जीवोनो आश्रय, ज्यां कीमी आदि अनेक सुक्स जीवो थाय हे ते खयन अर्थात् सुक्स विलो ते कयां हे ? एम शिष्ये पूट्याथी गुरु कहे हे के-सूक्त बिल पांच प्रकारनां कह्यां है ते छा प्रमाणे-उत्तिंगा एटले गर्दजना छाकारना जीवो, तेर्नुं विल-जूमि उपर बांधेल घर ते उत्तिंगलयन १, जृगु एटले सुकायेल जमीननी रेखा-पाणी सुकाइ गया पढ़ी पाणीना क्यारा छादिने विषे बे जाग (फाट) पडे ते जुगुलयन २, सरल बिस एटसे सीधुं बीस ते सरसस्य ३, तास वृक्तना मूलना आकारनुं नीचे पहोसुं अने उपर सूक्त एवुं जे विल ते तालमूल ४ अने शंबुकावर्त एटले जमरानुं घर ५. आ पांचे वदास्थ साध साध्वीए जाणवानां, जोवानां स्रने प्रतिक्षेखवानां हे. ते सूहम बिल जाणवां. हवे ते सूहम स्नेह (स्रप्रकाय) कया है ? एम शिष्ये पूछायी गुरु कहे है के-सूदम स्नेह पांच प्रकारना कहेला है. ते आ प्रमाणे-अवश्याय एट के उस जे आकाशमांथी (रात्रे) परे हे ते पाणी र, हिम प्रसिद्ध हे १, महिका एटखे धूमरी ३, करका-करा प्रसिद्ध हे ४ अने लीली जमीनमांथी हगी नीकखेल तृणना अप्र जाग

ારફણા

सुबो०

१ करोद्धीयाः

पर बिंकुरूप जल जे यवना श्रंकुरा श्रादिने विषे देखाय हे ते ५. जे हद्मस्थ साधुए जाणवाना, जोवाना श्रने प्रतिलेखवाना हे. ते सूक्ष्म स्नेह जाणवा. ४५.

१७ चोमासुं रहेल साधु एहस्थने घेर जात पाणी माटे नीकलवा पेसवा इन्ने तो तेने पूठ्या सिवाय (नीकलवुं पेसवुं) कब्पे नहीं. कोने पूठ्या सिवाय ते कहे हे. सूत्रार्थना देनारा श्राचार्यने १, सूत्र जणावनार जपाध्यायने १, ज्ञान श्रादिने विषे सीदताने स्थिर करनार श्राने जयम-वालाने उत्तेजन आपनार स्थविरने ३, ज्ञान आदिने विषे प्रवर्त्तावनार प्रवर्त्तकने ४, जेनी पासे आचार्यों सूत्र आदिनो अन्यास करे हे ते गणिने ५, तीर्थंकरना शिष्य गणधरने ६, जे साधु हेने लइने बहार छन्य केत्रमां रहे हे,गन्नने माटे केत्र,जपिनी मार्गणा छादिमां प्रधावन विगेरेना करनार हे एटले उपि विगेरे लावी आपनार हे अने सूत्र तथा अर्थ ए बंनेने जाणनार हे ते गणाव-होदकने ७, छाथवा छान्य (सामान्य) साधु जे वय छाने पर्याये करीने खघु होय पण जेने गुरुपणाए श्रंगीकार करीने विचरे हे तेने ते साधुने श्राचार्य यावत् जेने गुरुपणाए मुकरर करीने विचरे हे तेने पूठीने (नीकलवुं पेसवुं) कख्पे हे. हवे केवी रीते पूछवुं ते कहे हे. 'हे पूज्य ! जो आपनी आङ्गा होय तो हुं यहस्थने घर जात पाणीने माटे नीकलवा पेसवा इहुं हुं 'जो आचार्य आदि ते साधुने आज्ञा आपे तो तेने एहस्थने घेर जात पाणी माटे नीकलबुं पेसबुं कहेपे हे. जो आचार्य आदि ते साधुने आङ्का न आपे तो एहस्थने घेर जातपाणी माटे नीकल वुं पेसवुं कल्पे नहीं. 'हे पूज्य! ते शा हेतुथी ?' एम शिष्ये प्रश्न कर्याथी ग्रह कहे हे के 'आचार्य आदि विव्नना परिहारने जाणे हे.' ४६. एवीज रीते विहार एटसे जिनचैल, तेने विषे जवुं, विचारज्ञूमि एटसे शरीर चिंता आदिने

एवं जिरीत विहार एटले जिनचैल, तेने विषे जवुं, विचारज्ञूमि एटले शरीर चिंता आदिने हैं।
मादे जवुं अथवा ज्ञ्वास आदिवर्जीने लीपवुं,सीववुं,लखवुं आदिक जे कांइ काम होय ते सर्व पूढ़ीने हैं।
करवुं ए तत्त्व के एवीज रीते जिक्का आदि माटे अथवा ग्लान आदिने कारणे एक गामथी बीजे हैं।
गाम जवुं होय तो पूढ़ीने जवुं,नहीं तो वर्षाक्रतुमां एक गामथी बीजे गाम जवुं ए अनुचितज के ४७.

कहप्०

गर३६॥

चोमासुं रहेख साधु जो बीजी कोइ विगय खावाने इन्ने तो आचार्य यावत् जेने ग्रुरुपणाए कबुल करीने विचरे ने तेने पूनचा सिवाय (विगय खावी) कहपे नहीं आचार्य यावत् जेने ग्रुरुपणाए करीने विचरे ने तेने पूनी (विगय खावी) कहपे ने केवी रीते पूननुं ते कहे ने 'हे पूज्य! आपनी आज्ञा होय तो अनेरी विगय आटला प्रमाणमां अने आटला वखत खावाने इन्नुं नुं.' ते आचार्य आदि जो तेने आज्ञा आपे तो तेने अनेरी विगय खावी कहपे ने ते आचार्य आदि जो तेने आज्ञा न आपे तो अनेरी विगय खावी कहपे ने शामाटे ?' एम शिष्ये प्रश्न कर्यायी ग्रुरु कहें ने के आचार्यों लाजालाज जाणे ने. ४००

न आपे तो अनेरी विगय खावी कट्ये नहीं. 'हे पूज्य! ते शामाटे ?' एम शिष्ये प्रश्न कर्याथी ग्रह कहे हे के आचार्यो खाजाखाज जाणे हे. ४०.
चोमासुं रहेख साधु वात, िपत्त, श्लेष्म अने सित्तपात संबंधी रोगोनी कोइ प्रकारनी चिकित्सा कराववाने इन्ने तो (आचार्य इत्यादिने पूठीने करवी विगेरे) अगान जणाव्या मुजब सर्व अहीं कहेतुं. ते चिकित्सा आतुर, वैद्य, प्रतिचारक अने जैयज्यरूप चार प्रकारनी हे. कन्नुं हे के 'जियक् (वैद्य), इन्यो, जपस्थाता (नोकर) अने रोगी ए चार प्रकार चिकित्सितना हे.' ते प्रत्येकना चार चार प्रकार कह्या हे. दक्त, शास्त्रना अर्थ जाएया हे एवो,, इष्टकर्मा अने शुचि ए चार प्रकार जियक् कृता हे. बहुकट्य, बहुगुण, संपन्न अने योग्य ए चार प्रकार औषधना हे. अनुरक्त, शुचि, दक्त अने बुद्धिमान् ए चार प्रकार प्रतिचारकना हे तथा आत्य (धनवान), रोगी, जियक्ने वश अने ज्ञायक एटखे सत्त्वान् ए चार प्रकार रोगीना हे. ४ए.

चोमासुं रहेल साधु जो कोइ प्रशस्त, कछाणकारी, जपडवने हरनार, धन्य करवावालुं, मंगल हैं करनार, शोजा छापनारुं छने महा प्रजाववालुं एवी जातनुं कोइ तपःकर्म छंगीकार करीने विचरवाने इन्ने तो गुरुने पूछीने विचरवुं (करवुं) कल्पे इत्यादि छगाजनी माफक सर्वे कहेवुं. ५०.

चोमासुं रहेल साधु जे इहे, ते केवा साधु ? तो के अपश्चिम एटले चरम (हेल्लुं) मरण ते 🖔 अपश्चिम मरण, पण प्रतिकाणे आयुष्यना दलिक अनुजनवारूप आवीचि मरण नहीं. अपश्चिम मरण

सुबोट

गरइद्धा

तेज अंत हे जेने विषे श्रने तेने विषे श्रयेख ते श्रपश्चिम मरणांतिकी एवी; शरीर, कषाय श्रादि जेथी क्रश कराय हे तेवी संखेखना प्रव्य जाव जेदे करीने जिन्न (जेदवाखी) हे. 'चत्तारि विचित्तांइ' इत्यादि. तेनुं जोषण एटखे सेवन—ते संखेखनानी सेवा, तेनाश्री क्रय करी नाख्युं हे शरीर जेणे, एटखे श्रपश्चिम मरणांतिकी संखेखनानी सेवाशी (सेवनश्री) क्रय करी नाख्युं हे शरीर जेणे एवा, श्रने तेथी करीने जात पाणीनुं प्रत्याख्यान कखुं हे जेणे एवा, श्रने तेथी करीने पादपोगमन (श्रन-श्रन) कखुं हे जेणे एवा, श्रने तेथी करीने काख एटखे जीवितकाखने नहीं इन्नता एवा—साधु विचरवाने (ते प्रमाणे करवाने) इन्नता हता ग्रहस्थना घरमां नीकखवा पेसवाने, श्रशन श्रादिकनो श्राहार करवाने, मख मूत्र परहववाने, खाध्याय करवाने तथा धर्मजागरिका जागवाने एटखे श्राहा, श्रिपाय, विपाक श्रने संस्थानविचय ए चार जेदरूप धर्मध्यानना विधान श्रादि वमे जागवाने इन्ने तो (ग्रहने) पूट्या सिवाय तेने कांइ पण करवुं कहपे नहीं. ते सर्व श्रगाहनी माफक श्रहीं पण जाणवुं. श्रा सर्व ग्रही श्राहा वमेज करवुं कहपे हे. ५१.

रुठ चोमासुं रहेल साधु वस्त्र, पात्र, कंबल (धाबली), पादप्रोंवन एटले रजोहरण तेमज अन्य उपि तपाववाने एटले एक वार तमकामां मूकवाने अने नहीं तपवाधी कुत्सापनक आदि दोषनी उत्पत्तिनो संजव होवाधी फरी फरी तपाववाने इन्ने त्यारे एक साधु अथवा अनेक साधुने जणाव्या—कह्या सिवाय तेने ग्रहस्थने घर जात पाणीने माटे नीकलवुं पेसवुं, अशन आदिनो आहार करवो, जिनचैत्ये जवुं, शरीरचिंता आदिने माटे जवुं, खाध्याय करवो, कायोत्सर्ग करवो तेमज एक स्थाने आसन करीने रहेवुं कल्पे नहीं. जो अहीं कोइ पण नजीकमां रहेल एक अथवा अनेक साधु होय तो तेने आ प्रमाणे कहेवुं जोइए. 'हे आर्थ! ज्यांसुधी हुं ग्रहस्थने घर जाउं आवुं यावतु कायोत्सर्ग कहं अथवा वीरासन आदि करीने एक स्थाने रहुं त्यांसुधी आ उपिधने तमे

१ कुंशुवा पनवा, पनक एटले फुगी वलवी इत्यादिः

कस्पण

गरइगा

संजालजो.' ते जो वस्त्रने संजालवानुं श्रंगीकार करे तो तेने एहस्थने घेर गोचरी आदिए जबुं, श्रशन श्रादिनो श्राहार करवो, जिनचैत्ये जबुं श्रथवा शरीरनी चिंता आदिने माटे जबुं, खाध्याय श्रथवा कायोत्सर्ग करवो तेमज वीरासन आदि करी एक स्थाने रहेवुं कह्पे, ए सर्व कहेवुं. ते जो श्रंगीकार न करे तो एहस्थना घेर जबुं यावत् एक स्थाने रहेवुं कह्पे नहीं. ५१.

रण चोमासामां रहेल साधु साध्वीने कट्पे नहीं. (शुं न कट्पे ते कहे हे.) जेणे शय्या अने आसन प्रहण करेल नथी ते 'अनिजयहीतशय्यासनः' कहेवायः अने अनिजयहीतशय्यासन तेज अनिज-गृहीतशय्यासनिकः, अहीं 'इक' प्रत्यय खार्थे हे. तेवा प्रकारना एटखे जेणे शय्या अने आसन यहण करेल नथी एवी रीते साधुए रहेवुं कब्पे नहीं. एटसे वर्षाकालमां उपाश्रयमां पीठ (पाटलो), फलक (पाटीयुं) छादि ग्रहण करवां ए जाव जाणवो. नहीं तो शीतल जूमिने विषे सूवा वेसवामां कुंयुवा आदिनी विराधना थवाने लीधे कर्मनुं तेमज दोषनुं आदान एटले जपादान कारण थाय है. आ अनिजयहीतशय्यासनिकत्व जाणवुं. तेनेज हढ करे हे. जेणे शय्या आसन प्रहण करेल नथी तेने, एक हाथ सुधी उंची के जेथी कीमी आदिनो वध अने सर्प आदिनो दंश न याय तेमज 'श्रकुचा कुच परिस्पन्दे' ए वचनथी परिस्पन्द रहित एटखे निश्चल एवी जातनी चारे बाजु काठी-वाली शय्या जेने न होय ते अनुचाकुचिकः कहेवाय तेने, प्रयोजन वगर बांधनारने, (एक वार जपरांत प्रयोजन वगर वे, त्रण, चार वार कंबा (काठी) जपर बंध बांधे अने चारनी जपर घणा अडुक (आमीआ) बांधे तथा वली खाध्यायने विषे विन्न पितमंथादि दोषो थाय तेथी बंधन छादिना तेमज पिंसमंथना परिहार माटे जो एक आखुं चंपा आदिनुं पाटीयुं मसे तो तेज यहण करवुं) जेने आसन नक्की करी राख्युं नथी तेने, (कारण के वारंवार एक स्थानथी बीजे स्थाने जवाथी जीवनो वध थाय) अनेक आसन सेवनारने, संथारो, पात्र आदिने तमकामां नहीं मूकनारने, ईर्या 🖫 आदि समितिने विषे अनुपयुक्तने, जेने पिनेक्षेहण करवानी देव नथी एटक्षे दृष्टि वडे रजोहरण

सुबोव

1185311

आदिथी प्रमार्जन करवानी टेव नथी तेने-एटखे तेवा प्रकारना खरूपवाला (आवरणवाला) साधुने संयम मुश्केलीथी आराधन थाय तेवुं थाय हे. ५३.

श्रादान कहीने हवे अनादान कहे हे. शया, आसननुं ग्रहण करवुं, एक हाथ उंची अने निश्चल शय्या राखवी तेमज पहामां एक वार सप्रयोजन शय्यानी काही उपर बंध बांधवा तेथी कर्मनुं तेमज दोषनुं अनादान एटले तेवा कारणनो अजाव हे. ते हवे प्रकट करी देखाडे हे. जेणे आसन अने शय्या ग्रहण करेल हे तेने, जेने एक हाथ उंची अने निश्चल शय्या हे तेने, प्रयोजनपूर्वक काही उपर बंध बांधे हे तेने, जेने मित एटले नकी करेलुं हे आसन तेने, वस्त्र आदिने जे तमकामां मूके हे तेने, ईर्या आदि समितिने विषे उपयोगवालाने तेमज वारंवार पिनलेहण करवानी एटले प्रमार्जवानी जेने टेव हे तेने एटले आवा प्रकारना साधुने ते ते प्रकारे संयम सुले करीने आराधन थाय तेवुं थाय हे. ५४.

२० चोमासुं रहेल साधु साध्वीठिन ठल्ला, मात्रानी त्रण जग्या कल्पे हे. जे कांइ पण सहन करी शके नहीं (वेग रोकी शके नहीं) तेने त्रण जग्या अंदर राखवी, जे सहन करी शके तेने त्रण जग्या बहार राखवी. पूर जवामां अमचण आवे तो मध्य जूमि राखवी, तेमां पण अमचण आवे तो नजीकनी जूमि राखवी। ए प्रमाणे आसन्न, मध्य अने प्रूर ए त्रण प्रकारनी जूमि हे तेने पिनले हवी. 'जे प्रमाणे चोमासामां करवामां आवे हे ते प्रमाणे शियाला अने छनालामां करवामां आवे हुन्यी तेनुं कारण हे पूज्य ! शुं हे?' ए प्रमाणे शिष्टे प्रश्न कर्षे हते गुरु कहे हे के 'चोमासामां प्राये करीने जीव जेवा के शंखनक, इंड्रगोप, क्रमि आदि, तृण (ए प्रसिद्ध है), बीज जेवां के ते ते वनस्पतिना नवा छत्यन्न थयेला अंकुर, पनक एटले फुलण तेमज बीजमांथी छत्यन्न थयेल हिरत ए सर्वे पुष्कल थाय है. (तेथी चोमासा माटे खास कहेवामां आवेल है.) एए.

२१ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने त्रण मात्रां (पात्र) खेवां कब्पे हे. ते आ प्रमाणे-एक हलानुं, बीजुं

कस्पण

॥१३७॥

मूत्रनुं छने त्रीजुं श्वेष्मनुं. मात्रुं (पात्र) न होवाथी वखत वीती जवाने लीघे उतावल करतां श्चारमं विराधना याय तथा वरसाद वरसतो होय तो बहार जवामां संयमविराधना याय. ५६. ११ 'धुवा लोर्ज ज जिलाणं, निचं थेराण वासावासासु' एटले जिनकढ्पीने निरंतर अने स्थविरकट्पीने चतुर्मासमां नित्य खोच कराववो ए वचनधी चोमासुं रहेख साधु साध्वीने असाड चतुर्मास पढी लांबा केश तो दूर रहो, परंतु गायना रुंवा सरला पण केश राखवा कह्ये नहीं; तेथी ते रात्रि एटले नाइपद सुदि पांचमनी रात्रि श्रने हाल सुदि चोथनी रात्रि उल्लंघनी जोइए नहीं. ते पहेलांज लोच कराववो जोइए. तेनो आ जाव है. जो समर्थ होय तो चोमासामां हमेशां लोच कराववो. जो श्रसमर्थ होय तो ते रात्रि (जाइपद सुदि ४ नी रात्रि) उद्घंघवी जोइए नहीं. पर्श्वणा पर्वमां लोच विना अवस्ये करीने प्रतिक्रमण करवुं कढ्पे नहीं, कारण के केश राखवाथी अपकायनी विरा-धना थाय हे श्रने तेना संसर्गथी जुर्रनी उत्पत्ति थाय हे श्रने केश खणतां थका ते जुर्रनो वध थाय हे श्रथवा माथामां नख वागे हे. जो श्रस्ताथी श्रथवा कातरथी मुंगन करावे तो श्राज्ञानंग श्रादि दोषो थाय हे, संयम श्रने श्रात्मानी विराधना थाय हे, जुर्जनो वध थाय हे, हजाम पश्रात्-कर्म करे वे अने शासननी अपन्नाजना थाय वे तेथी लोचन श्रेष्ठ वे. जो कोइ लोच सहन न करी शके, अथवा लोच करवाथी कोइने ताव आदि आवी जवा संजव होय, अथवा बालक होवाथी रमे अथवा तेथी धर्म त्यजी दे तो तेणे खोच करवो नहीं. साधुए उत्सर्गथी खोच करवो जोइए अने अपवादथी बाल, ग्लान आदिए मुंकन कराववुं जोइए. तेमां प्राप्तक जल वरे माथाने घोइने प्राप्तुक पाणीथी नापित (इजाम) ना हाथ पण घोवराववा. जे ब्राह्माथी (मुंमन) कराववाने असमर्थ होय अथवा जेना माथामां गुंबमां आदि थयेल होय तेना केश कातरवा कल्पे. (पंदर पंदर दिवसे शय्याना बंध बुटा करवा अने प्रतिक्षेखवा जोइए अथवा सर्व काल पंदर पंदर दिवसे

सुबोग

113इटा।

? हजाम हजामत कर्या पत्नी हाथ, वस्त्र, शस्त्रादि धोवे घसे ते पश्चात्कर्म.

आरोपणा प्रायिश्वत्त क्षेत्रं जोइए. चोमासामां विशेषे करीने क्षेत्रं जोइएं.) जे सहन न करी शके तेणे महीने महीने मुंमन करावतुं. जो कातर वहें केश कतरावे तो पंदर पंदर दिवसे ग्रस रीते कतराववा. मुंमन कराववानुं श्रमे कतराववानुं प्रायिश्वत्त निशीयमां कहेल यथासंख्य लघु ग्रह मास- रूप जाणतुं. लोच ह मासे करवो, पण स्थविरकहपी साधुर्जमां स्थविर एटले वृद्ध होय तेणे घम- पणथी जर्जरित थवाने लीघे तथा आंखनुं रक्षण करवाने माटे एक वर्षे लोच कराववो अने तहणे चार मासे लोच कराववो. ५७.

२३ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने श्रागल एटले पर्युषणा पर्व पढी क्लेश उपजावे तेवुं वचन बोलवुं कहरे नहीं जे साधु अथवा साध्वी क्षेश करावे एवं वचन बोले तेने आ प्रमाणे कहेवं जोइए. 'हे आर्थ ! तमे आचार विना बोलो हो, कारण के पर्युषणाना दिवस पहेलां अथवा तेज दिवसे जे क्केशकारी वचन उत्पन्न थयेख (बोखेख) ते तो पर्युषणामां खमाव्युं श्रने हवे जे पर्युषणा पढ़ी क्षेशकारी वचन बोलो हो ते आ अनाचार है.' ए जाव जाएवो. आ प्रमाणे निवार्या हतां जे साधु अथवा साध्वी पर्युषणा पठी क्वेशकारी वचन वोसे तेने तंबोसीना पानना दृष्टांतथी संघ बहार करवा. जेम तंबोली सडेला पानने बीजां पान नाश करवाना जयथी काढी नाखे हे तेवी रीते श्रनंतानुबंधी कोधवाखो साधु पण विनष्टज हे एम धारीने तेने घूर करवो. ए जाव जाणवो. वली बीजो पण ब्राह्मणनो दृष्टांत है. खेट नगरनो वासी रुझ नामे ब्राह्मण वर्षाकाक्षे खेतरो खेमवा माटे हल लइने खेतरे गयो. हलने वहन करतां तेनो गली वलद बेसी गयो. परोणाथी मारतां छतां पण ज्यारे ते छठवो नहीं त्यारे त्रण क्यारानां माटीनां ढेफांथी मारतां मारतां ते माटीनां ढेफां वने तेनुं मुख ढंकाइ गयुं अने श्वास रुंधाइ जवाथी ते मरण

१ आटली राज्या संबंधी हकीकत केशलोचना विषयमां वचे केम आवी ते समजातुं नथी. २ क्रुरमंपने लघु मास ने कतरावनारने गुरु मास.

कृह्प

11 १३ए॥

पठी ते ब्राह्मण पश्चात्ताप करतो करतो महास्थाने जइने त्यां पोतानो इत्तांत कहेतां (बीजा) ब्राह्मणोए पूछ्यं के 'तुं हज उपशांत थयो के नहीं ?' त्यारे 'हज पण मने उपशांति यह नथी' एम कहेतां तेने ब्राह्मणोए पंक्ति (इ्राति) बहार कर्यों. एवी रीते वार्षिक पर्वमां कोप उपशांत नहीं थवाने लीघे जे साधु ब्रादिए त्यमतलामणां न कर्यां होय तेने संघ बहार करवा. उपशांतमां उपस्थित थयो होय तेने मूल प्रायश्चित ब्रापवुं. एए.

१४ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने आजेज एटले पर्युषणाने दिवसेज जंचा शब्दवालो तथा कमवाश जरेलो एटले जकार मकार छादिरूप कलह याय तो नानो मोटाने खमावे. जो के मोटाए अपराध कर्यो होय तोपण व्यवहारथी नानो मोटाने खमावे. हवे जो धर्म नहीं परिणमवाथी नानो मोटाने न खमावे तो द्युं करवुं ? तेकहे वे-मोटो पण नानाने खमावे, पोते खमे अने बीजाने खमावे, पोते उपशांत थाय स्रने बीजाने उपशांत करे. सुमतिपूर्वक (राग द्वेषना स्रजावपूर्वक) सूत्र अने अर्थ संबंधी संपृष्ठना अथवा समाधिप्रक्ष पुष्कल थवा जोइएं. जेनी साथे कमवाश जरेलो कलह थयेलो होय तेनी साथे निर्मल मनथी वातचीत आदि करवुं जोइए ए जाव है. हवे बेमां जो एक खमावे अने बीजो न खमावे तो कयो रस्तो खेवो ते कहे हे. जे उपशमे हे तेनी आराधना थाय हे जे उपशमतो नथी तेनी आराधना थती नथी,तेथी पोतेज उपशमित थवुं. 'हे पूज्य ते शा कारणथी ?'ए प्रमाणे शिष्ये पूठ्ये ठते गुरु कहे हे के 'श्रमणपणुं–साधुपणुं हे ते उपशम-त्रधान हे.' अहीं दृष्टांत कहे हे के-सिंधु सौवीर देशनो अधिपति अने दश मुकुटवरू राजार्डंथी सेवातो उद्यन नामे राजा विद्युन्माली देवताए आपेली एवी श्रीवीर प्रजुनी प्रतिमानी पूजायी नीरोगी थयेला गंधार श्रावके आपेली गोलीना जक्तण करवाथी जेनुं रूप अद्जुत थइ गयुं हे एवी सुवर्ण-युलिका नामे दासीने देवाधिदेवनी प्रतिमा सहित हरण करनार अने चौद राजार्रायी सेवाता

१ शांति थाय तेवी अनेक शास्त्रादिनी वातो करवी जोश्ए.

सुचो 🏻

॥१३ए॥

मालव देशना चंमप्रयोत नामे राजाने देवाधिदेवनी प्रतिमा पाठी लाववा माटे उत्पन्न थयेला संग्राममां बांधीने पाठा आवतां दशपुर नगरमां चोमासुं रह्योः वार्षिक पर्वने दिवसे राजाए पोते उपवास कर्योः राजाए हुकम करेला रसोयाए जोजन माटे चंमप्रयोतने पूट्युं त्यारे विषनी बीकथी "हुं आवक हुं तेथी मने पण आजे उपवास हे" एम कह्ये ठते "आ धूर्त साधर्मिकने पण लमाव्या वगर माहं प्रतिक्रमण ग्रुट थशे नहीं" एम उदयन राजाए धारीने तेनुं सर्वस्व पाहुं आपीने अने तेना कपाल उपर लखावेला 'मारी दासीनो पति' ए अक्ररो आहादन करवा माटे पोतानो मुक्कटपष्ट आपीने श्री उदयन राजाए चंमप्रयोतने लमाव्योः अहीं श्री उदयन राजानुं तेना उपशांत-पणाथी आराधकपणुं जाणवुं.

कोइ वखते बंनेनुं आराधकपणुं होय हे. ते आ प्रमाणे-एक वखत कौशाम्बी नगरीने विषे सर्थ अने चंद्र पोतानां विमान वमे श्री वीर प्रजुने वांदवाने आव्या. चंदना साध्वी दक्तपणाने सीधे श्चस्तसमय जाणीने पोताने स्थाने गया अने मृगावती सूर्य चंडना जवाथी अंधकार फेलाये वते रात्रि जाणीने बीती थकी जपाश्रये छावी छने ईर्यापथिकी प्रतिक्रमीने सुतेला एवा चंदना साध्वीने 'मारो अपराध कमा करो' एम कहेवा लागी. त्यारे चंदनाए पण 'हे जड़े ! तारा जेवी कुलीनने स्थाम करवुं ते युक्त नथी' ए प्रमाणे कह्युं. तेणे वली कह्युं के 'फरीथी स्थाम करीश नहीं' एम कहीने पंगे पड़ी. एटलामां चंदना साध्वीने उंघ आवी गइ अने मृगावतीने ते प्रकारे खमा-वतां केवसङ्गान प्राप्त थयुं. पठी कोइ सर्प नजीक श्राववाथी चंदनानो हाथ उंचो सेवाना बना-वथी चंदना साध्वी जागी गया छने केवी रीते सर्प जाएयो एम पूछतां चंदनाए मृगावतीने केवल-ज्ञान थये**खुं** जाणीने तेणीने खमावतां पोते पण केवलज्ञान मेलव्युं; तेथी श्रावी रीते मिथ्या छुष्क्रत देवुं जोइए, पण कुंत्रार स्रने कुल्लकना दृष्टांते देवुं न जोइए. ते कुंत्रार स्रने कुल्लकनो दृष्टांत स्रा 🎉 प्रमाणे हे- (कुंजारनां) हांमखां काणां करता कोइ एक कुछुक (चेखा)ने कुंजार ज्यारे निवारतो र् कस्प

1148011

त्यारे ते मिथ्या डुष्कृत देतो, पण ते हांमलां काणां करतो श्रटकतो नहीं, तेथी कांकरा वने चेलाना कान मरमतां (मसलता) कुंत्रारे पण 'हुं डुःल पामुं हुं' एम ते चेक्षे वारंवार कहो हते पण फोगट मिथ्या डुष्कृत श्राप्युं. ५ए.

१५ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने त्रण जपाश्रय ग्रहण करवा कहपे हे. ते आ प्रमाणे—जंतु-संसक्ति आदिना जयश्री ते त्रण जपाश्रयमां वे जपाश्रयने वारंवार प्रतिक्षेत्रवा (जोवा) जोइए. साइज धातु आखादनना अर्थमां वपराय हे तेथी जे जपाश्रय जपनोगमां आवतो होय ते संबंधी प्रमार्जना करवी जोइए. एटले जे जपाश्रयमां साधु रहे हे तेने प्रातःकाले प्रमार्जे हे, फरी ज्यारे साधु वहोरवा जाय त्यारे प्रमार्जे हे अने फरी त्रीजा पहोरने अंते प्रमार्जे हे. एम त्रण वार प्रमार्जे हे. क्तुबद्धे एटले चोमासा सिवाय वे वार प्रमार्जे हे. ज्यारे (जपाश्रय जीवथी) असंसक्त होय तेनो आ विधि हे अने संसक्त होय तो वारंवार प्रमार्जे हे वाकीना वे जपाश्रयने हमेशां नजरथी जोवे हे, पण तेमां ममत्व करता नथी अने त्रीजे दिवसे पादप्रोंहनथी प्रमार्जे हे तेथी 'वेजविया पिनलेहा' एम कहेलुं हे. ६०.

१६ चोमासुं रहेल साधु साधीने अन्यतर दिशा एटले पूर्व आदि दिशानो अने अनुदिशा एटले अग्नि आदि विदिशानो अवमह करीने अमुक दिशा अथवा विदिशामां हुं जाउं हुं एम बीजा साधु उने कहीने जात पाणी वहोरवा जवुं कहपे हे. 'हे पूज्य! ते शा हे तुथी?' एम शिष्ये पूरुवे हते ग्रह कहें हे के 'चोमासामां प्राये करीने साधु जगवंत तपयुक्त रहे हे तेमज प्रायक्षित्त वहन करवाने अर्थे के संयमने अर्थे हुइ आदि तप करनारा होय है. ते तपस्ती तपने लीधे हुई तथा कृश अंगवाला होय हे तथी थाक लाग्याथी कदाचित् मूर्श आवे अथवा पनी जाय तो तेज दिशा अथवा अनुदिशामां हपाअयमां रहेल साधु जगवंत सार करे (शोध करे). जे कह्या विना गयेल होय तेनी क्यां शोध करे ?' ६ रे.

सुबोठ

॥१४०॥

२७ चोमासुं रहेख साधु साध्वीने वर्षाकहपमां श्रोषध माटे, वैद्यने माटे श्रयवा ग्लाननी सार करवा माटे चार पांच योजन जरूने पण पाढुं श्रावदुं कहपे हे, पण त्यां रहेदुं कहपे नहीं जो पोताने स्थाने श्रावी शके तेम न होय तो तेनी वचे पण श्रावीने रहेदुं कहपे, पण ते जग्याए रहेदुं न कहपे, कारण के त्यांची नीकली जवाश्री वीर्याचारनुं श्राराधन थाय हे. ज्यां जवाश्री जे दिवसे वर्षा कहपे, कारण के त्यांची ते दिवसनी रात्रि त्यां रहेदुं न कहपे, नीकली जवुं कहपे, ते रात्रि हिंदुं चवा कहपे नहीं. कार्य थये हते तुरतज बहार नीकलीने रहेदुं ए जाव जाणवो. ६१.

२० ए प्रमाणे पूर्वे कहेल सांवत्सरिक चोमासा संबंधी स्थविरकहपने यथासूत्र (एटले सूत्रमां रे ए प्रमाण पूर्व कहल सावत्सारक चामासा सबधा स्थावरकल्पन यथासूत्र (एटल सूत्रमा के प्रमाणे कहेल हे ते प्रमाणे करवो, पण सूत्र विरुद्ध करवो नहीं) श्रने यथाकल्प (एटले श्रहीं के प्रमाणे कहेल हे ते प्रमाणे करवो ते कल्प श्रने तथी बीजी रीते करवो ते श्रकल्प) करता (श्राचरता) ज्ञानादि त्रयरूप मार्ग ते यथामार्गने यथातथ्य एटले सत्य वचनानुसारे श्रने सम्यक् प्रकारे मन, वचन श्रने कायाए करीने स्पर्शीने एटले सेवीने, पालीने एटले श्रतिचारथी रक्षण करीने,विधिपूर्वक करवा वहें शोजावीने,यावज्ञीव श्राराधीने, बीजाने उपदेश करीने, यथोक्त करणपूर्वक आराधीने, आज्ञाए एटखे जिनेश्वरे उपदेश कर्या मुजब जेम पूर्वे पाढ्यो तेम पढी पण पाखीने केटलाएक श्रमण निर्मंथो तेनी श्रति उत्तम पालना वडे तेज जवे सिद्ध (कृतार्थ) थाय है, केवलज्ञाने करीने बोध पामे है, कर्मरूपी पांजराथी मुक्त थाय है, कर्मकृत सर्व तापना उपशमनथी शीतल थाय है श्रने शरीर तथा मन संबंधी सर्व छःखनो श्रंत करे है. केटलाएक थाय हे, केवलक्काने करीने बोध पामे हे, कर्मरूपी पांजराथी मुक्त थाय हे, कर्मकृत सर्व तापना 🎉 तेनी उत्तम पालना वमे वीजे जवे सिद्ध थाय हे यावत् शरीर तथा मन संबंधी सर्वे छुःखनो अंत करे हे. केटलाएक तेनी मध्यम पालना वमे त्रीजे जब यावत शरीर तथा मन संबंधी सर्व द्धःखनो श्रंत करे हे. (केटलाएक) जघन्य श्राराधना वडे पण सात श्राह जब तो श्रितिक्रमेज नहीं एटले सात आठ जवे तो अवस्य मोक्ते जाय ए जाव जाएवो. ६३.

i

कहपः

म रुधर म

ते काले एटले चोथा आराने ठेडे अने ते समये एटले श्रमण जगवान् श्री महावीर प्रज राज-गृह नगरने विषे समवसस्या ते अवसरे गुणशैल नामना चैत्यने विषे घणा साधु, घणी साध्वी, घणा श्रावक, घणी श्रविका, घणा देवो स्रने घणी देवीर्जनी मध्ये रह्या (बेठा) यका (पण प्रजन्नपणे खुणामां रहीने नहीं ए जाव जाणवो) छा प्रमाणे कहां, छा प्रमाणे वचनयोग वडे जाल्युं, छा प्रमाणे फल कहेवा वडे करीने जणाव्युं, या प्रमाणे प्ररूप्युं एटले दर्पणनी जेम श्रोताना हृदयमां संक्रमाव्युं स्रने पर्युषणाकहप नामे स्रध्ययनने स्त्रर्थ एटले प्रयोजन सहित (पण प्रयोजन विना नहीं), हेतु सहित (हेतु एटसे निमित्त ते जेमके ग्रुहने पूछीने सर्व करेंचुं ते शा हेतुथी ? कार-ण के आचार्यों प्रत्यपाय जाणे हे इत्यादि हेतु हे ते सहित), कारण सहित (कारण एटले अपवाद ते जेमके 'अंतराविसे कप्पइ' अभचणे तेने कहणे इत्यादि कारण सहित), सूत्र सहित, अर्थ सहित, बंने (सूत्र श्रने श्रर्थ) सहित, ब्याकरण सहित (एटले पूर्वेक्षा श्रर्थने कहेवा सहित)वारंवार उपदेश्युं. ए प्रमाणे हुं कहुं हुं एम श्री जडबाहु स्वामी पोताना शिष्यो प्रत्ये कहेता हवा. ए प्रमाणे श्री पर्श्वषणा कल्प नामे दशाश्रुतस्कंधनुं श्रावमुं श्रध्ययन संपूर्ण श्रयुं.

ए प्रमाणे जगद्गुरु जहारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत्ने महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली कल्पसुबोधिकाने विषे सामाचारी व्याख्यान संपूर्ण थयुं श्रने सामाचारी व्याख्यान नामे श्रा त्रीजो श्रिधकार पण समाप्त थयो शुर्ज जवतु !



सुबो०

॥ रधर्॥

॥ अय प्रशस्तिः॥

श्री वीर जिनेंद्रनी पट्टपरंपराने विषे कल्पद्रम समान, सर्व इन्नितने खापनार, सुगंधीए करीने खेंचेल हे पंभितरूपी जमराने जेणे एवा, शास्त्रना उत्कर्षथी सुंदर, स्फुरायमान थती श्रने विशाल वे कांति जेनी एवा, फलने आपनारा, देदीप्यमान मूलगुण वे जेना एवा, इमेशां अति सारा मनवाला, श्रीमान् श्रने देवोथी पूजित श्रीहीर सूरीश्वर थया. १. जेणे दर वर्षे उ मास सुधी समग्र पृथ्वीने विषे जीवने अजयदान अापवारूप पटहना मिषश्री पोतानो यशरूपी पटह वगमाव्यो इतो श्रने जेना मुखर्थी शुज धर्मोपदेश सांजलीने श्रधर्मरसिक, म्सेन्नोनो श्रधेसर श्रने निर्मल मति-वालो श्रकबर बादशाह धर्मने पाम्यो हतो. २. तेनी पाटरूपी उंचा उद्याचल पर्वतना शिखर पर स्फुरायमान किरणवाला सूर्य समान तथा जब्य लोकोने इन्नित वस्तु श्रापवाने चिंतामणि समान श्रीविजयसेन सूरि थया. जेना शुत्र गुणोथीज जाणे होय तेम खह मेघथी वींटायेलो पृथ्वीनो गोलो जेनी कीर्तिरूपी स्त्रीने रमवा माटे दडो होय तेम शोजतो हतो. ३. जे खकवर बादशाहनी सजामां वाणीना वैजव वडे वादी उने जीतीने शौर्यथी आश्चर्य पमामेखी अने लक्की यी परिवृत ययेखी जयश्री कन्याने वर्या हता, तेटखामाटे हे मित्र !मनोहर तेजवाखा श्रा (श्री विजयसेन सूरि)नी वृद्ध एवी कीर्तिरूपी सती स्त्री पतिना अपमानची शंकित मनवाली चइने अहींची दिगन्त सुधी चाली गइ तेमां आश्चर्य हुं हे ? ४. तेनी पाटे बहु सूरिजंथी स्तुल, मुनिजंना नेता अने खब चित्तवाला श्री विजयतिलक सूरि थया. शिवनुं हास्य, बरफ, हंस अने हारना जेवी उज्ज्वल शोजा है जेनी एवी तथा स्फूर्तिवाली जेनी कीर्ति त्रण जगतमां वर्तती हती. थ. तेनी पाटे राजार्जना समृह वडे जेनां चरणकेमल स्तुति करायेलां हे एवा, घुःखनो समृह नाश कर्यो वे जेणे एवा तथा मुनिर्जने विषे समर्थ एवा विजयानंद सूरि जयवंता वर्तता हता खने जे उज्जवख

lain Education International

कल्प० सुवो०

॥ ४४१॥

मोटा ग्रणो वमे गणिने विषे श्रेष्ठ एवा श्री गौतम खामीनी साथे स्पर्का करता हता, जे लिब्धना समुद्र हता, दहींना जेवो उज्जवल जेनो यश हतो श्रने जे शास्त्ररूपी समुद्रना पारने पहोंचेला हता. ६. वली खेद रहित किंनरना समूहोए गायन करातुं श्रने जन्म, जरा तथा मरणने नाश करनारं ते ग्रहतुं चारित्र सांजलीने जगतना जीवो ग्रगलियानी जेम वांग्रानी पूर्णताने पामे हे. तथी करीने ते जगतना जीवो श्रेष्ठ ग्रणगणे करीने सुंदर श्रात्मावाला ग्रणरागीनी हजार श्रात्मानी व्ययताने पामता हता. ७.

वसी श्रीहीरविजय सूरिने बहस्पतिने जेम सूर्य चंड हता तेम शांत एवा सोमविजय वाच-केन्द्र श्रने सत्कीर्त्तिवाला कीर्त्तिविजय ए नामे वे प्रधान श्रने ग्रुप शिष्य इता. ए. जे (कीर्त्ति-विजय) कमावानना सौजाग्य अने निर्मल जाग्यने जाणवाने कोण समर्थ है ? अने जगतने विषे जेनुं श्रद्जुत चारित्र कोना मनने श्राश्चर्य पमामतुं नथी ? जेनी इस्तसिक्षिए मूर्खशिरोमणि-उने पंग्तितशिरोमणि कर्या हे श्रने जेना पादप्रसादे हमेशां चिंतामणि रत्ने करी ने जेदने शिथिल करी नास्यो हे, जे बालपणधीज प्रसिद्ध महिमावाला हता, वैरागी हेने हता, वैयाकरणी डीने विषे जे श्रेष्ठ हता, सामा पक्तना तार्किकोथी जे जीताय नहीं एवा हता, जे सिद्धांतरूपी समुद्रने मथन करवाने मंदराचल समान हता, जे कविनी कला कौशहयनी कीर्त्तिनी **ज्रत्पत्तिवाला हता, जे निरंतर सर्वना उपर उपकार करवामां रिमक हता, जे संवेग (वैराग्य)** ना समुद्र हता, जे विचाररत्नाकर नामे प्रश्नोत्तर प्रंथ श्रादि श्रदृत्रुत शास्त्रोना बनावनार हता, जे अनेक शास्त्ररूपी समुद्रनुं शोधन करनारा हता अने जे हमेशां अप्रमत्त रहेता हता ते स्फुरा-यमान थती विशाल कीर्त्तिवाला पुज्य कीर्त्तिविजय वाचकना विनयविजय नामना शिष्ये कल्प-सूत्रने विषे सुबोधिका (नामनी टीका) रची. ए-१०-११-११. वली श्रा सुबोधिकाने पंकित, 💥 संविग्न तथा सहृद्य महात्माउने विषे मुकुट समान श्री विमलहर्ष वाचकना वंशमां मुक्तामणि

प्रशस्तिः

॥ रधश्रा

समान, जीतेली वे बहस्पतिनी बुद्धि जेणे एवा, सर्वत्र जेनी कीर्तिरूप कर्पूर प्रसार पामेक्षो वे एवा तथा शास्त्ररूपी कंचननी परीकामां कसोटी समान श्री जावविजय वाचकेंद्रे संशोधन करेबी हे. १३─१४. संवत् १६ए६ मा वर्षे ज्येष्ठ मासना शुक्क पक्तनी द्वितीयाने दिवसे ग्रुरुवारना रोज पुष्य नक्षत्रमां आ यत्न सफल (पूर्ण) थयो हे. १५. आ विदृत्ति (सुबोधिका) करवामां श्री राम-विजय पंभितना शिष्य श्री विजयविबुद्ध प्रमुखनी श्रप्यर्थना पण हेतुनूत जाणवी. १६. ज्यांसुधी पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोना समूहरूपी श्रीफल वडे पूर्ण गर्न, चलायमान थता कामना समूह-रूपी द्रजवाला, निषधगिरिरूपी कुंकुमधी श्रद्युत तथा हिमगिरिथी शोजता एवा जंबूद्वीप ना-मना मंगल स्थालने धारण करे हे त्यांसुधी पंकितोने परिचित ययेली कल्पसूत्रनी सुबोधा नामे वृत्ति वृद्धि पामो. १७. ज्यांसुधी जलना एकठा थता कल्लोलनी श्रेणीथी त्राकुल थयेली त्राकाश-गंगा छने दिग्हस्तीए जमामेल कमलने विषे रहेल पाणीना कणीयाथी नाश पाम्यो हे श्रम जेनो एवं ज्योतिश्वक श्रमुक्रमे श्राकाश श्रमे पृथ्वी उपर कायम त्रमण करे वे त्यांस्वी आश्रित करेखी आ कल्पसूत्रनी विवृत्ति वृद्धि पामो, १०.



क	ह्य 🛭
Ę	खो ः

॥ दशई ॥

॥ ग्रुद्धिपत्रक ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति-	श्रशुद्ध.	शुष्ट्र.
₹,	६	काल	कहप	ยย	হ	तेवो	तेख
ξ	? પ	इस्तिप्रनाण	हस्तिप्रमाण	89	₹	महेखनां	महेलना
६	१ ५	बसो	एकसो	ងច	€.	गाममार्जनां	गामकांचेनां
3	২ ঢ	जत्तर कार्यु	जत्तरकार्य	អ្នក	१६	जद्यानिकाना	ज् यानिकानां
υ	२ १	सागरोपम	सागरोपमनी	ងច	१७	माखसोनी	माणसोनी
ſŪ	३७	त्रेवीशमां	त्रेवीशमा	ए ०	9	पूजनिक	पूजनीक
۲o	থথ	महानंदा	देवानंदा	५श	३श	कुष्टरोगवासो	कुष्ठरोगवासो
? ?	হ	स्वमा	स्वप्तां	५ ५	\$ \$	वैंजुर्य	वैद्धर्य
१ १	३५	घणा	घणो	हर्ण	₹8	पूर्वोज्यासश्री	पूर्वाच्यासथी
१ ३	Ū	शाकायन	शाकटायन	६ए	Я¤	नीच	नीचे __
१३	३३	इं	बे	3 =	₹₽	श्वासीश्वास	श्वासोह्यास
१६		३० वर्षना	वर्ष नुं	33	१२	विचार्यु	विचार्यु [े]
१६	२० अने			94	१६	यारे	त्यारे
ध३	? Ų	इशान	पूरुं ईशान	3 c	Я	श्वेतंबिका	श्वेतांविका
३६	३ २	उ रु	ज रू	30	হ १	कोशांबी	कौशांबी
₹Ū	११	ख न्नमां	स्वप्तमां	20U	53	पान	पार्
३६	₹₹	প্তান		C c	श्द	श्वासोश्वास	श्वासोङ्घास
₹9	Я° ,,		सात ~	₽ 5	₹ Ų	सारखा	सरखा
₹0 ₹0		कुन्दरुष्क करीरकां	कुन्द्ररूक —-१	<u>0</u> 9	્ર 	ऋायुकर्म	श्रायुःकर्म
४५ ध१	₹१ 3•	शरीररमां के√ः	शरीरमां -ें	면다	হহ	सार	सारा
	₹ * =	तेर्जनां 	ते डं ना \$	११ए	₹ □ -	गौतमत्रवाखा	गौतमगोत्रवाद्वा
ধ্র	₹७	ड् शान	ईशा न	₹ ₹0	१ ३	<u> लोचन</u>	<u> दो</u> चज

ग्रुडिए त्रक.

11 \$8**\$** 11

आ गंथमां जे चित्रो नाखवामां श्रावेल छे तेमां पानांना नंबर अगाजनी श्रावृत्ति मुजव नखायेला छे, परंतु आ आवृत्तिमां केटलोएक सुधारो वधारो करवाथी पहेलां १० चित्रमां लखेल पानांना नंबर पढ़ी बाकीनां चित्रमां लखेल पानांना नंबरमां नीचे मुजब फेरफार आवे छे तो ते जगोए सुक्त बंधुर्डएने सुधारी लेवा विक्रप्ति करवामां आवे छे.

चित्र नंबर.	श्रगुद्ध.	शुर्घ. वित्र नंबर.	अ गुद्ध.	शुद्ध
₹ ए	५३	५४ ३ए	93	95
Q 0	५४	५५ । ध•	3 <i>t</i>	30
२१	ųų	ए६ ध १	व्रथ	30
१२	ए ए	৫ ৪ ৪২	υЯ	ប្រ
१ ३	५६	५व ॑ ध३	ចច	ហ្ម
१ ४	ųĘ	एवं । धध	ចថ	เกก
र्ष	٧σ	६०∮धए	ចច	υψ
र६	ψσ	६≖्ध६	ውሮ	एइ
5 9	שש	६१ [।] धष	ſΛα	ру
₹0	ξσ	६२ੵਖ਼౮	ក្រខ	एपु
१ ए	६१	६ ४ ४ए	ए १	ան
ξ σ	६२	६४ ५०	एश	१००
₹ १	६२	६ ५ ॑५ १	ए३	रैवरै
{হ	६५	६७ ५१	एध	१०२
{ ₹	६६	६७ ५३	ए६	१०५
₹ 8	६७	७१ एध	Ψ σ	₹ ¤9
{પ	इत्	3 ર પ્પ	१००	११ ०
६	3 a	9३	₹ □ ₹	१११
9	3	वध एव	१०२	११३
₹₢	98	ष र्हे ५७	₹ □ ସ	रेश्व

